शिवांगन

# कुड़माली भाषा

## शिक्षण एवं साहित्य

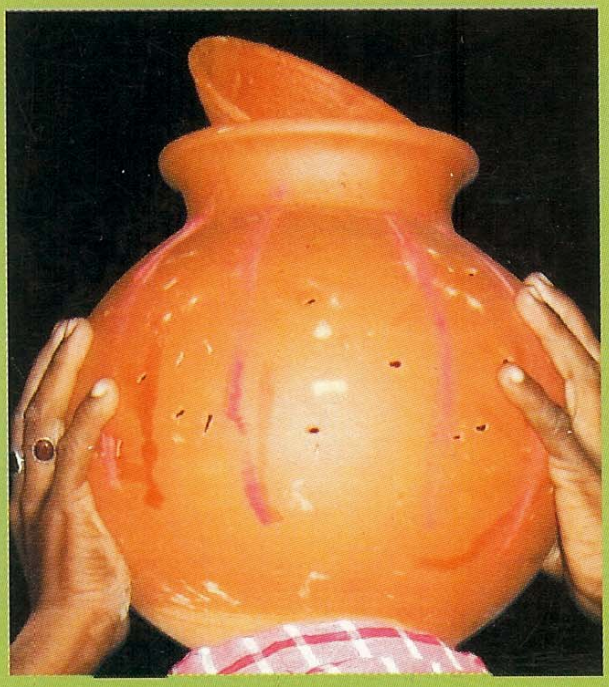

J.P.S.C, आयोजित सभी परीक्षाओं एवं टीचर ट्रेनिंग, TET, मैट्रिक, इण्टर, बी.ए, एम.ए, एम. फिल हेतु उपयोगी सह मार्गदर्शिका

N. C. Keduar

SHIVANGAN PUBLICATION

शिवांगन पब्लिकेशन

शिवांगन

# कुड़माली

## पाड़सि सिखान आर साहित

*JPSC*, पुलिस, वनरक्षी, *JTET, JSSC*, विभागीय परीक्षा तथा सभी प्रतियोगिता परीक्षाओं हेतु समान रूप से उपयोगी


लेखक :

**N. C. Keduar**

U.G.C-NET (Kudmali)



शिवांगन पब्लिकेशन

राँची, पटना

फोन नं.: 0651 2213122

# सहायक ग्रंथ


1. कुरमाली बोली के मुहावरे और लोकोक्तियां - डॉ. एच. एन. सिंह
2. कुड़मालि व्याकरण - श्याम सुंदर माहतअ
3. कुड़मालि भाषा तत्व - खुदिराम महतो
4. कुड़मालि भांउअर - अनंत केसरिआर
5. कुड़मालि चारि - बसंत कुमार मेहता
6. जनजाति परिचिति - एल. के. मुतरुआर
7. हालुक कुड़मालि भांउअर आर रचना - निताई चंद्र महतो
8. कुड़मालि भाषा शिक्षण एवं साहित्य - निताई चंद्र महतो
9. नागपुरी भाषा शिक्षण एवं साहित्य - वीरेंद्र कु. महतो
10. कुड़मालि कबि आर काइब - निताई चंद्र महतो
11. कुड़मालि साहितेक इतिहास - खुदिराम महतो
12. कुड़मालि शब्द कुधि - पी. पी. केसरिआर
13. झारखण्ड की रूप रेखा - राम कुमार तिवारी
14. झारखण्ड दर्पण - बैद्यनाथ उपाध्याय
15. आदिवासी पत्रिका - झारखण्ड सरकार


❖❖❖

प्रकाशक : सुनील कुमार सिंह

प्रकाशन :
**शिवांगन पब्लिकेशन,** शिव भवन,
कमलाकान्त रोड, रातू रोड, राँची- 834001,
(O). 0651.2213122

**मुख्य वितरक: ( राँची )**
**फार्म सेन्टर,** सरस्वती मार्केट, अपर बाजार,
राँची (झारखण्ड),फोन : 0651.2213374

**मुख्य वितरक: ( पटना )**
शिवम आर्केड, नया टोला पटना
बिहार(पटना) फोन : 9431360470

मूल्य: ₹ 160/-

द्वितीय संस्करण : जुलाई, 2016

© प्रकाशक

E- mail : shivanganpublication@gmail.com

www.shivanganpublication.com

**ISBN 978-81-932215-8-7**

पेज डिजाइन: अभिषेक कुमार

- इस पुस्तक का कोई भी अंश लेखक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित करना अविधिमान्य होगा।
- इस पुस्तक को यथासंभव त्रुटिहीन बनाने का प्रयास किया गया है, फिर भी संयोगवश कोई त्रुटि रह गयी हो तो इसके लिए लेखक व प्रकाशक का कोई दायित्व नही होगा।
- किसी भी परिवाद के लिए न्यायिक क्षेत्र राँची होगा।

# छेउनि...

कुड़मालि पाड़सि अना गअ लाड़चाड़ेक आर साहितेक पाड़सि हेकेइक। कुड़मालि, कुड़ुम कबिलाक जातिगत पाड़सि हेकेइक। एकर नामकरन 'कुड़ुम' कबिला हेल आहेइक। एकर भरल-पुरल पुरखउति साहित आहेइक। मनतुक, एकर चिसल साहित आर पाड़सिक उपर कम काम हेउएक कारन एके एक ठिन जड़अ-सड़अ करइते बेजांइ कसनि आर मगज खापाउए हेल, तबे गानि इ एक पथिक धंचअरे निखरअलाइ ठाड़ हेल। मर खातिर तअ इटा एक बेजांइ बड़अ जिमाबारि आर चुनउति रहलेइक। मानकिकरन निहिं हेइक कारन मइ कुछु बिदुआनेक ठिन राइ-पाति लेइके एहे पथि रचल आहिए। पथि माहान कुड़मालि पाड़सि सिखेक लेइ एकर भांउअर, रचना, झारखंडेक इतिहांसले जड़ाइल घेटनाके निजेक पाड़सिंइ अनुबादेक, संगे - संगे इअ पाड़सि साहितले जड़ाइल कबिक चिनहाप, लाड़चाड़ेक साड़ा-आड़ांग, पुरखउति टुमेक भितर ना, डाकपुरुसेक कथा आर भांग-केहनि कुहुं जेते टुकु खेमता हल, समटेक चेसटा करल आहिए। जेटा झारखंडेक सउभे रकमेक परिखाक खातिर बेजांइ दरकारेक जिनिस हेकेइक। इ रचनाकर अध इअनले, हामराक लुकाइल चिनाहा घुरिले जागि उठतेइक। इटाले टउआ चलतेइक जेकि कुड़मालि पाड़सिक निजेक एगअ भरल-पुरल चलन पेहिलअ रहलेइक।

पथिके सउब दिगेले दरकारेक पारा बनाएक खातिर परिखाले जड़ाइल जिनिसके कुड़मालिंइ अनुबाद करल आहेइक, इ बातके बिसेस करि धेइआन देल आहेइक। संगे - संगे कुड़मालि पाड़सि साहित आर चारिले जड़ाइल नाना रकमेक खंच आर एकर जबाबअ पथिक सेंस खंड़े देल आहेइक। पथिंइ झारखंड, बांगाल, आसाम, छतिसगढ़ आर उड़िसांइ पसरल एहे पाड़सिक बिबिधता आरके एक मानक रुप दिएक चेसटा करल गेल आहेइक।

कनअ काम एका-दुकांइ बेसले साइत निहिं हेउअइक तेंइ मइ

# विषय सूची


| | पृष्ठ संख्या |
|---|---|
| 21. कुड़मालि भाषा के लोकोक्तियाँ | 63 - 71 |
| 22. कुड़मालि भाषा के पहेलिया | 72 - 75 |
| 23. कुड़मालि भाषा के मुहाबरें | 76 - 79 |
| 24 कुड़मालि भाषा में पत्र लेखन | 80 - 92 |
| 25. कुड़मालि भाषा में निबंध लेखन | 93 - 100 |
| 26. कुड़मालि भाषा में संक्षेपण | 101 - 103 |
| 27. कुड़मालि भाषा में अनुच्छेद लेखन | 104 - 117 |
| 28. कुड़मालि भाषा में लघु निबंध | 118 - 129 |
| 29. कुड़मालि भाषा में लोक कथा | 130 - 131 |
| 30. झारखंड सामान्य ज्ञान एवं कुड़मालि अनुवाद | 132 - 148 |
| 31. कुड़मालि के कवियों का परिचय | 149 - 164 |
| 32. कुड़मालि भाषा में प्रचलित शब्द-कोश | 165 - 223 |
| 33. गद्यांश अनुबाद | 224 - 234 |
| 34. गिनती एवं महीने के नाम | 235 - 236 |
| 35. कुड़मालि में प्रकाशित पुस्तकें | 237 - 240 |
| 36. वस्तुनिष्ट प्रश्नोत्तर | 241 - 296 |
| 37. सहायक ग्रंथ | 297 - 297 |


●●●

# छेउनि... ✍

नाना बिदुआनेक संग जगा-जउग करि एके पथिक धंचर देल आहिए। मनतुक, सउभिक तअ इठिन नाम लेउआ टाउअ बेजांइ आंटेक कथा हेकेइक, तेंइ मइ अनंत केसरिआर, जतिलाल माहतअ, मनसा माहतअ, अनिल पुनरिआर, डा. राकेस कु. माहतअ, डा. बिंदाबन माहतअ, डा. पि. पि. माहतअ आर सउभेके हिआले आभार जानाइहे। जाखरा एहे पथिकर रचना माहान आगु बाढ़िके उसास करअलाहात। मइ बिसेस करि नागपुरिकर साहितकार बिरेंदरअ कु. माहातक उपर आभार जानाइहे, जेंइ एकर धंचर मर पासे राखल। मइ निखरइआ सिरि सुनिल कु. सिंह, मदन, अभिसेख निखा करअ बिसेस रुपले आभार मानइहे जाखंरा एहे पथि चिसेलाइ मकिहिं ठेसाल।

इटा मर खातिर बेजांइ हुबेक कथा हेकेइक जे एहे पथिक दउज खेप कर निखरन हेउअहेइक। एकर पेहिल खेप 2011 म हेल रहलेइक, जेटांइ बेजांइ गेलति-सेलति रहलेइक। मनतुक, एह नउतुन खेप माहान सुधराइक संगे - संगे आरअ नउतुन - नउतुन कुछु जिनिस राखेक कसनि करल आहिए। आसा आहेइक **'कुड़मालि पाड़सि सिखान आर साहित'** पथि कुड़मालि राखिके पढुआ छउआक खातिर उबगारेक काम करतेइक। संगे - संगे कुड़मालि पाड़सिक बिकास माहान निजेक डुल निजेक ठाइन मेड़िआतेइक। आउति खेपेक खातिर तहराक सुझाउएक आस हिआंइ लागि रहतेइक!

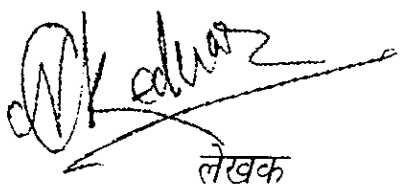

लेखक

रहइन : 2015

फोन : 9693994887

**(N. C. Keduar)**

# विषय सूची


| | पृष्ठ संख्या |
|---|---|
| 1. कुड़माली भाषा का परिचय | 01 - 04 |
| 2. कुड़माली का उंत्पति उदभव और विकास | 05 - 08 |
| 3. कुड़माली लिखने की शैली | 09 - 09 |
| 4. कुड़माली भाषा में प्रयुक्त वर्णमाला के नियम | 10 - 12 |
| 5. भाषा और व्याकरण | 13 - 14 |
| 6. स्वर और व्यंजन | 15 - 16 |
| 7. शब्द विचार | 17 - 17 |
| 8. संज्ञा | 18 - 20 |
| 9. लिंग और वचन | 21 - 24 |
| 10. सर्वनाम | 25 - 27 |
| 11. विशेषण | 28 - 31 |
| 12. क्रिया विशेषण | 32 - 33 |
| 13. कारक | 34 - 35 |
| 14. क्रिया | 36 - 39 |
| 15. काल | 40 - 45 |
| 16. प्रत्यय एवं उपसर्ग | 46 - 48 |
| 17. वाक्य | 49 - 52 |
| 18. विलोम शब्द | 53 - 54 |
| 19. अनेक शब्दों के बदले एक शब्द | 55 - 58 |
| 20. कुड़माली में पर्यायवाची शब्द | 59 - 62 |

# 1. 'कुड़मालि' पाड़सिक चिनहाप

झारखंडे 'जनजातिअ आर छेतरिअ पाड़सिक भितअरे गटा नउ गअ पाड़सिके मानइअता देल गेल आहेइक। एहे पाड़सिगिलाके दना खंड़े खंड़ल करल गेल आहेइक :-

(1) जातिगत पाड़सि - कुड़ुख, कुड़मालि, संताली, मुण्डारी, हो, आर खड़िया।

(2) छेतरिअ पाड़सि - नागपुरी, खोरठा आर पंचपरगनिया।

## ⇨ पाड़सि किना हेकेइक?

हड़े निजेक आचार-बिचार, हाउ-भाउ, आरहान-बातान आर सब जन साधनले करथिक, अके पाड़सि कहल गेल आहेइक। सउबले बेस साधनकर रुपे हड़ेक समाजे पाड़सिके मानल आहेइक। दसर पाड़सि माहान एके 'भाषा' कहल जाइक। 'पाड़सि' साड़ा माने कनअ कथा-बातके फाड़िके फदरा किमबा हरसिके फदरा हेउअइक। जेटांइ धमस आर साड़ाकर एक बेजांइ मेल रहइक। एके 'फदरेक धमसअ' (व्यक्त वणी) कहथिक। हड़ेक थथनाक दाराले उचराउअल धमअसेक चिनहाले हाउ-भाउ, आचार-बिचार कर छापगिला पाड़सिए हेकेइक।

गउटे संसारे मटामटि 3000 पाड़सि फदरल जाइक। जाकर भितर खालि भारअते 1618 गअ पाड़सि फदरल जाइक। एहे सउब पाड़सिके 18 गअ पाड़सि परिबारे राखल गेल आहेइक। झारखंड मुलुके मटा-मटि 12-13 गअ पाड़सि फदरइआक मुल बासिंदा आहात। भारअते फदरल सउभ पाड़सि 'भारअपिअ परिबार' आर 'दड़बिड़ परिबारेक' भितर राखल आहेइक। भारअपिअ परिबारे चलति बेरांइ हिंदिक संगे कुड़मालि आरअ दसर पाड़सिके राखल गेल आहेइक। दखिन भारतकर पाड़सि दड़बिड़ परिबारेक हेकेइक, एहे गठे जनजाति पाड़सि कुहुं राखल गेल आहेइक। कुछु बिदुआनेक मते कुड़मालि आरजअ परिबारेक (आर्य परिवार) अना गअ छेतरिअ पाड़सि हेकेइक।

कुड़मालि अना गअ कबिला बाचि पाड़सि हेकेइक। एकर नाम 'कुड़मि' कबिलाले हेल आहेइक। एक चिज इहां फेरिछ करा खुभेइ दरकार आहेइक। कुड़मालि जाकर जातिगत पाड़सि हेकेइक उ हेलेइक 'कुड़मि'। देस साधिन हेउएक पेहिल 1931 तड़िक 'कुड़मि' भारत सरकारेक अनुसुचित जनजातिक सुचिंइ रहलेइक। मनतुक, देस साधिन हेउएक संगे - संगे एके ST ले हाटाइ देल गेल आहेइक। एकर पेहिल रिजले, डालटन ढेइर बिदुआने कुड़मिके दड़बिड़ परजातिक आदिबासि मानल आहात।

एबार इठिन खंच उठअहेइक जे जदि चलति बेरांइ जन जाइत गिला ST सुचिंइ आहात आर जदि आउति बेरांइ अके हाटाइ दिउअल जाइक ता हेलेइ किना अखरा परजातिले हाटि जाता? ना खालि सुचिले हाटता? तेंइ कुड़मि दड़बिड़ गठेक आदिबासि हेकत आर एकर माइपाड़सि कुड़मालिके दड़बिड़ पाड़सि परिबारेक भितर

हेउएक चाहि। आदि जुगले एखन तड़िक एसनेइ धंचरे फदरइते आउअल आहेइक। इ झारखंडि रहन-सहनकर एक पाड़सि हेकेइक। बेसि भागे एकर केइएक रुपके फदरउथिक। इ जनमानस कर लाड़-चाड़ेक आर जिंअत पाड़सिक संगे - संगे साहितेक पाड़सिअ हेकेइक। इ कबिला बाचि हेइक कारअने एकर एहे पाड़सि माहान दउमेइ पुरखउति साहित पाउअल जाइक। ताकर खातिर एकर पढ़ाइएक बेबसथा झारखंड सरकारे करल आहेइक। झारखंड राइजेक ढेइर इसकुल कलेजे एकर पढ़ाइ हेउअहेइक। एकर पढ़ा-सुना रांचि बिसबिदालइकर 'जनजातिअ आर छेतरिअ पाड़सि बिभागे' एम. ए, एम. फिल, पि-एच. डि. कर पढ़ाइ हेइक। 1982 सालले पति बछर एहे बिभागे छउआंइ नाम लिखात आर निजेक माइपाड़सिक उपर टान बाढ़ाहात। एकर संगे बिनउबा भाबे बिसबिदालइ, हजारिबागेक आर कलहान बिसबिदालइ, चाइबासाक ढेइर कलेजे कुड़मालि माहान बि. ए. अनास, पास कउरसअ, एम. ए, एम. फिल, पि-एच. डि. कर पढ़ाइ हेउअहेइक। खालि एतनाइ नाइ एस.के.बि. बिसबिदालइ, पुरलिआ, प. बंगाल माहान कुड़मालि कर पढ़ाइएक सुरु हालेक बछरे हेल आहेइक। एकर छाड़ि झारखंड अधबिधा परिसद, रांचिले संचालित मेटरिक आर इंटर केलासे एकर पढ़ाइ हेउअहेइक। मानव संसाधन बिकास मंतरालइ, झारखंड सरकार, दिगेले 2008 साले एकर पढ़ाइ मिडिल इसकुलुहुं हेउएक बात हेलेइक। मनतुक, इटा कागज-कलमे खालि हेल आहेइक। कुड़मालिके 2011 साले झारखंड राइजेक दउज राइज पाड़सिक ठाइनअ देल गेल आहेइक।

## ⇨ नामकरन

कुड़मालि अना गअ कबिला बाचि पाड़सि हेइक कारअने एकर नामकरन 'कुड़मि' कबिलाले हेल आहेइक। कुड़मि, 'कुड़ुम' साड़ाले हेल आहेइक। जाकर माने 'काछिम' हेइक। काछिमेक चाइरअ गड़े चलेक बेरांइ खड़म - खड़म धमस बाहराइक। एकरेले खड़म, कड़म, कुड़ुम, साड़ाकर सिरजन हेल आहेइक। एहे पाड़सि माहान चलेक पहरे धमस बाहराले खड़म - खड़म कहल जाइक। कुड़मि कबिलाक सिरजअनेक बेरांइ एहे काछिमें ढेइर कअरि लालन-पालन करल रहलेइक ताकर खातिर एकर नाम कुड़मि हेल आहेइक। दसर मतेक अनुजांइ खेत बाड़िंइ माटि कउड़ि निजेक जिनगि पुहाइआके 'कुड़ुम' कहथिक आर ताकर खातिर एके कुड़मि कहथिक। एहे कुड़मि साड़ांइ 'आलि' पाइन जड़ाले 'कुड़मालि' बनल आहेइक।

⇨ **एकर नामकरनेक उपर ढेइर बिदआने निजेक - निजेक भिनु - भिनु मत आहेइक : -**

1. डॉ0 ग्रियसने एकर नाम 'कुड़मालि' ठार ले दांजल आहेइक।
2. डॉ0 नन्द किशोर सिंह, डॉ0 संतोष कुमारी जैन, डॉ0 एच.एन. सिंह आर चक्रवर्ती देवकी नंदन प्रसादे एकर नाम 'कुरमाली' साड़ाले करल आहेइक।

3. खुदिराम माहातंइ 'कुर्मालि' आर 'कुड़माली' के ठाइन देल आहेइक। लखिकांत मुतरुआरे कुड़मालि आर कुड़माली दुइअके बेबाहार करल आहेइक। डॉ0 चन्द्र मोहन महतंइ कुरमालि आर कुड़मालि साड़ाकर बेबाहार करल आहेइक। श्याम सुन्दर माहतंइ कुड़मालि साड़ाकर बेबाहार सउबले बेसि उचित बाताल आहेइक। नरसिंह माहतंइ कुर्माली साड़ाके निजेक मत मानल आहेइक।
4. डॉ0 शशि भूषण माहतंइ निजेक किरति माहान कुड़मालि, कुड़माली दुइअ साड़ाके ठाइन देल आहेइक। परे आरअ एखरा बातात जे हिंदि माहान 'कुड़माली' आर कुड़मालि माहान 'कुड़मालि' हेतेइक।
5. डॉ0 त्रिभुवन ओझांइ निजेक पथिंइ एके कुड़मालि, कुड़माली ले चिनहाप करल आहेइक। एकर छाड़ि जतिलाल माहातअ, अनंत केसरिआर, पतित पबन केसरिआर, अनिल पुनरिआर, डॉ. राकेस कु. सांखुआर, हिरालाल सांखुआर, भगबान दास माहतअ, करुनामइ केसरिआर, डा. बिंदाबन माहतअ, डॉ. पि. पि. माहतअ, डॉ. परमेसकर माहतअ आरअ कुड़मालिक उपर खदि-नदि (शोध-कार्य) करइआ छउआ सउभे एकर नाम 'कुड़मालि' के सउबले बेस आर बेगानिक नाम मानल आहथिक आर चलति बेरांइ 'कुड़मालि' नाम लिहिं बेसि भागेक पढ़ा-सुना आर लिखा-लिखिक काम चलेहेइक।

एहे सउभे बिदुआने कुड़मालि पाड़सिक धमसेक सभाब (ध्वनिगत विशेषता), पाड़सिक सभाब (भाषायिक विशेषता) आर पुरखउति साहिते पाउअल साड़ाक उपर मगज कम दउड़ाल आहात एसनेइ बुझाहेइक। ताकर खातिर एकर नामकरअने ढेइर साड़ा आइल आहेइक। तेंइ उपरेक सउब सभाबेक ठेहड़े 'कुड़मालि' नाम सउब दिगेले बेस आहेइक।

## ⇨ भगउलिक छेतरअ

इ पाड़सि अतेक बड़अ आर बेइआपक छेतरअ माहान पसरल आहेइक, जाके कनअ भगउलिक सिमा माहान बांधि राखा अतेक सझा कथा निहिं हेकेइक। इ पाड़सि सिधा-साधा, रसिआ आर गुड़िअ हेइक कारअने निजेक जाइत-पाइतेक बांधनाके छिड़ि दसर आरअ करअ लउक बेबाहारिक पाड़सि बनि गेल आहेइक। कुड़मालि छटानागपुरेक एक नामकरा पाड़सि हेकेइक। एहे पाड़सि एक ढेइर बिरहद मुलुकें पसरल, पड़चल आर लाड़-चाड़े आहेइक। एकर निमुंद पुरखउति साहिते पाउअल गेल आहेइक। जेसन :-

1. नागपुरेक छाटल चार, बुचा डाड़िक पानि।
   बसि - बसि भात रांधअइ केंउझरेक रानिंइ।।
2. सिख सिखर नागपुर
   आधा-आधि खड़गपुर।।

3. गाइ गेलअ रने-बने,
बाछुर गेलअ बिजुबने,
बागाल गेलअ अरुनबने,
घुरबे तअ घुर गे कानि-खड़हि।

एहे साहित गिलांइ एकर छेतरअ सिंहभुम, मानभुम आर बिरभुमेक बन झाड़ेक आसे-पासे हेउएक टउआ पाउअइक। माने झारखंडेक उतरि छटानागपुरेक भितर धानबाइद, रामगड़, बकारउ; हाजारिबाग दखिन छटानागपुरेक रांचिक पुरुब-दखिन दिगेक परगना, सराइकेला, खुंटि; संथाल परगनाक गोड्डा, जामताड़ा, देबघर, पाकुड़, साहेबगंज, दुमका; कलहान परमंडलेक गउटे सिंहभुम; प. बंगालकर मेदनिपुर, बांकुड़ा, पुरलिआ जिला; उड़िसाकर मउरभंज, केंउझर, सुंदरगड़, बालेसर, करापुट, जाजपुर जिला; छतिसगड़ेक धमतेरि, बिलासपुर, राइगड़, सुरगुंजा, अंबिकापुर, राइपुर जिला; बिहारेक पुरनिआ, भागलपुर; आसामेक तिनसुखिआ, डिबडुगड़, जरहाट माहान एहे पाड़सिक ठाइन हेकेइक। बांगला देसेक निमगाछि आर नेपालेक कुछु जिला माहान कुड़मालि पाड़सि फदरइआ हड़ आहात। माने बंगाल, उड़िसा आर झारखंडले सटाइल तिनमुड़िआ जेइगागिला कुड़मालि पाड़सिक गड़ा गठ हेकेइक।

कुड़मालि पाड़सिक नामकरने एकर इतिहांस आर ढब (परकिति) लुकाइल आहेइक। कुड़मालि ना खालि एक आदिबासि पाड़सि हेकेइक एकर एक बिसेस पुरखउति नेगि-चारि, भरल-पुरल पुरखउति साहितअ आहेइक, जेटाक दारांइ एकरा निजेक जिबअनेक हाउ-भाउके बरकात आर साहितेक धंचअरे जगाइ राखबअ करत। तेंइ एकर सइभ साहितअ एखन ले नाइ बरंग भगबान बुधेक बेरा लिहिं पाउअल जाइक। जेटा चरआपदेक लुइ पाद, भुसु पाद आर सबरि पाद एकर परमान पाउआइक।

कुड़मालि जाकर पिढ़ि-दर-पिढ़ि खानदानि माइपाड़सि हेकेइक, उ हेलेइक 'कुड़मि'। माने कुड़मालि पाड़सिक सिरजन कुड़मिक सामाजिक धारमिक, चारिक आरअ नाना रकमेक हाउ-भाउएक दारांइ हेल आहेइक। मनतुक, एकर संगे - संगे एकर आसे-पासे बसअबास करइआ करअ बेजांइ बड़अ जउगदान एहे पाड़सिक सिरजन आर बिकास माहान आहेइक। तेंइ चलति बेरांइ कुड़मालि फदरइआक एक बेजांइ बड़अ गठ बनि गेल आहेइक। जेटांइ ना खालि कुड़मि कबिलाइ आहात बरंग एकर छाड़ा नउआ, जलहा, कामार, कुमहार, डम, हाड़ि, मुचि, धबि, घासि, तांति, बेनिआ, तेलि, मेइरा, सुंड़ि, सांउताल, कइरि, पांसि, बामहन, मदि, कुलहु, केंउअट आरअ आसे-पासेक आदिबासि हड़ुहुं निजेक माइ पाड़सिक पारा कुड़मालिके बेबहार करत।

❖❖❖

# 2. सिरजन, उदभब आर बिकास

## (उत्पति, उदभव और विकास)

### ⇨ सिरजन (उतपति)

कुड़मालि पाड़सिक सिरजन कुड़मि कबिलाले हेल आहेइक। एहे गठेक भितर आइल-गेल, उठन-बेइसन, आरहान-बातान जेसन लउक बेबाहारिक साड़ा लिहिं आदि जुगे हेल आहेइक। जेसे - जेसे एहे गठे सामाजिक जिबन जिउएक खातिर नउतुन - नउतुन जिनिसकर बेबाहार करलेइ गेल तेसे - तेसे अकर खातिर नउतुन - नउतुन साड़ा धमस चिनहाले नउतुन - नउतुन साड़ाकर सिरजन हेतेइ आइल आहेइक।

### ⇨ उदभउ :

आदि जुगे इ पाड़सिक हड़े कनअ चिनहाक दाराले निजेक हाउ-भाउला एक-दसराक पासे बांटे हेलथिन। जाकर निमुंद एखनअ एकर नेगि-चारिंइ पुरखउति कामे बेबाहारिक पाउआइक। जेगिला नाना रकमेक सामाजिक, धारमिक आर दसर काम-पाइटेक बेरांइ उचराउथिक। जेसन - डिंढ़ाक दुआइरे चिनहा देल जाइक, छउआक कपालेक बांउआ दिगे केरिक टिका देउआ, हांथ हिला, मुंह चिमड़ा आरअ इटासेटा साड़ा किमबा टुमे आहेइक जे गिला आदि जुगे बेबाहारिकेक साधन रहलेइक आर एखनअ आहेइक।

इटा कहा भार हेतेइक जे एकर उदभउ कबे हेल आहेइक? मनतुक, एकर उदभउ केसन कअरि, केसे हेल आहेइक आर कन परिसथिंइ हेल आहेइक? एकर कुछु मत देउआ इठिन उचित बुझाहेइक। कुड़मालि एक कबिला बाचि पाड़सि हेइक कारअने एकर उदभउ, चासेक जुगले सभइता आर चारिकर बिकासेक संगे - संगे हेल आहेइक। एकरेइ खातिर एकर साहितें चास आर चासाले जड़ाइल साड़ाक आड़ात पाउआइक। जेसन :- कड़-खुस, किआरि, टामना, सिड़पा, डअभा, हेइट, हेइर रे, दुर रे, आंतर, आखांइन, सिकल, अखइन, दना, डाभना, डंगा, पाड़न, अरअना इटासेटा। एकर लेइ कुछु बिदआनेक मत देउआ इठिन उचित हेकेइक :-

1. डॉ0 लक्ष्मी नारायण सुधासुंइ इटा मानल आहेइक जे झारखंडे बासअइआ कुड़मिक पुरबज अति आदिम जुगेक बासिंदर हेकत, जाकर निजेक एक पाड़सि आर चारि आहेइक।
2. एल. एच. मारगनेक मते गुसटिक नाम टअटेमिक हेउआ आर गुसटिक मुल संगठनेक नामअ टअटेमिक हेउआ आदिमताकर चिनहाप हेकेइक।
3. एच. एच. रिजलेक मते कुड़मिक पहिल खेप (दल) झारखंडे आउअल, एकर पअरे एकर दसर खेप आउअल रहल। एकर संगे - संगे पाड़सि आर चारि कुहुं

लेलेइ आइल आहात। उपरे देल सउभे बिदुआनेक मतेक भितर सइतअकर छाप रिचिक-आधेक खांटिए आहेइक।

आरजअ जातिक हड़ सउब दसर - दसर दल बांधि दसर - दसर बेरांइ भारत आउअल आहात। इतिहांस लुहुं एहे टाइ टउआ पाउआइक। मनतुक, जाहां तड़िक कुड़मि कबिलाक बात आहेइक। किना कुड़मि आरजेक पारा दसर - दसर दल बांधि आउअल आहात? आर किना खालि एहे बनझाड़ेहिं आइ बअसि गेला? जदि आरजेक संग धअरि कुड़मिअ आइल आहात तअ फेइर टांइड़-टिकरा, खेत-बाइद, छाड़ि एहे गुइज - गुइज बनझाड़े कन धेइए आइ सामाल? एहे सउब खंचे कुड़माालि पाड़सिक उदभउ सामाल आहेइक। एकर खातिर एहे खंचले बाहराइल तइथगिलाके फेरिछ करा एखन खुभेइ दरकार आहेइक। जे गिला एहे रकमेक आहेइक :-

1. पेहिल बात तअ कुड़मिक चारि आर एकर पाड़सिक धंचर आरअ दसर आरजअ जाइतकर संग कनअ अतेक खेप निहिं काटअइक।
2. जदि आरजेक पारा, कुड़मिअ दल बांधि आउअल रहला, ता हेले उ उहांले निजेक पाड़सि आर चारिकर कुछुअ खंड़ आनअइ तेल आर उहांउ एकर आरअ बांचल खंड़ जरुरे हेइ तेलेइक। मनतुक, कुड़मालि पाड़सि-चारि बेसि भागे झारखंड, बंगाल, आसाम, छतिसगढ़ आर उड़िसाकर गांउ देहाते आरे पड़चल आर पसरल आहेइक। जदि इ बाहारकर कनअ दसर देसले आउअल रहल ता हेले भारअतेक बाहिर माने पसचिमि देसुहुं एकर बिरहद रुप जरुरे पाउआइतेलेइक। मनतुक, एकर चिनहाप आर दसर देसे एकर एसन पड़चल आर पसरल रुप आहेइक, एकर कनअ परमान एखन तड़िक निहिं पाउआइल आहेइक।
3. जदि बेइगानिक ठेहड़ मानल जाइक ता हेलुहुं कुड़मि आरजक संग धरि आइल आहेइक। एकर कनअ सटिक परमान निहिं पाउअल गेल आहेइक। इहां कर कुड़मिक धड़ेक गढ़हन खांटअ पारा; चुलेक रंग केरिआ; गड़-हांथ कुइला; आंइख हाड़ेक भितर धंसल आर कानेक गढ़हन खांटअ पारा पाउअल जाइक। मनतुक, आरजअ परजातिक हड़ेक गड़-हांथ, कान, मुड़गिला लमबा पारा; गाथेक रंग गरअ आर आंइख अतेक भितर धसल निहिं रहइक।

   मानि लेल जदि सइभइता आर चारि, एतेक बछर - बछर धरि इहां जिनगि काटेक तेहें, इहांक नेगि चारिंइ मेझाइगेल आहेइक, मनतुक धड़ेक गढ़हन बदला किना अतेक सझा कथा हेकेइक?
4. कुड़मिक गुसटि टअटेमिक आहेइक आर एकर गठाइल गठ करअ नाम टअटेमिक 'कुड़ुम' हेकेइक। एकर गुसटि परकितिंइ पाउअल गाइछ-पालहा, पांइख-पाखुड़, जिउ-जेनतुक, पका-माकड़ले जड़ाइल आहेइक। एहेगिला झारखंड, बंगाल, असम, छतिसगढ़ आर उड़िसाक बन-झाड़े बेजांइ पसरल पाउआइक।

जदि आरजेक पारा दसर देसले आइ बसअबास करइतेला ता हेले एहे परकितिक जिनिसगिला बिदेस माहान खांटिए ढेइर बेसि झबरल पाउआइ तेलेइक।

जाकर निजेक पाड़सि माहान एतेक बिकसित पुरखउति साहित लउक बेबाहारिक आहेइक, उ पाड़सिके आदिम पाड़सि कहले काकुहुंके कनअ रकम मने ठेस निहिं पहचेक चाहि। तेंइ कुड़मालि पाड़सिक उदभउए एकर माइपाड़सिंइ पाउअल गेल पुरखउति साहितकर बेजांइ बड़अ हाथ आहेइक।

## ⇨ बिकास :

कनअ पाड़सिक धंचर सउब बेरांइ थिराइ निहिं रहइक। बेरा काटेक संगे - संगे पाड़सि माहाउ रिचिक-आधेक बदलाउ तअ हेबेइ करइक। इ पाड़सि आदि जुगले एखन तड़िक कतेक घेसाइल आर मांजाइके हालुक जुगे आइल आहेइक। एहे पाड़सिंइ आदि जुगले चलि आइल मउखिक पुरखउति साहितेक लिखित निहिं हेउएक कारअने एकर बिकासे हेल परिबरतनकर बेस करि टउआ-ठेकान निहिं पाउआइक। जेसे - जेसे इ पाड़सिक हड़े निजेक सइभइता आर चारिकर बिकास करलेइ आइल आहात, असने - असने एकर पाड़सि माहाउ बिकास हेलेइ आइल आहेइक। कनअ पाड़सिक बिकास अकर साहितके फाराक राखिके करा समभउए निहिं हेकेइक। इ पाड़सि साहितकर बिकांस माहान पुरखउति कालाकारेक एक बेजांइ बड़अ जउगदान सुरुलेइ आहेइक। जेगिलाक भितर गित, झुमइरेक नामे जानअल जाइक।

साहितेक दिगेले देखे गेले कुड़मालि पाड़सि, एकर नाना बिधा माहान पाउअल पुरखउति साहित माहान पाउअल जाइक। जेटांइ पुरखउति गित, पुरखउति गाथा, पुरखउति कथा, पुरखउति नाइच, मंतरअ, आहना, डाकपुरुसेक कथा, जान केहनि, छउआ भुला गित आरअ इटा सेटा। आदिम बेरांइ पाड़सिक बिकासेक लेइ कनअ तइ साहितेक बिधा निहिं रहलेइक। तेंइ निजेक नेगि-चारिक अनुजांइ पुरखउति साहित कर बिकास हेल आहेइक। एहे बिकासे कुड़मालि पाड़सि करअ बिकास हेल आहेइक। हेले सझे बुझल जाइ पारइक, जन पाड़सि कर आइज ले 40 बछर पेहिल काहुं कनअ इसकुल कलेजे पढ़ा-सुना निहिं हेउए हेलेइक, ना कनअ राइज पाटकेक पाड़सि कहि कनअ राजांइ ठाइन देल आहेइक, एसअने एकर भितर किना एसन गुन, सभाब, परकिति आहेइक जे आइज लट-के-लट बछर धरि मंखिके पड़चि आइल आहेइक?

पुरखउति साहितेक बिकासेक संगे - संगे कुड़मालि पाड़सि करअ बिकास हेल आहेइक। जदि एकर बिकास पुरखउति साहितेक बादे सइभ साहितेक उपर नजइर गड़ाइए, ता हेले सउब ले पेहिल कुड़मालि पाड़सिक ठाइन बउध साहित माहान पाउअल जाइक। गउतम बुधे निजेक धरमेक परचार करेक खातिर गांउएक पाड़सिके माइधम बनाल। एकर भितर कुड़मालिअ रहलेइक। तेंइ इसाक 500 बछर पेहिल 'बउध गान' माहान कुड़मालि पाड़सिंइ केइएक गअ पद

आहेइक। एकर परे 700 सालेक आसे-पासेक रचना करल 'चरआपद' जेटा नेपाले रहलेइक। मनतुक, 1051 साले माहा माहापाइधइआ आर हरपरसाद सासतिरिंइ उहांले चरआपदके लेइ आनल। जेटांइ लुइ पाद आर भुसु पाद नामेक दना गअ कुड़मि आर कुड़मालि पाड़सिक पदअ करता रहल।

एकर परे बड्डु चंडिदास, एखरा कुड़मालिक बेजांइ गित आर कबिता कर रचना करल आहात। एकर रचना 1350 सालेक आसे-पासे हेल आहेइक। एखरा निजेक भकति भाउले ना खालि कुड़मालि गित, कबिता करेइ रचना करल बरंग आरक एकर पाड़सि कुहुं बेजांइ दुर - दुर तड़िक पड़चाइएक काम करल।

एकर परे बरजुराम तांति (1720), बिनंद सिंह (1770) ले 1900 तड़िक कुड़मालि पाड़सिके मखिक भाभे जगाइ राखेक काम बेजांइ गितकार, झुमअइरा आर भकति कबि सउभे करल आहात। 1902 साले जारजअ गिरिअसने कुड़मालिके निजेक पथिंइ 'कुड़मालि ठार' नामले चिनहाप देल आहेइक। भारअतेक पाड़सि सरबेछन माहान कुड़मालि पाड़सिके भांउअरे बांधेक बेजांइ बड़अ कसनि करल आहेइक। 1921 साले उड़िसाक राजा निरंजन माहतंइ 'नेठापाल', 1953 साले राजेंदरअ परसाद माहतंइ 'कपिला मंगला' नामेक पथि निखराल।

कुड़मालि पाड़सिक लेइ सउबले पेहिल 1962 साले सांति निकेतनले डा. एन. के. सिंगे पिएच. डि. करल। 1973 साले खुदिराम माहतंइ कुड़मालि पाड़सिक भांउअर बनाइएक बेजांइ बड़अ कसनि करल। 1982 साले सइआम सुंदर माहतक पेहिल भांउअर 'कुड़मालि बेइआकरन' नामले निखराल। 1986 साले अनंत केसरिआरे साधिन भाभे 'कुड़मालि भांउअर' कर रचना करल। एहे डुल पुरा 20 उआं सताबदि माहान छाड़ेक आधेक सउब पइखेक दिगेले कुड़मालि पाड़सिक लेइ काम हेल आहेइक।

2002 साले पतित पबन माहतक 'कुड़माली भांङअर', 2007 साले डा. ससि भुसन माहतक 'कुड़मालि भांउअर', 2011 साले अनंत केसरिआरेक 'कुड़मालि भांउअर' निखरल, जेटांइ कुड़मालि पाड़सिक नाना जिनिसके एक ठिन ठाइन देल आहेइक। 2012 साले निताइ चंदरअ माहतक 'हालुक कुड़मालि भांउअर आर रचना' निखरल। जेटांइ ना खालि कुड़मालि भांउअरेक नाना जिनिसके राखल आहेइक बरंग आरअ पुरखउति टुम, लेटर राइटिंइ, खांटअ टुम आर रचना कुहुं ठाइन देल आहेइक। इटा कुड़मालि भरल-पुरल भांउअरेक पथि कहे पारिए। एकर पेहिल 2011 साले सिबांगन पबलिकेसनेक 'कुड़मालि भासा सिकखन आर साहित' एकरेइ निखरन हेल आहेइक। एकर छाड़ा ढेइर आरअ पथि आर चिठि-पतरिका माहान कुड़मालि पाड़सिक बिकासेक चिनहाप पाउआइक। एहे डुल दिनके दिन कुड़मालि पाड़सिक बिकास सउब दिगे दिले हेउअ हेइक।

❖❖❖

# 3. कुड़मालि चिसेक धंचर

## (कुड़मालि लिखने की शैली)

आइज तड़िक कुड़मालि पाड़सिक निजेक लिपिकर उचित बिकास निहिं हेल आहेइक। तेंइ कुड़मालि चिसेक खातिर एखन बांगला, नागरि आर उड़िआ जेसन टेना गअ लिपि माहान कुड़मालि साहितेक सिरजन हेतेइ आइल आहेइक। जाकर धमस तंतरअ आलेदा - आलेदा आहेइक। मनतुक, झारखंडे बेसिकरि साहित नागरि लिपिहिं चिसल आहेइक आर एखनउ निधक नागरि लिपिहिं चिसा हेइक। तेंइ इहांक बिदुआन सउभे नागरि लिपिके एखनेक पारा मानक लिपि मानल आहात। मटा-मटि साइट बछर परुहुं एहे पाड़सि एखन रिचेक-आधेक आल-ले-ठाढ़ हेल आहेइक। संसारेक सउब पाड़सिक निजेक - निजेक धमस आर धमस तंतरअ रहइक। जेटाक दारासे उ पाड़सि आर अकर साहितकर सिरजन करल जाइक। असनेइ कुड़मालि पाड़सि करअ एकर चिसेक एक आलेदा धंचर आहेइक। जेटा एकर चिसेक निअम कहल जाइक। जेटाक भितर कुछु खंड़ एहे डुल आहेइक :-

➪ 1. इ पाड़सिके चिसेक बेरांइ पाइन (प्रत्यय), परिक (कारक) चिनहागिला गड़ा साड़ाले जड़ाइके चिसल जाइक। जेसन :- कानाक (अंधा का), आसरांइ (इंतजार में), हिबड़ाइके (किनारे करके), आंड़राइस (रो रहा हैं) इटासेटा।

➪ 2. कुड़मालिके नागरि, बांगला बा उड़िआ लिपि माहान चिसेक घड़ि खालि उसरअनि (स्वर) आखड़ कर बेबहार करल जाइक। संगे - संगे एकर मातरा कर बेबहार एकर भजानु (व्यंजन) आखड़ माहान बेबहार हेउअइक।

➪ 3. जन करम माहान कनअ साड़ाक धमसके उचराउअल जाइक अहे करम माहान साड़ाक सउब आखड़के लिखल जाइक।

➪ 4. इ पाड़सिके उचराउएक बेरांइ कनअ लिपिक धमसकर लउप (लोप) निहिं हेउअइक। जेसन उचराउअल जाइक तेसनेइ चिसलअ जाइक। माने उचराउल धमस आर अकर लिपिंइ चिसेक बेरांइ कनअ तफात निहिं हेउएक चाहि। जेसन :- इसकुल (स्कूल); ठाइन (स्थान) सिनान (स्नान) टेसन (स्टेशन) साड़ागिलाके हिनदिं उचराउएक बेरांइ 'अ' उचराउथिक आर 'स' चिसथिक।

❖❖❖

# 4. कुड़मालि आखड़ेक निअम

## कुड़मालि में प्रयुक्त वर्णमाला के नियम

➪ **निअम :- 1.** कुड़मालि चिसेक घेड़ि नागरि लिपिक कुछु आखड़कर (वर्ण) बेबाहार निहिं हेउअइक। जेसन :- ङ, ञ, ण, य, व, ष, श, क्ष, त्र, ज्ञ, ऋ, श्र, ओ, औ, ई, ऊ, ऐ, अः आदि।

(हिन्दी अनुवाद - कुड़मालि भाषा लिखते समय कुछ वर्णों का प्रयोग नहीं होता है। जैसे :- ङ, ञ, ण, य, व, श, ष, क्ष, त्र, ज्ञ, ऋ, श्र, ओ, औ, ई, ऊ, ऐ अः इत्यादि)

➪ **निअम :- 2.** कुड़मालि पाड़सि चिसेक घेड़ि एहे - एहे आखड़कर बेबाहार हेउअइक। जेसन :- क, ख, ग, घ, च, छ, ज, झ, ट, ठ, ड, ढ, त, थ, द, ध, न, प, फ, ब, भ, म, र, ल, स, ह, ड़, ढ़।

➪ **निअम :- 3.** एहे पाड़सि माहान कन डुल व ले ब; ज्ञ ले ग, श आर ष ले स; ऋ ले रि; रू ले रु; क्ष ले छ इटासेटा आखड़गिला चिसल जाइक। जाकर निमुंद एहे डुल आहेइक :-

| हिन्दी | - | कुड़मालि | हिन्दी | - | कुड़मालि |
|---|---|---|---|---|---|
| यज्ञ | - | जअगि | वन | - | बन |
| व्यवहार | - | बेबाहार | ऐनक | - | आरसि |
| ज्ञान | - | गिआन | याद | - | इआद |
| शिक्षा | - | सिकखा | व्यापार | - | बेपार |
| विवाह | - | बिहा | शेष | - | सेंस |
| वर | - | बर | ऋषि | - | रिसि |
| रक्षा | - | रइकखा | गुण | - | गुन |
| यात्रा | - | जाउआ | यत्न | - | जतन |
| शुरू | - | सुरु | रूपया | - | टाका |
| रूठना | - | रागि जाउआ | रूप | - | गढ़हन |

➪ **निअम :- 4.** कुड़मालि पाड़सिके चिसेक घड़ि भजानु आखड़ें (व्यंजन वर्णें में) दमालु उसरनि आखड़ेक मातराकर (दीर्घ स्वर वर्ण के मात्रा का) बेबाहार निहिं हेउअइक। जेसन :-

| हिन्दी | - | कुड़मालि | हिन्दी | - | कुड़मालि |
|---|---|---|---|---|---|
| वीर | - | बिर | कांटी | - | जलइ |
| दही | - | देहि | घी | - | घिउ |
| भैस | - | मेहिस | बैल | - | गरु |
| ऊपर | - | उपर | स्कूल | - | इसकुल |
| चौड़ाई | - | असार | ऊपाइ | - | उपाइ |

➪ **निअम :- 5.** कुड़मालि पाड़सिके चिसेक घड़ि जड़ाइल भजानु आखड़कर बेबाहार निहिं हेउअइक। जेसन :- क्ष, ज्ञ, त्र, य इटासेटा।

| हिन्दी | - | कुड़मालि | हिन्दी | - | कुड़मालि |
|---|---|---|---|---|---|
| छात्र | - | पढुआ | नेत्र | - | आंइख |
| त्रिसुल | - | तिरसुल | त्रैमासिक | - | टेनामासिआ |
| त्रिभुज | - | तिनकनिआ | गाय | - | गाइ |
| तैयार | - | तेइआर | खटिया | - | खाइट |
| क्षैत्रीय | - | छेतरिअ | क्षेत्र | - | छतरअ |
| ज्ञान | - | गिआन | विज्ञान | - | सर |

➪ **निअम :- 6.** कुड़मालि पाड़सिके चिसेक घड़ि आधा आखड़कर बेबाहार निहिं हेउअइक। माने खालि गटा - गटा आखड़कर बेबाहार साड़ा माहान हेउअइक। (कुड़मालि भाषा को लिखते समय संयुक्त वर्ण का प्रयोग नहीं होता है।) जेसन :-

| हिन्दी | - | कुड़मालि | हिन्दी | - | कुड़मालि |
|---|---|---|---|---|---|
| अच्छर | - | आखड़ | अच्छा | - | बेस |
| बच्चा | - | छउआ | शब्द | - | साड़ा |
| मच्छर | - | मखरि | स्वर | - | उसरउनि |
| व्यंजन | - | भजानु | साहित्य | - | साहित |
| बिल्ली | - | बिलाइर | कच्चा | - | कांचा |

➪ **निअम :- 7.** कुड़मालि चिसेक घड़ि ऌ, ॡ, क्र, र्क, द्र, क्त, त्त, द्य, द्व, द्ध, ट्ट, ट्ठ, ड्ड, द्द, द्ध, च्च, ह्य, ह्न, ह्म, ह्य, क्क, ङ्ग, ङ्क, ङ्ख, ङ्ग आरअ इटासेटा आखड़ सब बेबाहार निहिं हेउअइक। जेसन :-

| हिन्दी | - | कुड़मालि; | हिन्दी | - | कुड़मालि |
|---|---|---|---|---|---|
| कृति | - | किरति | क्रय | - | किना |
| कर्म | - | काम | द्रव्य | - | देरिब |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| भक्ति | - | भकति | उत्तर | - | जबाब |
| विद्यालय | - | इसकुल | द्वारा | - | दारा |
| खड्डा | - | चेंका | गड्ढा | - | गाड़हा |
| हृदय | - | धुक-धुकि | चिन्ह | - | दागि |
| चक्का | - | चाक | उद्देश्य | - | धेइ |

➪ **निअम :- 8.** कुड़मालि पाड़सिक गड़ा साड़ांइ एक - एक करि पाइन जड़ाइतेइ जाइक आर दसर - दसर माने बाहरातेइ जाइक। जेसन :-

पढ़ + आ = पढ़ा + इ = पढाइ

(पढ़ना पढ़ पढ़ाई)

डहर + आ = डहरा + इ = डहराइ+ के = डहराके

(रास्ता चलाना चलाइये चलाकर)

गड़ + आ = गड़का + उ = गड़काउ + एं = गड़काउएं

(पैर चलना (क्रिया) चलाना चलाये)

➪ **निअम :- 9.** कुड़मालिंइ एक लेखाले संगि लेखा बनाइएक खातिर 'गिला' आर 'गिलि' पाइन लागाइल जाइक। (कुड़मालि में एक वचन से वहु वचन बनाने के लिए 'गिला' और 'गिलि' प्रत्यय जोड़ा जाता है।) जेसन :-

| हिन्दी | एक लेखा | पाइन | | संगि लेखा | हिन्दी |
|---|---|---|---|---|---|
| लड़की | बेटि + | गिलि | = | बेटिगिलि | लड़की सब |
| पाड़ा | काड़ा+ | गिला | = | काड़ागिला | पाड़ा सब |
| वह | उ + | गिला | = | उगिला | वे सब |
| भैड़ी | अढ़ाइर | + गिलि | = | अढ़ाइरगिलि | भैड़ी सब |
| बकरा | पाठा + | गिला | = | पाठागिला | बकरा सब |

➪ **निअम :- 10.** कनअ चिजेक गनेक पअरे 'गअ' आर गनतिक पेहिल 'गटा' जड़ाइल जाइक। जेसन :-

| | |
|---|---|
| अना गअ | चार; (निश्चय वाचक) |
| दना गअ | दो |
| गटा टेना-चाराक | तीन-चार; (अनिश्चय वाचक) |
| गटा नउएक-सिहमेक | नौ-दस |

❖❖❖

# 5. पाड़सि आर भांउअर

## (भाषा और व्याकरण)

➪ **पाड़सि :-** पाड़सि उ एक साधन हेकेइक, जाकरले हामरानि निजेक मनेक भाउ दसराक पासे बरकाइए। इटा खालि एक मनेक भाउ बरकाइएक तरिका हेकेइक।

➪ (भाषा वह साधन है, जिससे हम अपने मन के भाव दूसरों के समझ प्रकट करते हैं। वस्तुतः यह मन के भाव को प्रकट करने का तरीका या प्रकार मात्र है।)

➪ बेबाहारेक ठेहअड़े पाड़सिक दना रकमेक हेउअइक।

(क) मखिक आर (ख) लिखित

**(क) मखिक :-** जन पाड़सि गिला मखिक भाभे अना पिढ़ि-ले-पिढ़ि हेइके एखन तड़िक पड़चल आहेइक। जाकर कनअ तइ भांउअर निहिं रहइक। जेटा ठाइनेक अनुजांइ रिचिक-आधेक तफात पाउआइक, अके मखिक पाड़सि कहाइक। एके बलिअ कहथिक। जेसन कुड़मालिक भिनु - भिनु रुपके एकर मखिक पाड़सि कहल जाइ पारइक। तामाड़िआ कुड़मालि, सिलिआ कुड़मालि, झाइलदिआ कुड़मालि आरअ इटासेटा।

**(ख) लिखित :-** जन मखिक पाड़सिक बउलिके तइ मानिके अकर साहित सिरजन, अकर भांउअर बनाइल जाइक, जेटाके लिखित पाड़सि कहथिक। एके साहितेक पाड़सिअ कहथिक। एक पाड़सिक केइएक गअ मखिक पाड़सि बा बउलि हेउए पारइक। जेटांइ नाना रकमेक गित, कबिता, केहनि, नाटक, फेदड़न चिसल जाइक। लिखित पाड़सिक बेसि जेइगाइ पढ़ाइ हेउअइक। लिखित पाड़सिके कनअ पाड़सिक मानक रुप मानल जाइक।

➪ **भांउअर :-** भांउअर उ सासतरअ हेकेइक, जेटाले कनअ पाड़सिके बेस कअरि चिसेक, पढ़ेक, फदरेलाइ सिखल आर सिखाइल जाइक।

➪ (व्याकरण वह शास्त्र है जो किसी भाषा को शुद्ध रूप से लिखना, पढ़ना तथा समझना सीखाता है।)

➪ कुड़मालि भांउअरके चारा खंड़े खंड़अल जाइ पारअइक :-

(क) कड़ हेला (वर्ण विचार)

(ख) साड़ा हेला (शब्द विचार)

(ग) गढ़हन हेला (रूप विचार)

(घ) टुम हेला (वाक्य विचार)

कुड़मालि अना गअ सुबेबसथिक पाड़सि हेकेइक। जाकर निजेक भांउअरेक सभाबेक (बिशेषताके) कारअने दसर बउलि आर पाड़सिले निजेक मान राखल आहेइक।

➪ (कुड़मालि एक सुव्यवस्थित भाषा है, जो अपनी व्याकरणिक विशेषता के कारण दूसरी बोली और भाषा में अपना स्वतंत्र अस्तित्व रखती है।)

➪ **लिपि :-** कुड़मालिक निजेक कनअ बिसेस बेबाहारिक लिपि निहिं आहेइक। ताकर माने एकर लिपि निहिं आहेइक? सेहउ कथा निहिं हेकेइ। मनतुक, अकर मानकिकरन निहिं हेइक कारअने एकर लिपिंइ पथि चिसा निहिं हेल आहेइक। एखन तड़िक कुड़मालि पाड़सिक साहित सउब नागरि, उड़िआ आर बांगला लिपिंइ चिसल गेल आहेइक आर एखनअ एहे चिपिहिंइ चिसाहेइक। ताकर खातिर चलति बेरांइ नागरि लिपिंइ बेसि भागे कुड़मालि साहित कर सिजजन हेउअ हेइ।

## कुड़मालि लिपिक इतिहांस

| | | |
|---|---|---|
| खुदिराम महतो | - | 1973 |
| पसचिम बंगाल कुड़मालि एकाडेमि | - | |
| लखिकांत मुतरुआर | - | 1996 |
| सपन महतो | - | 2008 |
| निताई चंद्र महतो | - | 2011 |

उपरेक पाड़सि बिदेक बनाइल लिपि बेसि भागे आखड़िक लिपि हेकेइक। खालि सपन माहतअ आर निताइ चंदरअ माहतक बनाइल लिपि बरनातमक हेकेइक।

➪ वर्तमान में कुड़मालि भाषा को तीन प्रमुख लिपियों में इसके साहित्य को लिखि जा रही है।

बंगाल में - बांगला लिपि
उड़िसा में - उड़िया लिपि
झारखंड में - नागरि लिपि

❖❖❖

# 6. उसरउनि आर भजानु

## (स्वर और व्यंजन)

➪ कुड़मालिक उसरनि आर भजानुकर मटा-मटि हिनदिक पाराइ आहेइक। मनतुक, साड़ांइ एकर उचरन हिंदिले रिचेक-आधेक तफाते उचराउथिक।

➪ (कुड़मालि के स्वर और व्यंजन लगभग हिन्दी के जैसा ही है परन्तु शब्दों में इसका उच्चारण हिंदी से थोड़ा बहुत भिन्न तरिके से उच्चारित होती है।)

➪ **उसरनि** :- अ, आ, इ, ए, उ, अउ आर ं कर खालि बेबाहार हेउअइक। एकर छाड़ि आर कनअ उसरनि कड़कर (वर्ण) बेबाहार निहिं हेउअइक।

सउब मिलाइ - 07 गअ

**भजानु** :- क खंड़कर - क, ख, ग, घ,
च खंड़कर - च, छ, ज, झ,
ट खंड़कर - ट, ठ, ड, ढ, ड़, ढ़
त खंड़कर - त, थ, द, ध, न
प खंड़कर - प, फ, ब, भ, म
अंतस्थ - र, ल, अंग एवं
उष्म वर्ण - स, ह (कुल- 29 व्यंजन वर्ण)

➪ (एकर छाड़ि आर दसर आखड़कर बेबाहार कुड़मालि माहान निहिं हेइक। कुड़मालि के 'अउ' स्वर और 'अंग' व्यंजन वर्ण के लिए देवनागरी में लिपि नहीं है इसलिए इसको ऐसे ही चिसा जाता है। जैसे :- धउ, कउआ, नउआ, पउआ इत्यादि।

➪ 'अंग' वर्ण का प्रयोग इस प्रकार होता है :- फड़िंग, ढिंगढांग, सिंग, हिड़िंग, डिंग, चंग, तंग, भंग, संग इत्यादि।

➪ कुड़मालि में किस तरह से नागरी लिपि का व्यवहार होता है, उसका यहां उदाहरण स्वरूप दिया गया है।

1. 'ण' के स्थान पर 'न' का प्रयोग होता है। यानी कहीं पर 'ण' का प्रयोग नहीं होता है। जैसे :-

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गुणा | - | गुना | गुणी | - | गुनि |
| गुणकारी | - | गुनकारि | प्रमाण | - | परमान |
| वर्ण | - | आखड़ | परिणाम | - | परिनाम |

2. 'य' का प्रयोग नहीं होता है इसके स्थान पर 'ज', 'इअ' प्रयोग होता है। जैसे :-

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| यदि | - | जदि | याद | - | इआद; |
| क्यारी | - | किआरि | यज्ञ | - | जगगि |
| तैयार | - | तेआर | यही | - | एहे |

3. 'क्ष' के स्थान पर 'छ', 'ख' का प्रयोग होता है। जैसे :-

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| क्षति | - | खति | क्षमा | - | खमा |
| शिक्षा | - | सिखा | शिक्षा | - | सिकखा |
| क्षेत्र | - | मुलुक | क्षय | - | खइ |

4. 'त्र' एवं 'ज्ञ' का भी प्रयोग कुड़मालि में नहीं होता है। इसके स्थान पर पुरा 'तरअ' एवं पुरा 'ग' का प्रयोग होता है। जैसे :-

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| छात्र | - | छातरअ | त्रिशुल | - | तिरसुल |
| ज्ञान | - | गिआन | विज्ञान | - | बिगगान |
| ज्ञात | - | टउआ | ज्ञानी | - | गिआनि |

5. 'व' के स्थान पर 'ब' का प्रयोग होता है। जैसे :-

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वन | - | बन | वाह | - | बाह |
| वर्षा | - | बेइरसा | विश्वास | - | बिसास |
| वही | - | अहे | वैसा | - | असन |

6. 'ृ', 'ऋ', 'ि', का प्रयोग नहीं होता है। इसके स्थान पूरे 'र' वर्ण का प्रयोग होता है। जैसे :-

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कृपा | - | किरपा | क्रिया | - | किरिआ |
| वर्ष | - | बछर | कर्म | - | काम |
| चक्र | - | घुरनि | कृष्ण | - | किसना |

7. 'श' एवं 'ष' के स्थान पर केवल 'स' का प्रयोग होता है। जैसे :-

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| देश | - | देस | शंख | - | सांख |
| आषाढ़ | - | आसाड़ | विशेष | - | बिसेस |
| शासन | - | सासन | शेष | - | सेंस |

8. 'ञ' के स्थान पर 'इंअ' एवं 'ङ' के स्थान पर 'उअ' का प्रयोग होता है। जैसे :-

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| माञ | - | माइ | अञ | - | अंइ |
| भांङर | - | भांउअर | गाङ | - | गांउ |

❖❖❖

# 7. साड़ा हेला

## (शब्द विचार)

अना किमबा अनाले बेसि आखड़ले बनल एसन आखड़ेक गठके साड़ा कहाइक, जाकर कनअ तइ माने बाहराइक। जेसन :- गाइ, आड़ात, ठाइन, दंहगि, गहाइर, खाइट, आड़ास, हेंट इटासेटा।

➪ (एक या एक से अधिक वैसे अक्षरों के समूह को शब्द कहते हैं, जिसका कोई सार्थक अर्थ होता है।)

➪ कुड़मालि पाड़सिंइ जड़ाइल साड़ा बेसि भागे पाउअल जाइक। एकर साड़ागिला बड़अ - बड़अ करिके रहइक। एसन तअ सउभे साड़ाक कनअ-ना-कनअ माने बाहराइक। मनतुक, कुड़मालि पाड़सिंइ एसनउ साड़ा आहेइक, जाकर कनअ बिसेस माने निहिं बाहराइक। जाके भाउआतमक साड़ा कहाइल जाइक। जेसन :- अ अ, उ रे, हाइ रे!, धेइत, हेइट, धउ, बाह, कांइ, उह! इटासेटा।

➪ भांउअरेक अनुजांइ दना रकमेक साड़ा कनअ पाड़सि माहान बेबहार हेउअइक। जाकर भांउअर माहान कनअ तइ ठाइन आहेइक।

➪ **(क) गड़ा मानेक साड़ा** :- जाकर निजेक कनअ तइ माने रहइक। जेसन :-

1. दांजा साड़ा (संज्ञा शब्द)
2. अइजि साड़ा (सर्वनाम शब्द)
3. गुनिन साड़ा (विशेषण शब्द)
4. सरान साड़ा (क्रिया शब्द)
5. गुनिन सरान (क्रिया विशेषण शब्द)

➪ **(ख) धंचरइआ मानेक साड़ा** :- जाकर निजेक कनअ तइ माने निहिं रहइक। मनतुक, गड़ा साड़ांइ जड़ाले गड़ा साड़ाक माने बदलाइते उसास करइक। जेसन :-

1. चिनहानेक साड़ा (लिंग वाचक शब्द)
2. झन बाचिक साड़ा (पुरूष वाचक शब्द)
3. लेखा बाचिक साड़ा (वचन वाचक शब्द)
4. पाइन (प्रत्यय)
5. मुहाइन (उपसर्ग)
6. लुठु साड़ा इटासेटा।

❖❖❖

# 8. दांजा

## संज्ञा

'दांजा' माने नामित हेउअइक। जेटांइ कनअ झन, जाइत-पाइत, जिनिस, ठाइन, भाउकर बाचिक पाउआइक, अके दांजा (संज्ञा) कहाइल जाइक। जेसन :- लअहा, गाइल, नेदि, पहाड़ इटासेटा। इठिन **'दांजा'** एक नउतुन साड़ाकर बेबहार हेल आहेइक। दांजा साड़ा 'बाना बिछां' ले जड़ाइल आहेइक। जाकर माने नामकरन करा हेउअइक। हिंदिइ एहे **संज्ञा** आर इंगलिस माहान Noun हेइक। दांजा साड़ा तखन बेबहार हेउअइक जखन काकरअ नामकरन करल जाइक बा दांजल जाइक।

➪ **दांजाकर रकम** :- कुड़मालि भांउअरेक अनुजांइ दांजा मांचा रकमेक हेउअइक।

(क) झनगि बाचिक दांजा (व्यक्ति वाचक संज्ञा)
(ख) गठ बाचिक दांजा (जाति वाचक संज्ञा)
(ग) देरिब बाचिक दांजा (द्रव्य वाचक संज्ञा)
(घ) डिंग बाचिक दांजा (समुह वाचक संज्ञा)
(च) धेइ बाचिक दांजा (भाव वाचक संज्ञा)

**(क) झनगि बाचिक दांजा** :- जन दांजा साड़ाले कनअ खास झन, जाइत,धरम, देस, ठाइन, परब-तिहार, दिन, मास आर पहर कर बाचिक हेइक, अके झनगि बाचिक दांजा कहथिक। जेसन :- पाइना, सबरनेखा, रांचि, दिललि, ढाका, महना, करम, बांदना, आखांइन, रहइन, निरमल, बिरसा, रधुनाथ, तिलका आरअ इटासेटा।

**(ख) गठ बाचिक दांजा** :- जन दांजा साड़ाले कनअ जिनिसेक किमबा जिउकर गउटे जातिक बाचिक पाउआएक, अके गठ बाचिक दांजा कहथिक। जेसन :- नेदि, पाहाड़, नाला, गाइ, बेहिन, चार, दाइल, डहर, गांउ, कुलहि, पांइख, सहर, सांप, कलम, देस, राइज, डुंगरि, गाइछ आरअ इटासेटा।

➪ *गठ बाचिक दांजा एहे इसथितिंइ हेउअइक*

1. **नाता, पद, बेपार आर कामेक नामे** :- दिदि, मासटर, माछ धअरा, कुलि-काम, गरखि, मुनिस।
2. **पांइख-पाखुड़ेक नामे** :- पेरुआ, छागअइर, कटअइर, गाइ, गाधा, कुकुर, भालुक।
3. **जिनिसेक नामे** :- माचि, घेड़ि, बाड़हिन, पथि, खापड़ा, टि. बि।

4. **परकितिक जिनिसेक नामे :-** दुइन, बातास, भुइकंपअ, ठेर, तातल धअका।

**(ग) देरिब बाचिक दांजा :-** जन दांजा साड़ाले कनअ धातु किमबा कनअ छुअइआ जिनिसेक नाम कर बाचिक पाउआएक, अके देरिब बाचिक दांजा कहथिक। जेसन :- नुन, डिम, मडुआ, कुरथि, बिरहि, सेकरकांदा, बेदअना, लअहा, रुपा, माटि, पिठा, कुटि, खानि, गाइद आरअ इटासेटा।

**(घ) डिंग बाचिक दांजा :-** जन दांजा साड़ाले कनअ झन किमबा जिनिसकर भिड़-भाड़, गठ हेउएक निमुंद पाउअएक, अके डिंग बाचिक दांजा कहथिक। जेसन :- गरुगठ, मेला टाइड़, दंहगि, कुधि, सेना, भिड़ आरअ इटासेटा।

**(च) धेइ बाचिक दांजा :-** जन दांजा साड़ाले कनअ जिनिसेक नाम छाड़ि कनअ झनेक किमबा जिनिसेक गुन-धरम, दअसा, हाउ-भाउकर बाचिक पाउआइक, अके धेइ बाचिक दांजा कहथिक। जेसन :- फुरति, चेठा, देइआ, माइआ, पढ़ाइ, जुआनि, असार, चउछालि, लहरा, लालिस, गुड़िअ, हांसि आरअ इटासेटा।

➪ कुड़मालि भाषा में कुछ ऐसे शब्द है जो मूल रूप से भाव वाचक संज्ञा है तथा कुछ दूसरे शब्दों से भाव वाचक संज्ञा बनता है।

➪ ***एकर तेंहे कुड़मालि धेइ बाचिक दांजा दना रकमेक हेइक।***

(क) आबगा धेइ बाचिक दांजा (Pure Abstractive Noun)

(ख) जड़ाइल धेइ बाचिक दांजा (Formal Abstractive Noun)

**(क) आबगा धेइ बाचिक दांजा :-** जन धेइ बाचिक दांजा साड़ा सुरुले गड़ा धंचअरे रहअइक, अके आबगा धेइ बाचिक दांजा कहथिन। जेसन :- फुरति, चेठा, हुब, गहगहि, देइआ, घिन, गहगहि, सारना, हिंदु, इसाइ, बउध, जेइन पारसि आरअ इटासेटा।

**(ख) जड़ाइल धेइ बाचिक दांजा :-** जन धेइ बाचिक दांजा साड़ाला दसर आरअ कनअ रकमेक साड़ाले बनअइक, अके जड़ाइल धेइ बाचिक दांजा कहथिन। जेसन :- गुनिन, सरान अइजि आरअ इटासेटा। तेंइ एकर धंचर भिनु - भिनु हेउअइक।

➪ ***जड़ाइल धेइ बाचिक दांजाकर गढ़न***

**(क) गठ बाचिक दांजा ले :-** पंडित - पंडितगिरि; छउआ - छउआलि।

**(ख) गुनिन ले :- दालाल** - दालालगिरि; माताल - मातालगिरि; जादु - जादुगिरि।

**(ग) सरान ले :-** पढ़ा - पढ़ाइ; पिटा - पिटाइ; चिपा - चिपाइ; काटा - काटाइ।

**(घ) अइजि ले :-** निज - निजेक/निजेकडुल।

## ⇨ भाव वाचक संज्ञा बनाने का नियम

1. **गठ बाचिक दांजा ले धेइ बाचिक दांजा :-** कुड़मालि माहान कुछु गठ बाचिक साड़ाके धेइ बाचिक साड़ा बनाउअल जाइ पारअइक। गठ बाचिक साड़ा माहान पाइन जड़ाइके धेइ बाचिक साड़ा बनाउअल जाइक। जेसन :- आनि, गिरि

| **गठ बाचिक ले धेइ बाचिक;** | | | **गठ बाचिक ले धोइ बाचिक** | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गुरु | - | गुरुआनि | धिंगुआड़ | - | धिंगुआनि |
| मासटर | - | मासटरगिरि | डाक्टर | - | डाक्टरगिरि |
| बागाल | - | बागालगिरि | बाढ़अइ | - | बाढ़अइगिरि |
| मुनिस | - | मुनिसगिरि | मिसतिरि | - | मिसतिरिगिरि |
| अझा | - | अझागिरि | चुथार | - | चुथरगिरि |
| पेटकार | - | पेटकारगिरि | नेता | - | नेतांगिरि |

2. **गुनिन ले धेइ बाचिक दांजा :-** गुनिन साड़ा माहान गिरि, आइ, इआ, नि अल, सि आरअ इटासेटा पाइन जड़ाले धेइ बाचिक साड़ा बनअइक। जेसन :-

| **गुनिन ले धेइ दांजा;** | | | **गुनिन ले धेइ दांजा** | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सिआन | - | सिआनगिरि | चमक | - | चमकुआ |
| साफा | - | साफाइ | रंग | - | रंगिआ |
| गुन | - | गुनकारि | मटा | - | मटानि |
| बदमास | - | बदमासि | चेका | - | चेकाल |
| फुहड़ | - | फुहड़गिरि | दालाल | - | दालालगिरि |
| बुइध | - | बुइधगिरि | बाबु | - | बाबुगिरि |

3. **सरान ले धेइ बाचिक दांजा :-** कुछु सरान साड़ा माहान आइ पाइन जड़ाउले धेइ बाचिक दांजा साड़ा बनअइक। जेसन :-

| **सरान ले धेइ बाचिक; सरान** | | | **ले धेइ बाचिक** | | |
|---|---|---|---|---|---|
| लढ़ा | - | लढ़ाइ | पढ़ा | - | पढ़ाइ |
| डरा | - | डराइ | रांधा | - | रांधाइ |
| रपा | - | रपाइ | पअता | - | पताइ |
| जड़ा | - | जड़ाइ | काचा | - | काचाइ |
| फुटा | - | फुटानि | कांदा | - | कांदाइ |
| रटा | - | रटाइ | चटा | - | चटाइ |
| फुटा | - | फुटानि | डहरा | - | डहरा |

❖❖❖

# 9. चिनहान आर लेखा

## (क) चिनहान (लिंग)

चिनहान दांजाकंर एक एसन चिनहा हेकेइक, जेटाले दांजा साड़ाक भितरेक नर किमबा मेदि हेउएक बाचिक पाउआइक।

⇨ ***चिनहानेक रकम :- चिनहान दना रकमेक हेउअइक।***

(क) बाचिक चिनहान आर (ख) बे-बाचिक चिनहान

**(क) बाचिक चिनहान :-** जन दांजा साड़ाले कनअ नर किमबा मेदि हेउएक फेरिछकरि बाचिक पाउआइक, अके बाचिक चिनहान कहाइक। जेसन :- गाइ, जेनि, मरद, कुकुर, बिलाइर, काड़ा, हलआइन, अढ़ाइर, मुरगा, मेहिस, कुकुर, कटइर इटासेटा।

⇨ ***बाचिक चिनहान दुइ रकमेक आहेइक***

1. **नरा चिनहान (पुंलिंग) :-** जन दांजा साड़ाले नर जातिक बाचिक पाउआएक, अके नरा चिनहान कहल जाइक। जेसन :- मरद, पांठा, काड़ा, कटास, भेड़ा, दामड़ा, बेटा, नुनु, फुफा, सांढ़, बाप, बहनइ, पिला इटासेटा।
2. **मेदि चिनहान (स्त्रीलिंग) :-** जन दांजा साड़ाले मेदि जाइतकर बाचिक पाउआइक, अके मेदि चिनहान कहल जाइक। जेसन :- गाइ, अढ़ाइर, हलुआनि, पाँठि, नुनि, ननंद, भउजि, नातिन, आजि इटासेटा।

**(ख) बे-बाचिक चिनहान :-** जन दांजा साड़ाले नर किमबा मेदि हेउएक फेरिछ करि बाचिक निहिं हेउअइक, अके बे-बाचिक चिनहान कहल जाइक। जेसन :- डाकटर, अकिल, पाहाड़, नेदि, कांटा, लआ, नुन, तेल, बाड़ि, पानि, आड़ास, रेडिइअ, पथि, रुपा, संगि, पाथर, डिंढ़ाह इटासेटा।

⇨ ***नरा चिनहान ले मेदि चिनहान बनाएक निअम***

1. नरा चिनहान साड़ा माहान 'इ' जड़ाइके मेदि चिनहान बनाइल जाइक। जेसन :-

| नरा चि. | - | मेदि चि.; | नरा चि. | - | मेदि चि. |
|---|---|---|---|---|---|
| बेटा | - | बेटि | नुनु | - | नुनि |
| घअड़ा | - | घउड़ि | काना | - | कानि |
| बुढ़ा | - | बुढ़ि | भेड़ा | - | भेड़ि |
| मामा | - | मामि | मसा | - | मसि |
| छटका | - | छटका | मेंइझला | - | मेंइझलि |

### ⇨ बे बाचिक ले बाचिक चिनहान बनाएक निअम

1. काम-पाइट, धांधा-पानिले जड़ाइल साड़ांइ 'इन', आइन, नि, जड़ाले मेदि चिनहान बनइक। जेसन :-

| बे बाचिक | - | मेदि चि.; | बे बाचिक | - | मेदि चि. |
|---|---|---|---|---|---|
| संगि | - | संगिन | धउबि | - | धबिन |
| ठाकुर | - | ठाकराइन | जलहा | - | जलहिन |
| डाकटर | - | डाकटरनि | नउआ | - | नउइन |
| भुत | - | भुतनि | चर | - | चरनि |
| मासटर | - | मासटरनि | अझा | - | अझिन |

⇨ कुड़मालि पाड़सिंइ काठ (निरजिब) साड़ाक कनअ चिनहान निहिं हेउअइक।

⇨ कुड़मालि पाड़सिंइ जिउ बाचिक नरा आर मेदि चिनहानेक आलेदा - आलेदा साड़ा आहेइक। जेटांइ अदला - बदलि निहिं हेउअइक।

| नरा चि. | - | मेदि चि.; | नरा चि. | - | मेदि चि. |
|---|---|---|---|---|---|
| मरद | - | जेनि | दामड़ा | - | काढुलि |
| भेड़ा | - | अढ़ाइर | कटास | - | बिलाइर |
| पांठा | - | हलुआनि | काड़ा | - | मेहिस |
| भाइ | - | बेहिन | बाप | - | माइ |
| मुनिस | - | कामिन | बर | - | केनिआइ |
| सांढ़ा | - | मुरगि | मुरगा | - | कटअइर |
| हारउहा | - | रउपनि | नर | - | मेदि |
| बहनइ | - | दिदि | गाइ | - | गरु |
| सेइर | - | बाघ | ननदसु | - | ननंद |

❖❖❖

## (ख) लेखा (वचन)

दांजा, अइजि, गुनिन आर सरानकर जन धंचरले गनान, माने गनति हेउएक बाचिक पाउआइक, अके लेखा कहल जाइक।

➪ **लेखाकर रकम :-** ***लेखा दना रकमेक आहेइक।***

(क) अंना लेखा (एक वचन)

(ख) संगि लेखा (बहुवचन)

(क) **अना लेखा :-** हेर-फेर साड़ाक जन धंचरले कनअ अना जिनिस किमबा झनकर बाचिक हेउअइक, अके अना लेखा कहथिक। जेसन :- छउआ, घेड़ि, पथि, चेरअइ, ठेंगा, चासमा, आड़ास, कलम, खाता, डिबरि, भेड़ा आरअ इटासेटा।

(ख) **संगि लेखा :-** हेर-फेर साड़ाक जन धंचरले अनाले बेसि जिनिस किमबा झनकर बाचिक हेउअइक, अके संगि लेखा कहथिक। जेसन :- छउआला, अढ़ाइरगिलि, घेड़िगिलि, कुलहिगिला आरअ इटासेटा।

➪ ***अना लेखाले संगि लेखा बनाएक निअम***

1. नर जिउ-जंतु बा आरअ कनअ जिनिसेक नामे 'गिला' पाइन लागाउले संगि लेखा बनअइक। जेसन :-

| अना ले. | - | संगि ले. | अना ले. | - | संगि ले. |
|---|---|---|---|---|---|
| काड़ा | - | काड़ागिला | बेटा | - | बेटागिला |
| समधि | - | समधिगिला | बागाल | - | बागालगिला |
| सांढ़ा | - | सांढ़ागिला | दामड़ा | - | दामड़ागिला |
| पथि | - | पथिगिला | बाड़ि | - | बाड़िगिला |

2. मेदि जिउ जंतु साड़ा माहान 'गिलि' लागाउले संगि लेखा बनअइक।

| अना ले. | - | संगि ले. | अना ले. | - | संगि ले. |
|---|---|---|---|---|---|
| मेहिस | - | मेहिसगिलि | कटअइर | - | कटअइरगिलि |
| बेटि | - | बेटिगिलि | भेड़ि | - | भेड़िगिलि |
| गेड़े | - | गेड़ेगिलि | बिलाइर | - | बिलाइरगिलि |
| फेटाइन | - | फेटाइनगिलि | बेहिन | - | बेहिनगिलि |

3. साड़ाक सेंसे 'टा/टि' रहले, अके हाटाइके 'गिला/गिलि' लागाइके संगि लेखा बनाउअल जाइक।

| अना ले. | - | संगि ले. | अना ले. | - | संगि ले. |
|---|---|---|---|---|---|
| बेटाटा | - | बेटागिला | पांठाटा | - | पांठागिला |
| कटअइरटि | - | कटअइरगिलि | दतअइनटि | - | दतअइनगिलि |
| पथिटा | - | पथिगिला | छागअइरटि | - | छागअइरगिलि |
| घेड़िटि | - | घेड़िगिलि | जुताटा | - | जुतागिला |

4. आदर बाचिक दांजा साड़ाक सेंसे 'निखा' जड़ाउले संगि लेखा बनअइक।

| अना ले. | - | संगि ले. | अना ले. | - | संगि ले. |
|---|---|---|---|---|---|
| माइ | - | माइनिखा | काकि | - | काकिनिखा |
| फुफा | - | फुफानिखा | मसा | - | मसानिखा |
| मसि | - | मसिनिखा | फुफु | - | फुफुनिखा |
| सास | - | सासनिखा | ससुर | - | ससुननिखा |
| भेसुर | - | भेसुरनिखा | पुतहु | - | पुतहुनिखा |

## ➪ *लेखाक खातिर टुएक निअम*

1. 'पति', 'हरेक', 'माने' कर बेबहार खालि संगि लेखांइ हेउअइक। जेसन :- तंइ पति घारे नेउता देइ देबसिक। तके सउब कामेक खातिर आरहाइ हेतअ ना कि? तहराक माने कनअ ठिक ठेकान नाइ।
2. धेइ बाचिक दांजा साड़ाला अना लेखांइ हेउअइक। जेसन :- मइ अकर देइआ देखि कांदि लेलिए।
3. हड़, डाकपुरुसेक काथा, लर, ठंठ, दाम-दअरि, जेसन साड़ा लाक बेबहार संगि लेखाक डुल हेउअइक। जेसन :- तर ठंठ गिला खुजल आहउ। आहना गिला तहरा भुलिहा ना।
4. देरिब बाचिक दांजा साड़ा लाक बेबहार अना लेखाक डुल हेउअइक। जेसन :- दना सेर नुन दे। मर नउ मन तेल हेउअल आहेइक। जमसेदपुरे ढेइर लहा पाथर पाउआइक।

❖❖❖❖

# 10. अइजि

## (सर्वनाम)

टुमे दांजाक ठाइने जन साड़ा बेबाहार हेउअइक, अके अइजि कहाइक। जेसन :- 'महनाइ परिकखा निहिं दिए पारअइस, काहे ना उ एखन रउगि बनि आहाइ।' एहे टुमे 'उ' कर बेबाहार महनाक खातिर हेल आहेइक। तेंइ 'उ' अइजि साड़ा कहाइल जातेइक।

➪ (सर्वनाम वैसे शब्दों को कहते हैं जो संज्ञा के स्थान पर प्रयोग होता है। जैसे :- मोहन परीक्षा नहीं दे सक रहा है क्योंकि वह अभी रोगी बना हुआ है। यहाँ 'वह' मोहन के लिए प्रयोग हुआ है। अर्थात् 'वह' एक सर्वनाम है।)

➪ **अइजि कर रकम :-** ***कुड़मालि भांउअरे अइजि गइ रकमेक आहेइक।***

(क) झनगिआ अइजि (पुरूष वाचक सर्वनाम)

(ख) ठेकान बाचिक अइजि (निश्चय वाचक सर्वनाम)

(ग) आन-ठेकान बाचिक अइजि (अनिश्चय वाचक सर्वनाम)

(घ) नाता बाचिक अइजि (संबंध वाचक सर्वनाम)

(च) खंचिआ बाचिक अइजि (प्रश्न वाचक सर्वनाम)

(छ) निजअइआ बाचिक अइजि (निज वाचक सर्वनाम)

(झ) बाछान बाचिक अइजि (अधिकरण वाचक सर्वनाम)

**(क) झनगिआ बाचिक अइजि :-** जन अइजिले झन किमबा फदरअइआ, अनाइआ किमबा जाकर लेइ कहल जाइक, अकर गिआन हेइक, अके झनगिआ बाचिक अइजि कहाइक। जेसन :- मइ, तंइ, उ, मरानि इटासेटा।

➪ ***लेखाक अनुजांइ झनगिआ बाचिक अइजि टेना रकमेक हेइक***

| | अना लेखा | संगि लेखा |
|---|---|---|
| 1. मिरा झन (उत्तम पुरूष) | मइ | हामे, हामरानि |
| 2. पिठिआ झन (मध्यम पुरूष) | तंइ | तहरा |
| 3. आन झन (अन्य पुरूष) | वह | अखरा |

**(ख) ठेकान बाचिक अइजि :-** जन अइजिले फदरइआक पासेक किमबा फाराकेक कनअ जिनिसेक थइ-ठेकानेक गिआन पाउआइक, अके ठेकान बाचिक अइजि कहथिक। 'इ छउआटा आंड़राइस'; 'उ कअंदे गेलाक'?

एहे दुइअ टुमे 'इ' आर 'उ' ठेकान बाचिक अइजि हेकेइक।

➪ *ठेकान बाचिक अइजिअ दुइ रकमेक हेउअइक*

1. पासेक जिनिसकर बाचिक अइजि :- इटाले कनअ जिनिस पासे हेउएक बाचिक पाउआइक। जेसन - इ।
2. फाराकेक जिनिसकर बाचिक अइजि :- इटाले कनअ जिनिस फाराके हेउएक बाचिक पाउआइक। जेसन - उ।

**(ग) आन-ठेकान बाचिक अइजि :-** जन अइजिले कनअ जिनिसकर थइ निहिं पाउआइक, अके आन-ठेकान बाचिक अइजि कहथिक। जेसन :- 'कुछु झिंकिले', 'केउ हेले आइ लिहिं हेतेइक'।

एहे टुमे कांकरअ कनअ थइ निहिं पाउआहेइ। तेंइ इठिन 'कुछु' आर 'केउ' आन-ठेकान बाचिक अइजि हेकेइक।

➪ **कुड़मालि वाक्य में प्रयोग**

कुछु (कुछ) - अके कुछु - कुछु देइ देबे (उसको कुछ - कुछ दे देना)

काकुहुंके (किसी को) - काकुहुंके भातेक दुभाटा देइ खेत पाठाइ देबे (किसी को भोजन का टिफिन देकर भेज देना)

केउ (कोई) - केउ अना झन आइ लिहिं हेतेइक

(कोई एक आदमी आने से ही होगा)

**(घ) नाता बाचिक अइजि :-** जन अइजि साड़ाले टुमें कनअ दसर साड़ाक संग कनअ सांठ-गांठ हेइके बेबहार हेउअइक, अके नाता बाचिक अइजि कहाइक। जेसन :- जेंइ जेसन करता तेंइ तेसन पाउता। एहे टुमें 'जेसन' आर 'तेसन' नाता बाचिक अइजि हेकेइक।

➪ **कुड़मालि वाक्य में प्रयोग**

जेसन-तेसन (जैसा-तैसा) - जेंइ जेसन काम करता तेंइ तेसन बेरहन पाउता (जो जैसा काम करेगा उसे वैसे मजदूरी मिलेगा।)

**(च) खंचिआ बाचिक अइजि :-** जन अइजि साड़ाला खंज पुछारेक खातिर बेबाहार करथिक, अके खंचिआ बाचिक अइजि कहल जाइक। जेसन :- के, किना, केसे, काहां इटासेटा।

➪ **कुड़मालि वाक्य में प्रयोग**

के (कौन) - के घार आउलाक (कौन घर आया)?

किना (क्या) - किना आने रहिस (क्या लाया)?

केसे (कैसे) - तंइ केसे आउले (तूम कैसे आया)?

काहां (कहाँ) - काहांले तंइ एखन आउल आहिस
(कहाँ से तूम अभी आये हो)?

**(छ) निजइआ बाचिक अइजि :-** जन अइजि साड़ाले निजेक - निजेइ करेक जानाइक, अके निजइआ बाचिक अइजि कहाइक। जेसन - मइ एहे कामटा आपनेइ करि लेबं। अंइ काम-पाइटगिला आपनेइ करि लेइ। एहे दुइअ टुमें 'आपनेइ' निजइआ बाचिक अइजि हेकेइक।

**(ज) बाछान बाचिक अइजि :-** जन अइजिले काकुहुंके बाछिके किमबा जउर देइके बा धरि-बांधिके काम-करेक बाचिक पाउआइक, अके बाछान बाचिक अइजि कहथिक। जेसन :- तहिं, अहें, अखराइ।

| झनगि ले | | बाछान अ. | झनगिले | | बाछान अ. |
|---|---|---|---|---|---|
| मइ | - | मइए | हामरा | - | हामराहिं |
| तंइ | - | तहिं | तहरा | - | तहराहिं |
| अंइ | - | अहिं | अखरा | - | अखराइ |
| मके | - | मकेहिं | हामका | - | हामकाहिं |
| तके | - | तकेहिं | अके | - | अकेहिं |
| अखरा | - | अखराकिहिं | मर | - | मरे |
| हामराक | - | हामराकरे | तर | - | तअरे |
| अकर | - | अकरे | अखराक | - | अखराकरे |

**⇨ कुड़मालि में वाक्य प्रयोग**

तहिं (तुम हीं) - तहिं मर पाठाटा चराइलाहास।
(तूम हीं ने मेरा बकरा चुराया है)

अहे (वही) - काइल तअ खालि अहे आइल रहल।
(कल तो केवल वही आया था)

❖❖❖

# 11. गुनिन

## (विशेषण)

जन साड़ाले दांजा किमबा अइजि साड़ाकर गुन बाताइल जाइक, अके गुनिन कहथिक। जेसन :- गेरुआ, केरिआ, लुरु-पुरु, बेस, घिसट, फुहड़, चुहाड़, आधड़ इटासेटा। कुड़मालि भांउअरे लेखा, चिनहान आर परिकेक कारअने कनअ बदलाइक नाइ।

➪ जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बतलाते, उसे विशेषण कहते हैं। जैसे :- काली, पुराना, नया, अच्छा आदि।

➪ कुड़मालि व्याकरण में विशेषण शब्दों पर वचन, लिंग और कारक के कारण कोई बदलाव नहीं होता है।

➪ **कुड़मालि में उदाहरण**

बेस (अच्छा) - इ बेस छउआ हेकेइक (यह अच्छा लड़का है)
केरिआ (काला) - अकर बहुटि केरिआ आहेइक (उसके बहु काली है)
पेंदा (झूठा) - अंइ काइल पेंदलाइ कहललाइ (वह कल झूठ बोला था)

➪ **गुनिनकर रकम :-** कुड़मालि पाड़सिक हड़ें गुनिन साड़ाला बेजांइ बेबाहार करत। निहिं हेले टुमगिला रठा लागइक। कुड़मालि भांउअरे गुनिन साड़ालाके चारा खंड़े खंड़ करल गेल आहेइक :-

1. गुन बाचिक गुनिन (गुण वाचक विशेषण)
2. गनतिक गुनिन (संख्या वाचक विशेषण)
3. तल बाचिक गुनिन (परिणाम वाचक विशेषण)
4. खंचिआ बाचिक गुनिन (प्रश्न वाचक विशेषण)
5. ठेकान बाचिक गुनिन (निश्चय वाचक विशेषण)
6. दारांइज बाचिक गुनिन (Possessive Adjective)
7. लुठु बाचिक गुनिन (Emphasizing Adjective)

**(1) गुन बाचिक गुनिन :-** जन साड़ाले दांजा किमबा अइजि साड़ाकर गुन, दउस (रुप, रंग, गढ़न, आकार, ठाइन, बेरा आरअ) कर बाचिक पाउआइक, अके गुन बाचिक गुनिन कहथिक। जेसन :- कांचा, चेका, गुड़िअ, हेइलदा, बेस, खाराप, लउभि इटासेटा।

⇨ **टुमे एकर बेबहार**

कांचा (कच्चा) - कांचा - कांचा आम देइ भुलाइ देला।
(कच्चा - कच्चा आम देकर भुलाया)

लउभि (लोभी) - बामहन जातिक हड़गिला बेजांइ लउभि रहत।
(ब्राह्मण जाति का आदमी बहुत लोभी रहता है)

झाल (तिखा) - कासमिरि मरचइ रिचिक कम झाल रहइक।
(कश्मिरी मिर्च कम तीखा होता है)

हेइलदा (पीला) - बिहाइ केनिआइके हेइलदा लुगा पिंधाइल जाइक
(शादी में वधु को पीला साड़ी पहनाया जाता है)

⇨ ***गुन बाचिक विशेषण संज्ञा से भी बनाया जाता है।***

| दांजा ले | | गुनिन | दांजा ले | | गुनिन |
|---|---|---|---|---|---|
| भाखा | - | भाखि | माइछ | - | माछुआर |
| मातालि | - | माताल | बअका | - | बकानि |
| काम | - | कामिन | छउआलि | - | छउआ |
| भात | - | भातेक हांड़ि | बुढ़ांति | - | बुढ़ा |
| झलक | - | झलकुआ | गेरु | - | गेरुआ |
| चेकाइल | - | चेका | नुन | - | नुनछा |

(2) **गनतिक बाचिक गुनिन :-** जन साड़ाले कनअ झन किमबा जिनिसकर गनान हेउएक बाचिक पाउआएक, अके गनतिक बाचिक गुनिन कहथिक। जेसन :- चाइर आना, गंड़ा, एक बितता, एक हाथ, आघात, सिहम, मना, लट, कुड़ि, पन, मन, माचा इटासेटा।

⇨ **टुमे एकर बेबहार**

चाइर (चार) - मर ठिन चाइर गअ पांठा आहेइक।
(मेरे पास चार बकरा है)

कुड़ि (बीस) - तंइ टेना कुड़ि आफर उधार देबे।
(तूम साठ ठो धान का बीजा उधार देगा)

लट (हजार) - तंइ मके अना लट टाका देबे।
(तूम मुझको एक हजार रूपये दोगे)।

गंडा (चार) - मर अना गंडा छउआ आहेइक।
(मेरे चार बच्चे हैं)।

(3) **तल बाचिक गुनिन** :- जन साड़ाले कनअ जिनिसकर नाप-जउख किमबा मातराकर बाचिक हेउअइक, अके तल बाचिक गुनिन कहथिक। जेसन :- सेर, पेइला, बितता, लट, पउआ, मिटर, पाट, आघात, इटासेटा।

➪ **टुमे एकर बेबहार**

सेर (किलो) - अना सेर चार देबे (एक किलो चावल दिजियेगा)

बितता (छःइंच) - टेना बितता लुगाटा छिड़िगेल आहेइक।
(डेड़ फूट साड़ी फट गया है)

लट (मुट्ठी भर) - अना लट पानिंइ किना हेतेइक
(मुट्ठी भर पानी से क्या होगा)।

पाट(आध पौवा) - एक पाट महुआ आइज खाल आहिए।
(आध पौवा महुवा आज पी लिए हैं)

(4) **खंचिआ बाचिक गुनिन** :- जन गुनिन साड़ाला दांजाक संगे बेबहार हेइके टुमे कनअ खंच उठाइक, अके खंचिआ गुनिन कहथिक। टुमे एकर बेबहार बाचिक दांजाक पेहिल हेउअइक। जेसन :- कन, केसन, केतेक, कने इटासेटा।

➪ **टुमे एकर बेबहार**

कन (कौन) - तंइ कन कलमटि लेबे(तूम कौन सी कलम लेगा)

केतेक (कितना) - तंइ केतेक भात झिकअहस?
(तूम कितना खाना खा रहा है)

केसन (कैसा) - इटि केसन बहु हेकेइक? (ये कैसी बहु है)

(5) **ठेकान बाचिक गुनिन** :- जन गुनिन साड़ाले दांजा किमबा अइजि साड़ाकर कनअ थइ ठेकान, पास किमबा फाराककर निमुंद पाउआइक, अके ठेकान बाचिक गुनिन कहथिक। जेसन :- इ कलमटि लाल आहेइक। उटा फाटल पिरान हेकेइक। उ पाहाड़टा ढांगा आहेइक। इठिन 'इ', 'उटा', 'उ' लागालागि कलम, पिरान, पाहाड़के ठिकाहेइक।

**Note :-** 'इ', इटि आर 'इटा' पासेक जिनिसेक ठाइने बेबहार हेउअइक। मनतुक, 'उ' आर 'उटा' फाराकेक जिनिसेक ठाइने बेबहार हेउअइक।

(6) **दारांइज बाचिक गुनिन** :- जन गुनिन साड़ाले दांजा किमबा अइजि साड़ाक संग कनअ अधिकार किमबा नाताकर बाचिक पाउआइक, अके दारांइज बाचिक गुनिन कहथिन। दारांइज परिककर सउब दांजा आर अइजि दारांइज बाचिक गुनिन हेउअइक। जेसन :- मर, हामरानि, हामरा, तर, तहराक, तहरानि, अकर, अखराक, अखराकर इटासेटा।

➪ **टुमे एकर बेबहार**

मर (मेरा) - मर पथिटा छिड़लेइक। (मेरा पुस्तक फट गया)

तर (तेरा) - तर साइकिलटा पेंचर हेलउ (तेरा साईकिल पंचर हो गया)

हामराक (हमलोग का) - हामराक गांउए हाइ इसकुलउ आहेइक।
(हमलोग के गांव में हाई स्कूल भी है)

अखराक (उनके) - अखराक इसकुले बेस पढ़ाइ हेउअइक।
(उनके स्कूल में अच्छी पढ़ाई होती है।)

**(7) लुठु बाचिक गुनिन :-** जन गुनिन साड़ाला लुठु साड़ाक डुल दांजा किमबा अइजि साड़ाक पेहिल आइके एकर गुन बाताइक, अके लुठु बाचिक गुनिन कहथिन। जेसन :- आपनेइ, असनेइ, अहे, सेइ, एकदम इटासेटा।

➪ कुड़मालि साड़ा आड़ांगे एहे साड़ालाक कनअ थइ माने निहिं बाहराइक। मनतुक, टुमे एकर बेबहारे टुमके एक लइ आर ताल देइक। एहे भाखा माहान एसन लुठु साड़ा बेजांइ आहेइक। जेटाक भितर कुछ गिला लुठु बाचिक गुनिनेक धंचअरे बेबहार हेउअइक।

➪ **टुमे एकर बेबहार**

आपनेइ (स्वयं) - तंइ आपने आखिंइ देखि ले।
(तूम स्वयं अपने आंख से देख लो)

एसनेइ (इसी तरह) - मइ एसने करि पढ़े हेलिए।
(मैं इसी तरह से पढ़ लिया)

सेइ (सो) - सेइ जे तंइ कहलले। (सो जो तूम बोला था)

एकदम (बिलकुल) - तंइ एकदम चालाक लागिस।
(तूम बिलकुल चलाक हो)

अहे (उसी) - नेइना अहे इसकुले पढ़ेहेलि।
(नैयना उसी स्कूल में पढ़ती थी)

❖❖❖

# 12. गुनिन सरान

## (क्रिया विशेषण)

जन साड़ांइ सरानकर सभाब बाताइक, अके गुनिन सरान कहथिक। जेसन :- तंइ इहां आउ। गाड़िटा गड़कअलेइ आउअहइ। तंइ काहां गेल रहल-ले। एहे टुम माहान 'इहां', 'गड़कअलेइ' आर 'काहां' गुनिन सरान हेकेइक। (ऐसे शब्द जो क्रिया का विशेषता बताएँ, उसे क्रिया-विशेषण कहते हैं। जैसे :- तुम यहाँ आओ। गाड़ी गड़क कर आ रही है। तुम कहाँ गया था? इस वाक्य में 'इहाँ', 'गड़क' और 'काहाँ' क्रिया विशेषण है।)

➪ **गुनिन सरानेक रकम :-** कुड़मालि भांउअरे गुनिन सरान गइ रकमेक हेउए पारअइक।

1. ठांउ बाचिक गुनिन सरान (स्थान वाचक क्रिया-विशेषण)
2. बेरा बाचिक गुनिन सरान (काल वाचक क्रिया विशेषण)
3. घुरन गुनिन सरान (वाचक क्रिया विशेषण)
4. रिति बाचिक गुनिन सरान (रीति वाचक क्रिया विशेषण)
5. तल बाचिक गुनिन सरान (परिणाम वाचक क्रिया विशेषण)
6. नाता बाचिक गुनिन सरान (संबंध वाचक क्रिया विशेषण)
7. खंचिआ बाचिक गुनिन सरान (प्रश्न वाचक क्रिया विशेषण)

**(1) ठांउ बाचिक गुनिन सरान :-** टुमे जन गुनिन सरान साड़ाले, सरान सराएक कनअ ठांउ किमबा ठाइनकर निमुंद पाउआइक, अके ठांउ बाचिक गुनिन सरान कहथिक। जेसन :- इहां, उहां, हेंट, उपर, पास, फाराक, तर, भितर, कंदे, बाहिर, कनठिन इटासेटा ठांउ बाचिक गुनिन सरान हेकेइक। जेसन - अंइ भितर कठरिंइ घुमाल आहाइ।

**(2) बेरा बाचिक गुनिन सरान :-** टुमे जन गुनिन सरान साड़ाले, सरान सराएक बेराकर निमुंद पाउआइक, अके बेरा बाचिक गुनिन सरान कहथिक। जेसन :- आइज, काइल, परसु, नरसु, पेहिल, एखन, आउति बछर, गेला बछर, परे इटासेटा सउभ बेरा बाचिक गुनिन सरान हेकेइक। जेसन :- अंइ काइल इसकुल निहिं गेल रहल। उ कब रांचि जाताक?

**(3) घुरन बाचिक गुनिन सरान :-** टुमे जन गुनिन सरान साड़ाले सरान घने - घने सराइएक निमुंद पाउआइक, अके घुरन बाचिक गुनिन सरान कहथिक। जेसन

:- एखन तड़िक, कबेले, सगरखुन, रउज - रउज, घने - घने, सतअ-खन, खुचुर - खुचुर, खुंजुर-मुंजुर, रसे - रसे, चुरुक - चुरुक, लुहु - लुहु इटासेटा। जेसन - छउआ टांइ सतअ खन फन करअइस। रउज - रउज तर आर धांधा नाइ।

**(4) रिति बाचिक गुनिन सरान :-** टुमे जन गुनिन सरान साड़ाले सरान कन डुल सरालेइक अकर निमुंद जन गुनिन सराने पाउआइक, अके रिति बाचिक गुनिन सरान कहथिक। जेसन :- एसनेइ, आसते, रागे, चांड़े, थिरे, आलते - आलते, जिराइके, दहलाइके, गड़काइके, अलढाइके इटासेटा। जेसन - चर सउभे चरि करिके आलते - आलते पाराला। पानिटा दहलाइके पाटाल रहल।

**(5) तल बाचिक गुनिन सरान :-** टुमे जन गुनिन सरान साड़ाले सरान कनअ गुनिन किमबा गुनिन सरान सभाब बाताइक, अके तल बाचिक गुनिन सरान कहथिक। जेसन :- ढेइर, एलपअ, टुएक, छाड़ेक-आधेक, टुकु, सउभे, एतनेइ, अतेक, एकदम, कतेक, गउटे इटासेटा। जेसन :- छाड़ेक- आधेक पानि हेलुहुं धानला निहिं सुखातेइक। टुकु नुन देइके झिंक।

**(6) नाता बाचिक गुनिन सरान :-** टुमे जन गुनिन सरान साड़ाले सरान सराइएक संग कनअ नाता हेउएक निमुंद पाउआइक, अके नाता बाचिक गुनिन सरान कहथिक। जेसन :- जेतम-तेतम, जेंइ-जेसन, तेंइ-तेसन इटासेटा। जेसन :- जेतम तके कुछु निहिं कहइहअ तेतम आरअ तंइ बाढ़लेइ जाहास। जेंइ जेसन करताक तेंइ तेसन पाउताक। जेतम पाउअहत तेतम आरअ लालाहात।

**(7) खंचिआ बाचिक गुनिन सरान :-** टुमे जन गुनिन सरान साड़ाले खंच करेक बाचिक पाउआइक, अके खंचिआ बाचिक गुनिन सरान कहथिक। जेसन :- केस तंइ आउले? काकर खातिर तंइ खाटअहस? कंदे मासटर सउब गेल आहात? एहे टुम माहान 'केसे', 'काकर' आर 'कंदे' खंचिआ बाचिक गुनिन सरान हेकेइक।

➪ ***परिणाम वाचक क्रिया विशेषण एवं परिणाम वाचक विशेषण में अंतर***

1. टुमे तल साड़ांइ जखन दांजा, अइजि किमबा एकर सभाब बाताइक, तखन उठिन तल साड़ा, तल बाचिक गुनिन हेउअइक।
2. टुमे तल साड़ांइ जखन सरानेक पेहिल किमबा सरानेक सभाब बाताइक, उठिन तल बाचिक साड़ा तल बाचिक गुनिन सरान हेउअइक। जेसन :-

(क) आइज अंइ दउमे भात झिंकअइ साहाइ। (तल बाचिक गुनिन)

(ख) अंइ आइज बेजांइ रागे आंड़राइ साहाइ। (तल बाचिक गुनिन सरान)

❖❖❖

# 13. परिक

## (कारक)

परिक एसन पेछुआइर साड़ा हेकेइक, जेटाले दांजा किमबा अइजिकर नाता टुमे आरअ दसर साड़ाक संग कन डुल रहइक, अकर बाचिक पाउआइक।

➪ (कारक ऐसा शब्द है जो संज्ञा अथवा सर्वनाम के साथ वाक्य में प्रयोग अन्य शब्दों के साथ किस तरह का संबंध है, को बतलाता है।)

➪ **परिकेक रकम :-** कुड़मालि माहान परिक मांचा रकमेक हेउअइक।

1. करनि बाचिक परिक (कर्त्ता वाचक कारक)
2. करमि बाचिक परिक (कर्म वाचक कारक)
3. नाता बाचिक परिक (संबंध वाचक कारक)
4. छाइड़ बाचिक परिक (छाइड़ वाचक कारक)
5. भाउ बाचिक परिक (भाउ वाचक कारक)

(1) **करनि बाचिक परिक :-** टुमे जखन कनअ दांजा किमबा अइजिंइ कनअ कामके करअइक, तअ अके करनि बाचिक परिक कहथिक। जेसन :- साम पथि पढ़ाइस। छउआटा अउउताइ। अंइ इंड़कइस।

(2) **करमि बाचिक परिक :-** टुमे सरानकर फल जन साड़ांइ पड़अइक, अके करमि बाचिक परिक कहाइक। जेसन :- अंइ छउआटाक ठेंगालेइक। रेसमाइ मक ताकाउलि। अखरा बांध दिगे इंड़कअला।

➪ **करमि बाचिक परिक दना रकेम हेउअइक**

(क) दारांइज करमि बाचिक परिक - सुमितेक दारांइ चासटा उठलेइक। तरले इ काम टा हेतउक। चिनहा - दारा आर ले।

(ख) दानिन करमि बाचिक परिक - तर खातिर मइ इठिन गडि आहिए। चिनहा - के, टाके, खातिर, तेंहे आर लागि हेकेइक।

(3) **नाता बाचिक परिक :-** जखन कनअ दांजा किमबा सरान साड़ा कनअ जिनिस किमबा हड़ेक संग नाता बा अधिकारेक भाउ जानाइक, अके नाता बाचिक परिक कहथिक। जेसन :- एहे पथिटा सुचानेक हेकेइक। इ साइकिलटा टुनटुनेक हेकेइक। इटा जगाइ राखेक पथि हेकेइक।

⇨ **नाता बाचिक परिक दना रकमेक हेउअइक**

**(क) दांजा बाचिक नाता परिक :-** जखन दांजा साड़ाक संग नाता जानाइक, अके दांजा बाचिक नाता परिक कहथिन। जेसन :- पथिक, बाड़िक, घेड़िक आरअ इटासेटा।

**(ख) सरान बाचिक नाता परिक :-** टुमे जखन सरान साड़ाक नाता दसर साड़ाक संग जानाइक, अके सरान बाचिक नाता परिक कहथिन। जेसन :- इटा झिंकेक पिठा हेकेइक। खाइटटा निगडेक पारा बनाइलाइ हेतेइक।

**Note :-** जन दांजा साड़ाक सेंसे आकार (ा) रहअइक, उठिन एकर चिनाहा 'आक' जड़ाइक आर जन दांजा साड़ाक सेंसे आकार निहिं रहअइक उठिन 'एक' 'इक', 'उक' आर 'कर' जड़ाइक। जेसन :-

**आक :-** काड़ा, डभा, माड़, डाला, टेंगला .....आक।

**एक :-** सगड़, मुबाइल, बाढ़िन,.....एक।

**इक :-** बाड़ि, सालि, पथि, कुलि .....इक।

**एक/कर :-** माइ, भाइ, गाइ, ताइ,.....एक/कर।

**(4) छाइड़ बाचिक परिक :-** एक संगे रहल परे, जन धंचरले दांजा साड़ा ला एक दसराक ठिनले छिनगाएक निमुंद पाउआइक, अके छाइड़ बाचिक परिक कहथिक। जेसन :- सगड़ले छउआटा गिरलेइक। गाइछल आमटि गिरलेइक।

**(5) भाउ बाचिक परिक :-** जन दांजा किमबा अइजि साड़ाले काकुहुंके निजेक हिआक हुबे बा गुमाने कनअ मिनाहा, नेहर, आराहा, आदर करल जाइक, अके भाउ बाचिक परिक कहथिक। जेसन :- हें रे! तंइ एखनउ आउले नाइ। ए लउ केतेइ बड़अ सांपटा! एकर चिनहा - हें रे, ए लउ, धेइट, हाइ रे हेकेइक।

**नोट :-** कुड़मालि वाक्यों में कारक चिन्ह मूल शब्दों के अंत में प्रत्यय जैसा प्रयोग होता है।

❖❖❖

# 14. सरान

## (क्रिया)

जन साड़ाक दारांइ कनअ कामकर हेउआ किमबा सराइक, अके सरान कहथिक। जेसन :- इंड़का, लेतड़ा, झिंका, आंड़रा, डहरा इटासेटा।

➪ (जिससे किसी काम का करना या होना पाया जाए, उसे क्रिया कहते हैं। जैसे - दोड़ना, भगाना, रोना इत्यादि।)

### ➪ कुड़मालि क्रियाओं की विशेषता

1. कुड़मालि गड़ा सरानेक सेंसे आकार रहअइक। जेसन :- पढ़ा, ताका, सुना, अना, रहा, गडा, हिंसड़ा, आंड़रा, ताका, साजा, चकता, फदरा, जड़ा, अलढा, ढुला, गबचा, आंटा, फांसा, रंदा, गांथा, चिपा, ठेला, बिसरा, गाबा, इंचरा, हाघा, हांका, हांफा, जा, झिंका, सेंढ़ा, कांदा, भकरा, हेंसरा, थरहा, मसड़ा आरअ इटासेटा।
2. कुछु सरानेक गड़ा धंचरउ टुमे बेबहार हेउअइक। जेटा दसर-तेसर भाखाक टुमे खुभेइ कम बेबहार हेउअइक। जेसन :- तहरानि अलढा गअ। तहरा एखन खाजाड़ि मसड़ा।
3. गड़ा सरान माहान बेरा, झन, लेखाक चिनाहा जड़ाइके टुमे बेबहार हेउअइक।
4. कुड़मालि कर बेसि भागेक टुमे गड़ा सराने पाइनेक धंचअरे बेरा, झन आर लेखाक चिनाहा एक संगे जड़ाइल रहअइक। जेसन :- अंइ भात **नुड़अइसाहाइ**। एहे 'नुड़अइसाहाइ' साड़ा माहान एकर बेरा, झन आर लेखाकर चिनाहा आहेइक। जेटा बेरा पाठे फेरिछ हेउअल आहेइक।

### ➪ सरानकर रकम

कुड़मालि पाड़सि माहान सरान आठ रकमेक हेउअइक।

1. गड़ा सरान (Verb in Origin)
2. उचरेन सरान (Verb in Structure)
3. सता सरान (Auxiliary Verb)
4. हुड़न सरान (Verb in Causative)
5. करमिक सरान (Transitive Verb)
6. बे-करमिक सरान (Intransitive Verb)
7. बांधान सरान (Finite Verb)
8. आलमेलिआ सरान (Verb in Order)

(1) **गड़ा सरान :-** सरानकर जन धंचर सरानेक सउब धंचअरे रहइक, अके गड़ा सरान कहथिक। जेसन :- ताका, पढ़ा, टाना, जड़ा, अना।

(2) **उचरेइन सरान :-** दांजा, गुनिन आरअ दसर साड़ाले जन सरान बनअइक, अके उचरेन सरान कहथिक। जेसन :-

| **(क) दांजा-ले-उचरेन सरान** | | | **(ख) गुनिन-ले-उचरेन सरान** | | |
|---|---|---|---|---|---|
| डहर | - | डहरा | डर | - | डरा |
| काम | - | कामाउ | चमक | - | चमका |
| गठ | - | गठाउ | चिकन | - | चिकना |

**(ग) सरान-ले-उचरेन सरान**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| डहरा | - | डहराउ | गड़का | - | गड़काउ |
| साता | - | साताइके | कांद | - | कांदाउ |

(3) **सता सरान :-** जन सरानेक दारालें बेरा (काल), काथा (वाच्य) आर (Mood) कर गड़हन हेउअइक, अके सता सरान कहथिक। जेसन :- अंइ **आहाइ**। तंइ गड़ लाग**लाइ**। अहिं **हेक**इक।

➪ कुड़मालि में सहायक क्रिया मूख्य क्रिया के साथ प्रत्यय जैसा जुड़ा हुआ रहता है।

➪ **सता सरानेक रकम**

बेराक अनुजांइ सता सरान टेना रकमेक आहेइक :-

(क) चलति सता सरान

(ख) बिति सता सरान

(ग) आउति सता सरान

**(क) चलति सता सरान (Present Auxiliary)**

| | **अना लेखा** | **संगि लेखा** |
|---|---|---|
| मिरा झन | मइ हेकिए | हामरा हेकिए incl. |
| | I am. | We are. |
| पिठिआ झन Fam. | तंइ हेकिस | तहरा हेकिहा |
| Hon.तहरा हेकिहा (You are) | | तहरानि हेकिहा (Your are) |
| आन झन Fam. | अंइ हेकांइ/हेकि | ..... |
| Hon. अखरा हेकत (He is.) | | अखरानि हेकत (They are) |

## (ख) बिति सता सरान (Past Auxiliary)

| | अना लेखा | संगि लेखा |
|---|---|---|
| मिरा झन | मइ रहलिए/रहलम | हामरा रहलिए excl. |
| | I was. | हामरानि रहलिएincl.(we were) |
| पिठिआ झन Fam. | तंइ रहले | तहरा रहले |
| Hon. | तहरा रहलेहे (You was) | तहरानि रहलेहे (Your were) |
| आन झन Fam. | अंइ रहलाइ/रहलि | ..... |
| Hon. | अखरा रहला (He was) | अखरानि रहला (They were) |

## (ग) आउति सता सरान (Future Auxiliary)

| | अना लेखा | संगि लेखा |
|---|---|---|
| मिरा झन | मइ रहब | हामरा रहब excl. |
| | I shall. | हामरानि रहबअइ in. (We shall) |
| पिठिआ झन Fam. | तंइ रहबे | तहरा रहबे |
| Hon. | तहरा रहबेहे (You will) | तहरानि रहबेहे (You will) |
| आन झन Fam. | अंइ रहताइ/रहति | ------- |
| Hon. | अखरा रहता (He will) | अखरानि रहताक(They will) |

(4) **हुड़न सरान** :- जन सरान साड़ाले कनअ काम करमिइ निजेइ ना करि दसराक दारांइ कराएक किमबा एकर भार दसराक उपरअ पड़इक, अके हुड़न सरान कहथिक। जेसन :- अलगाउ, उसकाउ, डहराइके।

➪ **हुड़न बाचिक क्रिया का चिन्ह 'आउ' है।**

(5) **करमिक सरान** :- टुमे जन सरान साड़ाक संगे कनअ ना कनअ जिनिस खांटिए रहइक, अके करमिक सरान कहथिक। जेसन :- राधांइ पथि पढ़इस। अंइ बउल खेलअइस।

(6) **बे करमिक सरान** :- टुमे जन सरान साड़ाक संग कनअ जिनिस निहिं रहइक, अके बे-करमिक सरान कहथिक। जेसन :- छउआला इंड़कअहत। पांइख सउब डहरअहत। माहान सरान संग कनअ रकमेक जिनिस हेउएक आसरा निहिं रहइक।

➪ **उपर्युक्त दोनों क्रिया के प्रकार वाक्य रचना के आधार पर किया गया है।**

(7) **बांधान सरान** :- टुमे जखन कनअ सरान निजेक करनिक लेखा आर झनेक अनुजांइ बांधाइ रहअइक, तखन अके बांधान सरान कहथिक। जेसन :- तंइ किना करअहस? छउआला इसकुलले एखनेइ आउता।

(8) **आलमेलिआ सरान :-** टुमे जखन कनअ सरान निजेक करनिक लेखा आर झनेक अनुजांइ बांधाइ निहिं रहइक, अके आलमेलिआ सरान कहथिक। जेसन :- मइ पथि पढ़ि पढ़ि आनसाइ गेलआहिए। गितांइ मके ताकाइके हिंसड़ि उठलि।

➪ क्रिया का यह प्रकार वाक्य में इसके प्रयोग के आधार पर होता है।

**जड़ान सरान :-** जन सरानक दनाले बेसि सरानेक मेंझाने बनअइक, अके जड़ान सरान कहथिक। जेसन :- माइ मके भात झिंकेलाइ दे। मइ पढ़े पारिए। अंइ गाढ़ांइ जाइ गिरलाइ।

➪ जो क्रिया दो से अधिक क्रियाओं के योग से बनता है, उसे संयुक्त क्रिया कहते हैं।

1. इटांइ दना किमबा दना ले बेसि सरानेक जड़ाने बनअइक।
2. दुइअ साड़ा फेरिछ कअरि लागा - लागि रहअइक।
3. जड़ान सरानेक मिरा सरान मुखिआ हेउअइक आर दउज सरान एकर माने कर सभाब बढ़ाइक। जेसन :- मइ बेसि पढ़े पारबइ। इटांइ 'पारा' सरान 'पढ़ा' सरान कर मानेके उसास करअहइ।
4. दउज सरान करनिक अनुजांइ लेखा, झन कर बेबहार हेउअइक।

**Note :-**सउब बेरांइ आर काथा माहान सरानकर नाना आर पसरल धंचअर पाउअल जाइक।

❖❖❖

# 15. बेरा

## (काल)

टुम माहान सरानकर जन धंचरले सरानेक दारांइ कनअ काम करा किमबा हेउआ कर पहर आर पुरा हेउएक किमबा आदधुराक अबसथाकर बाचिक पाउआइक, अके बेरा कहथिक।

➪ क्रिया के जिस रूप से कार्य के होने का समय ज्ञात हो, उसे काल कहलाता है।

➪ कुड़मालि भाषा में वाक्य प्रयोग होने वाले क्रिया शब्द अकेले नहीं प्रयोग होता है बल्कि यह संयुक्त रूप में होती है, जिससे 'सरान गठ' कहा जाता है।

➪ सरान गठ में क्रिया, काल वाचक शब्द, वचन का चिन्ह एवं सहायक क्रिया प्रत्यय के रूप में जुड़े हुए होते हैं। जैसे - अंइ **पढ़इसाहाइ**।

➪ **बेरा के प्रकार** :- कुड़मालि पाड़सि में बेरा चार प्रकार के बेरा का प्रयोग इसके वाक्य में देखने को मिलता है।

(क)चलति बेरा (वर्त्तमान काल)
(ख)बिति बेरा (भूत काल)
(ग) आउति बेरा (भविष्यत काल)
(घ) सुजउग बेरा (Contigent Tense)

### चलति बेरा (वर्त्तमान काल)

सरानकर जन धंचरले सरान चलति बेरांइ चलेक बा सरेक बाचिक पाउआइक, अके चलति बेरा कहल जाइक। जेसन :- मइ पढ़िए। अखरा मेला देखे जाहात।

➪ **चलति बेराक रकम** :- कुड़मालिंइ चलति बेरा मांचा रकमेक हेइक।

1. टुकु चलति बेरा (Simple Present Tense)
2. बे पुरन चलति बेरा (Present Continuous Tense)
3. पुरन चलति बेरा (Present Perfect Tense)
4. निधक चलति बेरा (Present Perfect Continuous Tense)
5. सइदम चलति बेरा (Present habitual Tense)

(1) **टुकु चलति बेरा** :- सरानकर जन धंचरले चलति बेरांइ सरान सराइएक बा नि सराइएक टुकु बाचिक पाउआइक, अके टुकु चलति बेरा कहथिक। जेसन :-

मैं पढ़ता हूँ - मइ पढ़िए
तूम पढ़ता है - तंइ पढ़िस
वह पढ़ता है - अंइ पढ़इक

⇨ **टुकु चलति बेराकर सरान गठ**

Verb + Aspect Marker + Tense Marker + Person No. Marker

झिंक + इ + No + ए/स/हा/इ/त

(2) **बे-पुरन चलबि बेरा** :- सरानकर जन धंचरले सरान चलति बेराहुं हेउएक बाचिक पाउआइक, अके बे-पुरन चलबि बेरा कहथिक। जेसन :-

मैं पढ़ रहा हूँ - मइ पढ़इहे, हामरानि पढ़इहे

तूम पढ़ रहा है - तंइ पढ़अहस, तहरा झिंकाहा

वह पढ़ रहा है - अंइ पढ़इ साहाइ अखरा पढ़अहत

⇨ **बे-पुरन चलबि बेराक सरान गठ**

Verb + aspect Marker + Tense Marker + Person No. Marker

झिंक + अ + ह + ए/स/हा/इ/त

(3) **पुरन चलति बेरा** :- सरानेक जन धंचरले काम पेहिलिहिं सुरु हेइके, चलति बेरांइ सिराइएक बाचिक पाउआइक, पुरन चलति बेरा कहथिक। जेसन :-

मैं पढ़ चुका हूँ - मइ पढ़ि-लेलाहिए।

तूम पढ़ चुका है - तंइ पढ़ि-लेलाहास।

वह पढ़ चुका है - अंइ पढ़िलेलआहेइ।

⇨ **पुरन चलति बेराक सरान गठ**

Verb + asp. Marker + Tense Marker + P. No. Marker

झिंक + (इ + लेल) + ह + ए/स/आ/इ/त

(4) **निधक चलति बेरा** :- सरानकर जन धंचरले सरान पेहिल सुरु हेइके चलति बेराहुं निधक चलेक बाचिक पाउआइक, अके निधक चलति बेरा कहथिक। जेसन :-

मैं खाते आ रहा हूँ - मइ झिंकतेइ आहिए।

तूम खाते आ रहे हो - तंइ झिंकतेइ आहिस/आहास

वह खाते आ रहा है - अंइ झिंकतेइ आहाइ।

⇨ **निधक चलति बेराक सरान गठ**

Verb + asp Marker + T. Marker + P. No. Marker

झिंक + (ते+आ) + ह + ए/स/आ/इ/थिन

5. **सइदम चलति बेरा** :- सरानकर जन धंचरले चलति बेराहुं सरान निहिं सराइएक बाचिक पाउआइक, अके सइदम चलति बेरा कहथिक।

⇨ इस संसार में कुछ ऐसे कार्य होते हैं अथवा हो रहा है जो सदियों से होता आ रहा है किमबा काम करते करते निश्चल हो चुका है। जैसे :-

रिता प्रति दिन स्कूल जाती है - रिता पतिदिन इसकुल जाइक।

सिता अच्छी लड़की है - सिता बेस छउआ हेकि।

सूर्य पूर्व दिशा में उगती है - बेरा पुरुब दिसांइ उगइक।

# बिति बेरा (भूतकाल)

सरानकर जन धंचरले सरान चलति बेरा आइत - आइत सिराइ जाइएक बाचिक पाउआइक, अके बिति बेरा कहथिक। इटांइ सरान सुरु हेइके सिराइ जाइक।

➪ क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि कार्य पूरा हो चुका है, उसे भूत काल कहते हैं।

➪ **बिति बेराक रकम :-** कुड़मालि भांउअरे बिति बेराक मांचा खेजा हेउए पारइक।

1. टुकु बिति बेरा (Simple Past Tense)
2. बे पुरन बिति बेरा (Past Continous Tense)
3. पुरन बिति बेरा (Past Perfect Tense)
4. निधक बिति बेरा (Past Perfect Continous Tense)
5. सइदम बिति बेरा (Past Habitual Tense)

(1) **टुकु बिति बेराः-** सरानकर जन धंचरले सरान चलति बेरा आइत आइत सिराइ जाइक, अके टुकु बिति बेरा कहथिक। जेसन :-

मैं पढ़ता था - मइ पढ़लिए।
तूम पढ़ता था - तंइ पढ़ललेे।
वह पढ़ता था - अंइ पढ़ल लाइ।

➪ **टुकु बिति बेराक सरान गठ**

Verb + aspect Marker + Tense Marker + P. No. Marker
झिंक + No + ल + ए/स/आ/इ/त

(2) **बे-पुरन बिति बेरा :-** सरानकर जन धंचरले सरान बिति बेराहुं निहिं सिराइएक बाचिक पाउआइक, अके बे-पुरन बिति बेरा कहथिक। जेसन :-

मैं पढ़ रहा था - मइ पढ़े हेलिए।
तूम पढ़ रहा था - तंइ पढ़ेहेले।
वह पढ़ रहा था - अंइ पढ़ेहेलाइ।

➪ **बे-पुरन बिति बेराक सरान गठ**

Verb + aspect Marker + Tense Marker + Pr.No. Marker
झिंक + (अ+हे) + ल + इ/ए/हे/थिक

(3) **पुरन बिति बेरा :-** सरानकर जन धंचरले सरान बिति बेराहिं सिराएक बाचिक पाउआएक, अके पुरन बिति बेरा कहथिक। जेसन :-

मैं पढ़ चुका था - मइ पढ़िलेल-लिए।
तूम पढ़ चुका था - तंइ पढ़िलेल-ले।
वह पढ़ चुका था - अंइ पढ़िलेल-लाइ।

➪ **पुरन बिति बेराक सरान गठ**

Verb + asp. Marker + T. Marker + P. N. Marker

झिंक + (इ+लेल) + ल + ए//हे/थिक

(4) **निधक बिति बेरा** :- सरानकर जन धंचरले सरान बिति बेराहुं सिराइएक कनअ बाचिक निहिं पाउआइक, माने सरान निधक बिति बेरांइ चलेहेलेइक, अके निधक बिति बेरा कहथिक। जेसन :-

मैं खाता रहा था - मइ झिंकइते रहलिए।

तूम खाता रहा था - तंइ झिंकतेइ रहले।

वह खाते रहा था - अंइ झिंकतेइ रहलाइ।

➪ **निधक बिति बेराक सरान गठ**

Verb + asp. Marker + T. Marker + P.N. Marker

झिंक + (ते+रह) + ल + ए/हे/आइ/थिन

(5) **सइदम बिति बेरा** :- सरानकर जन धंचरले बिति बेरा तड़िक सरान सिराइएक निमुंद पाउआइक, मनतुक सउब दिनेक पारा करेक निमुंद पाउआइक, अके सदइम बिति बेरा कहथिक। जेसन :-

वे सभी दिन आते थे - अखरा सउब दिने आउए हेलथिन।

बिरसा के पिता सुगना मुंडा था - बिरसाक बाप सुगना मुंडा हेकलेइक।

बिनोद बाबु एक अकिल थे - बिनउद बाबु एक अकिल हेकलेइक।

## आउति बेरा (भविष्यत काल)

सरानकर जन धंचरले काम आउति बेरांइ सिराइएक बाचिक पाउआइक, अके आउति बेरा कहथिक। जेसन :- मिनाइ पढ़ति। दिनेस काइल इसकुल जाताइ। इठिन **पढ़ति** आर **जाताइ** ले काम आउति बेरांइ पुरा हेउएक बाचिक पाउआहेइक।

➪ क्रिया के जिस रुप से यह ज्ञात हो कि कार्य भविष्यत काल में पुरा होगा, उसे भविष्यत काल कहते हैं।

➪ **आउति बेराकर रकम**

आउति बेरा टेना रकमेक हेउअइक।

1. टुकु आउति बेरा (Simple Future Tense)
2. बे पुरन आउति बेरा (Future Continous Tense)
3. पुरन आउति बेरा (Past Perfect Tense)

(1) **टुकु आउति बेरा** :- सरानकर जन धंचरले कनअ काम आउति बेरांइ सुरु करेक बाचिक पाउआइक, अके टुकु आउति बेरा कहथिक। जेसन :-

| | | **एक वचन** | **बहु वचन** |
|---|---|---|---|
| मैं पढ़ुगाँ | - | मइ पढ़ब। | हामरा पढ़ब। |
| तूम पढ़ेगा | - | तंइ पढ़बे। | तहरानि पढ़बेहे। |
| वह पढ़ेगा | - | अंइ पढ़ताइ। | |
| वे पढ़ेगा | - | अखरा पढ़बउथिन। | अखरानि पढ़बउथिन। |

➪ **टुकु आउति बेराक सरान गठ**

Verb + aspect Marker + Tense Marker + Pr.No. Marker

झिंक + No + ब/त + ए/हे/आ

(2) **बे-पुरन आउति बेरा** :- सरानकर जन धंचरले कनअ काम आउति बेराहुं निहिं सरेक बाचिक पाउआइक, अके बे-पुरन आउति बेरा कहथिक। जेसन :-

| | | **एक वचन** | **बहु वचन** |
|---|---|---|---|
| मैं पढ़ता रहुँगा | - | मइ पढ़तेइ रहब। | हामरानि पढ़तेइ रहबइ। |
| तूम पढ़ते रहोगे | - | तंइ पढ़तेइ रहबे। | तहरानि पढ़तेइ रहबेहे। |
| वह पढ़ता रहेगा | - | अंइ पढ़तेइ रहताइ। | |
| वे पढ़ता रहेगा | - | अखरा पढ़ता रहता। | अखरानि पढ़तेइ रहबउथिन। |

(3) **पुरन आउति बेरा** :- सरानकर जन धंचरले आउति बेरांइ सरान सिराएक बाचिक पाउआइक, अके पुरन आउति आउति बेरा कहथिक। जेसन :-

| | | **एक वचन** | **बहु वचन** |
|---|---|---|---|
| मैं पढ़ चुकुगाँ | - | मइ पढ़ि रहब। | हामरानि पढ़ि रहबइ। |
| तूम पढ़ चुकेगा | - | तंइ पढ़ि रहबे। | तहरानि पढ़ि रहबेहे। |
| वह पढ़ चुकेगा | - | अंइ पढ़ि रहताइ। | अखरानि पढ़ि रहबउथिन। |

➪ **पुरन आउति बेराक सरान गठ**

Verb + asp. Marker + F. Aux. + T. Marker + P. N. Marker

झिंक + इ + रह + ब/त + ए/इ/हे/थिन

## (घ) सुजउग बेरा (Contigent Tense)

कुड़मालि पाड़सि माहान सरानकर कुछु एसन धंचर आहेंडक, जेटाले सरान चलति आर आउति बेरांइ सिराइएक बाचिक पाउआइक, अके सुजउग बेरा कहथिक। जेसन :- भात रांधा हेले मइ झिंकअइ तेलिए। पानि निहिं गिरले मइ इसकुल जाइ तेलिए।

➪ (कुड़मालि भाषा में क्रिया के कुछ ऐसे रूप पाया जाता है, जिससे क्रिया वर्तमान और भविष्यत काल में समाप्त होने का जिक्र मिलता है, उसे सुजउग काल कहते हैं। जैसे - खाना पकने से मैं भोजन करता। वर्षा नहीं होने से मैं स्कूल जाता।)

➪ यह कुड़मालि भाषा में पाये जाने वाले यहि एक विशेष गुण है।

➪ **सुजउग बेराकर रकम :-** कुड़मालि भांउअर माहान सुजउग बेरा दना रकमेक हेउअइक।

1. पुरन सुजउग बेरा
2. बे-पुरन सुजउग बेरा

(1) **पुरन सुजउग बेरा :-** सरानकर जन धंचरले सरान एकदम सिराइ जाइएक बाचिक पाउआइक, अके पुरन सुजउग बेरा कहथिक। जेसन :-

| | | |
|---|---|---|
| मैं खाना खाता | - | मइ झिंकइ तेलिए। |
| आप खाना खाते | - | तहरा झिंकइ तेलेहे। |
| वह खाना खाता | - | अंइ झिंकइ तेलाइ/तेलि |
| वे खाना खाता | - | अखरा झिंकइ तेला। |
| वे लोग खाना खाता | - | अखरानि झिंकइ तेला। |

➪ **पुरन सुजउग बेराकर सरान गठ**

Verb + asp. Marker + T. Marker + P. N. Marker

झिंक + अइ + तेल + इ/ए/आ/हे

(2) **बे-पुरन सुजउग बेरा :-** सरानकर जन धंचरले सरान आउति बेराहुं निहिं सिरातेइक, एकर इठिन बाचिक पाउआइक, अके बे पुरन सुजउग बेरा कहथिक। जेसन :-

| | | |
|---|---|---|
| मैं खाना खाते रहता | - | मइ झिंकते रहइतेलिए। |
| आप खाना खाते रहते | - | तहरा झिंकते रहइ तेलहे। |
| वह खाना खाता रहता | - | अंइ झिंकते रहइ तेलाइ/तेलि |
| वे खाना खाता रहता | - | अखरा झिंकते रहइ तेला |

➪ **बे पुरन सुजउग बेराक सरान गठ**

Verb Root + asp. Marker + C.C. Aux.+ T. Marker + P. N. Marker

झिंक + इ + रहइ + तेल + ए/इ/आ/हे

❖❖❖

# 16. पाइन आर मुहाइन

## (प्रत्यय और उपसर्ग)

### (क) पाइन (प्रत्यय)

कुड़मालि एक अश्लिष्ट अंत योगात्मक भाषा है। ये भाषा प्रत्यय प्रधान है। इस भाषा के मूल शब्दों में एक - एक प्रत्यय जुटते चले जाते हैं और नये - नये अर्थ बनते जाते हैं। जैसे :-

| | | | |
|---|---|---|---|
| डहर + आ = | डहरा + उ = | डहराउ + एं = | डहराउएं |
| (रास्ता) | (चलांना) | (चलवाना) | (चलवाये) |
| गड़क + आ = | गड़का + इं = | गड़कांइ + के = | गड़काइके |
| (गड़क) | (गड़कना) | (गड़काइये) | (गड़काकर) |

➪ इस भाषा के एक विशेषता यह है कि इनके शब्द रचना में प्रत्यय जुटने के बाबजूद इसके मूल शब्द में कोई विकार उत्पन्न नहीं होता है। जैसा कि अन्य आर्य भाषा के शब्द रचना में पायी जाती है। जैसे :-

➪ **अन्य आर्य भाषा में**

वेद + इक = वैदिक; निति + इक = नैतिक

भूगोल + इक = भौगोलिक; विज्ञान + इक = वैज्ञानिक

➪ **कुड़मालि भाषा में**

डहर (रास्ता) + आ = डहरा (पत्ता सहित डाली)

बेद + इक = बेदिक, झिंक + एक = झिंकेक आदि।

➪ इसमें प्रत्यय एवं मूल शब्दों के बीच स्पष्ट अंतर दिखाई पड़ती है।

➪ कुड़मालि भाषा में तत्सम प्रत्यय नहीं के बराबर मिलता है। फिर भी कुछ छिट-पुट एक-आध इस तरह का प्रत्यय पायी जाती है। 'आ' और 'इक' दो एसे तत्सम प्रत्यय पाया जाता हैं। जिसमें 'आ' धातु में जुड़कर क्रिया शब्द बनते हैं तथा 'इक' संज्ञा जैसे शब्दों में प्रयोग होता है। जैसे :-

➪ **तत्सम प्रत्यय**

आ - पढ़ + आ = पढ़ा, लड़ा, जखा।

इक - हाड़ि + इक = हाड़िक, गाड़िक, बाड़िक, माटिक इटासेटा।

⇨ **तदभव प्रत्यय**

अत - पढ़ + अत = पढ़अत; गाउअत, खुलअत, चलत, सेंढ़अत।

आइ - पढ़ + आइ = पढ़ाइ; पिंधनाइ, जामाइ, दनदनाइ, दहलाइ।

आउ - गड़क + आउ = गड़काउ; डहराउ, महकाउ, जमाउ।

इन - समधि + इन = समधिन; भुतिन, डाकिन, गलिन, जलहिन।

⇨ **कुड़मालि के अपने प्रत्यय** :- एहे पाड़सि माहान पाइनेक आड़ात आहेइ। जाकर इहां कुछु निमुंद देल गेल आहेइ। जेसन :-

गिला - काड़ा + गिला = काड़ागिला; भेड़ागिला, गाइछगिला, डांगागिला।

गिलि - मइस + गिलि = मइसगिलि; अढ़ाइरगिलि, कटइरगिलि।

टा - खाइट + टा = खाइटा; कनगाटा, पाचिरटा, अंधनटा।

टि - कलम + टि = कलमटि; डाइरटि, ठेंगाटि, सांइड़टि, खापड़ाटि।

अल - जाग + अल = जागल; भेदकल, हदकल, सटकल, मेड़ल, सनगल।

अनि - रांध + अनि = रांधअनि; डाकटरनि, इड़कअनि, अलअनि।

आलि - कुड़म + आलि = कुड़मालि; छउआलि, खाटालि, घुमालि।

आइ :- खाट + आइ = खाटाइ; सटाइ, ताकाइ।

आंइ :- कनगा + आंइ = कनगांइ; खाचांइ, टिलहांइ, डभांइ।

आल :- मात + आल = माताल; घुमाल, सामाल, फुटाल,दिकाल।

इल - फुरा + इल = फुराइल, भुलाइल, जुड़ाइल, मेहाइल, चेकाइल।

टेक :- घड़ि + टेक = घड़िटेक; हांथटेक, मासटेक, हापताटेक।

तिक :- बुढ़ान + तिक = बुढ़ानतिक; जुआनतिक, मरनतिक।

नि :- अढ़ + नि = अढ़नि; गांथानि, घुरनि, थापनि, कड़नि।

निखा :- काकि + निखा = काकिनिखा; दिदिनिखा, मामानिखा।

निअर :- काड़ा + निअर = काड़ानिअर; गरुनिअर; खउरनिअर।

लि :- खाटा + लि = खाटालि; मुहलि, ढुकलि, रुसलि, बुटलि।

ला :- गाइ + ला = गाइला; छउआला, फेटाइनला, कांथाला।

ले :- आड़रा + ले = आड़राले; थापले, कांदले, पढ़ले, बाढ़ले।

लेइक :- चेका + लेइक = चेकालेइक; छिड़लेइक, उखड़अलेइक।

⇨ इनके अलावे के, अइआ, इके, एक, इस, इआ, गिलान, टाक, तिक, तेइ, तेइक, एइक, नि, ना, धअरा, बइ, लेइ, लेइक, ले इत्यादि कुड़मालि भाषा में अपने तरिके से प्रयोग होता है।

## (ख) मुहाइन (उपसर्ग)

जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है कि कुड़मालि एक प्रत्यय प्रधान भाषा है। इसका मतलब यह नहीं कि इस भाषा में उपसर्ग का कोई स्थान ही नहीं है। इस भाषा में भी उपसर्ग पायी जाती परंतु इनंकी संख्या गिनने मात्र के है।

जैसे :- भु, चु, सु, सिं इत्यादि उपसर्ग पायी गई है।

➪ मुहाइन, अहे साड़ाक खंड़के कहथिक, जे कनअ गड़ा साड़ाक पेहिल जड़ाइके अकर माने बदलाइक।

➪ मुहाइनेक निजेक कनअ सटिक माने निहिं रहइक। जेसन :-

चु - चु + हाड़ = चुहाड़, चुमान, चुहुक, चुतर।

भु - भु + चाड़ = भुचाड़, भुखल, भुतिन।

सु - सु + धड़ = सुधड़, सुफाड़ि, सुखाइके, सुखल, सुताइ।

सिं - सिं + आड़ा = सिंआड़ा, सिंखान, सिंथान, सिंगअड़ा।

➪ एकर छाड़ि तत्सम, तदभव उपसर्ग भी पायी जाती हैं।

➪ **तत्सम उपसर्ग**

अप - अप + मान = अपमान, अपहरन।

अ - अ + सार = असार। अभाब,

आ - आ + धड़ = आधड़, आखड़, आमड़ा, आचार, आरुआ।

➪ **तद्भव उपसर्ग**

उ - उ + चार = उचार, उसास, उदल, उसना, उचरा, उफड़ा।

**Note** :- 'भाइस' आर 'हेड' उपसरगअ गिला खालि बिदेसिआ साड़ाहिं बेबहार हेउअइक। जेसन :- भाइसचांसलर; भाइसपिरिनसिपल, भाइसपेरसिडेंट, हेडमासटर, हेडअफिस आरअ इटासेटा। इठिन 'भाइसेक', 'हेडेक' ठाइने हामरा मुखिआ, बड़अ बाबु, छटअ बाबु बेबहार करे पारिए।

➪ पाइन (प्रत्यय) और उपसर्ग का अपना कोई स्वतंत्र अर्थ नहीं होता है। यह किसी शब्द के अंत और पूर्व में जुड़कर कोई अन्य अर्थ प्रकट करता है।

❖❖❖

# 17. टुम

## (वाक्य)

टुम एसन साजाउअल साड़ाकर धंचर हेकेइक, जाकर पाड़सि माहान कनअ सटिक माने बाहराइक, अके टुम कहथिक। जेसन :- अंइ काइल इसकुल जाताक। काइल मुखिआक बेइठकि हेतेइक।

➪ (वाक्य वैसा संयोजित किया हुआ शब्दों का समूह है, जिसका भाषा में कोई सार्थक अर्थ निकलता हो।)

➪ कुड़मालि भाषा के वाक्यों में क्रिया शब्दों के साथ सहायक क्रिया, वचन का चिन्ह आदि एक साथ व्यावहारित होता है। इस समूह को 'सरान गठ' कहते हैं।

➪ वाक्य करमि (कर्ता), करनि (कर्म) और सरान (क्रिया) से व्यवस्थित रहता है। परंतु करनि किसी - किसी वाक्य में नहीं भी रहता है। जैसे :- अंइ पथि पढ़इस। अंइ पढ़इस। पहले वाक्य में करमि (कर्म) है परंतु, दूसरे वाक्य में करमि नहीं है।

➪ **टुमकर अंग** :- पति टुमे मटा-मटि दना गअ अंग रहइक :-

1. धेइ (उदेश्य/(Subject)
2. खेइ (विधेइ/Predicate)

1. **धेइ** :- टुमे जाकर लेइ कुछु फदरल जाइक, अके धेइ कहल जाइक। टुम माहान सरानकर परभाउ सउभले बेसि जन अंगे पड़इक, अके करमि कहाइक आर करमि किहिं 'धेइ' कहल जाइक। जेसन :- **टुनटुने** पथि पढ़इस। एहे टुमे टुनटुनेक लेइ कहल गेल आहेइक, जेकि अंइ पथि पढ़इस। इठिन **टुनटुन** धेइ माने करमि हेकेइक। दांजा (आंगा), अइजि, गुनिन साड़ागिला धेइएक रुपे टुमे बेवाहार हेउअइक।
2. **खेइ** :- धेइकर बारे जे कनअ कहल जाइक, अके खेइ कहल जाइक। जेसन - रेसमाइ पथि पढ़इस। सुमित खेलइस। एहे टुम माहान पढ़इस आर खेलइस इ दुइअ धेइ हेकेइक।

➪ **हेंठे एकरले पति टुमके दना खंड़े खंड़ल गेल आहेइक** :-

| **करमि/धेइ** | **करनि/खेइ** |
|---|---|
| छउआला | कलकलाहात |
| खेरिहान | धान डिंगाउअल आहेइक |
| अंइ | कंदे गेल आहाइ |

Note :- कुड़मालि टुमे, करमि (Subject) इआ तअ दांजा (Noun) किमबा एकर ठाइने अइजिअ हेउए पारअइक। खेइ माहान सटिक सरान (Finite Verb) खांटिए रहअइक।

➪ **टुमकर रकम :-** कुड़मालि पाड़सिक टुमके दना ठेहअड़े बांटल जाइ परइक।
(क) धंचरेक ठेहअड़े आर (ख) मानेक ठेहअड़े।

➪ धंचरेक ठेहअड़े टुम दना रकमेक हेउअइक :-

1. सड़घड़िआ टुम (सरल वाक्य)
2. भजाल टुम (संयुक्त वाक्य)

1. **सड़घड़िआ टुम :-** जन टुमे अना गअ सरान आर अना गअ धेइ किमबा करमि रहअइक, अके सड़घड़िआ टुम कहथिक। जेसन :- इसकुल खुजलेइक। पानि गिरलेइक। अंइ पढ़तेइक। अखरा आउताक। उ इसकुल जाति। एहे टुमे अना गअ कअरि करमि आर सरान आहेइक। तेंइ एहे गिला सड़घड़िआ टुम कहथिक।

2. **भजाल टुम :-** भजाल टुमे अना गअ सअझा टुमेक संगे - संगे आरअ जड़ाउअल टुम रहअइक, अके भजाल टुम कहथिक। दसर साड़ा माहान, जन टुमे अना गअ धेइ आर खेइएक संगे - संगे आरअ सरान रहअइक, अके भजाल टुम कहथिक। जेसन :- उ कन हेकाइ, जेंइ रामदआल मुंडाके निहिं जानअइक। मइ केलासे आइके गडले रहल, तातके मासटरनि आइ ढुकलि।

➪ टुमेक मानेक ठेहअड़े कुड़मालि टुम छइ रकमेक हेउअइक।

1. सझिआ टुम (विधि वाचक वाक्य)
2. खंचिआ टुम (प्रश्न वाचक वाक्य)
3. आढ़ान-बातान टुम (आज्ञा वाचक वाक्य)
4. हुड़न टुम (Causative Sentence)
5. सम-समिआ टुम (विस्मयादिबोधक वाक्य)
6. बानछा टुम (Optative Sentence)

1. **सझिआ टुम :-** जन टुमे सअझा - सअझि काथा हेउअइक, अके सझिआ टुम कहथिक। एहे टुमे कनअ काम हेउएक आर नि हेउएक बाचिक हेउअइक। इटांइ कनअ काथा 'हां' आर 'नाइए' जानाउअल जाइक।

➪ **सझिआ टुम दो प्रकार के होते हैं :-**
(क) हामि टुम (Affirmative Sentence) आर
(ख) बारन टुम (Negative Sentence)

**(क) हामि टुम :-** जन टुमले कनअ काम हेउएक टउआ पाउआइक, अके हामि टुम कहथिक। माने हामि टुमे खालि 'हां' कर भाउ पाउआइक। जेसन :-

***सड़घड़िआ टुम :-*** महनेक जर बेस हेलेइक। अंइ पढ़लाइ।

***भजाल टुम :-*** माइएक भात रांधल हेलेइक आर मर भुख सिरालेइक। पढ़ेक चटांइ इआद हेलेइक।

(ख) **बारन टुम :-** जन टुमले कनअ काम नि हेउएक टउआ पाउआइक, अके बारन टुम कहथिक। माने बारन टुमे 'माना' किमबा 'बारन' कर भाउ पाउआइक। जेसन :-

***सड़घड़िआ टुम :-*** अंइ निहिं पढ़अहइस। अंइ आइज इसकुल नि जाताइ।

***भजाल टुम :-*** गितांइ निहिं पढ़लि तेंइ उ पास निहिं कर पारलि। इ बछर बेस पानि निहिं हेउअल, तेंइ चासउ बेसले निहिं हेउअल। जखांइ डाकटर निहिं आउअल तेंइ रगि टिड्डुआइ गेलेइक।

➪ **हामि - ले - बारन टुम बनाउएक निअम**

कुड़मालि भाखा माहान मटा मटि सउभे रकमेक टुमकें बारन टुम बनाउअल जाइक। एकर खातिर चारा गअ साड़ा बेबाहार हेउअइक। मनतुक, टुमे एकर ठाइन भिनु - भिनु रहअइक। नि, निहिं, ना, आर नाइ टुमे एके बेबहार करेक कुछु निअम आहेइक।

1. 'नि' आर 'निहिं' कर बेबहार टुमे सरानेक पेहिल हेउअइक। जेसन :- तंइ एखनअ निहिं गेले। मर ठिन एखन पथि नि आहेइक। एखन नि हेले कखन पाउबे कहें?
2. 'नाइ' कर बेबहार टुमेक सेंसे हेउअइक। जेसन :- अंइ आइज आर हार जड़ताइ नाइ? बाबलुंइ मेटरिक पास करलाइ नाइ। तंइ अके देखले नाइ।
3. 'ना' आर 'नाइ' एके टुमहुं, एक संगे बेबहार हेउअइक। 'ना' कर बेबहार सउब बेरांइ सरानेक पेहिल आर 'नाइ' कर बेबहार टुमेक सेंसे सरानेक परे हेउअइक। जेसन :- तंइ ना आउले मइ मेला देखे जाब नाइ। ना हेले अंइ आउति नाइ। बेस करि ना पढ़ले परिकखांइ पास करे पारबे नाइ।

2. **खंचिआ टुम :-** जन टुमले कनअ खंच करेक बाचिक पाउआइक, अके खंचिआ टुम कहथिक। जेसन :- तंइ कन हेकिस? अंइ किना खजअइ सहि? तर कहेक मानेटा किना? झुमअइर खेले तंइ काहां गेल रहले?

**Note :-** 1. कुड़मालि पाड़सि माहान खंचिआ साड़ा आलेदा आहेइक।
जेसन :- कन, काहां, किना, काके, केसन, केतेक आरअ इटासेटा।
2. टुम सिराआइल परे '?' चिनाहा दिउअल जाइक, जाके खंच बाचिक चिनाहा कहल जाइक।

3. **आढ़ान-बातान टुम :-** जन टुमले कनअ आढ़ान-बातान, नेहर, बारनकर निमुंद पाउआइक, अके आढ़ान-बातान टुम कहल जाइक। जेसन :- सिता तंइ एखन डिंढ़ा जांइ। तंइ एहे काम टा करि दे। तंइ एहे ठिन रहें। एहे टुम गिलांइ

नेहर, आढ़ान बातानकर निमुंद हेउअल आहेइक। एकर कुछु निअम आहेइक, जाकर दाराले सड़घड़िआ टुमके आढ़ान-बातान टुमे बदलल जाइ पारअइक। जेसन :-

1. मिरा पाटि- मिरा झन हेतेइक।
2. दउज पाटि - मुहा-मुहि, पिठिआ झन हेतेइक।
3. टेना पाटि - घुरलि मुहा, आन झन हेतेइक।
4. बेरा कबहुं बिति बेरांइ रहतेइक नाइ। इ चलति बेरा आर आउति बेरा हेउए पारअइक।
5. चलति बेराक चिनहा आउति बेरांइ बदलि जाइ पारअइक।

**जेसन :-**

तंइ जाइस - तंइ जांइ/जउ।
तहरा जाइहा - तहरा जा।
तहरानि जाइहा - तहरानि जा गअ।
अंइ जाउअक - अखरा जाउअक

4. **हुड़न टुम :-** जन टुमे दना गअ कारन किमबा दना गअ धेइ रहअइक, अके हुड़न बाचिक टुम कहथिक। माने एहे टुमे कनअ काम दसराक दारांइ किमबा दसराक खातिर काम करेक भाउ पाउआइक। जेसन :-
माइए छउआके दुध चुसाउलेइक। (मां ने बच्चों को दूध पिलाया)
रेफरिंइ मेच खेलाउलेइक। (रेफरी ने मैंच खेलाया)
5. **सम-समिआ टुम :-** जन टुमले हुब, गहगहि, हाइ, घिरनाकर बाचिक पाउआइक, अके सम-समिआ टुम कहथिक। एकर चिनाहा (!) हेकेइक। जेसन :-
आह! केते सउआद तिअनटा।
बेचारा! राम देआल नि रहलेइक।
6. **बानछा टुम :-** जन टुमे काकरअ खातिर हिआले बानछा, सापान दिउएक बाचिक पाउआइक, अके बानछा टुम कहथिक। एहे टुम गिलाक सेंसे सम-सम बाचिक चिनाहा (!) दिउअल जाइक। जेसन :- कुड़मालिके दउज राजभाखा बनाउएक बेजांइ - बेजांइ सगुन बानछा! छउआटाके बेस करि जतन करबउसिक! तंइ कबहुं मेटरिक पास करे निहिं पारबे! तहरा सउभिंइ परब तिहारके जगाइ राखबेहे!

❖❖❖

# 18. उलटा साड़ा

## (विलोम शब्द)

धराक दसर पाड़सिक डुल कुड़मालि पाड़सि माहाउ बेजांइ उलटा साड़ा पाँउअल जाइक। जाकर निमुंद हेंठे देल गेल आहेइक।

| कुड़मालि शब्द | | | हिन्दी अर्थ | | |
|---|---|---|---|---|---|
| साड़ा | - | उलटा साड़ा | शब्द | - | विलोम शब्द |
| आउआ | - | जाउआ | आना | - | जाना |
| आंड़रा | - | हिसड़ा | रोना | - | हंसना |
| आगु | - | पेछु | आगे | - | पीछे |
| आबगा | - | मेझाइल | खाटी | - | मिलावट |
| इंड़का | - | चला | दौड़ना | - | चलना |
| इहां | - | उहां | यहाँ | - | वहाँ |
| कांचा | - | पाकल | कच्चा | - | पक्का |
| काना | - | भालअ | अंधा | - | अच्छा |
| काइल | - | आइज | कल | - | आज |
| केरिआ | - | चेरका | काला | - | गोरा |
| कंका | - | लबरा | गूंगा | - | बोलने वाला |
| गांजल | - | चकतल | उलट-पुलट | - | मोड़कर रखना |
| गादर | - | पाकल | कच्चा | - | पक्का |
| गुड़िअ | - | तिता | मिठा | - | तीता |
| घार | - | टांइड़ | मकान | - | मैदान |
| चखह | - | भथड़ | धार | - | बेधार |
| चिकन | - | खरखुसरा | चिकना | - | खुरदरा |
| चेंका | - | गुड़िअ | खट्टा | - | मिठा |
| छाहां | - | रउद | छाया | - | धूप |
| छउआ | - | ढाइड़ | बच्चा | - | बच्चे के माँ |
| जनम | - | मरन | जन्म | - | मृत्यु |
| झिंका | - | सेढ़ा | खाना | - | पीना |
| झंझट | - | निफिकिर | उलझन | - | वे उलझन |

| कुड़मालि शब्द | | | हिन्दी अर्थ | | |
|---|---|---|---|---|---|
| साड़ा | - | उलटा साड़ा | शब्द | - | विलोम शब्द |
| झगड़ा | - | सांति | झगड़ा | - | शांति |
| टुल-टुल | - | ढंग-ढंग | भरा हुआ | - | खाली |
| ठांउए | - | फाराक | नजदीक | - | दूर |
| ढेइनपेइटा | - | बलगर | दुबला | - | बलवान |
| ढेइर | - | टुएक | ज्यादा | - | थोड़ा |
| तपा | - | कअड़ा | गाड़ना | - | खोदना |
| देरि | - | चांड़े | विलम्ब | - | शीघ्र |
| दानि | - | चिपास | दानी | - | कंजुस |
| धाइर | - | मांइझ | किनारा | - | मध्य |
| नरम | - | सकत | मुलायम | - | कठोर |
| नउतुन | - | आधड़ | नया | - | पुराना |
| पअहा | - | गाइछ | पौधा | - | पेड़ |
| पाप | - | पुइनअ | पाप | - | पुन्य |
| फुहड़ | - | सुधड़ | गंदा | - | अच्छा |
| बड़अ | - | छटअ | बड़ा | - | छोटा |
| बादि | - | संगि | विरोधी | - | दोस्ती |
| बर | - | केनिआइ | दुल्हा | - | दुल्हीन |
| बासि | - | रअका | देर का भोजन | - | ताजा |
| बिहान | - | सांइझ | सुबह | - | शाम |
| भउजि | - | बउआसिन | भाभी | - | अछूत |
| भउर | - | झांइझ | भोर | - | शाम |
| रका | - | बासि | ताजा | - | देर का |
| रठा | - | सउआद | तीखा | - | स्वादिष्ट |
| लेका | - | हुंसिआर | वैकूफ | - | चालबाज |
| सांघात | - | बउआसिन | परिहास | - | परिहार |
| ससता | - | मांहगा | सस्ता | - | मंहगा |
| हाइर | - | जित | हार | - | जीत |
| हिंसड़ा | - | कांदा | हंसना | - | रोना |

❖❖❖

# 19. ढेइर साड़ाक ठाइने एक साड़ा

## (अनेक शब्दों के बदले एक शब्द)

➪ उ भुंइ जेठिन कनअ उपज निहिं हेउअइक। - माठ
(वह भूमि जिसमें कुछ भी पैदा नहीं होता है)

➪ जन छउआक बिहा निहिं हेल आहेइक। - कुंअर
(जिस बच्चा का शादी नहीं हुआ हो)

➪ उ जुआंन जाकर बिहा निहिं हेल आहेइक। - थुभड़
(जवान जिसका शादी नहीं हुआ है)

➪ नउआ बिहाइल जाकर छउआ निहिं हेल आहेइक। - डंगुआ
(नव विवाहित जिसका बच्चा नहीं हुआ है)

➪ बिहाक ढेइर बछर परुहुं जाकर छउआ निहिं हेउअइक - आंटकुरा
(शादी के बहुत वर्षों के बाद भी जिसका बच्चा नहीं हुआ है)

➪ बिहाक परे जाकर भातार मरि जाइक। - रांड़
(शादी के बाद जिसका पति मर जाता है)

➪ छटअंइ जाकर माइ-बाप टिडुआइ जाइक। - टुअर
(छोटे में जिसका माँ-बाप मर जाता है)

➪ जाकर आंइखे निहिं देखाइक। - काना
(जो आँख से अंधा रहता है)

➪ जन लुगाटा पुरना हेइ जाइक - आधड़
(जो कपड़ा पुराना हो जाता है)

➪ जाकर मुड़े चुइल निहिं रहइक। - मुड़रा
(जिसके सर पर बाल नहीं रहता है)

➪ जाकर मुड़ेक चुइल झेड़ि गेल आहेइक। - टेइकला
(जिसके सर का बल समाप्त हो गया है।)

➪ जाकर धड़ पातला रहइक। - ढेइन-पेइटा
(जिसका शरीर दुबला पतला रहता है)

➪ जेइ आन ठेकाने घुरअइ। - उधमा
(जो बिन काम का घूमता है)

➪ जाकर दिमाग काम निहिं करइक। - भंदा
(जिसका दिमाग शुस्त रहता है)

➪ जन गरुक नेंइज काटाइ जाइक। - बांड़ा
(जिस बैल का पुंछ कट जाता है)

➪ खेतेक धारिक गाढ़ा, जेटांइ पानि रहइक। - डांड़ि
(खेत के किनारे का गड्ढा जिसमें पानी रहता है)

➪ जाहां बिहा हेउअइक। - माड़ुआतर
(जहाँ शादी होता है)

➪ जेंइ गाइ गरु चेराइक। - बागाल
(जो मवेशी चराता है)

➪ जाकर भाइगअ खारप रहइक। - कपाल फुटलाहा
(जिसका नसीब अच्छा नहीं रहता है)

➪ जाकर हांथेक लुइर निहिं रहइक। - लेलाहा
(जिसका कलाकारी गुण नहीं रहता है)

➪ जाकर सउआद पानिक पारा। - पेनसेटरा
(जिसका स्वाद पानी जैसा)

➪ जाकर धड़ नाटा रहइक। - ठेंठा
(जिसका शरीर नाटा कद का होता है)

➪ जाकर थथना धारदार रहइक। - चखअ
(जिसका मुँह धारदार हो)

➪ बाढ़िन जखन खिआइ जाइक। - ठुठका
(घिसा हुआ झाड़ू)

➪ जन जेनिंइ रागे-रागे फदरइक। - चेरचेरि
(जो औरत कड़ुवा बोलती है)

➪ जेंइ दउमे काथा फदरअइक - लबरा
(जो ज्यादा बात करता है)

➪ जेंइ कम काथा फदरअइक - मुहचंरा
(जो कम बात बोलता है)

➪ झगड़ा करअइआ मरद - झगड़इआ
(जो मर्द झगड़ा करता है)

➪ झगड़अइआ जेनि। - झगड़ि
(जो औरत झगड़ा करती है)

➪ जेंइ नाइच गान करइक। - नेचनि
(जो नाच गान करती है)

➪ जेंइ खेते आरे हार जतइक। - हारुआहा
(जो खेत में हल चलाता है)

➪ जेंइ घारे ढुकि रहइक। - घार-घुसका
(जो घर में घुसा हुआ रहता है)

➪ जेंइ मनेक कथा मने राखइक। - गुमगुमिआ
(जो मन की बात मन में ही रखता है)

➪ जेंइ भितर-भितरे काम करइक। - भितर-घुसका
(जो अंदर-ही-अंदर काम करता है)

➪ जेंइ घिसट रहइक। - घिसटाहा
(जो गंदा रहता है)

➪ जे पानिक कमिंइ मुरझाइ गेल आहेइक। - लुरुआ
(जो पानी की कमी से मुरझाया है)

➪ जाकर ठिन कुछु निहिं आहेइक। - कंगाल
(जिसके पास कुछ नहीं रहता है)

➪ जेंइ बेसि पेंइनचा लेइ राखअइ। - हाथ-भारि
(जो उधारी में डुबा रहता है)

➪ जन हड़े कुछु निहिं बुझअइक। - रढ़
(जो आदमी कुछ नहीं समझता है)

➪ जेंइ एकदम केरिआ रहइक। - कुइला
(जो आदमी बिलकुल सांवला रहात है)

➪ जन ठिन साहार जामा करल जाइक। - साहार-कुंड़
(जहाँ पर गोबर जमा किया जाता है)

➪ जन ठिन सिनान करल जाइक। - घाट
(जहाँ पर स्नान किया जाता है)

➪ जन ठिन धान मेड़ल जाइक। - खामहार
(जहाँ पर फसल से अनाज निकाला जाता है)

➪ घास पातेक बनाइल घार। - कुमाढापु
(घास फुस का बनाया घर)

➪ खेतके अगरेक खातिर बनाल उंचअ घार। - माचान
(खेत की देख-भाल के लिए ऊँचा मकान)

➪ पउंआरले बनाइल धान राखेक खातिर। - बिटा
(बिचाली से बनाया हुआ जिसमें अनाज रखते है)

➪ जेंइ झाड़-फुक करइक। - अझा
(जो झड़-फुक करता है)

➪ जेंइ मास-माइछ निहिं झिंकत। - निरामिस
(जो मांस मछली नहीं खाता है)

➪ जेंइ बिहा जड़ेक काम करइक। - आगुआ
(शादी जोड़ने वाला)

➪ जन घारे भात रांधाइक। - रांधाघार
(जिस मकान में भोजन पकता है)

➪ जेटांइ खुचरा पइसा राखल जाइक। - कुपि
(जिसमें खुल्ला पैसा रखा जाता है)

➪ बछरेक पेहिल दिन। - आखांइन
(वर्ष का पहला दिन)

➪ बांधेक पानि जेटा घिसट हेइ गेल आहेइक - गाबल
(वह तलाब जिसका पानी गंदा हो गया है)

➪ जाहां नाइच गान हेउअइक। - आखड़ा
(जहां पर नृत्य-गान होता है)

➪ जाहां नटुआ नाइच सिखल जाइक। - पांइख गाड़ि
(जाहां नटुआ नृत्य सीखी जाती है)

➪ जन छाति काठेक उपर उगअइक - काठछाति
(जो मजरूम लकड़ी के उपर उगता है)

➪ जेंइ जानि बुझिके निहिं सुनइ। - आनकान
(जो जान बूझकर नहीं सुनता है।)

❖❖❖

# 20. एक मानेक ढेइर साड़ा

## (पर्यायवाची शब्द)

कुड़मालि भाषा में अन्य भाषाओं की तरह एक शब्द के कई रूपों का प्रयोग किया जाता है। चाहे वह स्थानीय भेद के कारण हो या फिर चाहे अन्य भाषाओं के प्रभाव के कारण हो जो इस प्रकार है :-

- अना (सुनना) - सुना, कान लागा।
- अलढा (लेटना) - जिरा, आराम करा, घलटा।
- आइग (आग) - आग, आंगरा।
- आदर (आदर) - दुलार, बालअ।
- आफर (बीजा) - पहा, चारा।
- आंगा (सर्ट) - पिरान, कामिज।
- आबगा (विशुद्ध) - खांटि, रका।
- इंड़का (दौड़) - दउड़ा, रदबदा।
- इस (हल का ईस) - सांइड़
- कांकुआ (कंघी) - चिरुन
- काटरा (फरसा) - फारसा
- कुलुप काठि (चाभी) - चाभि
- खाइट (खटिया) - खेइटला, खाटि, खाट।
- खातिर (लिए) - तेंहे, लागिन, जइनने
- खिस (गुस्सा) - राग, गुरगुरा, गात-जरा।
- खुब (अत्याधिक) - बेजांइ, ढेइर, बेसि, कउसि।
- खुइन (रक्त) - रकत
- खातिर (लिए) - लागिन, तेंहे, जइनने।
- खंड़ (टुकड़ा) - टुना।
- खिआ (घिस जाना) - घेसाइ जाउआ, मांजाइल।
- गअडा (बैठना) - बेसा, थसका, थेसड़ि।
- गात (शरीर) - गतर, धड़।

- गड़ (पैर) - टेंग।
- गुड़िअ (मिट्ठा) - मिठा
- गुसटि (गोत्र) - गतरअ, टउटेम।
- गमक (सुगंध) - बास।
- गरअ (उजला) - चेरका, इजर, फरसा, धअला, सादा।
- घाड़ (गर्दन) - घेंचा, गरदन।
- घटि (लोटा) - लटि
- घेटि (हानी) - हानि
- घरना (लकड़ी का बांउड्री) - बेढ़ना।
- चेरइ (पंक्षी) - पांइख, फेइचा।
- चुटि (बिड़ी) - बिड़ि, फिंका।
- चड़चड़ुआ (प्रखर धूप) - पटपटुआ, खरा, रउद।
- चालु (चलाक) - सिआन, चालाक, चालबाइज।
- चेथरा (फटा कपड़ा) - गेंदरा, चिथरा।
- छउआ (बच्चा) - गिदर
- छाल (छिलका) - बाकला
- छइ (छः) - छअ
- जिरा (विश्राम) - आराम, फेदान।
- जुआन (जवान) - सिआन, बड़अ, मानुसमान।
- जहाइर (प्रणाम) - गड़लागा, परनाम करा, जड़ हांथ।
- झंटे (जल्दी में) - चाड़े, चटकरि।
- झनगा (ज्यादा बड़ा) - डिलडाल, डिला
- झेलुआ (झुला) - दलदला।
- झुड़ि (लकड़ी) - काठि, खेइड़का, काठ, कुचा।
- टुएक (थोड़ा सा) - कम, टुकु, एलपअ, रिचिक, दुटि।
- ठउका (होलसेल) - एक बारेइ, मटिआ।
- डहर (रास्ता) - रासता, बाट।
- डांगा (मैदान) - टांइड़, बिल, आड़ांग।
- डअका (मुंह) - थथना, मुंह, हा।
- डिंढ़ा (मकान) - घार, ढिपा।

- ढिंग (इक्ठा) - कुधि।
- ढेंका (ढेला) - डाब, गुलि।
- ताइ (तावा) - ताउआ
- तड़िक (तक) - तक, पजुंतअ
- दअड़ा (रस्सी) - रअसि
- दिन सगर (दिन भर) - दिन भर, गउटे दिन, पुरा दिन।
- दुर (दूर) - फाराक।
- देदार (बहुत) - मेला, दउमे।
- दम (श्वास) - निकास, सांस।
- दमगर (बलवान) - बलगर, दढ़अमाढ़अ, दहरि बांधा।
- दंहगि (दल) - दल
- दिगे (दिशा) - बाटे, दिसा।
- नाफा (लाभ) - फेइदा, लाभ।
- पाखड़ (पत्थर) - पाखना, पाथर, लढ़ि।
- पागार (मिट्टी का बाउंड्री) - बेड़।
- पांचिर (दिवार) - दिआल, कांथ।
- पुंछ (पूंछ) - नेंइज
- पेंदा (झूठा) - मिछा, पेंदाइ।
- पांइख (पक्षी) - पांखि,
- पहना (मेहमान) - आपुस, कुटुम।
- फदरा (बोलना) - कहा, बजका।
- फुंद (अस्मान) - आकास
- फुंनगि (आग का टूकड़ा) - फुरुंग, आंगरा।
- फरंगत (निर्जन स्थान) - फांका,
- फुरा (समाप्त) - सिरा, फांका, खतम, फाइफुइ।
- बाखरा (बटवारा) - भाग, बाट, हिंसा, खेजा।
- बागाल (चरवाहा) - गरखिआ, मुनिस।
- बेस (अच्छा) - ठिक, भालअ।
- बानछा (कामना) - कामना, हिचछा, मनेक साध।

- बेराडुबा (शाम) - सांइझ, मुहआंधरा, सेंइधा।
- बअका (वैकूफ) - लेलाहा, धेंधा।
- बतर (अवसर) - जअखा, अबसर।
- भउर (भौर) - भिनसेरिआ, फेरिछ।
- भउग (प्रसाद) - परसाद
- भाग (भाग) - बाखरा, खंड़, खेजा।
- भासा (भाषा) - पाड़सि, भाखा।
- मनतुक (परंतु) - मेनतुक, लेकिन, मेनेक, किंतु।
- मन (आकांक्षा) - हिचछा, आसा, साध।
- मग (जग) - जग
- मांगना (मुफ्त) - फिरि, मुफत, एसनेइ।
- मुहाइन (शुभारंभ) - चालु, सुरु, आखाइन।
- मुनगा (एक प्रकार का साग) - सलना, सजना।
- राकसा (रक्सा) - मेइर, पाटन।
- लेइहा (कड़ाहि) - डुभनि।
- लुगा (साड़ी) - साड़ि,
- सगड़ (गाड़ी) - गाड़ि
- साहार (गोबर) - गबर, गुअ।
- सांढ़ा (मुर्गा) - मुरगा, खुखड़ा।
- सगुन (शुभ) - सुभअ, भालअ, जखा, जउग।
- सिनि (पानी पटाने वाला) - डाबका
- सिथान (तकिया) - बारलिस, मुड़ सिथान,
- हाड़मुड़रा (खुला बदन) - खाड़राह।

❖❖❖

# 21. डाकपुरुसेक कथा

## (लोकोक्ति)

कुड़मालि समुदाय के लोग अपने दैनिक व्यवहार में अनेक ऐसे उक्ति का प्रयोग करते हैं, जिससे इनके कथन में शक्ति आ जाती है। जिसका श्रोताओं पर जमकर प्रभाव पड़ता है तथा यह उक्ति किसी बात को परंपरा में बांधने के क्रम में बोली जाती है, जिसे लोकोक्ति या कुड़मालि में इसे 'डाकपुरुसेक कथा' कहा जाता है। इसके लोक साहित्य में 'डाकपुरुसेक कथा' का महत्वपूर्ण स्थान है। भाषा में इनके प्रयोग से किसी कथन में तीव्रता और प्रभावपूर्ण हो जाता है तथा भाषा में बल आ जाता है, इस तरह सुनने वालों के हृदय पर इसका प्रभाव हुए बगैर नहीं रहता है। यह इस समुदाय के ज्ञान के निधि है। इस समुदाय ने आदि काल से जिन - जिन तथ्यों को बिड़ा, परखा अर्थात् साक्षातकार किया है, उनकी अभिव्यक्ति डाकपुरसेक कथा के माध्यम से किया है। इस भाषा-भाषियों के बीच डाकपुरसेक कथा आदि काल से अब तक अद्‌भूत नैतिक ज्ञान का सूत्र रहा है और आगे भी रहेगा।

⇨ कुड़मालि भाषा के कुछ आहना इस प्रकार है जो इस भाषा-भाषियों के बीच काफी लोकप्रिय है।

- आंख गिरले दबड़ आर धान गिरले गबर।
  (गन्ना के गिरने दौगुना और धान गिरने गोबर)
- आपन सचअइ, परेक नचअइ।
  (अपना समान रहते दूसरों का उपयोग करना)
- आपन गांउए कुकुर राजा। (अपना क्षेत्र में सब राजा होता है)
- अभाबे सभाब नसटअ। (अभाव से रूप नष्ट होता है)
- आरअ मुड़रि बेइल तर। (एक बार बचने के बाद दोबारा ना जाना)
- आन कहइते कान, बुढ़िंइ कुटे धान। (आदेश के बिपरीत काम करना)
- आमे बान, तेतरिंइ टान।
  (आम फलने से धान और इमली फलने से सुखा होता है)
- आघाइल बकलि पंठि तिता।
  (पेट भरा रहने पर अच्छ भोजन का भी स्वाद नहीं लगता)
- आंगा गुने पांगा, लहा गुने टांगा। (जैसा वस्तु वैसा रूप)
- आदात घड़ि, दुदांत गाइ, माघे मइस, चइते बिलाइर।

(आदात घोड़ी, दो दात वाली गाय माघ महीने में भैस और चैत में बिल्ली बच्चा देने में पर दान दे देना चाहिए)

- आपन बुइधे भात खाइ आर परेक बुइधे लाइत खाइ।
  (अपने रहते दूसरों के सामने हाथ नहीं पसारना चाहिए)
- आपन भाखिंइ कहा कथा, तबे रहतअ उंचअ माथा।
  (अपनी वस्तु को उचित स्मान देना)
- आम पाकले मिठा, मानुस पाकले तिता।
  (आम पकने से अच्छा और मनुष्य बुढ़ाने से दिकदिक लगता है)
- आकालेक बर चांड़े बिदाइ कर। (अवसर को जाने न देना)
- अड़तर बड़तर, सेइ बुढ़िक गड़तर। (अंत में अपनी घर आना)
- आंइखेक आड़, मनेक छाड़। (सामने पर्दा देकर बाकि को छोड़ देना)
- अरजे भगुआंइ, खाइ धतिआंइ। (करे कोई और पाये कोई)
- आपन कथांइ तरि, परेक कथांइ मरि।
  (अपनी बात छिपाकर दूसरों पर अड़े रहना)
- आंधार कुकुर, बासातेइ भुकेइ। (वे मतलब का बोलना)
- अघन मासे चुटरिक सात गअ बहु। (अवसर पर संख्या बल बढ़ाना)
- अझाक डिढ़ांइ बझा, ना मिसतरिक डिढ़ांइ गजा।
  (विद्वान के घर में मूर्ख भी पलता है)
- आइग कांहु आदा ना राजा कांहु दादा।
  (समय आने पर सब अपना रूप दिखाता है)
- आन कहइते कान, बेइहरांइ कुटे धान।
  (बोलता कुछ सुनता कुछ)
- उजड़ाइके गांउ घार, हांथि हेलि जमिंदार।
  (अपना सब नष्ट करके झुठा सान दिखाना)
- एक पुत चुलहांइ मुत। (एकलौता का अलग नखड़ा रहता)
- एका आर बका। (अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता)
- एके माघे कि जाड़ जाइ। (धोखेबाज का दुवारा लौटना)
- एक बहुंइ ठाकुर, दुइ बहुंइ कुकुर, तिन बहुंइ भालइ भाकार भुकुर।
  (घर में एकलौती बहु होने से रानी, दो होने पर कुत्ता और तीन होने पर कोई काम का नहीं)
- एक टि मुसरिक दाइल सात भाइए बाटि खाइ।
  (एकता का परिचय देना)

- एक भेड़ि भेभाइ मरइ, ढेइर भेड़ि पकाइ मरअइ।
  (एक रहने से झंझट और ज्यादा रहने से परेशानी)
- एड़रि बने बिलाइर राजा। (अंधों में काना राजा)
- कल-कुड़मि कड़ा, बेद सासतरअ छाड़ा।
  (कोल-कुड़मि, ब्राह्मणबाद से दूर रहता)
- कुड़मिक धन मिआंइ ना तअ दिआंइ।
- कुलहिंइ निम, टाड़िंइ बड़ आर आइड़े बांस।
- केकलासेक दउड़ बेंधा धाइर। (मिंया का दौड़ मस्जिद तक)
- कउल, कुड़मि भाइ-भाइ एके पाइते भात खाइ।
  (पूर्व में कोल-कुड़मि एकही प्रजाति का था।)
- कउआ, नउआ, सिंगार, तिन बेड़ि तरकाल।
  (लालची आदमी से बचना)
- किना कहबअ तरा, लाइज लागअहइ मरा।
- काना गरुक बामहन दान।
- काड़ा मरइ हदे, मानुस मरइ मदे।
- कठा घारेक चालि आर ससुर घारेक सालि।
  (दोनों महत्वपूर्ण चीज है।)
- काम करबे अंग लागाइ, डहर चेलबे संग लागाइ।
- कने जानइ बिहा घारे माड़ भात। (आसा के विपरीत फल होना)
- काड़ांइ आर भेड़ांइ।
- काहा गेले ना काहुं नाइ, कि करले ना किछु नाइ।
- कि भालहस भेल-भेल, जार सेइरसा तार तेल।
  (दूसरों के चीज पर निगाह रखने से कोई लाभ नहीं)
- काल, कुदरा, बाड़िक भुत, मुरगा देले चाप चुप।
  (दक्षिणा देने से सब ठिक ठाक)
- काटि कुटि केटिआर, लुटि खाइ बानुआर।
- कपाले नाइ घि तअ ठकठकाले हेतअ कि। (भाग्य को कोसना)
- खांइ खांइ कहले बनेक बाघुहुं निहिं खाइ।
  (खुसामदी को और खुसामद करना)
- खाटि मरइ गरिब लक, बामहन मरइ हिक तक।
  (मेहनत कोई ओर पाये कोई ओर)

- खाइ हेलाक चास करि, काल हेलेइक एंड़िआ किनि।
  (ज्यादा लोभ से अपना नुकसान करना)
- खाइ हेउएक साग भात, पिंधे हेउएक सिधा-सादा,
  चले हेउएक अहे डहरे, जन डहरे बाप-दादा।
- गउआरेक बुइध आसि साले।
- गाइछे कठर अंठे तेल। (आसरा में राह देखना)
- गउआरेक गाइ, धबिक लुगा, जेंइ किनअइ तेंइ बुझइ।
  (इनके समान जो किनता वही पचताता)
- गलाक मइधे माला, कुटुमेक मइधे साला।
- गाइएक कान काटि कुकुरके देउआ।
  (अच्छा समान का बरबादी करना)
- गुन रहले दांजइ आर चुइल रहले बांधइ।
- गंइठा पड़इ गबर हांसइ।
  (एक के तकफीफ पर देसरों का हंसना)
- गुंदुरघुसा डुमरिआर, निरलजाक नागटुआर।
- गिदर आर बांदर। (बच्चा और बन्दर एक स्वभाव का होता)
- गेरिबेक रांग पेटे पचे। (तुच्छ व्यक्ति का बात अंदर ही रहता)
- घारे नाइ बाघ तअ सिआरे करअइ हुलमाल।
- घारेक चालि, बांध पाटि आर ससुर घारे सालि।
- घारेक काठ उंइए खाइ। (अपना रहते दूसरों यहाँ ताकना)
- घारे नाइ भुजि भांग, बहुंइ पाइ चिउड़ा।
- घारे ना भात दुआरिंइ बाजाइ ढाक। (झूंठा सान दिखाना)
- घर मांगे जाइके घटि लुकाउले हेतअ।
- घारे सास ना नंनद, आपनेइ आनंद।
- चलले चालिस बुइध, ना चलले हत बुइध। (चलती को सब पुछता)
- चासांइ खजइ डिमनि आर घासिंइ खजइ कुमनि।
- चरा गरुक बांउरि बागाल। (चोर का चुरासि तो पुलिस का अस्सी बुद्धि)
- चेकाक डरे पाराल ना तेतअइर तरे बास।
  (जिस्से बचना चाहा फिर वहीं रात बिताया)
- चासे रुप नासे।
- चुटिआ गिरले राम राम।
- चटें चिउड़ा आबे खाजाड़ि।

- चासा चिनहाइ आइड़े आर जलहा चिनहाइ पाइड़े।
- चास गेलअ कुछु आस, बदमा गेलअ ठाड़ उपास।
- चार आनाक नुनु, चउदअ आनाक झुनझुनि।
  (आमदानी अठन्नी और खर्चा रूपया)
- चाला गरिब, सचि - सचि नहिं तअ लेबे मुंह नेउचि।
- छुछुआ मारि हांथ गंधअ। (थोड़ा करके बदनाम होना)
- छागइर बागाल कान काटा, भेड़ा बागाल गाधा,
  काड़ा बागाल ठिंगठड़लंग, गाइ बागाल राजा।
- छिटकल पानि आर बाझल कथा।
  (बिबाद वाला बात गिरा हुआ पानी के समान होता है।
- जंदे जंदे पानिक सत, तंदे तंदे कुड़मिक गत।
  (पानी नदी किनारे कुड़मियों का वास)
- जाकर बिहा ताकरे मन नाइ आर पड़सिआक घुम नाइ।
- जाकर जउर ताकरे मुलुक। (जिसकी लाठी उसकी भैंस)
- जार सेइरसा तार तेल। (जिसका वस्तु उसी का अधिकार)
- जांचले जामाइ पिठा निहिं खाइ, भिनसेरिआंइ ढेकि चाटे जाइ।
  (खुशामद करने पर भाव मारता, पुनः वही चापलुसी करता)
- जेनिक बुइध तनिक। (औरत का बुद्धि औरत जैसा)
- जेतम खाइ तेतम लालहाइ। (लालच बढ़ना)
- जेसन देबि तेसन पिठा। (जैसा रूप तैसा गुण)
- जे सहइ से रहइ। (कठिन परिश्रम से फल मिलता हैं)
- जिउ जाइ छटपटिक साद।
- जाके करे छि-छि सेइ हेउइ धि।
  (जिसको लगायें फटकार वही करे काम)
- जाड़ेक कानि आर बरसाक छानि।
- जेते पढुआ तेते भड़ुआ। (जितना बुद्धिमान उतना शैतान)
- झाड़ गुने झिंगा। (जेसा पेड़ वैसा फल)
- झाड़ा फिरले भुसका, हार जतले ढेलका।
- झुड़ि झाटिक रांधना, ना रांड़ि जेनिक कांदना।
  (दोनों का एक समान तकलिफ)
- टाका आर फांका। (रूपया पैसा दो दिन का)
- डंगुआ जेनिक घार आर दामड़ा गरुक चास।

- डहरे पाउले कामार, फार पाजाइ दे हामर। (जब मन तब करना)
- ढंड़ कुड़मि एकासि, सन खापटा तिरासि।
- ढाकेक आगुंइ बिनेक बाइच। (उच्च के सामने तुक्ष्क क्या?)
- ढेइर काठे महुआ सिझे आर ढेइर बाते कुड़मि बुझइ।
- ढेइर पेइसांइ मसिक बिहा। (व्यर्थ खर्च करना)
- ढेइर बुइधे पंदे दउड़ि। (ज्यादा दिमाग भी कभी अहितकारी होता)
- ढेइर भकति चरेक लइकखन। (चापलूसी से बचना)
- ढेइर भगतांइ गाजन नासइ। (अत्याधिक से शोभा नष्ट होता)
- थथना फुला फकना उठा। (गुस्से में आंख बबुला होना)
- थिर पानिंइ पाथर काटइ। (धेर्यवान व्यक्ति महान होता है)
- दिकाले न फांकाले, फड़ले ना दड़रअले।
- दुधे उठाइ भात आर काड़ांइ उठाइ घाट।
- दस कर लाठि, एक कर बझा। (बुद्धिवान के सामने बलवान तुच्छ)
- दिन सगर आले माले सांइझे ढेकि कुटा।
- दुधारि गाइएक चाइटअ सउआद।
  (अच्छो के सामने बुराई भी तुच्छ लगता)
- दुखेक उपर पांचर। (जले में नमन छिड़कना)
- देस गुने भेस। (जैसा देश वैसा वेस)
- धन, जबन आढ़ाइ दिन, चामेर चेइरबे मानुस चिन।
  (धन यौवन छनिक सुख, अपने अंदर की मानवता को पहचाने)
- नदि पेइराले केंउअट राजा।
- नाढ़ाक मन ठांढ़ा। (फकीर का मन स्वच्छ होता)
- निजें बांचले बापेक नाम। (स्वार्थी होना)
- नाइ मामा ले काना मामा बेस। (नहीं कुछ से कुछ ही सही)
- नदि धारिंइ चास मिछाइ करे आस। (झुटमुट का भरोसा करना)
- नउआ देखि नख बाढ़हइ। (दूसरों को देख काम पसारना)
- नेइआंइ नउ दिन पुरना सअ दिन।
  (नया से ज्यादा पुराना को महत्व देना)
- परदेसि हामर राजा, बका बनाइ लुटे मजा।
  (अपने रहते दूसरा कोई राज करे)
- पेइसा रहले घड़ि-घड़ि ना रहले घेचांइ दउड़ि।
  (धन रहने पर सब कुछ नहीं तो कुछ नहीं)

- पेइसा ना कुड़ि हाट बाजार दउड़ा-दउड़ि। (झूठा सपना देखना)
- परेक भरसांइ संभु दादा। (दूसरों के भरोसे महल बनाना)
- परेक भाइ ढेंकि तरे आर आपन भाइ चुलहा तरे।
- पानिक खाइल धान आर पानि खाइल छउआ।
  (मिट्टी का बच्चा सुखा हुआ बीजा के समान कठोर होता)
- पुत खजे गेल, भातार हेराइ आइलि।
  (एक को खोजने गया ना दूसरों को खो आया)
- परेक पुत, बाड़िक भुत। (दूसरों का समान दूसरों जैसा ही होता)
- पिठा भालअ मुढ़ि भालअ, भातेक पारा नाइ,
  मसि भालअ फुफु भालअ माइएक पारा नाइ।
- पाप काकरअ बाप नाइ। (कर्म ही धर्म होता)
- पसल कुकुर काटे दउड़े। (जिसको पाला उसी ने धोखा दिया)
- पानिंइ हागले उपरे छपलाइ।
- पानि हेले अघअने, राजा जाइ मांगअने।
- पढ़ा चिसा घड़ाक डिम, चास करबे बछर दिन।
- पहा पिपड़ बड़ नि रपिहा डिंढ़ा धारिंइ।
- परेक धुने पदारि।
- पाग बांधइते परब फुराइ। (तैयार होते अवसर खत्म होना)
- परेक भरसांइ बरेक बाप। (दूसरे के धन पर आश्रित रहना)
- फागुनेक जतल आर बाघेक नखरल।
- फुरालअ गाछेक आम, कि खाबे रे हुनुमान।
  (बचा खुचा सब खत्म हो गया अब क्या करेगा?)
- बहु बिलाइर माछि, तिन नाहिं बाछि।
- बांगालिक साड़ि, जलहाक दाढ़ि आर मारउआड़िक गाड़ि।
- बिहाक दिने कउढ़ा रपा। (समय रहते काम ना करना)
- बांस मरइ फुले आर मानुस मरइ बुलि।
- बांउड़िंइ पानि तअ टिकरे धान।
- बारअ नेदि, तेरअ खाल, तबे जाबे कुइलापाल।
- बेइल पाकले कउआक बापेक किना।
- बेटाले नाति पिआरा, टाकाले सुद पिआरा।
- बेइसले बुढ़िक तिन पाइ मुढ़ि।

- बांचबे तअ गम खांइ, धनि बनबे तअ कम खांइ।
- बांसेक निचुंइ चास, भुमिहारेक आगुंइ बास।
- बन पड़ले सउब देखे, आतमा पड़ले के देखे।
- बिछाक मंतरअ जानअइ नाइ आर सांप धरे जाइ।
  (जितना अवकात नहीं उससे ज्यादा हाथ बढ़ाना)
- भाइ थाकले बउइ, बाप थाकले बेटा।
- बांस बने डम काना।
- बापेक चाप दाढ़ि तअ बेटाक थड़ा-थड़ि।
- बाप काले चास नाइ, बेना मुड़े बांस।
- बांस ले कनखिए बड़अ। (माँ से बेटी बड़ी)
- बाइद चासा सरगेक आसा। (थोड़े में ताजमहल बनाना)
- मारिक डरे भुतअ पाराइ। (समर्थवान से सब डरता)
- भुंसा कुटइते नर, बिसरल हरिहर। (कर्म ही धर्म है)
- भात रहले कउआक आकाल। (दानवान को सब पूछता)
- भेड़रा गाजाड़े बिराल बाघ।
- मड़ाक उपर दस मन काठ। (कष्ट के उपर कष्ट देना)
- मड़ा आर माड़ा पाकका तिन घेंटा।
- मरदेक मंच आर जेनिक खंच। (मूंछ मर्द का और प्रश्न औरत का निशानी)
- माछिंइ खउजे घाउ आर मानुसे खउजे दाउ।
- मानले सिब ना मानले पाथर। (मानो तो शिव ना तो पत्थर)
- मांगनाक उपर चाखना। (मांगे हुए को मांगना)
- लुचि घारे फुचिक झर। (ज्यादा के सामने थोड़ा का तुच्छ)
- माघेक सेंसे पानि तअ, भुसा बेचाइ अजअने।
  (अवसर पर बेकार वस्तु का भी महत्व होता है)
- मांगा ले भांगा भालअ। (उधारी से अच्छा पानी पीकर रहना)
- मानुस नासाइ मुंहे आर खेड़हा नासाइ गुहे।
- मुंहेक गुने भात खाइ, नाइचतअ लाइत खाइ।
- माइ रहले मसि लाइ कांदइ।
- मांइ गुने धिआ, बाप गुने पुता। (बेटि-बेटा माँ-बाप के जैसा होता)
- रहइने पानि गिरले सात हाथ भिंजइ।
- रांड़िक बेटा गबिंदअ।

- राजा घारे बिहा, तअ गेरिब लकेक हुलुक बुलुक माना।
  (धनवान के सामने गरीब का क्या काम)
- रागेक गुरु कउ नाइ। (गुस्सा नाशवान होता)
- लुगा पिंधबे झाड़ि, खाटिंइ बइसबे टानि, भात खाबे बाटि।
- सेंआक अरजन आर भेआक नाम।
- सात कउसे पानि, चउदअ कसे बानि।
- सिख सिखर नागपुर आधा आधि खड़गपुर।
- सुमेक धन सेइताने खाइ, बाचे से आदालते जाइ।
  (सुखी का धन व्यर्थ जाता हैं)
- सउब बिर धेरिआइ गेल आर हनुंइ कहे हामे केतेइ धुर।
- सम, मंगल, बुधे तिन, सनिंइ सात, बाकि सभे दिने-दिन।
- सिआरेक गुअ तिन ठिन।
- सनला गाइछे टेंइगलाक मरन। (कमजोर के सामने नतमस्तक होना)
- सिखले काहां ना ठेसले जाहां। (जहाँ भिड़ता वहाँ मिलता है)
- सांक चिकने खांखुआर, काड़ाक रकम केड़ुआर।
- संताल-कुड़मि भाइ-भाइ, एके पातिंइ भात खाइ।
- हंसुआ नि चिनहे मलंदा। (हंथियार किसी को नहीं पहचानता)
- हामे तअ ठेलम ठेला परदेसि हेला राजा।
  (अपने राज्य में दूसरों का राज्य चलना)
- हामर खातिर भार सिका, बामहन खातिर सादा टिका।
- हांड़ि किनिहा ठउकिके आर जेनि बाछिआ देखिके।
- हरदिक रंग परदेसिआक संग।
- हाड़ि किनिहा ठउकि आर बहु बाछिआ देखि।
- हुंचकाइ देलसि सांघा, दादाक ले बहु ढांगा।
- हांड़ि हुलक हिंदुआर।
- हुड़मुड़ जातरा जे करे बिधाता

❖❖❖

# 22. भांग केहनि

## (पहेली)

मानव प्रवृत्ति हमेशा से रहस्यात्मक रही है। जब वह अपने कथन को सर्व साधारण के समझ से बाहर रखना चाहता है तब वह असाधारण प्रश्न के रूप में ऐसे उक्ति का प्रयोग करते हैं, जिसे पहेली कहते हैं। कुड़मालि भाषा में इसे 'भांग केहनि' या 'जान केहनि' कहा जाता है। इस भाषा के लोक साहित्य में भांग केहनि का विशेष महत्व है। भांग केहनि इस भाषा-भाषियों के गोपनीय प्रवृत्ति के परिणाम स्वरूप इनके भाषा में प्रयोग हुआ है। भांग केहनि इस भाषा समुदाय के मनोरंजन एवं तर्क शक्ति बढ़ाने का सर्वोत्तम निधि है। इससे बच्चों में तर्क शक्ति का विकास होता है। जिसके फलस्वरूप बच्चों के मन में एक जिज्ञासा बनी रहती है। प्राचीन काल में ये ज्ञान के बहुत व्यावहारिक निधि के रूप में रही है और आज भी बच्चे इक्ठा होने पर कुड़मालि भांग केहनि बोल कर मनोरंजन किया करते हैं।

➪ कुड़मालि भांग केहनि कहेक परे एहे खंचले जड़ाइल टुएक हिंट देल जाइक। जेसन 'लाल ढेपचु लमबा पुंछ नाइ जानिस तअ बउके पुछ।' एकर जबाब निहिं दिए पारले, हिंट रुपे कहल जाइक - 'उटा सभिक घारे आहेइक।' हेले सुनइआक मागअजे चटकरि आइ जाइक 'चाटु'।

➪ कुड़मालि भाषा के कुछ भांग केहनि इस प्रकार है। जो इस भाषा-भाषियों के बीच काफी लोकप्रिय है।

- आउ रे गुड्डुर गड़ार भाइ, तके लेइ भात खाब। - लअटि
- आइल धंधा गेल धंधा, पानि देखले डराइ गेल। - जुता।
- आगु मुड़ि परे खइ, देखाइते देखाइते हेउअइ सांप, लके कहइ बाप रे बाप। - मुनगा सुंटि।
- आधा धुर लेइ चाल, मइ आपनेइ जाब। - भात झिंका
- आनेक बेरांइ एकटि, बिदाएक बेरांइ दुइटि। - दतइन
- आपने डाकटर आउअल, सुइ देइ रउग देलाइ। - मखरि
- आकुइड़ा रे बाकुइड़ा रातिंइ काहे चलिस। - सांप
- आगु-आगुंइ चलते जांइ, पेछुंइ-पेछुंइ खाइले जाइ। - सुइ-सुता
- आस नदिक फांक नाहिं, पानि आहेइक तअ माइछ नाइ। - नारिअल।

- अरजुन काठे तेल भुंजि,
  नउआइ पारिए तअ टुनांइ नाइ। - चुइल।
- उपरे चक-चक भितरे पका। - डुमइर
- उपरे आइग हेंठे अधन। - हुंका
- एकटि बुढ़ि बिहा निहिं झुपि-झुपि जाइ। - मड़लि देउआ
- एते सुंदर छउआटा, पटकि मराइ देल। - सिघन
- एकटि बुढ़िक गउटे गात फुसड़ि। - कठअर
- एकटि बुढ़िक पेट फाड़ा। - गेहुम
- एकटा गाछेक तिन तरकारि। - मुनगा गाइछ
- एकटि बुढ़ि बिहा निहिं घसराइले बाहराइक। - बाढ़िन
- एलपअ ढुकले कांदि उठइ, गउटे ढुकले हांसि उठइ। - चुड़ि
- एकटा गाइछे हंसुआ टांगाइ। - तेतइर
- एक ढेकाक सात टि छेंदा। - मुड़
- एगअ बांधे एकअ कादा नाइ। - नारिअल
- एक ठिने दुटा बांध, सरकइक तअ जरकइक। - गाय आर डउल
- एगअ माइएक दुइगअ वेटा, माइ डाढ़ाइ रहइ घुरइ बेटा। - जांता
- एक टुकु बाबाजि पसतु खाइ सात दलान भांगिके जाइ। - मुसा
- एक थाल सुपाड़ि गनते लारि बेपारि। - तारा
- कि भालअहस भेल-भेल,
  जिउ जातउ मर मास खातअ तर। - घुरघुरा आर केहेरकेटा
- काठेक गाइ माटिक चुकरि, दुध देइ गुड़ुर-गुड़ुर। - ताड़ि
- कन गुंडा छाड़अइ नाइ। - जुड़गुडा
- कन टेन चलइ नाइ। - लालटेन
- कुकुरे करइ कांइ-कांइ गरांइएक बिहा नाइ। - तेलि
- कन कुआंइ पानि नाइ। - कान कुआंइ
- काचांइ तअ लेरे-पेरे पाकले सना,
  गड़े लागले करइ सबाइ दंडअबत। - चाड़ुल
- काटि-काटि मारइक एकअटि खाइएक नाइ। - जाल
- केरिआ चुका धुंध लुका। - बेगअइन
- कारि-कारि करांइ कारि घास खाइ,
  ढेकराइ गड़ पछिक खंधाइ ढुकि जाइ। - गाइछ खुर

- कांखे घेइला माथांइ फुल, अकर नेइहर दउमे धुर। - जनहाइर गाइछ
- काहां रे भुटरा काहां रे घुस घुसा,
  चुप-चुप हामहुं तिअन तहुं तिअन। - काछिम आर बेगइन
- कन काठे कथा कहइ। - ढेकि
- कांखे छउआ माथांइ फुल। - जनहाइर
- काचांइ तअ तलक-तलक पड़ले सिंदुर
  जेंइ नाइ जानइ ताकर बाप इंदुर। - हाड़ि
- कुकुरे करइ कांइ कांइ, गरांइएक बिहा नाइ। - तेलि।
- काटल भेड़ा मुड़ उठाइ। - टिलहा
- गाइ टि रहि गेल, पाघा टा चलि गेल। - लत
- गउटे बन पड़ि गेल, बुढ़ाक भगुआ रहि गेल। - डहर
- गउटे गातटा चलि गेल, ठेठि पुंच रहि गेल। - मरचएक ढेंठि
- गुगुल गुलुक पाकटि, सना रुपांइ मति।
  गुलुम बसअइ हांथ दुइटा धसअइ। - माछि।
- घार आहेइक दुआइर नाइ। - डिम
- घसड़-घसड़ घसका, तिन मुड़ गड़ दसटा। - हार जता
- चाइर गअ कुंआक पानि एके ठिन। - दुध दुहा
- चक-चक डाड़ि लक-लक पात, खाले मधुरस फेकले कापास। - आंख
- चाइर पेरुआक चाइर रंग, टंगे ढुकले एके रंग। - पान
- छुटु मुटु डभा टा माइछ भिल-भिल करे,
  राजाक बेटा गबिंदअ माइछ धरइते ना पारे। - भात डबका
- छटअ मटअ डभा, देखइते बेड़ि सभा। - आरसि
- चांदनिपुरे चरि हेला, चुपकेले धराइ गेला, सदरिले भराइ गेला। - ढिला
- जाहास तअ देइ राखे। - चाभि
- जधा मांधा दुइ भाइ, ठेलि देले चलि जाइ। - कपाट
- जाहास तअ फेइर देखहस कि। - डहर चेला
- जाइते दन-दन आइते थिर, काहां राखले माहाबिर। - झाड़ा
- टिरा सालाक बेड़ि राग। - मरचइ
- टिप-टिपानि, टिपानि रातिंइ काहे गिरिस,
  एकटा कुलहुक दुइटा टेंग। - महुआ,

- तंइ देले हांथे-हांथे हामे राखब कनगांइ,
  तंइ जखन खजबे हामें काहां पाब। - बरफ
- तिन टा मुड़ घुरनि घुरइ, बुढ़ाक ठेंगा उफड़ि मरइ। - माड़ा
- दिने सुतइ रातिंइ पाहरा देइ। - बुगजुगनि
- पांच लके हार जते, दस लके कारहा। - दतइन-काटि
- पता उपर पता, फुलेक उपर पात। - धुरुप साग
- फल टि गेंड़ा पात टि चिरा,
  जेंइ नाइ जानइ, घार गुसटि भेड़ा। - ताड़ गाइछ
- बन ले बाहराल हांस हांसे कहइ हामर सुधे मास। - छाति
- बाप बेटाक एके नाम, ठुरकु बेटाक भिनु नाम। - महुआ गाइछ
- बन गेलि फर खालि, चेपटा छउआ हेराइ आइलि। - गड़ेक चिनहा
- बन ले बाहराइ टिआ, टिआंइ कहे लाल टपि दिहा। - भेलुआ
- बन ले बाहराल लुति, लुतिंइ कहइ मइ भाते मुति। - नेबु
- बाप तअ टेड़ा, माइ थारि, बेटि सुंदरि अठें काहे कारि। - परास फुल
- बतिस लके करइ कटार-कुटुर, एक लके उंचराइ देइक,
  दसर लकेक काड़िंइ जाइक। - दांत, जिउ आर पेट
- भरल बांधे हांथिक लाद। - काछिम
- भरल बांधे सुइ चलइ। - जक
- भरल बांधे छेंग गरगर। - पिठा छाका
- भांगल घारे नेचनिक नाइच। - खाजाड़ि भुंजा
- मुड़ि काटिके रकत नाइ। - नख काटा
- मामाक छागइर छुलिहिं गागांइ। - दुलुक
- माइ तअ झुपंग झुपि बेटि सुंदरि। - मरचइ
- माइ मुड़रि बेटाक सिंग। - भेड़ा
- मुरदारेक गड़ हाहे, जेंइ बहइ अकर गड़ नाइ। - बेंग, सांप आर खाखड़ा।
- लाल ढेपचु लमबा पुंछ नाइ जानिस तअ बउके पुछ। - चाटु
- लालि गाइए छालि खाइ, पानि खाले मरि जाइ। - आइग
- सुखल काठे ढेबचु नाचेइक। - टेंइगला
- सर सटका भुंइ पटका। - सिघन
- हिंदे जाइ हुंदे जाइ, धड़ाम-धड़ाम काचाड़ खाइ। - बाछुर

❖❖❖

# 23 आहना

## (मुहाबरा)

आहना साड़ाक माने मुंहेक कथांइ जउर देउआ। पाड़सिक कनअ टुम माहान एकर रहले, केद हेले चट करि निहिं बुझे पारत। एके एंगरेजिंइ 'इडिअम' कहथिक। टुमेक बाहिर एकाइ एकर कनअ सटिक माने निहिं बाहराइक। एहे गिलाइ आहना कहथिक। साहितेक पाड़सि माहान कहे गेले आहना एक एसन टुमेक खंड़ हेकेइक, जाकर टुमे बेबहार हेले पाड़सि माहान दम, बल आर लहर आउअइक, जाकर गड़ा भाउ टुमेक बाहिरे निहिं फेइरछाइक। कड़मालि पुरखउति साहिते आहनाक बेजांइ बड़अ ठाइन आहेइक। पाड़सिंइ एकर बेबाहारले कनअ कथांइ बहन आर मन महि लेइक आर पाड़सि माहान ताकत आइ जाइक। एहे डुल एकर भाउ सुनअइआक हिआंइ करल बिनु रहे निहिं पारअइक। कुड़मालि आहना एहे गठेक गिआन कर जरक हेकेइक। एहे गठे आदि जुगले जन - जन जिनिसके बिड़ल आर परखल आहात। अहेगिला आहनाक धंचअरे उचराउअल आहथिक। कुड़मालिंइ एहे आहना आदि जुगले एखन तड़िक कनअ कथाके ढापाइके राखेक गिआनेक मंतरअ हेकेइक आर आगु दिगे रहतेइक।

### ⇨ आहना की विशेषताएँ

1. केवल आहना से वाक्य पूर्ण नहीं होता है। वाक्य की पूर्णता के लिए आहनाओं के साथ अन्य पूरक शब्दों का प्रयोग करना पड़ता है।
2. आहना छोटा होता है।
3. आहना भाषा में चमत्कार उत्पन्न करता है।

⇨ अब हम कुड़मालि भाषा के महत्वपूर्ण मुहावरें के अर्थ एवं वाक्य प्रयोग देखेंगे जो निम्नांकित हैं :-

### कुड़मालि आहना

- अघरि आर मघरि - जाकर काहुं ठाइन नाइ।
- अंत निहिं पाउआ - रहइस निहिं जान पाउआ।
- आइग लागा - झगड़ा करा।
- आझान बाझान - परपंचिआ।
- आसापति - गाभिन हेउआ।
- आंइख उठा - आंखिक रउग हेउआ।
- आंइख मिचका - ताक देउआ।
- आखिंइ धुरा देउआ - धखा देउआ।

- आंधारेक कुकुर बासाते भुकइ - सतर रहा।
- आधड़ काना - आंइख रहइते काना हेउआ।
- इजरअ गाते कारि - बेस लकके बदनाम करा।
- इठिनेक कुटा इठिन निहिं करा - दउमे कड़हि।
- एक घाटेक पानि - सउभ नेतांइ एके घाटेक पानि सेढ़अलात।
- एक हाड़े दुइ कुकुर - दुइ सेइतिन।
- एक खुरेक कामाउअल - एकेइ गुरुक पढ़ाउअल।
- एक चिमटिक बल - जेतनाटि भरसा।
- उबगारेक मुड़े ठेंगा - बेस काम करले दउसि हेउआ।
- कपाल फुटल - भांइगअ खाराब।
- करम कपाड़ - भाइगअ।
- कांचा बांसे घुइन - निफुट गाते रउग जाला।
- काड़े बांसे - दुसमनि।
- कपाल फरका - भाइग चमका।
- कांधे मुंधइन - सउब पहर रेडि रहा।
- कालि माइ - एकदम केरिआ हेउआ।
- कानेक सना - आदरेक, दुलारेक छउआ।
- काने कपाड़े - गटा टाइ।
- काट हेउआ - डरि जाउआ, बेहउस हेउआ।
- कुल किनार - उपाइ कअरा।
- कनकन - जाड़ लागा।
- कुंदल कथा - जड़िके कहा।
- कुलहिक मुड़ा - गांउएक मुड़ा।
- कानि कुड़ि नाइ - एक पइसा नाइ।
- कादा घाटा - गदबदाइ देउआ, दहलाइ देउआ।
- कान फुका - मंतना देउआ।
- कदर करा - जतन करा, आदर करा।
- काचाड़ खाउंआ - बिखलाइके कांदा।
- कानि कउड़ि - खालि हाथे रहा।
- कामिआक पहाड़े भात - कामिआ लकेक पेट भरेक भाभना निहिं रहइक।
- केरिआ मुंड़े बिसास नाइ - जुआन छउआक बिसास नांइ।
- खाटि मेड़िआ - टिड्डुआएक लचछन।
- खाइ भुसका - पेटुक।
- खुखड़िक गाते तेल - खसामदि करा।
- खाखड़िक चाइल - हां ना करा।

- खाइ भुत - बिना कामे खाउआ।
- खइफुटा - खुभेइ बरकइत हेउआ
- खिजल भिंजल - जानल सुनल, सउभ सहल।
- खुसिक सइदा - आपने मने करा।
- गात जरि उठा - रागे बरकि उठा।
- गंगा पाउआ - टिड्डुआइ जाउआ।
- गात भारि - गाभिन हेउआ।
- गाइ ना बरद - कनअ कुलेक निहिं हेउआ।
- गात झाड़ा - जबाब देउआ।
- घातेक पाथर - बेजांइ सहनसिल, दढ़अ-माढ़अ।
- घाम गारा - बेजांइ खाटि काम करा।
- घाड़ मचड़ा - खालास करा।
- घार भुसका - कढ़हि हड़।
- घार घेरा - चाइरअ बाटेले छेंका।
- घड़ाक घास काटा - निजेक गड़े डाढ़ा
- घारेक ढेंकि कुमहिर - घार-बेइरि।
- चट लगन पट बिहा - चांड़े चुड़े करा।
- चरेक चालिस बुइध - चालाकेक बेजांइ बुदध।
- चुटिआ गिरले राम राम - बेजांइ गेरिब हेउआ।
- चट चिउड़ा - तुरतेइ कि कनअ काम हेइक।
- चरेक जाइत नाइ - चर कनअ दिन आपन हेउए निहिं पारइक।
- छंदर मंदर हेउआ - बेमतलअबेक हिंदे हुंदे घुरा।
- छेछरा सुपे चुमा - साप देउआ।
- जनमेक खंटा - बादि।
- जप तप - जेसन तेसन।
- जमेक हांथ बड़अ हेकेइक - मरनले सउभ डरात।
- जाकर घारे ताकरे बाहिरे - धनि मानिंइ सउभ ठिने मान पाउअत।
- जतेक खाइ तेतेक लालहाइ - लालचि लक।
- जुंठा खाइ पिठाक लउभे - बेस जिनिसके लिएक खातिर लालिस करा।
- टाटकाइ काचाड़ खाउआ - मठेइ झमेला लेउआ।
- टुएक डंगे - रिविक आधेक।
- टेके टेंड़े करा - कामे बाजु करा।
- टपिंइ टपिंइ मेल - एक समान।
- टिटिटिआंग गड़े सरग टेका - बिन पहरेक काम।
- ठमक ठमक - रसे रसे, आसते आसते।

- ठेंगाइ ठेंगा भांगा - जाइतेइ जाइतके नास करा।
- डका फाड़ा - आसरांइ रहा।
- डाइर छाड़ा बांदर हेउआ - कनअ बाटेक निहिं रहा।
- ढिपा सुइन हेउआ - पिढ़ि सिराइ जाउआ।
- थुकिके चाटा - माफि मांगा, सलआनाक बिचे महनाइ थुकिके चाटल।
- थथि कुटा - बिना कामेक पहर गुचाउआ।
- थथना फुला - रागि जाउआ।
- नउआक नहरइन - दरकारले एकदम छुटु जिनिस।
- नाक रेगड़ा - आन ठेकाने छटपटा।
- नाक धुंना - मन पसंदेक खाएक निहिं पाउआ।
- पिठे मारिके अंठे चुमा - बाहरि लालिस।
- पातइर चाटा - लभि हड़।
- पानि पाउलि - धेनुआ।
- पेट काटा - रसे रसे बाचाइके राखा।
- परेक भाते धुरा देउआ - दसराक काम लुटि लेउआ।
- फाटल मुंहा - जेटा सेटा फदरि देउआ।
- बापले बेटा चाइर गुना - बापले बेसि बेटा धनि हेउआ।
- मुंह लुका - लाजाइ जाउआ।
- मंछे पाक देउआ - सान देखाउआ।
- मांगल दुधे छउआ पसा - गरीबी में जीवन परिवार चलाना।
- रागेक गुरु केउ नाइ - राग काना हेउअइक।
- रुआंइ खजे बातास - कमजोर चला लड़ने।
- लेइहांइ तेल देउआ - आसरांइ रहा।
- लहांइ लहा काटइ - मजबूत मजबूत को टक्कर देता है।
- सांइझे ना बिहाने - किसी समय में नहीं।
- सुखे खाइस भुते भुलाइस - धन दौलत से सम्पन्न रहना।
- सात पांच भाभि काम करा - सलाह मसोरा लेकर काम करना।
- सेंप ढअका - दुख सहिके रहि जाउआ।
- हा फांड़ि रहा - आसा में रहना।
- हाइ पेट पंदरअ पेइला - केवल भुख भुख करना।
- हांथे हांथे देउआ - विश्वास नहीं करना।
- हाड़े हेरइद देउआ - टिड्डुआइ जाउआ।
- हांथ भारि हेउआ - कर्जा में रहना।

❖❖❖

# 24. कुड़मालिंइ चिठि चिसा

## (कुड़माली में पत्र लेखन)

हमारे जिंदगी में कहीं न कहीं चिट्ठी लिखने की आवश्यक हो ही जाता है। आज कल देश दुनिया कितनों आगे निकल जायें क्यों ना? परंतु पत्र लिखने की मांग अभी भी उसी तरह का है। इसकी परंपरा आदि काल से किसी न किसी स्वरूप में आज भी हमारे उपयोग में होता रहता है। अपने संगे संबंधी, राजा, महाराजा के पास किसी बात को लेकर चिट्ठी के माध्यम से ही संदेश पहुंचाया जाता था। अभी के स्कूल कॉलेजों, सरकारी दफ्तरों आदि में चिट्ठी-पत्र की आवश्यकता होती है।

➪ **पत्र लेखन हेतु मार्ग दर्शन** :- पत्र लेखन एक कला है। एक अच्छा पत्र वह होता है, जिसमें संक्षेप में सरल भाषा में बात व्यक्त की गई हो। एक अच्छे एवं उच्च कोटि के पत्र लिखने के लिए निम्नांकित तथ्यों को ध्यान में रखना चाहिए :-

1. पत्र में लिखने वाले का पूरा पता तथा तिथि उपयुक्त स्थान पर लिखें।
2. जिस व्यक्ति को पत्र लिखा जा रहा हो उसके लिए उचित संबोधन का प्रयोग करना चाहिए। जैसे - मानगर, दुलारेक, आदरेक इटासेटा।
3. जिस व्यक्ति को पत्र लिखा जा रहा हो, उसके लिए उचित अभिवादन का प्रयोग करना चाहिए। जैसे - गड़लागा, जहार इटासेटा।
4. पत्र की भाषा सरल एवं स्पष्ट होनी चाहिए।
5. पत्र में अपनी बातों को संक्षेप में रखें।
6. प्रार्थना पत्रों में संबंधित अधिकारियों के लिए सम्मानपूर्ण भाषा का प्रयोग करें तथा अपनी प्रार्थना स्वीकार करने के लिए तर्कपूर्ण कारण दें।
7. परिवारिक पत्रों में आत्मीय तथा स्नेहयुक्त भाषा का प्रयोग करें।

➪ **पत्र के प्रकार**

हड़ेक जिबअने नाना रकमेक काम भिनु - भिनु जेइगाइ हेउअइक। एकर बेबहार, ठाइन आर कामेक ठेहड़े चिठि टेना रकमेक हेउअइक। पत्र चार प्रकार के होते हैं :-

1. प्रार्थना-पत्र (दरखास )
2. निजी या पारिवारिक पत्र (कामेक घारेक चिठि)
3. व्यावसायिक पत्र (बेपार-पातिक चिठि)
4. सरकारी पत्र (साकसरि चिठि)

## ⇨ पत्र के अंग

1. पत्र लेखन के स्थान का उल्लेख
2. पत्र लेखन की तिथि
3. पत्र पाने वाले अभिवादन
4. समाचार
5. पत्र की समाप्ति पर लेखन का नाम
6. पत्र पाने वाले का नाम और पता

⇨ यहाँ प्रार्थना-पत्र, निजि पत्र, पारिवारिक पत्र का उल्लेख किया जा रहा है। पत्रों से संबंधित संबोधन, अभिवादन, समापन की तालिका इस प्रकार है :-

| नाता/संबंध | संबोधन | अभिवादन | समापन |
|---|---|---|---|
| 1. बड़अके, माइ-बाप, मासटर, काका-काकि, जेठा-जेठि आरअके। | मानगर, ठाकुर, माहामाइ | गड़लागइहअ गड़लाइगइहन | तहराक डहरे, डहरइआ। |
| 2. संगिके (दोस्त आदि को) | बेस संगि | जहार | तर बेस संगि तर गुंगु। |
| 3. निजेकले छुटुके (अपने से छोटों को) | दुलारेक, भालअ, सुधड़ | खुस रहें आगु बाढ़े | तर संग देउआ |
| 4. अधिकारिके | सिरिमान, | मानगर | नेहर |

## ⇨ चिठि चिसेक महत

हड़ेक भितरेक धेइकर बरकन चिठिक दाराहुं हेउअइक। हिआक काथा आर बात बिचारकर लेउआ देउआ चिठिक दाराहिं संभब हेउए पारअइक। चिठि चिसा दना झनेक बिचे हेउअइक। जेटांइ दना हिआक नाता दढ़अ हेउअइक। तेंइ चिठि चिसा एसन साधन हेकेइक, जे फाराके रहइआक हिआक धेइके एक मेझान ठाइने आनअइक आर दुइअक बिचे हिआले नाता जड़ाइक।

1. **प्रार्थना पत्र** :- कनअ इसकुल, कलेज किमबा आरअ सरकारि अफिस माहान कनअ ना कनअ कामे चिठि पतरअ चिसे लाइए हेउअइक। एहे जेइगा गिलांइ नेहर करल जाइक, तेंइ एहे रकमेक चिठिके दरखास कहल जाइक।

# कुड़मालि भाषा में पत्रों के परीक्षोपयोगी नमूने

## 1. प्रार्थना पत्र या आवेदन

### हिन्दी प्रारूप

**प्रश्न 1. अपनी भाषा में विद्यालय के प्रधानाध्यापक/प्राचार्य को अवकाश के लिए प्रार्थना-पत्र लिखिए।**

सेवा में,

श्रीमान् प्रधानाध्यापक महोदय,
राजकीय मध्य विद्यालय,
प्रधान खंता, धनबाद।

महाशय,

सविनय निवेदन है कि मेरी फुआ की शादी अगले 2 जुलाई 2015 को है। इस कारण घर में बहुत काम बढ़ गया है, जिस कारण मैं अपने कक्षा में 1 से 5 जुलाई तक उपस्थित नहीं हो पाऊँगी।

अतः एव श्रीमान से नम्र निवेदन है कि मुझे इन छः दिनों का अवकाश स्वीकृत करने की कृपा करें। इसके लिए मैं आपका सदा आभारी रहुँगी।

धन्यवाद !

दिनांक : 29. 06. 2015

आपका आज्ञाकारी छात्रा
पुजा केड़ुआर
कक्षा - सप्तम
अनुक्रमांक - 10

अभिभावक का हस्ताक्षर

### (कुड़मालि प्रारूप)

**खंच 1. निजेक पाड़सिंइ इसकुलेक हेडमासटरके छुटि लिएक तेहें आबेदन/चिठि लिखा।**

मानगर,

सिरिमान हेडमासटर साहाब,
राजकिअ मिडिल इसकुल,
परधन खुंटा, धानबाइद।

माहासइ,

सबिनअइ निबेदन आहेइक जेकि मर फुफुक बिहा आउति बेरा 2 जुलाइ 2015 साले हेकेइक। ताकर तेहें घार आंगनाइ ढेइर काम बाढ़ि गेल आहेइक। ताकर तेहें मइ 1 ले 5 तारिक तड़िक इसकुल निहिं आउए पारब। तेंइ सिरिमानले निबेदन आहेइक जे मके एहे छउ दिन छुटि दिएक चेसटा करिहा। एकर लेइ तहराके कबहुं भुले निहिं पारब।

धइनअबाद !

तहराक मानइआ छउआ
पुजा केड़ुआर
केलास - गइ (सात)
रउल न0 - 10

तारिक - 29. 06. 2015

घारेक मुखिआक सेहिन

## हिन्दी प्रारूप

**प्रश्न 2. अपने विद्यालय में प्रधानाध्यापक/प्राचार्य को शुल्क-माफ के लिए प्रार्थना पत्र लिखिए।**

सेवा में,

श्रीमान प्राचार्य महोदय,
एस.एस.एल.एन.टी.महिला कॉलेज,
धनबाद।

महाशय,

सविनय निवेदन यह है कि मैं अपने कॉलेज की कक्षा बारवीं की छात्रा हूँ। मेरे पिताजी एक दुकान पर काम करते हैं। उनका वेतन केवल 2000 रूपये मासिक है। मेरे परिवार में पाँच सदस्य है परन्तु पिताजी के अलावे दूसरा और कोई कमाने वाला नहीं है। आर्थिक कठिनाई के कारण वे मेरी फीस भर पाने में असमर्थ है।

मुझे पढ़ाई में बहुत रूचि है। मैं अपनी कक्षा में सदा प्रथम आयी हूँ परन्तु ऐसा लगता है कि आर्थिक तंगी के कारण मैं पढ़ नहीं पाऊँगी। अतः एव श्रीमान से नम्र निवेदन हैं कि मुझे पूर्ण शुल्क माफ करने की कृपा करें, जिससे कि मैं अपनी पढ़ाई जारी रख सकूँ। इस कृपा के लिए मैं आपका सदैव आभारी रहुँगी।

धन्यवाद !

आपका विश्वासी छात्रा
कुसुम लता
कक्षा - बारवीं (ई)
अनुक्रमांक - 1

दिनांक - 05. 08. 2015

अभिभावक का हस्ताक्षर

## कुड़मालि प्रारूप

**खंच 2. निजेक हेडमासटरले फिस माफ करेक खातिर चिठि चिसा।**

मानगर,

सिरिमान हेडमासटर साहाब,
एस.एस.एल.एन.टी.महिला कॉलेज,
धानबाइद।

माहासइ,

सबिनअइ निबेदन आहेइक जेकि मइ कालेजेक बारअ केलासेक एक बेटि छउआ हेकिए। मर बाप एक दकाने काम करइक। अकर बेतन मटेइ 2000 टाका मासे आहेइक। मर डिढ़ांइ मांचा गअ खाउइआ आहात, मनतुक बापेक छाड़ि घारे आर केउ कामाइआ निहिं आहात। टाका-कुड़िक टानेक खातिर मइ कालेजेक फिस निहिं दिए पारइहे।

मके पढ़ांइए बेजांइ मन लागअइक। मइ केलासे सुरुले मिर ठाइने रहल आहिए। मनतुक, एखन एसन बकुझाहेइक जे एसन गतिंइ मर आगु दिगे आर पढ़ाइ निहिं हेतेइक।

तेंइ सिरिमानले निबेदन आहेइक जे मके कालेजेक फिस माफ करि दिएक चेसटा करिहा। जेसे मइ आगु दिगे पढ़े पारब। एकर लेइ तहराके कबहुं निहिं भुले पारब।

धइनअबाद !

तहराक मानइआ छउआ
कुसुम लता
केलास बारअ (इ)
रउल न0 - 01

तारिक - 05.08.2015

घारेक मुखिआक सेहिन

## हिन्दी प्रारूप

**प्रश्न 3. अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य/प्रधानाध्यपिका को पत्र लिखिए जिसमें आपके विद्यालय में पानी की सुव्यवस्था करने के लिए प्रार्थना की गई हो।**

सेवा में,

श्रीमती हेडमासटरनि साहिबा,
राजकीय कन्या मध्य विद्यालय,
ढांगी, धनबाद,

महोदया,

निवेदन है कि हमारे विद्यालय में पानी का उचित प्रबंध नहीं हैं। यहाँ पाँच सौ छात्रायें पढ़ती है परंतु, इतने विद्यार्थीयों के लिए सिर्फ एक नल है।

मध्यांतर और छुट्टी के समय यहाँ बहुत भीड़ लगी रहती है। गर्मियों में तो और भी बुरा हाल हो जाता है। इसके लिए हमें बहुत देर तक पंक्ति में समय लगाना पड़ता है।

अतः एव आप से विनम्र निवेदन है कि हम छात्राओं की परेशानी को देखते हुए आप पानी की उचित व्यवस्था करने की कृपा करे। आशा है कि आप हमारी समस्या का सकारात्मक समाधान करेंगी।

धन्यवाद, सहित !

आपका आज्ञाकारी छात्रा
किरन सांखुआर
कक्षा - अष्टम(अ)
अनुक्रमांक - 32

दिनांक - 10.04.2015

## कुड़मालि प्रारूप

**खच 3. निजेक हेडमासटर/हेडमासटरनिके एक चिठि चिसा जेटांइ इसकुले पानिक बेबसथा हेउएक बाचिक पाउआइक।**

मानगर,

सिरिमान हेडमासटरनि साहिबा,
राजकिअ कनइआ मिडिल इसकुल,
ढांगि, धानबाइद।

माहासइ,

सबिनइ निबेदन आहेइक जेकि हामराक इसकुले पानिक अतेक बेस बेबसथा निहिं आहेइक। इहां मांचा सअ छउआ आहात आर पानि सेंढ़ेक खातिर मटेइ अना गअ चापा कर्ल आहेइक। एते चड़चडुआ तातल धकांइ टिफिन आर छुटिक बेरांइ इहां बेजांइ कचकच हेतेइ रहइक आर पांइते माहान ढेइर खुन डाढ़ाइ रहे हेउअइक।

तेंइ सिरिमतिले निबेदन आहेइक जे छउआ सउभकर एहे दिकतके दुर करेक खातिर चाड़े करिं पानिकर बेबसथा करेक चेसटा करिहा। हामराक मने इटा रहतेइक जे चाड़े करि पानिक बेबसथा हेइ जातेइक।

सउब छउआक दिगेले बेजांइ धनइअबाद !

तहराक मानइआ छउआ
किरन सांखुआर
केलास - आठ(अ)
रउल न0 - 32

तारिक - 10.04.2015

## 2. पारिवारिक तथा निजी पत्र

2. **पारिवारिक एवं निजी पत्र :-** हम अपने सामाजिक-एवं पारिवारिक जीवन में विभिन्न तरह के पत्रों का व्यवहार करते हैं। क्योंकि समाज एक दूसरों के साथ किसी न किसी नाते से जुड़े हुए हैं। कोई नजदीक रहता है तो कोई बहुत दूर। इस स्थिति में वे आपस में पत्रों के माध्यम से जुड़े रहते हैं क्योंकि घर परिवार में तरह - तरह के सामाजिक एवं पारिवारिक कार्य होते रहते हैं। जैसे - विवाह, मरन संस्कार, पर्व त्योहार, किसी को किसी जीच की जरूरत पड़ती रहती है। ऐसे अवसर पर पत्रों के माध्यम से उन तक संदेश पहुंचाया जाता है।

### हिन्दी प्रारूप

**प्रश्न 4. पढ़ने के लिए रूपये मँगवाने के लिए अपने पिताजी को पत्र लिखिए।**

बी. एस. सिटी कॉलेज,
बोकारो, झारखंड
दिनांक - 23.05.2015

पूज्यनीय पिताजी,

सादर प्रणाम,

मैं यहाँ भगवान की कृपा से बिलकुल ठीक हूँ और आशा करता हूँ कि आप भी वैसे ही होंगे जैसे कि आप ने पहले लिखे थे। लेकिन मुझे पीछले तीन महीनों से एक भी पत्र प्राप्त नहीं हुआ हैं। मैं नहीं जानता कि मुझसे कौन सी गलती हो गई।

अभी मेरे पास पैसों की सक्त जुरुरत है क्योंकि मेरे सभी पैसे पद्रह दिन पूर्व ही खत्म हो चुका है। अभी में अपने दोस्तों से दधारी में पैसा लेकर काम चला रहा हूँ। अभी मेस में भी पैसा देना है और परीक्षा फार्म भी भरना है। अतः आप से अनुरोध है कि पत्र मिलते ही जल्द से जल्द पैसे भेजने का कृपा करे। पूज्य माता जी को चरण-स्पर्श तथा छोटी को प्यार बाकि सब ठीक है।

आपका आज्ञाकारी पुत्र
अजित कुमार केड़ुआर

### कुड़मालि प्रारूप

**खंच. 4. टाका मांगाएक खातिर निजेक बापके चिठि चिसा।**

बि. एस. सिटि कालेज,
बउकारअ, झारखंड,
तारिक - 23. 05. 2015

मानगर बाप,

गड़लागइहउ,

मइ इहां सिंगबगाक दहांइए बेस आहिए आर आसा करइहे जे तहराउ उहां असनेइ आहिआ जेसन गेला छिठिंइ लिखल रहलेहे। मनतुक, मइ गेला टेना मासधरिले एकअटि चिठि निहिं पाउअल आहिए, मइ किना गेलति करल आहिए, सेटा मइ निहिं जानिए!

एखन मके टाकाक बेजांइ दरकार आहेइ। मर ठिन पंदरअ दिन पेहि लिहिं टाका सिराइ गेल आहेइक आर एखन संगि छउआक ठिन पेंइचा लेइके कनअ डुल काम चलाइहे। एखन मके झिंकेक खातिर मेसें आर परिकखाक खातिर टाकाक खुभेइ दरकार आहेइक। तेंइ चिठि पाउएक चटाहिं चाड़ेकरि टाका पाठाउएक चेसटा करिहा। माइके गड़लागइहे आर बेहिन छुटिके आसिस देइहे।

आदरेक छउआ

अजित कुमार केड़ुआर

## हिन्दी प्ररूप

**प्रश्न 5. अपने मित्र को जन्म दिन के उपलक्ष्य में बाधाई पत्र लिखिए।**

उपर काहान, झालदा,

आखांइन जातरा, 2015

प्रिय मित्र कैलास,

नमस्ते,

आज सुबह मुझे आपका जन्म दिन के निमंत्रण पत्र मिला। मुझे जानकर अति प्रसन्नता हुई कि आपका जन्म दिन आखांइन जातरा के दिन में ही है। आपका कार्यक्रम जानते ही मेरा पैर हाथ उछलने लगा है।

मेरी ओर से आपको जन्म दिन का शत - शत बाधाई। जैसे आपका जन्म दिन नये साल की तरह मने। मुझे केवल इस बात का खेद रहेगा कि मैं उस दिन कार्यक्रम में शामिल नहीं हो पा रहा हूँ। इसके लिए माफी चाहता हूँ।

मैं अभी अपना गाँव आया हूँ नहीं तो अवश्य ही आता आर आनन्द लेता। मैं फिर किसी दिन किसी अवसर पर आऊँगा, ढेर सारी बातें करुँगा तथा मिठाई खाऊँगा। बाकि सब ठीक है।

आपका मित्र

कैलास प्रति महतो

## कुड़मालि प्रारूप

**खंच 5. जनम दिनेक सगुन बानछा दिएक खातिर निजेक संगिके चिठि चिसा।**

उपर काहान, झाइलदा,
आखांइन जातरा, 2015

बेस संगि,

जहार,

आइज बिहा निहिं तर पाठाल जनम दिनेक नेउता पाउअल। मके इटा जानिके बेजांइ हुब हेलेइक जेकि तर जनम दिन आखांइन जातराक दिनेइ हेकउ। इटा बेजांइ बेस जखा हेकउक। तर बेबसथा जानिके मर गड़-हांथ उमके लागल।

मर दिगेले तके जनम दिनेक बेजांइ - बेजांइ सगुन बानछा देइहउ। जेसे तर नउतुन बछर एहे जनम दिनेक पारा काटतउ। मनतुक, मइ बेजांइ दुखअ करइहे जे मइ एहे सुजउगेक पहरे इहां ठाइन निहिं दिए पारइहे। ताकर खातिर मिनहा करि देबे तअ बेस हेतेइक।

मइ एखन निजेक गांउ आइलाइहे नि तअ खांटि आउअइतेलिए आर मइअ हुबे रहइ तेलिए। मइ दसर कनअ दिन बतर भांजिके आउअब आर बेजांइ कथा-बात करब आर मिठाइ खाब।

तर संगि
केइलास पति माहातअ

## हिन्दी प्रारूप

**प्रश्न 6. अपने माता जी को अपने विद्यालय का वर्णन करते हुए पत्र लिखिए।**

परीक्षा भवन
राउकेला, उड़िसा,
28 जून 2015

पूज्यनीय माता जी,

सादर प्रणाम,

आपका पत्र मिला। आपकी इच्छानुसार मैं अपने विद्यालय की जानकारी इस पत्र में लिख रही हूँ।

मेरा विद्यालय हर तरह से अच्छा है। विद्यालय का भवन दो मंजिला है और सभी कमरे बड़े हवादार तथा साफ-सुथरे है। विद्यालय के चारों ओर सुंदर बागवानी है। विद्यालय के नजदीक एक खेल का मैदान है। इसमें प्रतिदिन सुबह हमलोग

प्रार्थना होते हैं। विद्यालय के पीछे एक बड़ा सा मैदान है जहाँ हमलोग हॉकी एवं फुटबाल खेलते हैं।

विद्यालय में पढ़ाई बहुत अच्छी होती है। प्रधानाध्यापक और सभी शिक्षकगण अनुभवी एवं परिश्रमी है। यहाँ का अनुशासन बहुत अच्छा है। मेरी सौभाग्य है कि मुझे इतने अच्छे विद्यालय में प्रवेश मिल गया है।

पूज्य पिताजी को चरण स्पर्श और उमा तथा सुनीता को प्यार। बाकि सब ठिक है।

आपकी आज्ञाकारी पुत्री

सुसमा कुजुर

## कुड़मालि प्रारूप

**खंच 6. निजेक माइके एक चिठि चिसा जेटांइ इसकुलेक बाखान करल गेल आहेइक।**

परिकखा भउअन,
राउकेला, उड़िसा,
28. 02. 2015

मानगर माइ,

गड़लागइहअ,

मइ तर चिठि पाउअल आहिए। तके मर इसकुलेक लेइ जानेक हिचछा जे आहउ उटा मइ एहे चिठिंइ दारांइ टुकु पुरा करेक कसनि करइहे।

मर इसकुल सउब दिगेले बेस आहेइक। इसकुलेक सउब कठरि दुइ तालला, बेस बड़अ - बड़अ आर बातासेक आउआ-जाउआकर बेस बेबसथाक संगे - संगे चिकन-चाकन आहेइक। इसकुलेक चाइरअ धारिंइ फुल बागान आहेइक, सटले अना गअ टांइड़ आहेइक, जेटांइ मराक पतिदिन पारथाना हेउअइक। इसकुलेक पेछुधारिंइ एक बड़अ पारा खेलेक टांइड़ आहेइक, जेटांइ हउकि आर फुटबउल खेइल खेलिए।

इसकुले पढ़ाइ बेस हेउअइक। हेडमसटर आर मासटर सउब बेजांइ मेहनतिआ हेकत। इहांक सासन बेबसथा बेजांइ बेस आहेइक। मर मनेक बानछा जेटा रहलेक उटा एहे इसकुले नाम लिखाइ पुरा हेलेइक।

बापके गड़ लागइहे, उमा आर सुनिता के आसित कहि देबसिक। बाकि सउब बेस आहेइक।

तर आदरेक छउआ
सुसमा कुजुर

## 4. सरकारी पत्र

### हिन्दी प्रारूप

**प्रश्न 7. अपने नजदीकी थानाध्यक्ष को एक पत्र लिखें जिसमें साईकिल चोरी की रिपोर्ट किया गया हो।**

बड़गाँव, रांची,
8 अकटुबर 2009

सेवा में

थानाध्यक्ष
कोतवाली पुलिस चौकी,
उपर बाजार, रांची।

विषय :- साइकिल चोरी के रिपोर्ट के संबंध में आवेदन।

महोदय,

निवेदन है कि कल महाबिर चौक के नजदीक से दिन दस बजे मेरी साईकिल चोरी हो गई। मैं अपनी साईकिल को बाहार पिआउ जल के पास ही खड़ा कर पानी पी रहा था। मुश्किल से पांच मिनट हुआ होगा। जब मैं पानी पीकर साईकिल की ओर मुड़ा तो वहां से साईकिल गायब थी। अगल-बगल पूछने पर भी कोई पता नहीं चला।

अतः आप से प्रार्थना है कि आप साईकिल का पता लगाकर मुझे उपर लिखे पते पर सूचित करने की कृपा करें। साईकिल का विवरण इस प्रकार हैं :-

1. साईकिल का नाम - एटलस
2. साईकिल का नं0. - ए 7894
3. साईकिल का रंग - लाल
4. खरीदने का स्थान - अपर बाजार, रांची

विशेष बात - साईकिल के हैंडल में राजेस केटिआर लिखा हुआ है।

धन्यवाद सहित,

भवदीय
भिखु केड़ुआर

### कुड़मालि प्रारूप

**खंच 7. निजेक पासेक थानादारके एगअ चिठि चिसा जेटांइ साइकिल चरि हेउएक रिपअट करल आहेइक।**

बड़गांउअ, रांचि,
8 अकटुबर 2009

मानगर,

थानादार कतउआलि थाना,

उपर बाजार, रांचि।

बिसइ :- साइकिल चरिकर रिपउट करेक तेंहे दरखास।

माहासइ,

निबेदन आहेइक जेकि काइल माहाबिर चउकेक पासले दिन सिहम बाजांइ मर साइकिल चरि हेइ गेल आहेइक। साइकिलके पासेक पानि सेंढ़ेक नलेक पासे डाढ़ाइ राखि मइ पानि सेंढ़े हेलिए। मटेइ मांचा मिनट तड़िक हेल रहल। जेसेइ पानि सेंढ़िके पेछु दिगे घुरल ना साइकिल उहां निहिं देखे पाउअल। तुरतेइ आसे-पासेक हड़ आरके सुधिआल मनतुक, कनअ आर टउआ निहिं लागलेइक।

तेंइ तहराक ठिन नेहर आहेइक जे मर साइकिलकर टउआ लागाइके मर टउआंइ बेउरा देइ देबेहे। साइकिलकर लेइ आरअ बिसेस बात एहे डुल आहेइक :-

साइकिलेक नाम - एटलस

साइकिलेक नं - 7894

साइकिलेक रंग - लाल

किनेक ठेकान - उपर बाजार, रांचि

बिसेस चिनाहा - साइकिलेक हेंडेले राजेस केटिआर कुंदल आहेइक।

धइनइअबाद,

तहराब बिसासि लक

भिखु केडुआर

## हिन्दी प्रारूप

**प्रश्न 8. सम्पादक के नाम एक पत्र लिखिए जिसमें मुहल्लेवासी को लाउडस्पीकर द्वारा होने वाले कष्ट का वर्णन हो।**

भुंइआ टोली, सामलोंग,

राँची - 834006

सेवा में,

प्रभात खबर

सम्पादक,

कोकर, औद्योगिक क्षेत्र, राँची

श्रीमान् जी,

आजकाल हमारे मुहल्ले में लाउडस्पीकरों के शोर के कारण लोगों को बहुत कष्ट हो रहा है। यहां सुबह-शाम लाडस्पीकरों की शोर, सुनाई देता है। इस कारण इससे छात्रों को पढ़ाई में बाधा उत्पन्न हो रही है। किसी रोगी को घर में चैन नहीं मिल पा रहा है। यहां तक इसके तीव्र आवाज से रात को नींद भी ठीक से नहीं आती है।

अपने लोकप्रिय पत्र द्वारा मैं अधिकारियों से प्रार्थना करना चाहता हूँ कि वे इसपर प्रतिबंध लगाएँ। किसी विशेष अवसर पर लाउडस्पीकर का प्रयोग किया जाय तो उचित होगा।

प्राथी
अनिल टाइगर

## कुड़मालि प्रारूप

**खंच 8. संजुएताक नामे एक चिठि चिसा जेटांइ कुलहिक हड़के लउडिसपिकरेक अनसले खालास पाउएक बाचिक पाउआइक।**

भुंइआ कुलहि, सामलंग,
रांचि - 834010

मानगर,

परभात खबर,
संजुएता, अधउगिक छेतरअ,
ककर, रांचि।

सिरिमान,

आइज-काइल हामराक कुलहिंइ लाडिसपिकरेक अनसले इहांक हड़के बेजांइ तकलिफ हेउअहेंइ। इहां सांइझ-बिहान अनस फुटलेइ रहइक। एकर खातिर छउआक पढ़ांइए आड़ हेउअहेइ। कनअ रउगिंइ आर आराम निहिं पाउअत। राइते केउ आर बेसले घुमाइ निहिं पारत।

तहराक नामकरा खबर दाराले मइ अधिकारिले नेहर करे खजइहे जे अंइ इहां टेक लागाता। कनअ कामेक घारे आरे खालि लडिसपिकर बाजाले बेस हेतेइक।

नेहर
अनिल टाइगर

❖❖❖

# 25. कुड़मालि भाषा में निबंध लेखन

## ⇨ निबंध लेखन की क्या आवश्यकता है?

निबंध लेखन की आवश्यकता विभिन्न परीक्षाओं में उतीर्ण होने से लेकर विभिन्न कार्यालयों में कार्य कर रहे कर्मचारियों को हमेशा इसकी आवश्यकता पड़ती है। विद्यार्थी जब प्रारंभिक अवस्था में निबंध लिखते हैं। तो शिक्षक उन्हें निबंध लिखने के लिए पाँच बिन्दुओं पर ध्यान देने को कहते हैं।

## ⇨ निबंध लिखने के लिए पांच बिन्दु है :-

(1) निबंध हेतु दिये गये शीर्षक का परिचय
(2) निबंध के आकार-प्रकार
(3) निबंध के लाभ
(4) निबंध के हानि तथा
(5) अंत में उपसंहार।

इस तरह से निबंध लिखते हुए जब हम प्रोढ़ता प्राप्त करते हैं तो यह पाँच बिन्दुओं वाला सुत्र व्यर्थ प्रतीत होने लगता है। आखिर में हम यह सोचने लगते हैं कि कौन सी विधि, प्रणाली, कला, चतुराई अपनायी जाये। जिससे किसी विषय पर अच्छा निबंध लिख पायें। किसी भी विषय में निबंध लिखने के लिए निबंध क्या है? इसे समझ लें।

## ⇨ निबंध की परिभाषा

'निबंध' शब्द का निर्माण इस प्रकार हुआ है - नि + बंध = निबंध। यहाँ 'नि' उपसर्ग है तथा 'बंध' मूल शब्द है। इसका अर्थ होता है - अच्छी तरह से बाँधना या सुग्रथन। अतः निबंध ऐसी गद्यात्मक विद्या है, जिसमें विचारों की कसावट अनिवार्य है। अंग्रेजी भाषा में निबंध को Essay कहा जाता है। Essay का अर्थ होता है 'प्रयत्न करना'। इस प्रकार हिन्दी एवं अंग्रेजी के अनुसार निबंध दो कोटि के होते हैं - (1) परिबंध निबंध (2) निर्बध निबंध।

⇨ परिबंध निबंध में विचारों को एक सूत्र में बाँधा जाता है जबकि निर्बध निबंध में ऐसा नहीं होता है।

## ⇨ निबंधेक जिनिस (निबंध के तत्व)

दुनिआकर सउभ पाड़सि माहान निबंध चिसेक चलन आहेइक। मनतुक सउभ पाड़सिक निबंध एक धंचअरे पाउअल जाइक। अहे डुल कुड़मालि पाड़सि माहानअ निबंध अहे धंचअरे चिसल जाइक जाकर कुछु बिसेस निअम किमबा जिनिस आहेइक। जेटा एहे रकमेक आहेइक :-

1. **बिचार किमबा भाउएक छाप :-** गउटे निबंध माहान खंचे देल गेल पाठकर भाउ किमबा बिचारला जड़ाइल रहेक चाहि। बिसइ-बसतुले बाहिरेक बात निहिं चिसेक चाहि।
2. **नाता :-** निबंधकर टुमे एकर नाता सउब ठिने बनल रहेक चाहि। जेसे गटा निबंधके एककरि राखल जाइ पारअइक।
3. **अभिवेंइजना :-** निबंधकर पाठके बेस करि सचि-बुझिके एकर बिसइ-बसतुले जड़ाइल बिचार गिलाके फेरिछ करेक चाहि। जेसे परखइआक दिमागे सुधिआल चट करिके ढुकि जाइक।

➪ **निबंधकर रकम (निबंध के प्रकार)**

मटामटि सउभे परिकखा माहान टेना रकमेक निबंध सुधिआइल जाइकः-

1. **बिचारातमक निबंध :-** जेसन - अनुसासन, देसभकति, सुचना करांति, पंचाइति राइज, लेधड़ काम, बेस टुड़अइआ इटासेटा।
2. **लेखा जअखाक निबंध (विवरणात्मक निबंध) :-** जेसन - गाइ, रेलगाड़ि, बातास गाड़ि, हाट, सलअ-आना इटासेटा।
3. **भाउआतमक निबंध :-** जेसन - एक पिआलि चाइ, बेराडुबाक डाक, बादइरेक गरजन, चांद सुरुजेक लुकलुकानि इटासेटा।

➪ **सउबले बेस निबंधकर चिनहाप :-** बेस निबंध उटाइ हेकेइक, जाके पढ़ले मनके बांधि लेइक। टुम खांटअ - खांटअ हेउअइक, आतर-बातर साड़ा निहिं हेउएक चाहि। निबंधेक टुम एकर बिसइले जड़ाइल रहेक चाहि, जाके पढ़ले एकर गड़ा भाउ फेरछाइक जेसे। एहे टाइ बेस निबंधेक गुन हेकेइक। तेंइ छउआके बिसइ-बसतुक बेस गिआन हेउएक चाहि आर निबंध चिसेक लेइ ढेइर करि अभइआस करेक चाहि।

➪ **कुछु कुड़मालि निबंध निमुंदेक रुपे देखल जाइ पारअइक**

## 1. पंचायती राज

### (हिन्दी में)

हमारे देश में प्राचीन काल से ही स्वशासित गाँवों की परम्परा रही है। आज भी वैसे गाँवों में जिस अत्यंत पिछड़े समझते हैं, वहाँ ग्रामीण जन-सहभागिता के आध ार पर प्रशासन का कार्य किया जाता है। गाँवों में स्वशासन की इस परम्परा को 'पंचायती राज' कहा जाता है। स्थानीय स्वशासन हेतु सर्वप्रथम 1787 ई0 में मद्रास कस्बे में स्थानीय निकाय का विधिवत गठन किया गया। इसमें कुछ भारतीय प्रतिनिधि और कुछ विदेशी प्रतिनिधि थे। 19 वीं शताब्दी के अंत में अंग्रेजों ने भारत में ग्राम पंचायतों का गठन भी किया था, किंतु ये ग्राम पंचायते वास्तव में जमींदारों का हित संरक्षण करती थी और जमींदार अंग्रेजों के हितसाधक बने हुए थे।

1915 ई0 के बाद भारतीय राजनीति में महात्मा गाँधी का उदय हुआ। उन्होंने ग्राम स्वराज का नारा दिया। अंततः 2 अक्टूबर 1952 ई0 को भारत सरकार द्वारा गाँवों के विकास हेतु सामुदायिक विकास कार्यक्रम प्रारंभ किया गया। सरकार के इस कदम को पंचायती राजव्यवस्था का वास्तविक शुभारंभ माना जाता है। 1957 ई0 में एक समिति का गठन किया गया, जिसके अध्यक्ष बलबंत राय मेहता थे। इस समिति ने त्रिस्तरीय पंचायत व्यवस्था की स्थापना की सिफारिश की। त्रिस्तरीय व्यवस्था में (1) ग्राम या नगर पंचायत (2) तहसील पंचायत तथा (3) जिला पंचायत नाम से तीन संस्थाओं की स्थापना की बात कही गयी। समिति के सिफारिशों की उपयोगिता को देखते हुए इसे 1 अप्रैल 1958 ई0 को सम्पूर्ण ईसवी को पंचायती राज अधिनियम पारित किया। यह सर्वप्रथम राजस्थान के 'नागौर' नामक स्थान में 2 अक्टुबर 1959 ई0 में प्रारंभ हुआ। इसके बाद 1959 ई0 में आंध्र प्रदेश ने, 1960 ई0 में तमिलनाडु ने, 1963 ई0 में महाराष्ट्र ने तथा 1964 ई0 में पं0 बंगाल ने इस व्यवस्था को लागू किया।

पंचायती राज अधिनियम को और प्रभावी बनाने के लिए 1977 ई0 में अशोक मेहता समिति बनाई गयी। इस समिति ने त्रिस्तरीय पंचायत व्यवस्था के आधार पर द्विस्तरीय व्यवस्था की सिफारिश की। इस समिति के सिफारिशों के आधार पर सर्वप्रथम पश्चिम बंगाल ने पंचायत चुनाव सम्पन्न कराया तथा ग्रामीण विकास में पचायती राज संस्थाओं की सहभागिता को सुनिश्चित कराया।

दिसम्बर 1992 ई0 को भारतीय संविधान के 73 वें एवं 74 वें संशोधन द्वारा इस व्यवस्था को संवैधानिक रूप दिया गया। 73 वाँ संविधान संशोधन ग्राम पंचायत से संबंधित है जबकि 74 वाँ संविधान संशोधन नगरपालिकाओं से संबंधित है। संविधान के द्वारा पंचायती राज-व्यवस्था हेतु निम्नलिखित प्रावधान किये गये हैं:-

1. पंचायत व्यवस्था का प्रथम स्तर गाँव होता है। पंचायत का निर्माण एक या एक से अधिक ग्रामों से मिलकर बनेगी। ग्राम सभा की शक्तियों के संबंध में राज्य विधान मंडल कानून बनायेगी।
2. 20 लाख से कम जनसंख्या वाले राज्यों में दो स्तरीय (ग्राम स्तर तथा जिला स्तर) तथा 20 लाख से अधिक जनसंख्या वाले राज्यों में त्रिस्तरीय (ग्राम स्तर, प्रखण्ड स्तर, जिला स्तर) पंचायतों का गठन किया जायेगा।
3. पंचायत सदस्यों तथा ग्राम पंचायत के अध्यक्ष का चुनाव व्यस्क मतदाताओं द्वारा प्रत्येक पाँच वर्षों में किया जायेगा। प्रखण्ड स्तर एवं जिला स्तर के पंचायत अध्यक्ष का चुनाव अप्रत्यक्ष मतदान के द्वारा किया जायेगा।
4. पंचायत के सभी स्तरों पर अनुसूचित जाति तथा जनजाति के सदस्यों के लिए सीटों का आरक्षण उनकी संख्या के अनुपात में होगा। महिलाओं को 30% आरक्षण दिया जायेगा।

5. सभी स्तर के पंचायतों का कार्यकाल 5 वर्ष होगा। इसका विघटन 5 वर्ष पूर्व भी किया जा सकता है लेकिन विघटन के बाद छः माह के अंदर चुनाव कराना आवश्यक है।
6. पंचायतें आर्थिक विकास एवं सामाजिक न्याय की योजनाएँ तैयार करेगी।
7. राज्य विधान मण्डल पंचायतों को कर लगाने, उन्हें वसूल करने तथा प्राप्त धन को विकास एवं कल्याण के कार्यों में व्यय करने का अधिकार प्रदान कर सकती है।
8. पंचायतों की वित्तीय स्थितियों के संबंध में जाँच करने के लिए वित्तीय आयोग का गठन किया जयेगा जो अपनी रिपोर्ट राज्यपाल को सोपेगा।

वर्तमान में पूरे भारत में 227697 ग्राम पंचायतें, 5913 पंचायत समितियाँ तथा 475 जिला परिषदें कार्यरत है। इनमें जनप्रतिनिधियों की संख्या लगभग 34 लाख है। गुजरात, पंजाब, महाराष्ट्र, प0 बंगाल, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, उत्तर प्रदेश, म0 प्रदेश, जम्मू एवं कश्मीर को छोड़कर शेष राज्यों में पंचायत चुनाव नहीं कराये गये है। इधर झारखंड में तो 32 वर्षों के बाद 2011 में पंचायत चुनाव कराया गया। इसमें 53,207 जन-प्रतिनिधि निर्वाचित हुए, जिनमें 29,415 (55%) महिलायें है। विगत 32 वर्षों तक राज्य स्तर पर इस प्रकार की लापरवाही न केवल विकास को हानि पहुंचायी है, बल्कि भारत की लोकतांत्रिक प्रणाली को आधात पहुंचाने का काम किया है।

अतः हमें गांधी के सपनों का भारत बनाने के लिए पंचायती राज व्यवस्था को सुदृढ़ करना होगा।

## 1. पंचाइति राइज

## (कुड़मालिंइ)

हामरक देसे आदि जुग लिहिं निजेक सासन बेबसथा गांउए चलि आइल आहेइक। आइझअ एसन गांउए छाड़ेक-आधेक काहुं - काहुं एकदमेइ एकर चलन आहेइक, उहां गांउएक हड़ेक सहमतिक ठेहअड़े सासनकर काम करल जाइक। गांउए निजेक सासनकर एहे चलनके 'पंचाइति राइज' नामले बाना बिछल गेल आहेइक। इहांक हड़े निजेक सासनेक तेंहे सउबले पेहिल 1787 साले मादरासे (मद्रास) असथानिंअ निकाइकर बिधि-बिधाने थापना करल गेल। इटांइ कुछु भारतेक आर कुछु बिदेसिआ परतिनिधि रहल। 19 उआं सताबदिक सेंसे एंगरेजें भारतें गांउ (गेराम) पंचाइतकर थापनाउ करल रहल, मनतुक इ गांउ पंचाइत माहान खालि जमिनदारेक हितके बाचाउएक काम करे हेल आर एंगरेजेक चामचा बनि रहल।

1915 कर पअरे भारतेक राइजनिति माहान माहातमा गांधि आउअल। एंइ 'गांउ सउराइज' गांउएक निजेक राइजकर नारा देल। सेंसेक काले 2- अकटुबर 1952 साले भारत सरकारेक उसासे गांउकर बिकासेक खातिर दंहगिआ बिकास कारजअ-करम (समुदाइक बिकास कारजअ-करम) सुरु करल गेल। सरकारेक एहे आग बाढ़ुआनिके

पंचाइति राइज बेबसथाकर गड़ा आखांइन मानल जाइ पारइक। 1957 साले एक दंहगि कर थापना करल गेल, जाकर तालेबर बलबंत राइ मेहता हेकल। एहे दंहगि टेना दिगेले पंचाइत बेबसथाकर थापना करेक सिफारिस करल। टेना दिगेक बेबसथाक भितर :- (1) गेराम/नगर पंचाइत, (2) तहसिल पंचाइत आर (3) जिला पंचाइत नामेक टेना गअ गठकर थापना करेक बात कहल गेल। दंहगिकर सिफारिसेक मांगेक उपर धेइआन देइके 1 अपरेल 1958 साले गउटे इसबिके पंचाइति राइज अधिनिअम पारित करल। इटा सउबले पेहिल राजेसथानकर 'नागर' नामेक जेइगांइ 2 अकटुबर 1959 साले सुरु करल। एकर पअरे 1959 साले आंधरअ परदेसे, 1960 साले तामिलनानडुंइ, 1963 साले माहारासटअंइ आर 1964 साले पं0 बंगाले एहे बेबसथाके लागु करल।

पंचाइति राइज अधिनिअमके आर चिसल कथाके धरांइ आनेक खातिर 1977 साले असउक मेहता कमिटि बनाल गेल। एहे कमेटिंइ टेना-दिगिआ पंचाइत बेबसथाक ठेहड़े दुइअसतरिअ बेबसथाकर सिफारिस करल। एहे कमेटिक सिफारिसेक ठेहड़े सउबले पेहिल पं0 बंगाले पंचाइत चुनाउ कराल आर गांउएक बिकासे पंचाइत राइज दहगिकर निजेक भागिदारिके धरज कराल गेल।

दिसंबर 1992 साले भारतेक संबिधानकर 73 उआं आर 74 उआं संसउधने एहे बेबसथाके संबेधानिक रुप देल गेल। 73 उआं सुधराल संबिधाने गांउ पंचाइतले जड़ाइल बात आहेइक आर 74 उआं सुधराउअल संबिधाने नगर-पालिकाले जड़ाइल बात आहेइक। संबिधानेक दारा राइज बेबसथाक खातिर नाना रकमेक बेबसथा करल गेल आहेइक :-

1. गांउ, पंचाइत बेबसथाकर सउबले पेहिलेक खंड़ हेउअइक। अना किमबा अनाले बेसि गांउके मेझाइके पंचाइत बनाइल जातेक।
2. 20 लाखले कम झन जन राइजे रहतेइक उहां दना-असतरेक (गांउ असतर आर जिला असतर) 20 लाखले बेसि झन जाहां रहतेइक, उहां टेना-असतरेक (गांउ, परखंड आर जिला असतर) पंचाइतकर थापना करल जातेइक।
3. पंचाइत सदइस आर गांउ पंचाइतकर तालेबरेक बाछान बुढ़ा-पुरखाक मता-मतले पति मांचा बछरे अना धांउ करल जातेइक। परखंड असतर आर जिला असतरेक पंचाइतेक तालेबरेक बाछान अपरतइछ मतेक अनुजांइ करल जातेइक।
4. पंचाइतेक सउब असतरे अनुसुचित आर अनुसुचित जनजातिकर सदइसेक तेहें सिट धरज अकर गनानेक अनुपाते हेतेइक। जेनि सउबके सउए 30 गअ बाछल जातेइक।
5. सउब असतरेक पंचाइतेक काम-पाइट 5 बछरेक हेतेइक। एकर भंगअ 5 बछरेक पेहिलउ करल जाइ पारइक। मनतुक भंगअ हेल 6 मासेक भितर एकर घुरि बाछान करा खुभेइ दरकार हेकेइक।

6. पंचाइते आरथिक बिकास आर सामाजिक नइआइके तइरि करतेइक।
7. राइज बिधान मंडले पंचाइतके खाजना लागाइएक, अके तगादार करा आर उठल धनके बिकास आर जन-कइलानेक कामे लागाउएक अधिकार दिए पारइक।
8. पंचाइतेक लेखा-जखाले जड़ाइल कामके जांच करेक खातिर लेखा-जखा दंहगिकर थापना करल जातेइक, जेटाक निजेक रिपअट राइजपालके थामाल जातेइक।

चलति बेरांइ गअटा देसे 227697 गांउ पंचाइत, 5913 पंचाइत समिति आर 475 जिला परिसद काम करअहइ। जाकर भितर काम करइआ मटामटि 34 लाख आहेइक। गुजरात, पंजाब, माहारासटअ, पं0 बंगाल, आंधरअ परदेस, करनाटक, उतर परदेस, मइध परदेस, जममु आर कासमिरके छाड़ि सेंस राइजें पंचाइत चुनाउ निहिं कराल गेल आहेइक। इदगे झारखंडें गेला 32 बछरेक परे 2011 माहान पंचाइअत चुनाउ कराल गेल। इटांइ 53,207 मुखिआ बाछल गेल, जाकर भितर 29,415 (55%) जेनि झन आहेइक। गेला 32 बछर धरि राइजेक एहे रकमेक ढिल ढालेक कारन ना खालि इहांक बिकासेक खति हेल आहेइक बरंग भारतेक लउकतांतरिक परनालि कुहुं ठेस पहंचाइएक काम करल आहेइक।

तेंइ हामराके गांधिकर सपनेक भारत बनाइएक खातिर पंचाइत राइज बेवसथाके दढ़अ-माढ़अ बनाइ हेतेइक।

## 2. सूचना क्रांति

## (हिन्दी में)

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। प्राचीन काल में भाषा एवं लिपि के अभाव में मनुष्य केवल संकेतों के द्वारा विचार-विनिमय करते थे। धीरे - धीरे भाषा और लिपि का अविष्कार हुआ, जिससे मानव के जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तण आये हैं। मानव के जीवन में विचार, अभिव्यक्ति आदि को समझने तथा दूसरों को समझाने एवं दूर तक विस्तारित करने में भाषा का महत्वपूर्ण योगदान सिद्ध हुआ है।

भाषा के विकास के बाद सूचनाओं को लिखकर व्यक्तियों या पंक्षियों के माध्यम से एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाया जाता था। जिससे समय और गोपनीयता दोनों की हानि होती थी। धीरे - धीरे सूचना के अन्य माध्यमों का आविष्कार हुआ। जैसे - डाक सेवा, टेलीफोन एवं तार सेवा, जिनसे मौनव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में परिवर्तण हुए। आज सूचना क्रांति का युग चल रहा है, जिसकी छूरी कम्प्यूटर, इंटरनेट और मोबाइल है। सूचना क्रांति ने मानव जीवन के सभी पक्षों को प्रभावित किया है। शिक्षा के क्षेत्र में प्राथमिक विद्यालयों से लेकर विश्वविद्यालयों को कम्प्यूटर के माध्यम से जोड़ा जा रहा है। भारत के कई विश्वविद्यालय ऑन लाईन हो चुके हैं तथा इनमें से कई दूरस्थ शिक्षा कम्प्यूटर एवं दूरदर्शन के माध्यम से दे रहे हैं। आजकल परीक्षा भी ऑन लाईन हो रही है। पुस्तकालय भी ऑन लाइन हो रहें, जिससे कम्पयूटर के माध्यम से किसी भी पुस्तक को पढ़ा जा सकता है।

सूचना क्रांति ने बैंकिंग व्यवस्था को ई-बैंकिंग में बदल दिया है। अब बैंकों में कम्प्यूटर के द्वारा नेटवर्किंग का तेजी से विकास हो रहा है। इससे ग्राहकों को कई सुविधायें दी जा रही है। जैसे - स्वचालित ट्रेलर मशीन (A.T.M.) टेलीबैंकिंग, होमबैंकिंग, क्रेडिट कार्ड, स्मार्ट कार्ड, इलेक्ट्रोनिक फण्ड ट्रांसफर आदि। इससे आर्थिक व्यापार जगत में काफी तेजी आयी है।

प्रशासन के क्षेत्र में सूचना क्रांति ने महत्वपूर्ण काम किये हैं। आज सुविधायें इतनी बढ़ गई है कि भारत के गृह सचिव टेलीकान्फ्रेसिंग के जरिये एक छोटे से ग्राम प्रधान से सीधे बातचीत कर सकते हैं। पुलिस कम्प्यूटर आधारित कैमरों का प्रयोग करके महत्वपूर्ण स्थानों में सदैव निगरानी रख सकती है। इससे अपराधियों को पकड़ना आसान हो गया है।

सूचना क्रांति ने मानव जीवन के सभी पक्षों पर गहरा प्रभाव डाल रहा है। अतः मनुष्य इसका सही दिशा में प्रयोग करके समाज का सर्वांगिन विकास कर सकता है। पुलिस कम्प्यूटर आधारित कैमरों का प्रयोग करके महत्वपूर्ण स्थानों में सदैव निगरानी रख सकती है। इससे अपराधियों को पकड़ना आसान हो गया है।

अब संचार सम्प्रेषण डाक व्यवस्था के स्थान पर ई-मेल (Electronic mail) आ गई है। यह संचार का अत्यंत तीव्र और सस्ता साधन है। इसके माध्यम से भारत जैसे विविधतापूर्ण राष्ट्र में जो भौगोलिक, सामाजिक तथा सभी क्षेत्रों में विविधतापूर्ण है, में प्रायः सभी क्षेत्रों से संबंधित सूचनाओं को तीव्र गति से पहुँचाया जा रहा है।

सूचना क्रांति से मनुष्य को यदि सर्वाधिक लाभ हुआ है, वह है मीडिया के क्षेत्र में। लोकतंत्र के चौथे स्तम्भ समाचार पत्रों में काफी परिवर्तन आया है। प्रिंट मीडिया का इलेक्ट्रॉनिक मीडिया से सीधा संबंध हो गया है। सूचना प्रोद्यौगिकी से स्टिंग आपरेशन हो रहे हैं, जिससे भ्रष्टचार उजागर हो रहा है। इससे प्रजातंत्र मजबुत हो रही है।

## 2. सुचना करांति
## (कुड़मालिंइ)

हड़ अना गअ सामाजिक जिउ हेकेइक। आदि जुगे पाड़सि आर लिपिक टाने हड़े खालि गड़-हांथ डलाइ, माने चिनहाक दारांइ निजेक हाउ-भाउके एक दसरके बाताउए हेलथिन। रसे - रसे पाड़सि आर लिपिक अबिसकार हेल, जेटाले हड़ेक जिनगिंइ बेजांइ बड़अ परिबरतन आउअल आहेइक। हड़ेक जिनगिंइ आचार-बिचार, बरकन (अभिबेकति) आरके बुझेक आर दसराके बुझाइएक आर फाराक तड़िक पसराएक तेहें पाड़सि एक ढेइर बड़अ जउगदान सिध हेल आहेइक।

पाड़सिक बिकासेक परे बेउराके चिसिके हड़ेक किमबा पांइखेक दाराले अना ठांउ-ले-दसर ठांउ पहंचाउअल जाइ लागल। जेटाले बेरा आर अलताइके लेगा दुइअकर खति हेउए हेलेइक। रसे - रसे आरअ दसर माधइमकर अबिसकार हेल। जेसन - डाक सेबा, टेलिफन आर ताइर सेबा, जाकरले हड़ेक जिनगिक सउभे दिगेले बदलाउ हेल।

एखन सुचना करांतिकर जुग चले हेइ। जाकर चाकुक धार कमपुटर, इंटेरनेट आर मबाइल जेसन जिनिस हेकेइक। सुचना करांतिइ, हड़ेक जिनगिक सउभे पइखके निजेक जाले फांसाइ लेल आहेइक। सिकखाक दिगेले गांउएक इसकुल-ले-बिसबिदालइ तड़िक कमपुटरेक जाले जड़ल जा हेइक। भारतेक केतेइ एसन बिसबिदालइ आहेइक जाहां अनलाइन हेइ गेल आहेइक आर जाकरले फाराके रहि कुहुं एकर पढ़ाइ कमपुटर आर टिभिक दाराले देसेक कनअ कनाइ दिउअल जा हेइक। आइज-काइल परिकखाउ अनलाइन हेउअहेइक। लाइबेरेरिअ अनलाइन हेउअ हेइक। जेटाले कमपुटरेक दारा कनअ पथिके पढ़ल जाइ पारइक।

सुचना करांतिइ, बेंकेक बेबसथाके इ-बेंकिंगे बदलि देल आहेइक। एबार बेंके कमपुटरेक दारांइ, एकर जाल खुभेइ रागेले बिकास करअहेइ। जेटाले खाता धारिके केतेइ रकमेक सुबिधा देल जाइक। जेसन - ए.टि.एम. टेलिबेंकिग, हउम बेंकिंग, केरडिट काड, असमाट काड, इलेकटरनिक फंड टरासफर इटासेटा। जेटाले आरथिक बेपार जगते बेजांइ बहन आइ गेल आहेइक।

परसासनेक दिगे सुचना करांतिइ बेजांइ महतकर काम करल आहेइक। आइज एतेइ जे सुबिसता हेइ गेल आहेइक जे भारतेक गिरह सचिब टेलिकानफेरेंसिगले एक छुटु पारा गांउएक मुखिआक संगअ कथा करल जाइ पारइक। पुलिस एखन कमपुटर केमरा कर उसासे सम - सम ठाइनके आंइख गड़ाइ राखल जाइ पारत। जेटाले दुसटुअ सउभके धरेलाइ आसान हेल आहेइक।

सुचना करांतिले हड़ेक जिबनेक सबउ पइखकेक उपर आपन रंग देखाइल आहेइक। तेंइ हड़े एकर सटिक बेबहार करिके सामाजेक सउब रकमेक बिकास करे पारत। पुलिसे कमपुटर केमरा लागाइके भिड़ भाड़ेक नजइर राखल जाइ पारइक। इटाले दुसटामि हड़के धरइते बेजांइ आसान हेइ गेल आहेइक।

एबार संचार ताइर डाक बेबसथाक जेइगांइ इ-मेल (Electronic mail) आइ गेल आहेइ। इ संचार कर तइक-खत, तेइज आर ससता सुबिसता साधन हेकेइक। एकर दाराले भारत जेसन नाना रकमेक भगउलिक, सामाजिक आर सउब छेतरे दसर - दसर रकमेक रहेक भितरअ मटा-मटि सउभे छेतरअले जड़ाइल सुचनाके तइकखत गतिंइ पहंचाहेइक।

सुचना करांतिइ हड़ेक जदि कनअ छेतरअ माहान सउबले बेसि बिकास हेल आहेइक तअ उ हेकेइक मिडिआकर छेतरअ। लउक तंतरअ कर चारा खांभा सामाचार पतरअंइ खुभेइ बदलाँउ आइल आहेइ। छापाखाना मिडिआ इलेकटनिक मिडिआले सिधा-सिधि जउगा-जउग हेइ गेल आहेइ। सुचना परदउगिकिले इसटिंग अपरेसन हेउअ हेइ, जेटाले परजातंतरअ आरअ दढ़अ हेउअ हेइ।

एखन सुचना करांतिइ हड़ेक जिनगिंकर सउभ पइंखे एकर छाप देखा हेइक। तेंइ हड़े एकर सहि दिसाके धरि सामाजकर सउभ दिगेले बिकास करे पारता।

❖❖❖

# 26. कुड़मालि भाषा में संक्षेपण

## ⇨ संक्षेपण क्या है?

किसी गद्य-खण्ड के मौलिक तथ्यों को सार रूप में प्रस्तुत करना संक्षेपीकरण या संक्षेपण कहलाता है। यह अंग्रेजी शब्द Precis का हिन्दी रूपान्तर है, जिसका अर्थ दिये गये गद्य-खण्ड के मूल बातों को अत्यंत संक्षेप में प्रस्तुत करना होता है।

## ⇨ मानव जीवन में संक्षेपण का महत्व

वर्तमान जीवन शैली में कार्य का सर्वाधिक महत्व है। सभी लोग अपने कार्यों में व्यस्त रहते हैं। किसी के पास इतना समय नहीं रहता है कि वे मोटे पुस्तकों अथवा बड़े लेखों को पढ़ सके। इसलिए लोगों में एक नई पद्धति का चलन बढ़ गया है। जिसमें किसी तथ्य को अत्यंत संक्षेप में प्रस्तुत किया जाता है। इसमें समय एवं धन की काफी बचत होती है। अतः संक्षेपण एक लेखन कला है। इसका अध्ययन एवं अध्यापन में महत्व काफी बढ़ गया है।

## ⇨ दिये गये गद्यांश का संक्षेपण कैसे करें?

1. दिये गए सम्पूर्ण अवतरण को ध्यानपूर्वक पढ़ें तथा महत्वपूर्ण बातों को अंकित करे ले। साथ हीं अन्य बातों को नोट कर लें।
2. सार के रूप में महत्वपूर्ण बातों को हमेशा अन्य पुरूष (Third Person) में लिखें।
3. सारांश की उपयुक्त शीर्षक प्रदान करें।
4. सारांश लिखते समय सीधी एवं गर्भित भाषा का प्रयोग करें।
5. सारांश में मूल तथ्यों का अवश्य उल्लेख करें।
6. सारांश में दिये अवतरण की आलोचना या अपना विचार नहीं दे।
7. संक्षेपण करते समय यह ध्यान रखें कि संक्षेपण में शब्दों की संख्या अवतरण के कुल शब्दों का मात्र 1/3 भाग हो।
8. सारांश में क्रमबद्धता होना चाहिए।

## ⇨ एक बेस संछेपनकर गुन

1. देल गेल खांटअ कथाला आर आरअ जुरि कथागिलाके निजेक पाड़सि माहान छाप दिएक चाहि।
2. पाड़सि सिधा-साधा आर बहन दिएक पारा हेउएक चाहि। एकेइ गअ साड़ा घने - घने निहिं दहराइक चाहि। टुमला खांटअ आर खापे बेसेक पारा हेउएइक चाहि।

3. टुमके एक पांता माहान चिसेक चाहि। जेसे पढ़ले एकर सउब भाउ फेरछाइक।

4. खांटअ कथाक नाम खांटअ पारा आर जेटांइ पुरा भाउले जड़ाइल हेउएक चाहि।

## कुड़मालि में संक्षेपण

**प्रश्न 1. निम्नलिखित अवतरण का संक्षेपण करें।**

उत्तर :- हड़ेक खातिर बिचार किमबा बिड़ल कथांइ जे कुछुअ सेसटअ आहेइक, उ एकर किमबा अकर निहिं हेकेइक, उ जातिगत किमबा देसेक निहिं हेकेइक, गउटे धराकर हेकेइक। सउब गिआन, सर आर सभइता आर सउब हड़ेक पुरखाक धन हेकेइक, भले उ बिचारेक जनम कनअ दसर देसें दसर - दसर पाड़सिक हड़ेक दारांइ हेल आहेइक, उ हमराकरअ हेकेइक, सउभिक हेकेइक। धरम, गठ आर जातिक नामे एकर आदरसअ आर दामे छिनगाइ देउआ एकर हड़ालिकर घेंचा दाबेक समान हेकेइक। जे कुछुअ मान-भरम आहेइक, उ चाहे जेहे धराक-खंड़ेक आबाद हेकेइक, उ हड़ करेइ हेकेइक। माहापुरुसेक निजेक देसेक खातिर बिसेस सभाब रहइक। गिआनि हड़ सिधा मने माहापुरुसले सिकखा लेइके निजेक जिनगानिके निखराएक कसनि करत। गउटे हड़ालि माहापुरुसेक उपर लटकि आहेइक। मनतुक, एबार हामाराके अकरले आगु डेगेक चाहि। काहेकि गिआनेक डहर सेंस निहिं हेउअइक। धरा एक इसकुल हेकेइक, जिबन एक उघराल पथि हेकेइक, तेंइ सतअ खुन सिखतेइ रहेक चाहि। सिखा टाइ आगु बाढ़ेक डहर हेकेइक। बिकासेक फेड़े सइभ मानुस बनेक सिख रहइक। तेंइ हड़के भंजअ-कटअ भुलिके धराक सउब जिनिसके लेइ-थुइके अकर फेइदा उठाउएक चाहि। कनअ धरम बिसेस किमबा मानइअताक खुंटाक संग खांटअकरि बांधाइल रहले हामरानि आगु निहिं बाढ़े पारबइ।

*सउब मिलाइ - **179 साड़ा***

खांटअ साड़ा - 177/3 = 59

**पाठेक नाम :- हड़ालि धरम**

उंचअ बिचार हड़कर खांटि गुन हेकेइक। धरम, जाइत, पाड़सि आरअ नाना भेदे अके आड़ निहिं देइ पारइक। सउब दिने आर सउब जेइगांइ हड़ उंचअ आहेइक। सउब माहापुरुसके एक-दसराक संग हेइके हड़ेक कलइआनेक काम करत। सउभिंइ धाराक फरछल जिनिसला लेइके, निजेक जिनगिके सुखि आर सुबिसता बनाइ आगु बाढ़त। एखन भेद-भाउ बिसरिके हड़ेक हितेक कथा-बात करिके हड़ालि धरमके सउबले उंचअ धरम मानेक हेतेइक।

*सउब मिलाइ - **60 साड़ा***

# हिन्दी अर्थ

मानव के लिए विचार अथवा अनुभव में जो कुछ भी श्रेष्ठ है, वह इसका अथवा उसका नहीं है, वह जातिगत अथवा देशगत नहीं है, सारे विश्व का है। समस्त ज्ञान, विज्ञान और सभ्यता सारी मानवता की विरासत है। भले ही एक विचार का जन्म किसी अन्य देश में भिन्न - भिन्न भाषा-भाषी लोगों के द्वारा हुआ हो, वह हमारा भी है, सबका है। सम्प्रदाय, समुदाय और जाति के नाम पर आदर्शों और मूल्यों में भेद करना मानवता का दम घोटने सा है। जो कुछ भी उपलब्धि है, वह चाहे जिस भू-भाग की उपज है, वह मानव की है। महापुरूषों में अपने देश के लिए विशेष विषेताएँ होती है। विवेकशील मनुष्य नम्रतापूर्वक महापुरूषों से शिक्षा ग्रहण कर आपने जीवन को प्रकाशित करने का प्रयत्न करता है। समस्त मानवता महापुरूषों के प्रति कृतज्ञ है। किंतु अब हमें उनसे आगे बढ़ना चाहिए, क्योंकि ज्ञान का अंत नहीं होती है तथा किसी का शब्द अंतिम नहीं होता है। विश्व एक खुली पाठशाला है, जीवन एक खुली पुस्तक है, अतः सदैव सीखते रहना चाहिए। सीखना ही आगे बढ़ते रहने का रास्ता खोलता है। विकास की क्रिया के मूल में मानव की पूर्ण बनने की अपनी प्रेरणा होती है। अतः एव मनुष्य को समन्वय की भावना से युक्त होकर पृथ्वी के सम्पूर्ण वस्तुओं को ग्रहण कर उनका लाभ उठाना चाहिए। किसी धर्म विशेष या मान्यता के खूँटे के साथ संकीर्ण भाव से बँधकर हम आगे नहीं बढ़ सकते हैं।

*कुल शब्द - **236***

**संक्षेपण :-**

**शीर्षक : मानव धर्म ही श्रेष्ठ धर्म है**

श्रेष्ठ विचार मानव मात्र का गुण है। धर्म, जाति, भाषा आदि विभेदों का उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। मानव श्रेष्ठ, सर्वकालिक और सार्वदेशिक होता है। श्रेष्ठ बिचारों में सबके कल्याण की भावना होती है। सभी महापुरूषों के विचार मानव कल्याण के लिए होते हैं। वे एक दूसरे के विरोधी नहीं बल्कि पूरक होते हैं। सभी श्रेष्ठ विचारधाराओं से सार तत्व ग्रहण कर मानव अपने जीवन को सुखमय और आनंदमय बना सकता है और प्रगति के पथ पर आगे बढ़ सकता है। विवेकशील मनुष्य को सभी भेद-भाव भूलकर सर्व जन हिताय की बात करके यह साबित करना चाहिए कि मानव धर्म ही श्रेष्ठ है।

❖❖❖

# 27. अनुच्छेद लेखन

आजकल विभिन्न परीक्षाओं एवं प्रतियोगिता परीक्षाओं में क्षेत्रीय एवं जनजातीय भाषा में अनुच्छेद लिखने के लिए कहे जाते हैं। अनुच्छेद हिन्दी में दिये रहते हैं जिसका अनुवाद अपनी मातृभाषा में करना होता है।

⇨ **अनुच्छेद लेखन क्या है :-** अनुच्छेद लेखन एक कला है। इसमें किसी विषय पर अत्यंत संक्षेप में अपने विचार प्रकट करने होते हैं।

⇨ **एक अच्छा अनुच्छेद कैसे लिखें :-** एक अच्छा अनुवाद वह होता है जिसमें दिए गए विषय का सार लिखा जाता है। इसमें निबंध की भाँति विस्तार नहीं होता। 75-120 शब्दों का अनुच्छेद प्रर्याप्त माना जाता है। एक अच्छे अनुच्छेद में मूल विषय को ही केन्द्र में रखना पड़ता है। अतः इसमें संबंधित सभी विषय की बातों का निचोड़ प्रस्तुत किया जाता है।

⇨ **एक अच्छे अनुच्छेद की विशेषताएँ**

1. अनुच्छेद प्रभावशाली होना चाहिए।
2. इसके वाक्य छोटे - छोटे होने चाहिए।
3. इसमें अनावश्यक विस्तार नहीं होना चाहिए।
4. इसमें चयनित शब्दों का प्रयोग होना चाहिए।
5. अनुच्छेद के सभी वाक्य एक-दूसरे से संबंध होने चाहिए।

परीक्षा के दृटिकोण से अति महत्वपूर्ण अनुच्छेदों का सर्वप्रथम हिन्दी में उसके पश्चात् मातृभाषा कुड़मालि में अनुवाद नीचे दिया गया है :-

## 1. भारत में परिसीमन आयोग
## (हिन्दी में)

परिसीमन का शाब्दिक अर्थ उस प्रक्रिया से है, जिसमें देश या राज्यों में क्षेत्रीय निर्वाचन क्षेत्रों का सीमा निर्धारण किया जाता है। भारत में सीमा का निर्धारण परिसीमन आयोग करता है। इस आयोग के निर्णयों को कानून का दर्जा दिया जाता है। इसके निर्णयों को किसी भी न्यायालय में चुनौती नहीं दी जा सकती है। राष्ट्रपति द्वारा निश्चित तिथि को इस आयोग के निर्णय लागू होते हैं। परिसीमन आयोग में तीन सदस्य होते हैं :-

(i) उच्चतम न्यायालय का न्यायाधीश आयोग के अध्यक्ष होते हैं।
(ii) मुख्य निर्वाचन आयुक्त
(iii) संबंधित राज्य के निर्वाचन आयुक्त।

⇨ **परिसीमन आयोग से लाभ :-** यह प्रजातंत्र को प्रभावी बनाती है। यह जनसंख्या वृद्धि पर विचार करती है। यह जनसंख्या के आधार पर निर्वाचन क्षेत्रों की सीमायें निर्धारित करती है। यह नये निर्वाचन क्षेत्रों का सृजन करती है।

⇨ **परिसीमन आयोग से हानियाँ :-** निर्वाचन क्षेत्र की सीमा बदलने से एक उम्मीदवार को लाभ होती है जबकि दूसरे की दिक्कते बढ़ जाती है। निर्वाचन क्षेत्रों के परिसीमन की क्रिया काफी लम्बी होती है। इसमें काफी समय लगता हैं। साथ ही इसमें बहुत अधिक धन खर्च होता है।

## भारते परिसिमन आइउग
## (कुड़मालि में)

परिसिमन साड़ाक माने अहे किरिआले आहेइक, जेटांइ देस किमबा राइजेक छेतरिअ चुनाउ छेतरेक सिमा धरज करल जाइक। भारतें सिमा धरज परिसिमन आइउगे करइक। एहे आइउगेक निरनइके कानुनकर नाम दिउअल जाइक। एकर निरनइके कनअउ रकमेक नइआलेंइए चुनउति निहिं देल जाइ पारइक। रासटअपतिक दारा तइ तिथिंइ एहे आइउगेक निरनइ लागु हेउअइक। परिसिमन आइउगें टेना गअ दंहगि रहइक :-

(1) उंचतम नेइआलेएक नेइआइधिस। इ आइउगकर तालेबर हेइक।
(2) मुइख चुनाउ आइउकत।
(3) राइजले जड़ाल चुनाउ आइउकत।

⇨ **परिसिमन आइउगले नाफा :-** एंइ परजातंतरके धरांइ आनइक। एंइ बाढ़ल आबादेक उपर बिचार करइक। एकर दारांइ अबादेक ठेहड़े चुनाउएक छेतरअकर सिमा धरज करल जाइक। एंइ नउतुन चुनाउ छेतरेक सिजन करइक।

⇨ **परिसिमन आइउगले हानि :-** चुनाउएक छेतरअ बदलले एक झनेक फेइदा हेउअइक तअ दसराक दिकतअ बाढ़ि जाइक। चुनाउ छेतरअकर परिसिमनकर काम ढेइर लाताइड़ हेउअइक। जेटांइ ढेइरे बेरा लागइक। संगे - संगे जेटांइ बेजांइ धनअ खरच हेउअइक।

## 2. भारत-अमेरिका परमाणु समझौता
## (हिन्दी में)

भारत और अमेरिका के बीच जुलाई 2005 ई. में परमाणु समझौता हुई थी। इस समझौते में अमेरिका के राष्ट्रपति जार्ज डब्ल्यू बुश तथा भारत के प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने हस्ताक्षर किये थे। इस करार की प्रमुख बातें इस प्रकार है -

(i) अमेरिका अगले 40 वर्षों तक यहाँ के परमाणु रियेक्टरों 00. को ईंधन देगा।
(ii) अमेरिका भारत के परमाणु कार्यक्रमों में किसी प्रकार का दखलअंदाजी नहीं करेगा।

(iii) अमेरिका भारत को परमाणु ईंधन का भंडार करने में मदद करेगा (iv) इस प्रकार का समझौता अमेरिका किसी दूसरे देश से नहीं करेगा।

इस समझौते से भारत को होने वाले लाभ इस प्रकार है -

(i) ईंधन के अभाव में बंद पड़े परमाणु रियेक्टर चालू हो जायेंगे।

(ii) परमाणु उर्जा के उत्पादन से उर्जा की आवश्यकता की पूर्ति होगी।

(iii) भारत के वैज्ञानिकों को नई तकनीक का ज्ञान होगा।

(iv) परमाणु उर्जा से भारत की घरेलू उत्पादन बढ़ेगी। इससे विकास होगा तथा गरीबी हटेगी। इस प्रकार भारत एक परमाणु शक्ति सम्पन्न देश बन जायेगा।

## भारत-अमेरिकाक परमानु साठगांठ

## (कुड़मालि में)

भारत आर अमेरिकाक मांइझे जुलाइ 2005 साले परमानुक साठ-गांठ हेल रहल। एहे साठ-गांठे अमेरिकाक रासटअपति जज डाबलु बुस आर भारतेक परधान मंतरि डा0 मनमहन सिंहे साइन करल। एहे करारेक फेड़ कथा एहे रकमेक आहेइकः-

(1) अमेरिकांइ आउति 40 बछर तड़िक इहांक परमानु रिएकटरके तेल (इंधन) देतेइक।

(2) अमेरिकांइ भारतेक परमानु काम-काइजे कनअ रकमेक दखल निहिं देतइक।

(3) अमेरिकांइ भारतके परमानु इंधनकर भांड़ार करइते उसास करतेइक।

(4) एहे रकमेक साठ-गांठ अमेरिकांइ आरअ दसर देसले निहिं करतेइक।

➪ **एहे साठ-गांठले भारतके एहे रकमेक फेइदा हेतेइक :-**

(1) तेलेक अभाबे बंदअ पड़ल परमानु रिएकटर घुरिले चालु हेइ जातेइक।

(2) परमानु उरजाकर अरजनकरले उरजाकर मांग पुरा हेतेइक।

(3) भारतेक बेगानिकके नउतुन करेक गिआन हेतेइक।

(4) परमानु उरजाले घार आंगनाक उतपादन बाढ़तेइक। जेटाले बिकास हेतेइ आर गरिब-दुखिक हित हेतेइक। एहे रकम भारत अना गअ ताकतबर देस बनतेइक।

## 3. झारखण्ड राज्य का प्रतीक चिन्ह

## (हिन्दी में)

झारखण्ड के प्रतीक चिन्ह को 'राज चिन्ह' कहा जाता है। इसके चारों ओर अंग्रेजी के चार 'जे' (J) अक्षर है। इसके बीच अशोक चक्र है। यह चक्र गतिशीलता, परिवर्तन और प्रगति का प्रतीक है। 'जे' अक्षर के उपरी भाग में छोटे - छोटे बिन्दु है। ये बिन्दु राज्य के विकासरत होने के प्रमाण है। राज चिन्ह हरे रंग से बना है।

हरा रंग समृद्धि और हरियाली का प्रतीक हे। चार 'जे' अक्षरों के द्वारा एक सफेद वर्ग का निर्माण हुआ है। यह सफेद वर्ग वर्ग सादगी, शुचिता तथा सामाजिक समरसता को दर्शाती है। इस वर्ग की चारों भुजाएँ समकोण 90° बनाती है। ये चारों समकोण समाज के विभिन्न वर्गों की भावात्मक एकता का प्रतीक है। इस राज चिन्ह को झारखण्ड मंत्रिमण्डल ने 2002 ई॰ में स्वीकृति प्रदान की है। इस प्रतीक चिन्ह का डिजाइन अमिताभ पांडेय ने बनायी है। अमिताभ पांडेय राष्ट्रीय अभिकल्पना अहमदाबाद के डिजाईनर है।

## झारखंड राइजकर परतिक चिनहा
## (कुड़मालि में)

झारखंडेक परतिक चिनाहाके 'राइज चिनाहा' कहल जाइक। एकर चाइरअ धारिंइ एंगरेजिकर 'जे' आखड़ आहेइक। एकर बिचे - बिचे असउक चाक आहेइक। एहे चाक बहन, परिबरतन आर परगतिकर परतिक हेकेइक। 'जे' आखड़कर उपर दिगे छुटु - छुटु फरा बुंदा आहेइक। एहे फरांइ राइजेक बिकासरत हेउएक परमान हेकेइक। राइज चिनाहा हारा रंगले रंगल आहेइक। हारा रंगले भरल-पुरल आर हारा-भराक परतिक हेकेइक। चाइर 'जे' आखड़ेक उसासे एक सादा चउखट घारेक पारा बनल आहेइक। एहे सादा चउखट घार सिधा-साधा (सादगि), सुचिता आर सामाजिक समरसताके देखाइक। एहे चउखाटकर चाइरअ भागले समकन 90° बनाइक। एहे चाइरअ समकन सामाजेक नाना रकमेक जाइत-पाइत, धरमेक बिचे हिआले एकताकर परतिक हेकेइक। एहे राइज चिनाहाके झारखंडेक मंतरिमंडले 2002 साले सउभिंइ मंजुरि देल आहेइक। एहे परतिक चिनाहाक डिजाइन अमिताभ पांडेंइ बनाल रहल आर अमिताभ पांडेअ रासटिअ अभिकलपना अहमदाबादेक डिजाइनदार हेकत।

## 4. सेतु समुद्रम परियोजना
## (हिन्दी में)

सेतु समुद्रम मानव निर्मित ऐतिहासिक संरचना है। इसे आदम का पुल भी कहा जाता है। यह भारत और श्रीलंका के बीच लहराते समुद्र में स्थित है। यह केप कोमोरिन से मल्लापुरम के बीच 100 किमी॰ से अधिक लम्बी है। यहाँ समुद्र की गहराई 40 किमी॰ से भी कम है। यहाँ समुद्र की लहरें पुल से टकराने के बाद शांत हो जाती है। पुल के कारण यहाँ का जलक्षेत्र स्थिर रहता है। यह क्षेत्र प्लैंकटन मछलियों तथा सीपों से भरा क्षेत्र है। यह तमिलनाडु के तटवर्ती समुदाय के आजीविका का प्रमुख स्रोत हैं। यह भारत के रामेश्वरम नामक स्थान से सटा हुआ है। यह पुल मन्नार की खाड़ी को पाक जल संधि से अलग रहती है।

**क्या है परियोजना** - व्यापारिक समुद्री जहाज कन्याकुमारी से कराइकल जाते हैं। वर्तमान में ये श्रीलंका की पूरी लम्बाई पार करके कराइल पहुँचते हैं। इससे बहुत

ईंधन बर्बाद होता है। भारत सरकार ने कन्याकुमारी से कराइकल सीधा जाने के लिए पूल को तोड़ने की योजना बनाई है। इसे ही सेतु समुद्रम परियोजना कहा गया है।

**पूल तोड़ने से हानियाँ** - सुनामी, चक्रवाती तुफान, भूकंप से केरल तथा तमिलनाडु नष्ट हो जायेगें। लाखों मछुआरें बरोजगार हो जायेगें। धनुष कोडि और कोडिकराई का शांत समुद्र चंचल हो जायेगा।

## सेतु समुदरम परिजजना

## (कुड़मालि में)

सेतु समुदरम हड़ेक बनाइल इतिहासेक जिनिस हेकेइक। एके आदम पुलअ कहल जाइक। इ भारत आर सिरिलंकाक बिचे कलकल समुदरे आहेइक। इ केप कमउरिनले ममलापुरमकर बिचे 100 किमि0 ले बेसि बड़अ आहेइक। इहां समुदरेक खाल 40 किमि0 ले कम आहेइक। इहां समुदरेक लहर पुलले ठकराल परे थिराइ जाइक। पुलेक कारन इहांक पानिक छेतरअ थिराइल रहइक। इअ छेतरअ पलेकटन माइछ आर झिनुकले भराल आहेदक। इ तमिलनाडुक आसे-पासे बसअबास करइआक जिबन चलाएक गड़ा जरक हेकेइक। इ भारतकर रामेसरम नामेक ठाइनले सटल आहेइक। इ पुल मनारकर खाड़िके पाक पानि संधिले आलेदा करइक।

**किना हेकेइक परिजजना** - पेइकारिआ समुदर जहाज कनिआकुमारिले कराइकल जाइक। एखन इहां गउटे सिरिलंकाके पार करिके कराइल जाइक। इटांइ ढेइर तेल पड़इक। भारत सरकारे कनिआकुमारिले कराइकल तड़िक सिधा डहरें जाएक खातिर एहे पुलके भांगेक जजना बनाइल आहेइक। एहे टाइ सेतुसमुदरम परिजजना कहल जाइक।

**पुल भांगले खति** - सुनामि, चकरअबाति धुंध-बासात, भुंइकमपअले केरल आर तमिलनाडु नसटअ हेइ जातेइक। लिड - लिड़ (लाख-लाख) केंउअट बेकार हेइ जातेइक। धनुस कड़ि आर कड़िकराइकर थिराइल समुदरअ मचड़ाइ उठतेइक।

## 5. बर्ड फ्लू

## (हिन्दी में)

बर्ड फ्लू एक संक्रामक रोग है। यह रोग एभियन इन्फ्लुन्जा नामक वायरस से होता है। यह रोग एक मुर्गी से अन्य मुर्गियों में तेजी से फैलता है। संक्रमित मुर्गियों से यह बीमारी मनुष्य में भी हो जाती है। मनुष्य के फेफड़े खराब हो जाते हैं। जिससे मनुष्य की मौत भी हो जाती है। यह बीमारी मुख्यतः पक्षियों में फैलता है। वैज्ञानिकों के अनुसार बर्ड फ्लू के 15 प्रकार के वायरस होते हैं, जिसमें H-5, N-1 नामक वायरस सबसे घातक होता है। भारत में बर्ड फ्लू सर्वप्रथम 1997 ई॰ में आया था।

बर्ड फ्लू से रोग ग्रस्त मुर्गियों या अन्य पक्षियों को गहरे गड्ढे मे डाल दिया जाता है। उसके ऊपर दो ईंच मोटी चूना डाला जाता है। उसके बाद मिट्टी भर दिया जाता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (W.H.O) के अनुसार नवंबर 2007 ई॰ तक बर्ड फ्लू से 206 लोगों की मृत्यु हुई है तथा सैंकड़ों आज भी संक्रमित है। इस विषय में प्रखण्ड पशुपालन पदाधिकारी/प्रखण्ड विकास पदाधिकारी को सूचित करना चाहिए।

## बड फुलु
## (कुड़मालि में)

'बड फुलु' अना गअ पड़चइआ रउग हेकेइक। इ रउग एभिअन इनफुलंजा नामेक बाइरसले हेउअइक। इ रउग अना गअ खुखड़िले दसर खुखड़िंइ बेड़ि चांड़े उचार हेइ जाइक। उचार हेल खुखड़िले इ रउग हड़ेक भितर ढुकि जाइक। इटांइ हड़ेक फफसि खाराब हेइ जाइक। जेटाले हड़ टिड्डुआइ जाइक। इ रउग बेसि भागे पांइख-पाखुड़ले पसरइक। बेगानिकेक मते बड फुलुक बाइरस 15 रकमेक हेउअइक, जेटांइ एच-5, एन-1 नामेक बाइरस सउबले बेसि घातक हेकेइक। भारतें बड फुलु सउबले पेहिल 1997 साले आउअल आहेइक।

बड फुलुले रउगाइल खुखड़ि किमबा आरअ दसर पांइखके गाढ़ांइ तर करि तपल जाइक। एकर उपर चाइर आंगुर मटा चुन देल जाइक। एकर परे माटि देइके भथि देथिक। बिसअ सउआसथ दंहगिक (W.H.O.) अनुजांइ नउमबर 2007 साल तड़िक बड फुलुले 206 झन टिड्डुआइल आहेइक आर लट डुल आइझअ रगाइल आहेइक। एकर बारे परखंड पसु गरखिआ पदाधिकारि/परखंड बिकास पदाधिकारिके जानाउएक चाहि।

## 6. नैनो वरदान या अभिषाप
## (हिन्दी में)

नैनो विश्व की सबसे सस्ती कार है। इस कार के निर्माता टाटा उद्योग समूह के अध्यक्ष रतन नवल टाटा है। इस कार के मुख डिजाइनर गिरीश वाग है। इसे सड़कों की रानी या लखटकिया कार कहा जाता है। इस कार की कीमत 1 लाख रूपये है। आम आदमी इसे खरीद सकता है, इसलिए इसे आम आदमी की कार भी कही जाती है।

**वरदान** - नैनो की मूल्य कम होने के कारण मध्यम आय वाले की सपना पूरी होगी। कार की माँग बढ़ेगी। उत्पादन बढ़ेगा। लोगों का रोजगार मिलेगा।

**अभिषाप** - सड़कों में दूपहिया वाहनों से अधिक कार हो जायेगें। ईंधन की खपत बढ़ जायेगी। वर्तमान में भारत ईंधन के आयात पर निर्भर है। अब खपत बढ़ जायेगी। वर्तमान में भारत ईंधन के आयात पर निर्भर है अब इसकी दूसरे देशों पर निर्भरता बढ़ जायेगी। वायू प्रदूषण बढ़ जायेगा। सड़कों में यातायात बाधित हो

जायेगी। ग्लोबल वार्मिंग का खतरा अधिक हो जायेगा। ओजोन परत पर छिद्र बढ़ जायेंगे। पर्यावरण असंतुलित हो जायेगा। पृथ्वी पर जीवन संकट ग्रस्त हो जायेगा।

## नेनअ बरदान किमबा अभिसाप
## (कुड़मालि में)

नेनअ धराकर सउबले ससता कार हेकेइक। इ कार बनइआ टाटा उदउग दंहगिक तालेबर रतन नबल टाटा हेकेइक। इ कारकर महड़इआ गिरिस बाग हेकेइक। एके सड़पेक रानि किमबा लाख टाकिआ कार कहल जाइक। इ कारकर दाम मटेइ अना लाख टाका राखल गेल आहेइक। छटअ-खांटअ हड़े माहाउ एके किने पारताक। तेंइ एके छटअ खांटअ हड़कर कार कहल जाइक।

**बरदान :-** नेनअक दाम कम हेउएक कारन मांझारिआ कमाइआ जड़ेक मनेक साध पुरा हेतेइक। इ कारकर मांग बाढ़तेइक। कारखानाइ आरअ बेसिकरि बनतेइक। इटाले बेसि झने काम पाउताक।

**अभिसाप :-** सड़प माहान दुइ चाकिआ गाड़िले बेसि कारे हेइ जातेइक। तेलकर खपत बाढ़ि जातेइक। भारत एखन तेलेक खातिर दसर देसेक भरसांइ रहइक। एबार एके दसर देसेक उपर आस बाढ़ि जातेइक। बातास दुसित हेइ जातेइक। सड़पे आसा-जाउआंइ बाधा हेइ जातेइक। गलउबल बारमिंगकर खतरा बाढ़ि जातेइक। अजन परते छेंदा बाढ़ि जातेइक। आसे-पासेक बातास, पानि बिसाइ जातेइक। तखन धरांइ जिब रगाइ जातेइक।

## 7. पर्यावरण संकट
## (हिन्दी में)

अनवरत बढ़ती जन चेतना, वायु और जल प्रदुषण, आण्विक उर्जा, अति जनसंख्या आदि से पृथ्वी का पर्यावरण संकट ग्रस्त हो गया है। विश्व की करीब एक चौथाई जमीन बंजर हो गई है। यदि यही गति रहेगी तो कुछ दिनों में 70 प्रतिशत भूमि बंजर हो जायेगी। इससे विश्व के 100 देशों की एक अरब लोगों का जीवन संकटग्रस्त हो जायेगा। पर्वतों से विश्व की आधी आबादी को पानी मिलता है। हिमखण्डों के पिघलने, जंगलों की कटाई और भूमि के गलत इस्तेमाल से पर्वतों का पर्यावरण तंत्र खतरे में है। पृथ्वी में कार्बन डाईऑक्साइड गैस की मात्रा बढ़ रही है। इससे समुद्र तल 10 से 20 सेंटीमीटर तक बढ़ चुका है। इसके कारण समुद्री हवाओं से 4.6 करोड़ लोग प्रतिवर्ष प्रभावित होते हैं। यदि समुद्र तल 50 सेंटीमीटर बढ़ जायेगी तो विश्व की 10 करोड़ आबादी डूब जायेगी। अब तक पर्यावरण नष्ट होने से पृथ्वी की 800 करोड़ से अधिक प्रजातियाँ विलुप्त हो चुकी है।

## परइआबरन संकट
## (कुड़मालि)

सटिक चेतना आर फिँकिरेक अभाबे, बातास आर बिसाइल बातास, आनबिक ताकत (उरजा), आनठेकान हड़ेक आबाद बाढ़ा आरअले धराक आसे-पासे माने परइआबरने एखन गाइझ आइ गेल आहेइक। धराकर मटामटि 16 आनाइ 4 आना जमिन माठ हेइ गेल आहेइक। जदि एहे दर रहतेइक, हेले आर कुछु दिने 70% भुंइ माठ हेइ जातेइक। जेटाले धराक 100 देसक एक अरब झनेक जिंनगि रगाइ जातेइक। परबतले दुनिआकर आधा अबादिंइ पानि पाउअत। बरफकर गेलअने, बनेक काटाइ आर धराकर गलत बेबाहारे परबतेक परइआबरन तंतरंइ आपद आइ गेल आहेइक। धरांइ कारबन डाइअकसाइड गेसकर मातरा दिन-के-दिन बाढ़तेइ जाहेइक। ताकरेइ खातिर समुदर तल 10-ले-20-सेंटिमिटर तड़िक बाढ़ि गेल आहेइक। एहे कारन समुदरेक बातासले 4.6 कटि हड़ पतिबछर एकरले परभाबित हेइक। जदि समुदर तल 50 सेंटिमिटर बाढ़ि जातेइक हेले गटा दुनिआकर 10 कटि अबादि डुबि जातेइक। एखन तड़िक परइआबरन नसटअ हेउएक कारने धराक 800 कटिले बेसि परजाति सउब दिनेक पारा लुकाइ गेल आहेइक।

## ४. पर्यावरण संरक्षण
## (हिन्दी में)

पर्यावरण प्रदुषण एक गंभीर समस्या है। पूरे विश्व में आज पर्यावरण संरक्षण की जरूरत समझी जा रही है। भारत में कुल भू-भाग के 20.9% भू-क्षेत्र में वन है। पर्यावरण संतुलन के लिए यह क्षेत्रफल 33% होनी चाहिए। वनों से सम्पूर्ण जैविक संतुलन बना रहता है। अतः हमें वनों की कटाई रोकना चाहिए तथा अधिक से अधिक वन लगाना चाहिए। हमारे देश में भू-जल कुल आवश्यकता का मात्र 40% है। वर्षा के जल का संरक्षण करके हम भू-जल स्तर को बढ़ा सकते हैं। इससे कृषि उत्पादन 50 से 100% बढ़ जायेगा। पर्यावरण की सुरक्षा के लिए ऐसी कृषि प्रणालियों का विकास करना चाहिए ताकि हवा, पानी, मिट्टी को बिगाड़े बिना खेती की उत्पादकता को बनाये रखा जा सके।

## परइआबरन बाचाउ
## (कुड़मालि में)

परइआबरन परदुसन अना गअ बेजांइ बड़अ आपद हेकेइक। गटा दुनिआंइ आइज परइआबरनके बाचाउएक दरकार बुझे लागला। भारते गउटे भुंइकर 20.9% भुंइए बन आहेइक। परइआबरन संतुलनेक खातिर इ 33% हेउएक चाहि। बनले गउटे जेबिक संतुलन बनल रहइक। तेंइ हामराके बन काटेलाइ बंदअ करेक चाहि आर ढेइर-ले-ढेइर गाइछ लगाएक चाहि। हामराक देसे पातालेक पानि दरकारेक भितर

खालि 40% आहेइक। बेरसाक पानिके जामा करिके हामरा पातालेक पानिक सरतके बाढ़ाइल जाइ पारिए। इटाले चासेक अरजन 50 से 100% बाढ़ि जातेइक। परइआबरनकर सुरचछाक तेंहे एसन चासकर बिकास करेक चाहि जेटांइ बातास, पानि, माटिक छति नि करिकुहुंन ढेइर-ले-ढेइर आबाद अरजल जाइ पारइक।

## 9. ओजोन परत का क्षरण
## (हिन्दी में)

ओजोन शब्द यूनानी भाषा के 'ओजियन' शब्द से विकसित हुआ हैं इसका अर्थ है 'सूंघना'। ओजोन गैस एक हल्की नीली और अत्याधिक जहरीली गैस होती है। जिसमें तीव्र गंध होती है। ओजोन गैस ($o_3$) ऑक्सीजन का एक अपरूप है। ओजोन का क्वथनांक - 111.9° और गलनांक - 192.5° होता है। इसका आपेक्षिक घनत्व 2.144 और हिमांक - 251.4° होता है। तरल ओजोन एक शक्तिशाली चुम्बकीय गुणवाला तरल पदार्थ है। समताप मण्डल में ओजोन परत होता है। यह सूर्य से उर्जा के रूप में पराबैंगनी किरणों को सोखती है। इससे पृथ्वी के जीव को हानिकारक पराबैंगनी विकिरण से बचती है। ओजोन परत पृथ्वी से 19 से 48 किमी. ऊपर 12 से 30 मीटर मोटाई का एक वायुमण्डलीय क्षेत्र है। लेकिन पृथ्वी से उत्सर्जित मानव निर्मित क्लोरोफ्लोरो (CFC) कार्बन से यह कई जगह नष्ट हो गये हैं। इससे ओजोन परत में छिद्र हो गया है। इस तरह के छिद्र अंटार्कटिक के उपर कई जगह देखे गये हैं। विद्युत संयत्रों से मुक्त नाइट्रोजन ऑक्साइड भी ओजोन परत को क्षतिग्रस्त करती है।

## अजउन परतेक खति
## (कुड़मालि में)

अजउन साड़ा इउनान पाड़सिकर 'Ojian' साड़ाले बिकिसत हेल आहेइक। जाकर मांने 'सुंघा' हेउअइक। अजउन गेस अना गअ हुलुक, बुलु रंगेक आर बेजांइ बिसाइल गेस हेकेइक। जेटांइ नाक-फाटा बास देइक। अजउन गेस ($o_3$) अकसिजनेक अन्ना गअ अपरुप हेकेइक। अजउनकर कथनांक 111.9° आर गलनांक 192.5° हेउअंइक। एकर आपेछिक घनत 2.144 आर हिमांक 251.4° हेउअइक। गेलल अजनुहुं अना गअ ताकतबर चुमबुकेक गुन पाउअल जाइक। समताप मंडले अजउन परत रहइक। एंइ सुरुजले उरजाक रुपे पराबेगनि किरनके लेइक। जेटाले धराकर जिउ हानिकारक पराबेगनि बिकिरनले बाचत। अजउन परत धराले 19-ले-48 किमि0 उपर 12 ले 30 मिटर मटा अना गअ बातास मंडल छेतरअ हेकेइक। मनतुक, धराले हड़ेक दाराले बनाइल कलरअ-फलरअ कारबन (CFC) ले अजउन परतें केतेइ जेइगांइ छेंदा हेइ गेल आहेइक। एहे रकमेक छेंदा अनटारटिकेक उपर केतेइ जेगांइ देखल गेल आहेइक। बिजलि मेसिनले बाहराल नाइटरअजन आकसाइडुहुं अजउन परतके खति करइक।

# 10. ग्लोबल वार्मिंग
## (हिन्दी में)

पर्यावरण जैव मण्डल का आधार है। औद्योगिक क्रांति के कारण संपूर्ण विश्व ग्लोबल वार्मिंग की समस्या से जूझ रहा है। पर्यावरण में तापक्रम का असामान्य बढ़ना ग्लोबल वार्मिंग कहलाता है। ग्लोबल वार्मिंग के कारण प्रकृति में बदलाव आ रहा है। कहीं भारी वर्षा तो कहीं सूखा, कहीं लू तो कहीं ठंड कहीं ग्लेशियर पिघल रहे है तो कही समुद्री जल स्तर बढ़ रहा है। भारत सहित कई पड़ोसी देशों के कुछ भू-भाग जलमग्न होने वाले हैं। इससे फसल-चक्र अनियमित हो जाता है। पक्षियों के दैनिक क्रियाकलाप पर प्रतिकुल प्रभाव पड़ रहा है।

ग्लोबल वार्मिंग में सर्वाधिक योगदान कार्बन डाइऑक्साइड ($CO_2$) का है। वायुमण्डल में ($CO_2$) की वार्षिक वृद्धि दर गत वर्षों (1995-2005) में 1.9 पार्ट्स पर मिलियन (P.P.M) है। वैज्ञानिकों के अनुसार 2100 ई॰ आते - आते वायुमण्डल की तापमान में 1.1 से 6.4 सेंटीग्रेड तक बढ़ जायेगी। जिससे 2080 तक 3.20 अरब लोगों को पानी नहीं मिलेगा तथा 60 करोड़ लोग भूखे मरेंगे। वायुमण्डल के इस प्रकार के परिवर्तन को रेडिएटिव फोर्सिंग द्वारा मापा जाता है।

## गलउबल बारमिंग
## (कुड़मालि में)

परइआबरन जिब मंडलकर ठेहड़ हेकेइक। अधउगिक करांतिकर कारन गउटा धरा गलउबल बारमिंग जेसन आइझ-बाइझले रेंगाहात। परइआबरने दरकारले बेसि गरम बाढ़ा टाइ गलउबल बारमिंग कहाइल जाइक। गलउबल बारमिंगेक कारन परकितिक धंचरअ बदलि गेल आहेइक। काहुं खुभेइ बेइरसा तअ काहुं ठाइ सुखा, काहुं तातल-धअका तअ काहुं कनकनि, काहुं पाथर-पानि तअ काहुं बरफ गेला, तअ काहुं समुदरेक पानिक असतर बाढ़े लागअहइ। भारत संगे केतेइ पड़सि देसेक कुछु धराक-खंड़, पानिंइ डुबि जाइएक खतरा आहेइक। जेटाले आबादेक अरजने टान हेइ जातेइक। पांइख-पाखुड़ेक काम-पाइटे एकर उलटा परभाउ देखल जाहेइक।

गलउबल बारमिंगे सउबले बेसि जगदान कारबन डाइअकसाइड ($CO_2$) कर आहेइक। बातास मंडले ($CO_2$) पति बछर बाढ़ेक दर गेला बछरें (1995-2005) 1.9 पाट अना मिलिअन (P.P.M.) आहेइक। बेइगानिकेक अनुजांइ 2100 साल आइत - आइत बातास मंडलेक तापमान 1.1 ले 6.4 सें. ग्रे0 तड़िक बाढ़ि जातेइक। जेटाले 2080 तड़िक 3.20 अरब हड़े पानि निहिं पाउताक आर 60 कटि हड़ ठाइ भुखे टिडुआइ जाबथिक। बातास मंडलकर एहे रकमेक परिबरतनके रेडिअएकटिब फारसिंग दारा नापल जाइक।

# 11. सामाजिक वानिकी
## (हिन्दी में)

भारत के कुल भौगोलिक क्षेत्र के 20.64% भू-भाग पर वन है। जिसमें 10% ही घने वन है। पर्यावरण संतुलन के लिए 33% वनों की आवश्यकता है। इसके कारण मौसम चक्र में परिवर्तन आ गया है। कहीं अत्यधिक गर्मी, कहीं कम बरसात, धरती के तापमान में वृद्धि, अम्लीय वर्षा, ओजोन परत में बढ़ता छिद्र, बिजली, पानी का संकट आदि ने देश के सामने विकट चुनौतियों उत्पन्न की है। इन समस्याओं से निजात पाने के लिए छठी पंचवर्षीय योजना के नये 20 सुत्री कार्यक्रमों की सुत्र संख्या 20 में सामाजिक वानिकी कार्यक्रम अपनाया है।

सामाजिक वानिकी कार्यक्रम में बंजर भूमि पर पेड़ लगाये जाते हैं। नष्ट हो गये वनों में पुनः वनरोपण किया जाता है। इसकी सुरक्षा का दायित्व पंचायतों को दिया जाता है। गोबर का प्रयोग ईंधन के बजाय खाद के रूप में किया जाता है। रक्षित वनों में पशुचरण न किया जाये। विशेष पौधे लगाकर कीमती एवं इमारती लकड़ियाँ प्राप्त की जाये। भूमि संरक्षण, खेतों की उर्वरता, सजावटी एवं छायादार वृक्षों का विकास करना इस कार्यक्रम के अंग है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य जनसंख्या का पर्यावरण पर भार कम करना है।

## समाजिक बन
## (कुड़मालि में)

भारतकर गउटे भगलिक छेतरअकर 20.64% भुंइ-खंडे बन आहेइक। जेटाक भितर 10% ढाकाल (घना) बन आहेइक। परइआबरन संतुलनेक तेंहे 33% बनकर दरकार आहेइक। जाकर कारन मसम-चाके बदलाउ आइ गेल आहेइक। काहुं बेसि गरम, काहुं कम बेइरसा, धराक ताप बाढ़ा, एसिड बेइरसा, अजन परते छेंदा बाढ़ा, बिजलि, पानिक जेसन आपदेक कारन देसेक पासे आपदेक सिरजन हेइ गेल आहेइक। एहे जालाले खालास पाउएक तेंहे छइ मांचाबछरिआ जजनाक 20 सुताक कारजकरमेक सुता गनान 20 एं सामाजिक बनके धरज करल आहेइक।

सामाजिक बन कारजकरमें माठ भुंइए गाइछ लागाल जाइक। फुराल बने घुरिके गाइछ लागाउअल जाइक। एकर देख-भाल करेक जिमा पंचाइतके देल जाइक। गबरकर बेबहार, जराइ छाड़ि साहारेक रुपे बेबहार करल जातेइक। घेरल बने गाइ-बाछुर निहिं चराइल जातेइक। बेस गाइछ लागाइके दामि आरं घारे लागेक पारा काठ पाउअल जातेइक। भुंइ छइ, माटिक गुन, गमकिआ आर झबरल गाइछेक बिकास करा एहे कारजकरमेक अंग हेकेइक। एहे कारजकरमेक धेइ हड़ेक आबादेक भार परइआबरेक उपर कम करेक आहेइक।

## 12. सर्वशिक्षा अभियान
## (हिन्दी में)

सभी को शिक्षा सुलभ करना ही सर्वशिक्षा अभियान है। यह अभियान भारत सरकार ने 2001 ई. से प्रारंभ किया है। इस कार्यक्रम में गोवा राज्य को छोड़कर पूरे देश को शामिल किया गया है। इस कार्यक्रम में ऐसी बस्तियों में नये स्कूल स्थापित करना है, जहाँ कोई स्कूली सुविधाएँ मौजूद नहीं है। विद्यालयों में अतिरिक्त कक्षाओं, पेयजल, शौचालयों तथा स्कूल सुधार अनुदान की व्यवस्था इसके अंग है। इस कार्यक्रम में कमजोर वर्ग की लड़कियों और बच्चों के लिए निःशुल्क पाठ्य-पुस्तकों सहित अनेक प्रोत्साहन योजनाएँ है। सर्वशिक्षा अभियान के प्रमुख लक्ष्य है - (i) 2003 ई. तक 6-14 वर्ष के सभी बच्चे स्कूल में हो। (ii) 2007 ई. तक 6-14 वर्ष के सभी वर्ष बच्चे पाँच वर्षों की प्रारंभिक शिक्षा पूरी कर लें। (iii) 2010 ई. तक 6-14 वर्ष के सभी बच्चों के आठ वर्षों की प्रारंभिक शिक्षा पर ध्यान केन्द्रित करना। (iv) 2010 ई. तक यह सुनिश्चित करना की सभी बच्चों शिक्षा जारी रखें।

## सउभ सिकखा अभिआन
## (कुड़मालि में)

सउबके सिकखा देउआइ सउब सिकखा अभिआन हेकेइक। इ अभिआन भारत सरकारे 2001 साले सुरु करल आहेइक। एहे कामें गउआ राइजके छाड़ि बाकि गउटे देसेक राइजे सुरु करल आहेइक। एहे कामे एसन गांउए नउतुन इसकुल बनाइएक आहेइक जाहां कनअ इसकुलेक सुबिधा निहिं आहेइक। इसकुले आरअ कठरि, सेंढ़ेक पानि, गुह्यकुंड़ आर इसकुल सुधार-अनुदानकर बेबसथा करा एकर काम हेकेइक। एहे कामे गेरिब दुखिक धिआ आर पुताक खातिर बिन दामे पढ़ेक-चिसेक समान दिएक पारा ढेइर जजना आहेइक। सउब सिकखा अभिआनकर मेन धइ (i) 2003 साल तड़िक 6-14 बछरेक उमरिक सउब छउआ इसकुले हउक। (ii) 2007 साल तड़िक 6-14 बछरेक उमरिक सउब छउआंइ मांचा बछरेक सिकखा पुराकरि लिआ। (iii) 2010 साल तड़िक 6-14 बछरेक सउब छउआके आठ बछर तड़िक सिकखाक उपर आंइख गड़ाइ राखा। (iv) 2010 साल तड़िक इटा तइ करि लेउआ जेसे सउब छउआंइ आगु दिगे पढ़ाइ करते रहता।

## 13. रेडियो
## (हिन्दी में)

विज्ञान के आविष्कारों में रेडियो भी एक है। यह मनोरंजन का सबसे सस्ता तथा उपयोगी साधन है। रेडियों का आविष्कार प्रसिद्ध वैज्ञानिक मारकोनी ने किया था। बटन दबाते ही रेडियो सेवा के लिए तैयार हो जाता है। यह अकेले में हमारा मनोरंजन करता है। रेडियो से देश-विदेश का समाचार, मधुर संगीत तथा अन्य विषयों

की जानकारी प्राप्त होती है। रेडियों से हमे खेलों के संबंध में सभी जानकारियाँ मिलती है। आजकल रेडियों से कृषि संबंधी कार्यक्रम भी प्रसारित किये जाते हैं। इससे किसानों को अनेक प्रकार की जानकारियाँ मिलती है। शिक्षा के क्षेत्र में रेडियो का योगदान महत्वपूर्ण है। आजकल रेडियो के द्वारा अंग्रेजी सीखने तथा विज्ञान के कार्यक्रम प्रसारित किये जाते जा रहे हैं। इन कार्यक्रमों से छात्रों शिक्षकों एवं ग्रामीणों को काफी लाभ प्राप्त हो रहा है।

## रेडिअ
## (कुड़मालि में)

बिगानकर अबिसकारेक भितर रेडिअ एक हेकेइक। इ हुब आर गहगहिकर सउबले ससता आर कामिआ साधन हेकेइक। रेडिअकर अबिसकार नामकरा बेइगानिक मारकउनिंइ करल आहेइक। बटान दाबाइ तिहिं रेडिअ बाजे सुरु हेइ जाइक। एकाइ एंइ हामराक हुब करइक। रेडिअले देस-बिदेसकर बेउरा नाइच-बाजना आरअ बिसइकर बारे टउआ पाउआइक। रेडिअले हामके खेइलकर लेइ सउब टउआ पाउआइक। आइज-काइल रेडिअले चास-बाटेक काम-पाइटेक गिलाउ जानाल जाइक। जेटाले चासा सउभे नाना रकमेक टउआ पाउअत। सिकखाक दिगे रेडिअकर उसास बेजांइ महतकर आहेइक। आइज-काइल रेडिअक दारांइ इंगिलिस सिखेक सिकखा देल जाइक। एहे काम-पाइटे पढ़उआ छउआ, मासटर आर गांउएक हड़े ढेइर फेइदा पाउअहत।

## 14. हमारा राष्ट्रीय ध्वज
## (हिन्दी में)

प्रत्येक स्वतंत्र राष्ट्रों का अपना राष्ट्रीय ध्वज होता है। भारत का राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा झण्डा है। इस तिरंगे में तीन रंग है। सबसे ऊपर केसरिया रंग है जो वीरता का प्रतीक है। झंडे के बीच में सफेद रंग है जो सुख एवं शांति का प्रतीक है। राष्ट्रीय ध्वज के हरा सफेद रंग है जो खुशहाली का प्रतीक है। ध्वज के बीच में अशोक चक्र है। यह चक्र सारनाथ के अशोक स्तम्भ से लिया गया है। यह चक्र भारत का राष्ट्रीय चिन्ह है। भारत की आजादी की लड़ाई इसी इण्डे के नीचे लड़ी गयी थी। इस झण्डे की रक्षा के लिए लाखों लोगों ने कुरबानी दी है। अतः हमारा कर्त्तव्य है कि हम इसके सम्मान की रक्षा हमेशा करें।

## हामराक रासटिअ झानडा
## (कुड़मालि में)

सउब साधिन हेल देसेक निजेक चिनहापकर झानडा हेउअइक। जाके रासटि झानडा कहथिक। भारतकर रासटिअ झानडा टेना रंगिआ झानडा हेकेइक। एहे टांइ टेना गअ रंग आर टेना खंड़ बाटाइल आहेइक। सउबले उपरे लाल रंग आहेइक, जेटा बिरकर चिनहाप हेकेइक। झानडाक मांइझे - मांइझे चेरका रंग

आहेइक, जेटांइ सुख सांतिकर चिनहाप हेकेइक। रासटिअ झानडाक हेठेक खंड़ हारा रंगेक आहेइक जेटा चासा-भुसा आर हारा-भरा खुसिक चिनहाप हेकेइक। झानडाक मांइझे असउक चाकेक घुरनि आहेइक। इ घुरनि सारनाथकर असउक असतमले लेल गेल आहेइक। इ घुरनि भारतकर रासटिअ चिनहा हेकेइक। भारतेक साधिनताक लड़ाइ एहे झांडाक ठेहड़े लड़ल रहल। एहे झानडाक रइकखाक खातिर लाख - लाख हड़े निजेक जान देल आहथिक। तेंइ एकर मानेक रइखा सउब पहर हामराके करे हेतेइक।

## 15. बाल दिवस
## (हिन्दी में)

बाल दिवस प्रतिवर्ष 14 नवंबर को पूरे भारत में मनाया जाता है। 14 नवंबर भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू का जन्म दिन है। पंडित नेहरू को बच्चों से विशेष स्नेह था। बच्चे भी उन्हें प्यार से चाचा नेहरू कहते थे। नेहरू जी को इच्छा थी कि उनका जन्म दिन बाल दिवस के रूप में मनाया जाए। उनकी इच्छा के अनुरूप 14 नवंबर को बाल दिवस मनाया जाता है। इस दिन विद्यालयों में उनेक कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। जगह - जगह बाल मेलें लगते हैं। बच्चे बड़े उत्साह से इन कार्यक्रमों में भाग लेते हैं। इसदिन विद्यालयों में फल एवं मिठाईयाँ बाँटी जाती है। बच्चों को चाहिए कि वे नेहरू जी के आदर्शों को अपने जीवन में अपनाएँ। बच्चे ही राष्ट्र की नींव है। अतः बच्चों के उन्नति में ही राष्ट्र की उन्नति है। हमें प्रतिवर्ष हर्ष एवं उल्लास से बाल दिवस मनाना चाहिए।

## 15. छउआ दिउअस
## (कुड़मालि में)

छउआ दिउअस पति बछर 14 नउमबरे गउटे देसे मानाइल जाइक। 14 नउमबर भारतेक मिरा मुखिआ (परधान मंतरि) पं जहारलाल नेहरुकर जनम दिन हेकेइक। पं नेहरु छउआले बेजांइ लेहटअ रहलेइक। छउआहुं अके बेजांइ लहराइके काका नेहरु कहेहेलथिक। नेहरुक साध रहलेइक जे अकर जनम दिन छउआ दिउअसेक रुपे मानाले बेस हेतेइक। अकर हिचछाक तेंहे 14 नउमबरके छउआ दिउअसेक रुपे मानाइल जाइक। एहे दिन इसकुले आरे केतेइ नाना रकमेक कारजकरम करल जाइक। डिहे - डिहे छउआ मेला लागाल जाइक। छउआ बेजांइ हुबे एहे कारजअकरमे हिंसा लेत। एहे दिन इसकुले फर आर मिठाइ बांटल जाइक। एखनेक छउआके नेहरुक बाताल डहरे डेग बाढ़ाइएक चाहि। छउआ सउभेइ देसकर गुड़ि हेकत। तेंइ छउआक आगुआनिंइ देसकर आगुआ हेकेइक। हामराके पति बछर हुब आर गहगहिले छउआ दिउअस मानाइएक चाहि।

❖❖❖

# 28. लघु निबंध

## 1. संताल जनजाति

### (हिन्दी में)

जनसंख्या की दृष्टि से संताल प्रथम जनजाति है। यह अग्नेय समुदाय के जनजाति है। इनका मुख्य निवास स्थल संताल परगना है। संताल परगना में देवघर, दुमका, गोड्डा, साहिबगंज, पाकुड़ तथा जामताड़ा जिले आते हैं। इसके अलावे कई जिलों में पायी जाती है। संताल लोगों की भाषा 'संताली' है। संताली झारखण्ड की द्वितीय राज्यभाषा है। संताल लोगों का घर आयताकार होता है। घर ऊँचे स्थानों में बनाये जाते हैं। इनके घरों में एक पूजा स्थल होता है, जिसे भीतर थान कहा जाता है। यह अंदर की कमरा में होता है। संतालों के प्रमुख गोत्र है - हांसदा, किस्कू, मुर्मू, मरांडी, सोरेन, टुडू, हेमरम, बेसरा आदि। इनके समाज में 'परगना' व्यवस्था प्रचलित है, इसके प्रधान को 'माँझी' कहा जाता है। बांदना, करम इसके प्रमुख पर्व होते हैं। नायक गाँव का पुरोहित होता है। संताल लोगों में कन्या मूल्य की प्रथा पाई जाती है। संतालों की अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार कृषि है।

## संताल जनजाति

### (कुड़मालि में)

जनआबादेक अनुजांइ संताल झारखंडेक मिर जनजाति हेकेइक। इअ अगनेइ गठकर जनजाति हेकेइक। एकर गड़ा बसअबासेक ठाइन संताल परगना हेकेइक। संताल परगनाक भितर दुमका, गडडा, साहिबगंज, पाकुड़ आर जामताड़ा आहेइक। एकर छाड़ा आरअ ढेइर जिला माहान आहेइक। संताल हड़ेक पाड़सि 'संतालि' हेकेइक। संतालि झारखंडकर दउज राइजपाड़सि हेकेइक। संताल सउभेक घार-डिंढ़ा चाइरकनिआ रहइक। डिंढ़ा उंचअ ठाइने बनाइल जाइक। एकर डिंढ़ाक भितर एक पुजा हेउअइक जाके भितर थान कहल जाइक। एहे पुजा ठाइन भितर कठरिंइ रहइक। संतालेक कुछु गुसटि हांसदा, किसकु, मुरमु, हेमरम, सरेन, मरांडि, बेसरा, टुडु इटासेटा। एकर सामाजे 'परगना' बेबसथाक चलन आहेइक, एकर मुखिआके 'मांझि' कहल जाइक। नेइआ गांउकर पुरउहित हेउअइक। बांदना, करम एखरा गड़ा परब हेकेइक। संताल जनजातिंइ केनिआंइ दाम कर चलन पाउअल जाइक। संतालेक रउजगार-पातिक साधन चास हेकेइक।

## 2. उरांव जनजाति
## (हिन्दी में)

उराँव झारखण्ड की दूसरी बड़ी जनजाति है। यह द्रविड़ समूह की जनजाति है। इनका प्रमुख निवास स्थल गुमला, लोहरदगा, राँची, सिमडेगा, लातेहार, पलामू एवं गढ़वा है। उराँव जनजाति के अनेक गोत्र हैं, जैसे - टोप्पो, मिंज, खलखो, बाखला, खेस, कुजूर, लकड़ा आदि।

'पड़हा पंचायत' उराँव समाज की प्राचीन व्यवस्था है। एक पड़हा में गाँवों की संख्या 22 तक होती है। कई पड़हा मिलाकर एक पड़हा पंचायत होता है। इसके प्रमुख को 'पड़हा राजा' कहा जाता है। इनके 40 पड़ाहों का पंचायत सबसे बड़ा पंचायत होता है। सबसे प्रमुख गाँव को राजा गाँव कहा जाता है। गाँव के प्रधान को 'पड़हा' राजा कहा जाता है। 'पाहन' सभी प्रकार के धर्मिक क्रियाकलापों का प्रमुख होता है। जबकि 'महतो' सामाजिक कार्य की देख-रेख करता है। उराँव समाज में एक युवागृह होता है। युवागृह को जोंकएरपा या धुमकुड़िया कहा जाता है। इनमें जनी शिकार प्रसिद्ध है। जो 12 वर्षों के बाद होता है। यात्रा इनके सबसे प्रमुख त्योहार है। उराँवों की अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार कृषि है।

## 2. उरांउ जनजाति
## (कुड़मालि में)

उरांउ झारखंडकर दउज सउबले बड़अ जनजाति हेकेइक। इ दड़बिड़ गठकर जनजाति हेकेइक। एकर गड़ा बसअबासेक ठाइन गुमला, लहरदगा, रांचि, सिमडेगा, लातेहार, पलामु आर गढ़उआ हेकेइक। उरांउ जनजातिक गुसटि टपअ, मिंज, कुजुर, खलखअ, लकड़ा, तिरकि, किसपटा, एकका, तिगगा इटासेटा आहेइक।

पड़हा बेबसथा उरांउ सामाजेक आदिम सामाजिक बेबसथा हेकेइक। एगअ पड़हाक भितर 22 तड़िक गांउ रहइक। केइएक गअ पड़हा मिलाइके पड़हा पंचायत हेउअइक। एकर मुखिआके पड़हा राजा कहल जाइक। एखराक 40 पड़हा पंचाइअत सउबले बड़अ पंचाइअत हेउअइक। परधान गांउके 'राजा गांउ' कहथिक। गांउ परधानके 'पड़हा राजा' कहथिक। पाहाने सउब रकमेक धारमिक पुजा-पाठेक काम करइक आर माहातंइ सामाजिक काम-पाइटेक देख-भाल करइक। उरांउ समाजे एक जुउआनघार हेउअइक जाके जअंकएरपा किमबा 'धुमकुड़िआ' कहल जाइक। उरांउए 'जेनि सिकार' बेजांइ नामकरा आहेइक जेटा पति 12 बछरे हेउअइक। 'जातरा' एखराक सउबले बड़अ बरब हेकेइक। उरांउएक रउजि रटिक साधन चास हेकेइक।

## 3. मुण्डा जनजाति
## (हिन्दी में)

मुण्डा झारखण्ड की तीसरी प्रमुख जनजाति है। इनका प्रमुख निवास स्थल बुण्डू, तमाड़, अड़की, सिल्ली, सोनाहातु, मुरहू, खूँटी, तोरपा आदि है। झारखण्ड क्षेत्र में मुण्डा लोगों के बसाव को प्रथम माना जाता है। मुण्डा प्रोटोआस्ट्रेलॉयड प्रजाति के हैं। मुण्डारी भाषा आस्ट्रोएशियाटिक परिवार से संबंधित है। मुण्डा समाज में गोत्र को 'कीली' कहा जाता है। मुण्डा जनजाति के कई गोत्र है। जैसे - भेंगरा, पूर्ति, केरकेट्टा, सोय, आइन्द आदि। मुण्डा समाज में एक गोत्र के अन्दर विवाह की प्रथा नहीं पायी जाती है। मुण्डा समाज में ग्राम पंचायत को 'परहा' कहा जाता है। एक परहा में गाँवों की संख्या 12 तक होती है। परहा के प्रमुख को परहा राजा, दिवान, ठाकुर तथा लाला कहा जाता है। इस समाज में युवागृह को 'गितिओरा' कहा जाता है। मुण्डा समाज में कन्या मूल्य की प्रथा पायी जाती है। गाँव में देवता के निवास स्थान को 'सरना' कहा जाता है। कब्रगाह को 'मसना' कहा जाता है। कला संस्कृति के स्थान को 'अखड़ा' कहा जाता है। मागे, फागो और बा परब इनके प्रमुख पर्व है। मुण्डा समाज के प्रमुख देवता को सिंगबोंगा कहा जाता है। कृषि इनकी अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार है।

## मुंडा जनजाति
## (कुड़मालि में)

मुंडा झारखंडकर तेज मेन जनजाति हेकेइक। एकर बसअबास ठाइन बुंडु, तामाड़, सनाहातु, मुरमु, खुंटि, तरपा, सिलिलि, अड़कि हेकेइक। झारखंड छेतरें मुंडा हड़ेक बसअबासके मिरा मानल जाइक। मुंडा परटअ-असटेलिअड परजातिकर हेकेइक। मुंडारि पाड़सि आसटअ-एसिआटिक परिबारले नाता आहेइक। मुंडा समाजेक गुसटिके 'किलि' कहल जाइक। मुंडा जनजातिक केइएक गअ गुसटि आहेइक। जेसन - भेंगरा, पुरति, सइ, धान, बुलमुचु, हरउ, केरकेटा इटासेटा। मुंडा सामाजें एक गुसटिक भितर बिहा निहिं हेउअइक। मुंडा सामाजे गांउ पंचाइतके परहा कहल जाइक। एक परहाक भितर 12 गअ गांउ हेउअइक।

परहाकर परधानके परहा राजा, दिउआन, ठाकुर आर लाल कहल जाइक। एहे सामाजें जुउआधारके 'गितिअरा' कहल जाइक। मुंडा सामाजें केनिआंइ दामकर चलन पाउअल जाइक। गांउएक देबताक रहेक ठाइनके 'सरना' कहाइल जाइक। ससानके 'मसना' कहल जाइक आर नाइच गानेक ठाइनके 'आखरा' कहल जाइक। मागे, फागअ आर बा परब एखराक गड़ा परब हेकेइक। मुंडा सामाजकर परधान देबताके सिंगबउंगा कहल जाइक। चास एखराक रउजि रउटिकर साधन हेकेइक।

## 4. 'हो' जनजाति
## (हिन्दी में)

'हो' झारखण्ड की चौथी प्रमुख जनजाति है। इस जनजाति का प्रमुख निवास स्थल पश्चिमी सिंहभूम तथा पूर्वी सिंहभूम है। मुण्डा तथा 'हो' सर्वप्रथम झारखण्ड के पश्चिमी क्षेत्रों में निवास करते थे। हो जनजाति के गाँव प्रायः नदियों के किनारे या झरनों के समीप बसे होते हैं। दो गाँवों के मध्य एक खाली स्थान होता है, जिसे अखरा कहा जाता है। अखरा में नाच-गान तथा पंचायत की बैठक होती है। इनकी मातृभाषा को 'हो' कहा जाता है। 'हो' का अर्थ आदमी होता है। यह अग्नेय भाषा परिवार के अंतर्गत आता है। इस जनजाति के देवताओं को बोंगा कहा जाता है। कब्रिस्तान गाँव के बाहरी सीमा में होता है, जिसे 'सासन' कहा जाता है। गोत्र व्यवस्था को 'कीली' कहा जाता है। इसके न्याय व्यवस्था को 'मानकि' व्यवस्था एवं इसके प्रधान को 'मानकी' कहा जाता है। इसके अलावे महतो, दिउरि (पहान) होता है। माघे, बाहा, दमुराई, हियरो इसके प्रमुख त्योहार है। 'हो' अपनी कीली के अन्दर विवाह नहीं करते। सम्पत्ति का उतराधिकारी पुत्र होता है। पुत्र नहीं रहने पर सम्पत्ति को भाईयों तथा उसके पुत्रों में बाँट दी जाती है। 'हो' की आय का मुख्य स्रोत कृषि है।

## 'हउ' जनजाति
## (कुड़मालि में)

हउ झारखंडेक चारा परधान जनजाति हेकेइक। इ जनजातिकर गड़ा बसअबास प0 सिंगभुग आर पु0 सिंगभुगे आहेइक। मुंडा आर हउ पेहिल झारखंडेक पेसचिम दिगे बसबास करे हेलथिन। हउ जनजातिकर गांउ नदि धारिंइ किमबा झरनाक पासे रहे हेल। दुइ गांउएक बिचे - बिचे खालि ठाइन रहइक जाके 'अखड़ा' कहाइल जाइक। आखड़ांइ नाइच गान आर पंचाइतकर बेठकि हेउअइक। 'हउ' एखराक माइपाड़सि हेकेइक। 'हउ' कर माने हड़ हेउअइक। एहे पाड़सि अगनेइ पाड़सि दंहगि माहान आउअइक। एहे जनजातिक देबताके 'बउंगा' कहाइल जाइक। ससान गांउकर बाहिरे रहइक, जेके 'सासन' कहाइल जाइक।

गुसटिक बेबसथाके 'किलि' कहाइल जाइक। एखराक नेइआइ बेबसथाके 'मानकि बेबसथा' आर एकर मुखिआके 'मानकि' कहल जाइक। एकर छाड़ा माहतअ, दिउरि (पहान) हेउअइक। माघे, बाहा, दमुराइ, हिअरअ एखराक गड़ा परब हेकेइक। हउ हड़े निजेक किलिक भितर बिहा निहिं करत। बापअति धनेक अधिकार बेटाक हेउअइक। बेटा निहिं रहले धनके अकर भाइ आर एकर बेटाके बाखरा करि देल जाइक। एखराक रउजि-रउटिक परधान साधन चास हेकेइक।

# 5. कुड़मि
## (हिंदी में)

कुड़मि जाति झारखंड के सबसे अधिक जनसंख्या वाली एक प्रमुख जाति है। यह झारखंड के पश्चिमी भाग को छोड़कर अन्य सभी जिलों में प्रमुख रूप से पायी जाती है। यही एक ऐसी जाति है जिसकी आदिवासियों की तरह अपनी मातृभाषा, लोकसंस्कृति एवं प्रचुर मात्रा में लोकसाहित्य पायी जाती है। 'कुड़माली' इसकी मातृभाषा है। यह 81 प्रमुख गोत्रों में विभक्त है। ये अपने गोत्र को 'गुसटि' कहते हैं। जनजातियों की तरह इनके गोत्र टोटेमिक है। जैसे - केडुआर, बसरिआर, बानुआर, सांखुआर, डुमरिआर, चिलुआर, पुनरिआर, केटिआर इत्यादि है। ये अपने आपको 'हड़' कहते हैं। 'हड़' का अर्थ 'आदमी' होता है। ये अपने वंशज द्रविड़ प्रजाति से मानते हैं। इसके परंपरागत न्याय व्यवस्था 'परगना' व्यवस्था है। इसके प्रधान को परगनाइत कहते हैं। गांव में महतो, गड़ाइत, नेइआ होते हैं। बड़दा इसकी सर्वोच्य पद होता है। युवागृह को 'पेइसागाढ़ि' कहा जाता है। पुजा स्थल को 'थान' कहते हैं। आखांइन जातरा, रहइन, करम, जितिआ एवं बांदना इसके प्रमुख पर्व-त्योहार है। डमकच, उधउआ, झुमर, नटुआ, छउ, एढ़ेइआ एवं ढप इनके प्रमुख नृत्य है। ये मूलतः कृषि पर आश्रित होते हैं।

# कुड़मि
## (कुड़माली में)

कुड़मि झारखंडेक सउबले बेसि बसअबास करइआ जाइत हेकेइक। एखरा झारखंडेक पछिम दिगे छाड़िके बाकि सउब जिला माहान पाउअल जाइक। एहे एक एसन जाइत हेकेइक जाकर आदिबासिक डुल निजेक माइपाड़सि, पुरखउति चारि आर बेजांइ पुरखउति साहित आहेइक। 'कुड़माली' एकर माइपाड़सि हेकेइक। एखरा 81 गुसटि माहान बांटल आहत। जनजातिक पाराइ एखराक गुसटि टटेमिक आहेइक। जेसन - केडुआर, बसरिआर, बानुआर, सांखुआर, डुमरिआर, चिलुआर, पुनरिआर, केटिआर इटासेटा। एखरा निजके 'हड़' कहत। 'हड़' कर माने 'लक' हेउअइक। एखरा निजेक बंसज दड़बिड़ गठेक मानत। एखराक पुरखाक नेआइ बेबसथा 'परगना' बेबसथा हेकेइक। एकर मुखिआके 'परगनाइत' कहथिक। गांवएं माहातअ, गड़ाइत, नेइआ रहइक। बड़दा एखराक सउबले बड़अ पद हेउअइक। कुलहिक मुड़ांइ 'पेइसागाढ़ि' रहइक। जाहां जुआन धिआ-पुता रातिंइ नाना रकमेक पुरखउति सिख सिखत। पुजाक ठाइनके 'थान' कहथिक। आखांइन जातरा, रहइन, करम, जितिआ एवं बांदना एखराक परब तिहार हेकेइक। डमकच, उधउआ, झुमर, नटुआ, छउ, एढ़ेइआ बा ढप एखराक नाइच हेकेइक। एखराक जिबन जापनेक साधन चास हेकेइक।

## 6. झारखण्ड की भाषा
## (हिन्दी में)

झारखंड एक विविध भाषा-भाषियों का राज्य है। यहां के प्रायः सभी बड़े जनसंख्या वाले जातियों एवं जनजातियों की अपनी - अपनी मातृभाषा है। साथ ही कुछ भाषा जो इन्हीं के समिश्रण से संपर्क भाषा के रूप में बोली जाती है। झारखण्ड राज्य की राजकीय भाषा हिन्दी है। झारखंड में कुल 12 भाषाओं को द्वितीय राज्यभाषा का दर्जा 2011 में दिया गया है। इनमें से पांच आदिवासी भाषा संताली, कुडुख, हो, मुंडारी एवं खड़िया, दो जातिगत भाषा कुड़मालि एवं उर्दू तथा पांच क्षेत्रीय भाषा नागपुरी, खोरठा, पांचपरगनिया, उड़िया एवं बांगला। इसके अलावे माल्तो, असुर, सादरी आदि भाषा यहां के आदिवासी-मूलनिवासी लोग सदियों से बोलते हैं। इसकी पढ़ाई स्कूल कॉलेजों में बहुत वर्षों से हो रही है। साथ ही साथ राज्य सरकार के विभिन्न नौकरियां इन भाषाओं के आधार पर होती है। जैसे - पुलिस, मास्टर इत्यादि। जे.पि. एस.सि. में वैकल्पिक विषय के रूप में इन भाषाओं को रख सकते हैं।

## झारखंडेक पाड़सि
## (कुड़मालि में)

झारखंड अना गअ नाना पाड़सिक राइज हेकेइक। इहां मटा मटि सउब बड़अ जाइत आर जनजातिक निजेक - निजेक माइपाड़सि आहेइक। एक संगे कुछु पाड़सि एहे सउबकर मेसा-कसांइ लाड़चाड़ेक पाड़सिअ बनि गेल आहेइक। झारखंडेक राइजकिअ पाड़सि हिंदि हेकेइक। इहां सउब मिलाइ 12 गअ पाड़सिके दउज राइजपाड़सि 2011 साले बनाइल आहेइक। एकर भितर मांचा गअ जनजाति पाड़सि संतालि, कुडुख, हउ, मुंडारि आर खड़िआ, दना गअ जाइतेक पाड़सि कुड़मालि आर उरदु आर मांचा गअ छेतरिअ पाड़सि नागपुरि, खरठा, पांचपरगनिआ, उड़िआ आर बांगला। एकर छाड़ा मालतअ, असुर, सादरि जेसन पाड़सि इहांक आदिबासि मुलबासिंइ आदि जुगले फदरत। एकर पढ़ाइ इसकुल कलेजे ढेइर दिनले हेउअहेइक। संगे - संगे राइजेक नाना रकमेक नकरि इहां एहे पाड़सिक ठेहड़े हेउअइक। जेसन - पुलिस, मासटर इटासेटा। जे.पि.एस. सि. माहान एके राखिके परिकखा दिए पारत।

## 7. झारखण्ड की भाषाओं की श्रेणियाँ
## (हिन्दी में)

झारखंड में मुख्यतः तीन भाषा परिवार की भाषायें बोली जाती है। (1) आस्ट्रिक (2) द्रविड़ एवं (3) आर्य भाषा परिवार। संताली, मुण्डारी तथा हो आस्ट्रिक श्रेणी में रखा गया है। उराँव एवं मालपहाड़ी लोगों की भाषा या कुडुख एवं माल्तो को द्रविड़

श्रेणी में रखा गया है तथा नागपुरी, कुड़माली तथा खोरठा भाषा को इण्डोआर्यन तथा लिंगाफ्रोंका भाषा श्रेणी में रखा गया है। परंतु, कुड़माली को आर्य भाषा परिवार में रखना अनुचित लगता है। क्योंकि कुड़माली अन्य जनजातीय भाषाओं की तरह एक जातिगत भाषा है तथा यह जाति आजादी के पूर्व जनजाति के श्रेणी में था। तो इसकी भाषा आर्य भाषा श्रेणी में कैसे रखा गया है? झारखण्ड में नौवीं से उपर की कक्षाओं में हो, मुण्डारी, संताली, कुड़ुख, पाँचपरगनिया, नागपुरी, कुड़माली, खोरठा तथा खड़िया भाषाओं की पढ़ाई होती है।

## झारखंडकर पाड़सि परिबारेक बाखरा

### (कुड़माली में)

झारखंड माहान टेना रकमेक पाड़सि गठेक पाड़सि फदरत। (1) आसटिरिक (2) दड़बिड़ आर (3) आरजअ पाड़सि दंहगि। संतालि, मुंडारि आर हउ के आसटिरिक परिबारे राखल गेल आहेइक। उराँव आर मालपाहाड़ि हड़ेक पाड़सि कुड़ुख आर मालतअके दड़बिड़ परिबारेक पाड़सि मानल आहेइक आर नागपुरि, कुड़माली, पंचपरगना आर खरठा पाड़सिके इंडउ आरजन आर लिंगाफेरेंका पाड़सि परिबारे राखल गेल आहेइके। मनतुक, कुड़मालिके आरजअ पाड़सि दंहगिंड़ राखा टा उचित निहिं बुझाहेइक। काहे ना कुड़माली आरअ दसर जनजातिक पाड़सिक पाराइ एक जाइतेक पाड़सि हेकेइक आर एहे जाइत साधिनेक पेहिल तड़िक जनजाति सुचि माहान रहलेइक तअ एकर पाड़सिके आरअ दंहगि माहान केसे केइ राखल गेल आहेइक? झारखंडे नमिले उपरेक केलासले हउ, मुंडारि, संतालि, कुड़ुख, खड़िआ, पांचपरगनिआ, नागपुरि, कुड़माली, खरठा आर खड़िआ पाड़सिक पढ़ाइ हेउअइक।

## 8. सरहूल पर्व

### (हिन्दी में)

सरहूल आदिवासी मूलवासियों का सबसे बड़ा पर्व है। फाल्गून-चैत महीना में मनाया जाता है। इस त्योहार में सखुआ के फूलों को चढ़ाया जाता है। सरना स्थल में हंड़िया का तपान तथा मुर्गे की बलि दी जाती है। इस पूजा में सूर्य तथा पृथ्वी का प्रतीकात्मक विवाह होता है। इस पूजा में मुर्गे तथा चावल की खिचड़ी का प्रसाद बनाया जाता है। सभी व्यक्ति हांड़िया का सेवन करते हैं। इस पूजा में एक घड़ा में जल रखा जाता है। घड़े की जल की मात्रा से वर्षा का पूर्वानुमान किया जाता है। इस पूजा में लोग पहान से आर्शीवाद लेते हैं।

## सरहुल परब
## (कुड़मालि में)

सरहुल आदिबासी-मूलिबासिकर सउबले बड़अ परब हेकेइक। सरहुल फागुन-चेइत मासे मानाइल जाइक। इ परबें सारइ फुलके चेढ़ाइल जाइक। सरना थाने हड़िआ चेढ़ाइल आर मुरगाकर बलि देल जाइक। एहे पुजांइ सुरुज आर भुंइकर परतिक रुपे बिहा हेउअइक। एहे पुजांइ मुरगां आर चारेक खिचड़िके भउग बनाइल जाइक। सउब हड़े हड़िआ झिंकत। इ पुजांइ एक हाड़िंइ पानि राखल जाइक। हाड़िक पानिक घेटा-बाढ़ाले पानि गिरेक गनान करल जाइक। एहे पुजा माहान हड़े पाहानले आसिस मांगथिक।

## 9. करमा पूजा
## (हिन्दी में)

यह झारखण्ड का लोक-प्रिय त्योहार है। यह पर्व प्रारम्भ में आदिवासी और कुड़मि लोग मनाते थे। वर्त्तमान में अन्य समुदाय के लोग भी इसे मनाने लगे हैं। भादो माह के शुक्ल पक्ष एकादशी की रात को यह पर्व अंतिम रूप से मनाया जाता है। इस पर्व में बहने नाच-गान तथा पूजा करती है। बहने अपने भाई की सुख एवं समृद्धि के लिए यह पूजा करती है। इसके 5, 7, 9 या 11 दिन पूर्व जावा उठाया जाता है। इस पूजा में करम पेड़ की डाली की पूजा स्थल में गाड़कर पूजा की जाता है। गाँव की बहने डाली की चारों ओर बैठ कर पूजा करती है। गाँव के बड़े-बूढ़े या पाहान करमा-धरमा की कहानी सुनाते हैं। दूसरे दिन करमा राजा को नदी या तालाब में विसर्जित किया जाता है। यह पर्व भाई-बहन के अनुपम प्रेम का प्रतीक है।

## करमा पुजा
## (कुड़मालि में)

इ झारखंडकर नामकरा परब हेकेइक। इअ परब पेहिल आदिबासि आर कुड़मि हड़े मानाइ हेलथिन। एखन आरअ दसर जातिक हड़ुहुं एके मानात। भादर मासेक सुकल पइख एकादसिक राइते एहे परबके मानाल जाइक। इअ परबे बेहिन सउब नाचत आर उपासकरि करम-डाइर पुजा करत। बेहिन सउभे निजेक भाइएक सुख-सांति आर भरल-पुरल घारकनना रहेक खातिर डाइर पुजा करत। एहे पुजा माहान करम गाइछकर डाइरके पुजा ठाइने गाड़ल जाइक। एकर 5, 7, 9 बा 11 दिन पेहिल जाउआ उठात। गांउकर बेहिन सभ डाइरेक चाइरउ धारिंइ गडिके पुजा करत। गांउएक बड़अ-बुढ़ा पुरखा सउभे करम कथा सुनात आर गांउएक माहतअ किमबा नेइआंइ डाइर पुजा करइक। एकर दसर दिन करम राजाके नेदि किमबा बांधे आरे भासाइ देथिक। इ परब भाइ-बेहिनेक भालअ बासाकर चिनहाप हेकेइ।

## 10. होली पर्व
## (हिन्दी में)

यह पर्व फागुन की अंतिम पूर्णिमा एवं चैत माह के प्रथम दिन मनाया जाता है। यह पर्व होली का झारखण्डी रूप है। पुर्णिमा के रात को लकड़ी, पुंआल आदि जलाकर पिछले वर्ष के दुर्गुणों को मिटाया जाता है। यह पूजा मध्य रात को होती है। इसे जुमढ़ि पड़ा भी कहते हैं। सभी लोग मिलकर फगुआ गीत गाते हैं। सुबह में ये राख से टीका लगाते हैं। सुबह में लोग रंग खेलते हैं। दोपहर के बाद सभी अबीर एक दूसरे को लगाते हैं। बड़ों को पाँवों में अबीर डालकर प्रणाम किया जाता है। दोस्ती यारी तथा छोटों को गाल, मुड़ में लगाकर भूत बन जाता हैं। देवर-भाभी तथा अन्य परिहास वाले खुब मजा लेते हैं जो जितना सकता उतना देता है। देखने से ऐसा लगता है कि मानो इन्हीं का त्योहार है। फगुआ की सुबह लोग जंगलों में शिकार करने जाते हैं।

## फगुआ परब
## (कुड़मालि में)

इअ परब फागुनेक सेंस पुरनिमा आर चेइत मासेक पेहिल दिन मानाइल जाइक। इअ परब हलिकर झारखंडि रुप हेकेइक। पुरनिमाक रातिंइ सुखल काठ, पउंआर आरअ पड़ाइके गेला बछरेक मनमुटाउके मेट-माट करल जाइक। इ पुजा आधा रातिंइ हेउअइक। इटाके जुमढ़ि पड़ा कहथिक। सउभिंइ मिलि फगुआ गित गाउअत। बिहाने एहे बानिक टिका लागात। ताकर परे बिहाने रंग खेलत। बारअटाक पअरे सउभिंइ अबिर एक दसरके लागात आर बड़क गड़े लागाइ आसिस मांगत। संगि किमबा छटआके गाले मुड़े लागाइ भुत करि देथिक। देउअर-भउजि आर हांसुआर नाता सभेक दउमेइ मजा। जेंइ जेते पारत तेंइ तेते देत। देखले बुझाइक एखराके एकाइ हेकेइक एहे फगुआ। फगुआक बिहाने हड़ सिकार करे जात।

## 11. भोगता पर्व (मंडा पर्व)
## (हिन्दी में)

यह पर्व चैत सांकरात से प्रारंभ होता है एवं जैठ सांकरात को समाप्त होता है। यह पर्व अलग - अलग जगहों पर अलग - अलग दिनों में इसी दो महीने के अंदर - अंदर मनाया जाता है। इस पर्व में उपवास तथा नियम-धर्म का विशेष पालन किया जाता है। इस पर्व में भोगताओं द्वारा पूजा पाठ किया जाता है। यह पर्व तीन दिनों में संपन्न होता है। पहला दिन फलहार, दूसरा दिन जागरण (उपवास) एवं तीसरा दिन भोगता घुरन होता है। दूसरे दिन के रात में जागरण किया जाता है, जिसमें छौ नृत्य

आदि होता है। छौ नृत्य का शुभारंभ इसी पर्व से होता है। मंडा स्थल पर तीसरा दिन मेला लगता है। भोगता गण को आग की पट्टी पर चलने की आदिम परंपरा है, इसे 'धुआंसि' कहा जाता है। दूसरे दिन भोगता लकड़ी के बने चरखी में झुलते हैं। भोगता द्वारा झूलते वक्त ऊपर से फूल-फल, पैसा, खुड़मा आदि अन्य वस्तु गिराते हैं। इस फूल को पवित्र प्रसाद माना जाता है। यह पर्व महादेव पूजा का सबसे बड़ा त्योहार है। कुड़मालि संस्कृति में इससे भोगता परब अथवा चेत परब कहते हैं।

## भगता परब
## (कुड़मालि में)

इ चेइत मासेक सांकराइत दिनले सुरु हेउअइक आर जेठेक सांकराइत दिने सिराइक। भगता परब भिनु - भिनु जेइगांइ भिनु - भिनु दिने एहे दना मासेक भितर मानात। इ परब उपास आर निअम-धरमकर लालन-पालन करल जाइक। एहे परबे भगतिआक दारांइ पुजा-पाठ करल जाइक। इ परब टेना दिने पुरा हेउअइक। पेहिल दिनके फलहार, दसर दिनके जागरन (उपास) आर तेइज दिने भगता घुरा हेउअइक। दउज दिनेक रातिंइ जागरन करल जाइक जेटांइ छउ नाइच हेउअइक। छउ नाइचेक मुहाइन एहे परब लिहिं हेउअइक। माड़प ठाइने तेइज दिने मेला लागइक। भगतिआ सउभके जरल आइगे चलेक आदिम चलन आहेइक। एके धुआंसि कहल जाइक। दसर दिन भगता चरखाक उपरे घुरत। भगतिआ सउभे निचुक हड़ेक दिगे फल-फुल, पेइसा आर खुड़मा फेकथिक। एके भउग मानल जाइक। इ परब आदि हड़कर सउबले बड़अ पुजा हेकेइक।

## 12. बांदना (सोहराई पर्व)
## (हिन्दी में)

इस पर्व में किसान घर की मवेशियों की पूजा करते हैं। अमावश्या की रात में पूजा की जाती है। घर के कृषि उपकरण एवं पशुओं को नहलाया जाता है। उन्हें सुंदर एवं आकर्षक ढंग से सजाया जाता है। इसकी परम्परा कई दिनों में पूर्ण होते हैं। पहला दिन सांचि दिया दिया जाता है। मवेशियों के सींगों में तेल, घी तथा सिंदूर लगाया जाता है। उसी दिन गाय जागरण किया जाता है, जिसे ढिंग-ढांग कहा जाता है। दुसरा दिन लाहरुंग डांग का प्रचलन है, इससे दादुड़ खेदा भी कहते हैं। जिसमें गाँव के बच्चों को नहलाया जाता है। तीसरा दिन गाय चुमान, गहाइल पूजा, बरद खुंटा होता है। यहाँ मुर्गे की बलि दी जाती है। इसके बाद लोग हँड़िया का तपान देते हैं। घरों में सात प्रकार की अनाजों को पकाया जाता है। लोग पके हुए अनाज को प्रसाद के रूप ग्रहण करते हैं। लोग यह मानते हैं कि सोहराई से मवेशियों का रोग दूर हो जाता है। इस पर्व में मवेशियों के अच्छे स्वास्थ्य की कामना की जाती है।

## बांदना परब
## (कुड़मालि में)

एहे परबे चासांइ घारेक गाइ, बाछुर आरके पुजा करथिक। कारतिक आमाबेसाक राइते एहे पुजा हेउअइक। डिंढ़ाक चासेक जिनिस आर गाइ बरदके सिनाइल जाइक। एके बेस करि साजाउअल जाइक। इ परब केइएक दिन तड़िक चलइक। पेहिल दिनेक सांइझे दिइआ देखाल जाइक, जाके सांचि दिआ कहल जाइक। रातिंइ गाइ बरदेक सिंघे तेल, घिउ आर सिंदुर मखाइल जाइक। सेइ रातिंइ गाइ-जागरन करल जाइक, जाके ढिंग-ढांग कहल जाइक। दसर दिन लाहरुंग-डांग हेउअइक, इटाके दादुड़ खेदाउ कहथिक। इटांइ छटअ छउआके सिनाइल जाइक। तेइज दिने गहाइल पुजा, चउक पुरा, गाइ चुमा आर बरद खुटा हेउअइक। रांगा हाड़िंइ मुरगा चढ़ाल जाइक, डिंढ़ा माहान गइ रकमेक पिठा-लाठा करत। हड़े पाकल फरके भंउगेक रुप मानत। हड़े इटा मानत जे बांदना परबे गाइ बाछुरेक रउग-जालाक काटान हेउअइक। एहे परबे गाइ बाछुर बेस रहेक कामना करल जाइक।

## 13. जनी शिकार
## (हिन्दी में)

यह पर्व प्रत्येक 12 वर्षों में एक बार मनाया जाता है। मूल रूप से यह पर्व उरांव जनजाति के है। इस पर्व में महिलाएँ पुरुष भेष में गाँवों के अन्दर शिकार खेलने निकलते हैं। आदिवासी और सदान समुदाय की स्त्रियाँ इसमें भाग लेती है। यह पर्व रोहतास गढ़ के घटना के याद में मनाया जाता है। इस पर्व में महिलाएँ अपनी शक्ति का प्रदर्शन करती है। एक गाँव की महिलाएँ दूसरे गाँव में शिकार करने जाती है। इनके रास्ते में जो भी खस्सी, बकरे, मुर्गी, सुअर, बत्तख आदि मिलते हैं, उसका शिकार करती है। सभी मारे गये पशुओं को अखरा में लाया जाता है। अखरा में शिकार को बनाया जाता है। गाँव के पहान सभी स्त्रियों में इसे बँटवा देता है। सभी स्त्रियाँ इसका सेवन करती है। शिकार के साथ एक दोना हंडिया भी दिया जाता है। इस पर्व को लेकर लोगों में काफी उत्साह रहता है। यह पर्व झारखण्ड की सभ्यता संस्कृति का प्रतीक है। प्रशासन जनी शिकार का विरोध नहीं करती है।

## 13. जेनि सिकार
## (कुड़मालि में)

इ परब पति 12 बछरे अना धांउ मानाल जाइक। गड़ा भाभे जनि सिकार परब उरांउ जनजातिक कर परब हेकेइक। एहे परबे जेनि मरदेक भेसे गांउएक भितर सिकार खेले लाइ बाहरात। आदिबासि आर सदान गठेक जेनि सउभे एहे टा करत। इ परब रउहतास गढ़ेक घेटनाक इआदे मानाइल जाइक। एहे परबे जेनि सउभे निजेक

बलकर चिनहाप देथिन। एक गांउएक जेनि दसर गांउए जाइके सिकार करत। एकर डहरे जे कुछु खांसि, छागइर, भेड़ि, खुखड़ि, सुअइर, हांस आरअ पांइख-पाखुड़ पाउअत अकर सिकार करतेइ जात। सिकार करल सउब पसुके आखड़ा माहान आनल जाइक। आखड़ांइ एके बनाइल जाइक। एकर परे गांउएक नेइआंइ सउभ जेनिके बांटि देइक। सउभ जेनिंइ एके झिंकत आर एक दना करि हंड़िआउ देल जाइक। एहे परबले मुलुके बेज़ांइ गहगाहि रहइक। इ परब झारखंडेक सभइता आर चारिकर चिनहाप हेकेइक। परसासने जेनि सिकारेक माना निहिं करथिक।

## 14. टुसु पर्व
## (हिंदी में)

टुसु कुड़मियों का एक महत्वपूर्ण पर्व है। इसकी शुरूआत अघहन सांकरात को और अंत मकर के दिन होता है। इसको लक्ष्मी का प्रतीक माना जाता है। इसे अघहन सांकरात के दिन, रात को खेत से खलिहान एवं खलिहान से घर लाते हैं, इसको डिनि उठा या ठाकराइन उठा कहा जाता है। इसी को टुसु भी कहा जाता है। पूरे पूस भर इसको प्रति शाम दीया दिखाया जाता है एवं फूल चढ़ाकर प्रणाम किया जाता है। इस समय लड़कियां टुसु गीत गाती है। पुस सांकराइत के रात्रि को जागरन किया जाता है एवं इसका चाड़ुल बनाकर मकर के सुबह किसी नदी, तलाब आदि में इससे विसर्जित किया जाता है। पर्व के अंतिम सप्ताह में चार धउआ, गुड़ि कुटा, बांउड़ि फिर मकर होता है। यह पर्व बहुत ही हर्षोउल्लास के साथ मनाया जाता है। बिसर्जन के बाद इनके कई जगहों पर पुस मेला लगता है।

## टुसु परब
## (कुड़मालि में)

टुसु कुड़मि सउभेक बेजांइ नामकरा परब हेकेइक। एकर आखाइन अघहन सांकराइतें आर सेंस मकर दिन हेउअइक। एके लकखिक परतिक मानल जाइक। एके अघहन सांकराइत दिनेक रातिंइ खेतले खेरिहान आर खेरिहानले डिंढ़ा आनत, एके ठाकराइन उठा कहत। एकिहिं टुसु कहत। गटा मास धरि एके पति सांइझे फुल देइके सांइझ देत आर गित गाउअत। पुसेक सांकराइत दिन रातिंइ जागरन करत आर बिहाने चाड़ुल बनाइके नाइच-गाने नदि, बांधे आरे भांसाइ देत। परबेक सेंस सापता माहान चार धउआ, गुड़ि कुटा, बांउड़ि आर मकर मानात। इ परब बेजांइ हुब आर गहगहिंइ मानात। भांसाइल परे केतेइ जेइगांइ टुसु मेला लागइक। मेला टाड़िंइ जुआन धिआ-पुतांइ एक दसराके बिहाक खातिर बाछतं।

❖❖❖

# 29. पुरखउति कथा

## लोककथा

लोक + कथा = लोककथा। लोक कथा दो शब्दों के मिलने से बना है। 'लोक' का अर्थ वह साधारण जन, जिनकी आसा और विश्वास वेद और पुराण नहीं बल्कि वही मौखिक परंपरा में चली आयी लोक संस्कृति है। दुसरा 'कथा' का अर्थ 'कहानी' होता है। कुड़मालि में इसे 'पुरखउति कथा' कहते हैं जो पुरखों से मौखिक परंपरा में एक पिढ़ि से दूसरे पिढ़ि अपने मातृभाषा में हस्तांतरित होता आया है। लोककथा किसी भी जातिगत भाषा एवं संस्कृति का एक आवश्यक अंग होता है। इसमें जीवन के सभी पक्षों की झलक देखने को मिलती है। कुड़मालि जिंदगी की जो परम्परा है, वह इसके विभिन्न लोककथाओं में दिखता है। जिंदगी का हर कोना और हर रूप का कहानी मिलता है। कुड़मालि लोककथा में कुड़मि समाज के सुख-दुःख का अनेकों रूप देखने को मिलते हैं। लोककथा का कथावस्तु आधुनिक कहानी की तरह होती अवश्य है परंतु इसका कोई विशेष उद्देश्य नहीं होता है। कुड़मालि लोक-कथा में मनोरंजन, शिक्षा, ज्ञान, सामाजिक, रीति-रिवाज, आदिम बोंगा के उपर विश्वास आदि का जानकारी मिलता है। कुड़मालि लोक कथा में एक विशेष प्रकार के राग पाया जाता है, जिससे 'रदन' कहा जाता है। लोककथा का भाषा शैली इतना सरल, सरस, मधुर और सुंदर होता है कि बच्चे सुनें या बूढ़े, सबों को एक रूप में आनंद और ज्ञान प्राप्त होता है। भाव के अनुसार भाषा बदलता जाता है।

### ⇨ कुड़मालि लोक कथा की परंपरा

कुड़मालि केहनिक चलन कुड़मि जाइतेक सिसटि लेइ मानल जाइ पारइक। एसे तअ कनअ विदुआने एखन तड़िक कहे नि पारलअ लाहात जे पुरखउति केहनि कहेक चलन कबेले आहेइक? बा कबे हेल आहेइक? जन डुल भाखाक लेइके केउ हड़े एखनउ तड़िक कहे निहिं पारल आहात जे भाखाकर सिरजन बा उचरेइन कबेले हेल आहेइक? तेसनेइ पुरखउति केहनि करअ सिरजन बा उचेरइन कबेले हेल आहेइक? सटिक भाभे कहा दाइए हेकेइक।

### ⇨ लोक कथा की विशेषताएं

मौखिक परंपरा, रचयिता का अज्ञात होना, रदन की पंपरा, उद्देश्य रहित, मन की अभिलाषा, लोक जीवन से जुड़ा होना, मंगल कामना की भाव, अश्लिल भाव रहित, लोक संस्कृति का परिचय आदि हुंकार देने आदि कुड़मालि लोक कथा की विशेषताएं हैं।

## कन्या की खोज
### (हिन्दी में)

एक बार कुछ लोग कन्या की खोज में एक आदमी के घर गये। उस समय वह आदमी नहीं था। घर पर अकेली उसकी बेटी थी। उन्होंने लड़की से पूछा - तुम्हारे पिता कहाँ गये हैं? लड़की का उत्तर था, पानी से मिलने गये हैं। उन लोगों ने फिर पूछा - तुम्हारी माँ कहाँ गयी है? लड़की ने बताया, उसकी माँ एक आदमी को दो करने गये हैं। दोनों प्रश्नों का उत्तर उलझनपूर्ण था। लड़के वालों ने उस लड़की की बात समझ नहीं पाये। फलतः लड़के वालों ने लड़की को मूर्ख समझा और दूसरी लड़की से विवाह की बात तय की।

घर लौटकर उनलोगों ने अपने घर की स्त्रियों को उस लड़की द्वारा दी गई उत्तर के बारे में बताया। स्त्रियों ने उनकी बात सुनकर हँस पड़ी और बताया कि लड़की बड़ी चतुर है। उन्होंने बताया कि पानी से मिलने का मतलब उसके पिता घास काटने के लिए गये थे और दूसरा प्रश्न एक आदमी को दो करने का मतलब उसकी माँ दाल दलने गई थी। आपलोग मूर्ख बन गये हैं और अच्छी कन्या को परख नहीं सके हैं। तब सब पश्चताप करने लगा।

## केनिआइएक टउआ
### (कुड़मालि में)

अना धांउ कुछु झन केनिआइएक टउआंइ अना गअ हड़ेक डिंढ़ा गेल। सेइ बेरांइ अकर डिढ़ांइ केउ मरद झन निहिं रहलेइक। डिंढ़ाइ खालि अकर धिआ रहलि। बर दिगेले आइल झन सउभे धिआ छउआटिके सुधिआलउथिन - तर बाप काहां गेल आहउ? छउआटिंइ जबाब देलि - पानिक संग देखा-सुना करे गेल आहेइक। अखरानिंइ घुरिके सुधिआल - तर माइ काहां गेल आहउ ? छउआटिंइ फेइर जबाब देल - माइ एक झनके दुइ करे गेल आहि। एहे सुनि, केनिआइ देखा हड़ सउभे एकर जबाब बेजांइ उइट-पइटा बुझे पारलउथिन। अखरा एकर जबाबके सझे बुझे निहिं पारला। तेंइ केनिआइटिके मुरुख बुझिके आरअ दसर एगअ केनिआइ संग बिहाक दिन धरजकरि डिंढ़ा घुरि आउअला।

डिंढ़ा घुरिके अखरानिंइ निजेक जेनि गिलाके पेहिल केनिआइएक जबाब लाक बारे सुधिआल। अखराक जेनि सउभे सुनिके हिंसड़ि उठला आर कहला - पेहिल केनिआइटि बेजांइ चखअ आर चालाक हेकलि। अखरा जबाबके फेरिछ करि कहला - पानिक संग देखा-सुना माने अकर बाप घास काटे गेल आहेइक आर एक झन के दुइ गअ करा माने अकर माइ दाइल दड़रे गेल रहलि। तहरानि बका बनि गेलेहे आर बेस केनिआइ टिके परखे निहिं परलेहे। तखन अखरा पछताइ लागला।

❖❖❖

# 30. झारखण्ड सामान्य ज्ञान

## 1. झारखण्ड का इतिहास

➪ झारखण्ड क्षेत्र का सर्वप्रथम उल्लेख ऐतरेय ब्राह्मण में हुआ है।
झारखंड मुलुकेक उचरेन सउबले पेहिल एतरेअइ बराहमने हेल आहेइक।

➪ ऐतरेय ब्राह्मण में झारखण्ड का नाम पुण्ड्र है।
एतरेअइ बरहमने झारखंडेक नाम पुंडरअ आहेइक।

➪ वायु पुराण में झारखण्ड का नाम मुरण्ड है।
बातास पुराने झारखंडेक नाम मुरंड आहेइक।4

➪ विष्णु पुरान में झारखण्ड का नाम मुंडा है।
बिसनु पुराने झारखंडेक नाम मुंडा आहेइक।

➪ महाभारत में झारखण्ड का नाम पुंडरिक देश है।
महाभारतें झारखंडेक नाम पुंडरिक देस आहेइक।

➪ फाह्यान ने झारखण्ड को कुकुट्-लाड कहा है।
फाहआने झारखंड के कुकुट-लाड कहल रहलेइक।

➪ झारखण्ड के पहाड़ी अंचल को 'दामिन-ए-कोह' कहा जाता है।
झारखंडेक पहाड़ेक अंचलके 'दामिन-ए-कोह' कहल जाइक।

➪ मुगल झारखण्ड को खुखरा कहते थे।
मुगल सउभे झारखंडके खुखरा कहे हेलथिन।

➪ अकबरनामा में छोटानागपुर क्षेत्र को झारखण्ड कहा गया है।
अकबरनामाइ छटानागपुरके झारखंड कहल रहलेइक।

➪ अकबरनामा अबुल फजल की पुस्तक है।
अकबरनामा अबुज फजलकर पथि हेकेइक।

➪ अलग झारखंड राज्य की मांग देश आजाद होने के पूर्व की थी।
भिनु झारखंड राइजेक् मांग देस साधिन हेउएक पेहिल लिहिं रहलेइक।

➪ झारखंड राज्य की स्थापना 15 नवंबर 2000 ई. को हुआ।
झारखंड राइजेक थापना 15 नउंबर 2000 साले हेल आहेइक।

➪ झारखंड देश का 28 वां राज्य है।
झारखंड देस कर 28 उआं राइज हेकेइक।

➪ झारखंड का राज्यधानी रांची है।

झारखंडेक राइजधानि रांचि हेकेइक।

➪ झारखंड के उपराज्यधानी दुमका है।
झारखंडेक दउज राइजधानि दुमका हेकेइक।

➪ झारखण्ड के राज्यकीय पशु हाथी है।
झारखंडेक राइजकिअ पसु हांथि हेकेइक।

➪ झारखण्ड के राज्यकीय पक्षी कोयल है।
झारखंडेक राइजकिअ पांइख कइलि हेकेइक।

➪ झारखण्ड के राज्यकीय फल केंद है।
झारखंडेक राइजकिअ फर केंद हेकेइक।

➪ झारखण्ड के राज्यकीय पेड़ साल है।
झारखंडेक राइजकिअ गाइछ सारअइ हेकेइक।

➪ झारखण्ड के राज्यकीय फूल पलास फूल है।
झारखंडेक राइजकिअ फुल परास फुल हेकेइक।

➪ झारखण्ड के एक मात्र स्वर्णरेखा नदि जो समुंद्र में मिलती है।
झारखंडेक मटेइ सबरनेखा नदि जेटा समुदरें मेझाइक।

➪ झारखण्ड का पहला राज्यपाल प्रभात कुमार था।
झारखंडेक मिर राइजपाल परभात कुमार हेकल।

➪ झारखण्ड का पहला मुख्यमंत्री बाबुलाल मरांडी था।
झारखंडेक मिर मुइख मंतरि बाबुलाल मरांडि हेकल।

➪ झारखंड का पहला बिधान सभा अध्यक्ष इंदरसिंह नामधारी था।
झारखंडेक मिर बिधान सभाब तालेबर इंदर सिंह नामधारि हेकल।

➪ झारखंड का पहला ..... न्यायधीस था।
झारखंडेक मिर नेइआधिस .....हेकल।

➪ झारखण्ड में 12 भाषाओं को द्वितीय राज्य भाषा का दर्जा प्राप्त है।
झारखंडे 12 गउ पाड़सिके दउज राइजपाड़सिक ठाइन देल आहेइक।

| शब्द कोष | | |
|---|---|---|
| क्षेत्र - मुलुक | उल्लेख - उचरेन | हुआ - हेल |
| वायुपुराण - बातासपुरान | कहा - कहल | पहला - मिर |
| किताब - पथि | भाषा - पाड़सि | पंक्षी - पांइख |
| जाता है - जाइक | पेड़ - गाइछ | पैड़ - गाइछ |
| कहा गया - कहललेइक | मिलना - मेझा | द्वितीय - दउज |

# 2. जनजातियों का इतिहास

➪ झारखंड में कुल 32 जनजातियां है।
झारखंडे सउब मिलाइ 32 गअ जनजाति आहेइक।

➪ झारखंड में कुल 8 आदिम जनजाति है।
झारखंडे सउब मिलाइ 8 गअ आदिम जनजाति आहेइक।

➪ असुर, बिरहोर, बिरजिआ, कोरबा, माल पहाड़िया, परहैया, सोरिया पहाड़िया और सबर झारखंड के आदिम जनजाति है।
असुर, बिरहउर, बिरजिआ, करबा, माल पहाड़िआ, परहेइआ, सउरिआ पहाड़िआ आर सबर झारखंडेक आदिम जनजाति हेकेइक।

➪ झारखंड के आदिवासी हमेशा आंदोलनकारी के रूप में जानी जाती है।
झारखंडेक आदिबासि सुरुलेइ हुल कारिक रुपे जानल जाइक।

➪ आदिबासि जमीन के रक्षा के लिए यहां CNT और SPT एक्त 1908 से लागु है।
इहांक आदिबासि भुंएक रइकखाक खातिर CNT और SPT 1908 ले लागु आहेइक।

➪ उरांव, माल पहाड़िया आर सबर द्रविड़ प्रजाति के हैं।
उरांउ, माल पहाड़िआ आर सबर दड़बिड़ परजातिक हड़ हेकत।

➪ खड़िया, बिरहोर तथा असुर छोटानागपुर की सबसे प्राचीन जनजातियाँ है।
खड़िया, बिरहोर आर असुर छटानागपुरकर आदिम जनजाति हेकेइक।

➪ जनजातियों के झारखण्ड आगमन का क्रम है - खड़िया > बिरहोर > असुर > कोरवा > मुंडा > उराँव > हो > चेरो > खरवार > भूमिज > संताल।
जनजातिक झारखंडे एहे डुल आउलाहात - खड़िआ > बिरहउर > असुर > करबा > मुंडा > उरांउ > हउ > चेरअ > खरबार > भुमिज > संताल।

➪ मुंडाओं ने नागवशों की स्थापना किया।
मुंडा सउभे नाग बंसकर थापना करलआहेइक।

➪ 1000 ई. पू. तक सभी जनजातियाँ छोटानागपुर क्षेत्र में बस चुकी थी।
1000 इ. पु. तड़िक सउब जनजातिंइ छटानागपुर मुलुके बसबास करिलेल रहलेइक।

| शब्द कोष | | |
|---|---|---|
| हैं - हेकेइक, | आगमन - आउअल, | सभी - सउभे, |
| क्रम - पाइत, | स्थापना - थापना, | किया - करलाक, |
| तक - तड़िक, | जमीन - भुंइ | कुल - सउब, |
| क्षेत्र - मुलुक | बसना - बसअ बास | |

## 3. जनजातीय विद्रोह

### धल विद्रोह (1767-1777 ई0)

- धल विद्रोह का नेतृत्व जगन्नाथ धल ने किया था।
  धल बादिक अगुआनि जगनाथ धाले करल रहलेइक।
- इस विद्रोह का क्षेत्र धालभूम (सिंहभूम) था।
  एहे बादिकर छेतरअ धालभुम दिगे रहलेइक।
- यह विद्रोह अंग्रेजों के विरूद्ध 10 वर्षों तक चला था।
  एहे बादि अंगरेजेक बादिंइ 10 बछर तड़िक चलल रहलेइक।

### पहाड़िया विद्रोह (1765-1782 ई)

- यह विद्रोह पहाड़िया जनजाति के नेतृत्व में 1765 ई. को हुई थी।
  इ बादि पहाड़िआ जनजातिक हांथे 1765 साले हेल रहलेइक।
- पहाड़िया जनजाति राजमहल, गोड्डा और पाकुड़ के तराई क्षेत्र में निवास करती है।
  पाहाड़िआ जनजाति सउब राजमहल, गउडडा आर पाकुड़ेक बने रहत।
- यह माले, मालरे, माल, शबर, सौरिया, असल पहाड़िया, सानगी आदि नाम से जाना जाता है।
  एके माले, मालरे, माल, सबर, सउरिआ, असल पहाड़िआ, सानगि आरअ नामले जानल जाइक।
- इस विद्रोह का सरदार रमना आहड़ी (दुमका), करिया पुलहर (दुमका), चंगरू, सांवरिया (राजमहल) तथा नायब सूरजा थे।
  इ बादिकर सरदार रमना आहड़ि (दुमका), करिआ पुलहर (दुमका) चगरु सांउअरिआ (राजमहल) आर नाइअब सुरजा रहल।
- 1778-79 ई0 का विद्रोह काफी प्रभावशाली था।
  1778-79 माहान बादि बिरहद रुपे हेल रहलेइक।
- इस विद्रोह में रानी सवेश्वरी ने भी भाग ली थी।
  इ बिदरहंइ रानि सबेसरिहुं हिसा लेल रहलेइक।
- वह महेशपुर राजा की रानी थी।
  उ महेसपुर राजाकर रानि हेकलि।

### रामगढ़ विद्रोह (1772-1782 ई0)

- इस विद्रोह का नेता रामगढ़ के राजा मुकुंद सिंह थे।
  इ बादिक नेता रामगढ़ेक राजा मुकुंद सिंह रहल।

## तमाड़ विद्रोह (1782-1820 ई0)

- तमाड़ विद्रोह का प्रारंभ भोला नाथ सिंह ने किया था।
  तमाड़ बादिकर मुहाइन भलानाथ सिंगे करल रहलेइक।
- इस विद्रोह में मुंडा एवं उराँव जनजाति ने जमीदारों एवं अंग्रेजों के खिलाफ आवाज बुलंद किये थे।
  एहे बादिंइ मुंडा आर उरांउ जनजाति सउभे जमिंदार आर अंगरेजेक बादिंइ डाढ़ाल रहला।
- 1807 ई0 में तमाड़ के दुखा मानकी ने विद्रोह किया था।
  1807 साले तमाड़ेक दुखा मानकिंइ बिदरह करल रहलेइक।
- 1819-1820 ई0 में रूगु एवं कोनता ने विद्रोह किया था।
  1819-1820 साले रुगु आर कनतांइ बिदरह करल रहलेइक।

## तिलका आंदोलन (1783-1785 ई0)

- तिलका आन्दोलन का प्रारंभ 1783 ई. में तिलका माँझी ने किया।
  तिलका हुलकर मुहाइन 1783 इसबिंइ तिलका माझिंइ करल रहलेइक।
- इस आंदोलन का उद्देश्य अंग्रेज को झारखण्ड से भगाना था।
  एहे हकुलकर धेइ अंगरेजके झारखंडले हाटाएक रहलेइक।
- तिलका माँझी सखुआ पत्ता में विद्रोह का संदेश भेजता था।
  तिलका माझिंइ सारअइ पाते बिदरहकर बेउरा पाठाउहेलेइक।
- तिलका माँझी ने छापामार युद्ध किया था।
  तिलका माझिंइ छापामार लड़ाइ करल रहलेइक।
- तिलका माँझी ने अंग्रज सेना नायक अगस्टीन क्लीवलैंड को मारा था।
  तिलका माझिंइ अंगरेजेक सेना नाइअक अगसटिन किलिबलेंडके मारल रहलेइक।
- तिलका माँझी को 1785 ई. में भागलपुर में फाँसी दे दिया गया।
  तिलका माझिके 1785 सालें भागलपुरे फांसि देइ देल।
- तिलका माँझी शहीद होनेवाले पहले विद्रोही थे।
  तिलका मांझि सहिद हेउइआ मिर बिदरहि हेकल।

## चुआड़ विद्रोह (1760-1832 ई0)

- चुआड़ों ने लगान के खिलाफ अंग्रेजों का विद्रोह किया था।
  चुआड़ सउभे दालालि नि दिएक खातिर अंगरेजेक बादिंइ बिदरह करल रहल।
- चुआड़ विद्रोह का क्षेत्र धालभूम, मानभूम, बाकुड़ा और झाड़ग्राम में था।
  चुआड़ बिदरह धालभुम, मानभुम, बाकुड़ा आर झाड़गेराम मुलुके हेल रहलेक।

- चुहाड़ विद्रोह पांच चरणों में हुआ था।
  चुहाड़ बादि मांचा खेपे हेल रहलेइक।
- चुआड़ बिद्रोह के प्रथम चरण के महानायक रघुनाथ महतो थे।
  चुआड़ बिदरहकर मिरा खेपेक मुखिआ रघुनाथ माहातअ हेकल।
- 5 अप्रेल 1778 को सिल्ली के गड़तेतइर नामक स्थान से इसे गिरापतार किया गया।
  5 अपरेल 1778 सिललिकर गड़तेतइर नामेक ठाइनले एके पुलिसे धरिलेल रहल।
- चुहाड़ विद्रोह का दूसरा चरण 1782-1789 के बीच हुआ था।
  चुहाड़ बादिक दउज खेप 1782-1789 कर बिचे हेल रहलेइक।
- द्वितीय चरण के विद्रोह का प्रमुख नेता रायपुर जमींदारी का राजा दुर्जन सिंह था।
  दउज खेपेक मुखिआ राइपुरेक जमिंदारेक राजा दुरजन सिंह हेकल।
- चुहाड़ विद्रोह की तीसरा चरण 1793-1800 के बीच हुआ था।
  चुआड़ बिदरह कर तेज खेप 1793-1800 कर बिचे हेल रहलेइक।
- तीसरा चरण जमीन निलामी के खिलाफ था।
  तेज खेप जमिन निलामेक बादिंइ हेल रहलेइक।
- चौथे चरण का नेतृत्व गंगा नारायण सिंह ने किया था।
  चारा खेपेक मुखिआ गंगा नाराइअन सिंगे करल रहलेइक।
- गंगा नारायन सिंह बराहभूम के राजा बने थे।
  गंगा नाराइअन सिंग बराहभुंइ कर राजा बनललेइक।
- चुआड़ विद्रोह का पाचवां चरण 1850 को प्रारंभ हुआ।
  चुआड़ बादिक मांचा खेप 1850 माहान मुहाइन हेल रहलेइक।
- पाचवां चरण बंगाल में नील के खेती के खिलाफ था।
  मांचा खेप बंगाले निलकर खेतिक बादिंइ हेल रहलेइक।
- गोकुल महतो, उदय तांति एवं उदय महतो विद्रोह के पाँचवें चरण के प्रमुख नेता थे।
  गउकुल माहातअ, उदइ तांति आर उदइ माहातअ बादि कर मांचा खेपेक मुखिआ हेकल।
- इस विद्रोह में उड़ीसा के पाइका जनजातियों ने भी साथ दिया।
  इ बिदरहंइ उड़िसाकर पाइक जनजातिहुं संग देल रहलेइक।

## चेरो आन्दोलन (1800-1818 ई0)

- इस विद्रोह का नेतृत्व भूखन सिंह ने किया था।
  एहे बिदरह कर अगुआनि भुखन सिंगे करल रहलेइक।
- इस विद्रोह में अंग्रेजों की कर नीति का विरोध किया गया था।
  इ बिदरहंइ अंगरेजेक दलाल नितिकर बादिंइ करल रहलेइक।

➪ इस विद्रोह में पलामू के चेरो जनजाति ने भाग लिया था।
एहे बिदरहंइ पलामुकर चेरअ जनजाति सउभे हिसा लेल रहल।

## हो विद्रोह (1820-1821 ई0)

➪ यह विद्रोह सिंहभूम में हुआ था।
इ बिदरह सिंहभुमे हेल रहलेइक।

➪ यह कोल विद्रोह का ही प्रथम चरण जो 1820-21 में हुआ था।
इटा कउल बादि करेइ मिर खेप जेटा 1820-21 साले हेल रहलेइक।

➪ प्रथम चरण में 'हो' जनजातियों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया था।
मिरा खेप माहान 'हउ' आदिबासिक हड़ेक सउबले बेसि जउगदान देल रहलेइक।

➪ कोल विद्रोह का दूसरा चरण 1831-32 में हुआ था।
कउल बिदरह कर दउज खेप 1831-32 माहान हेल रहलेइक।

➪ इस विद्रोह को मेजर रफसेज एवं कैप्टन विलकिंसन ने दबा दिया।
इ बिदरहके मेजर रफसेज आर कपटेन बिलकिंसने दबाइ देल।

## कोल विद्रोह (1831-1832 ई0)

➪ कोल विद्रोह दो चरणों में हुआ था।
कउल बिदरह दना खेपे हेल रहलेइक।

➪ कोल विद्रोह का प्रथम चरण 1820-21 ई0 के बीच हुआ था।
कउल बिदरह कर मिरा खेप 1820-21 कर बिचे हेल रहलेइक।

➪ इस विद्रोह में मुण्डा जनजातियों की मुख्य भूमिका थी।
एहे बिदरह माहान मुंडा जनजातिकर गड़ा हांथ रहलेइक।

➪ सिंहभूम, पलामू, मानभूम इस विद्रोह का क्षेत्र था।
सिंहभुम, पलामु, मानभुमे एहे बिदरह कर मुलुक रहलेइक।

➪ इस विद्रोह का प्रमुख कारण भूमि संबंधी असंतोष था।
इ बिदरहकर गड़ा कारन जमिनले जड़ाइल सांतापले रहलेइक।

➪ इस विद्रोह का प्रमुख नेता बुधु भगत था।
एहे बिदरहकर मुंधइन नेता बुधु भगत हेकल।

➪ इस विद्रोह से मानकी मुंडा पद्धति का जन्म हुआ।
एहे बिदरहले मानकि मुंडा पदतिकर जनम हेल।

➪ 1831-32 में सिंगराई और बिन्दराई के नेतृत्व में कोल विद्रोह का भयानक रूप सामने आया।
1831-32 माहान सिंगराइ-बिंदराइ कर देखा-सुनाइ कउल बिदरह एक बिरहद धंचर बनलेइक।

➪ विदेशी इतिहासकारों ने 'ग्रेट कोल विद्रोह' की संज्ञा दी।
बिदेसेक इतिहास गढ़इआ सउभे एके 'माहान कउल बादि' ले दांजल रहलेइक।

## भूमिज विद्रोह (1832-1833 ई0)

➪ भूमिज विद्रोह गंगा नारायण के नेतृत्व में हुआ था।
भुमिज बिदरह गंगा नाराअइनकर अगुआंइए हेल रहल।

➪ इस विद्रोह का कारण लगान व्यवस्था था।
एहे बिदरहकर कारन दलालि बेबसथा रहल।

## संताल विद्रोह (1855-1856 ई0)

➪ इस विद्रोह को संताल आंदोलन या संताल हूल भी कहा जाता है।
एहे बिदरहके संताल बिदरअ बा संताल हुलअ कहल जाइक।

➪ संताल विद्रोह के प्रणेता सिद्धू-कान्हू, चांद और भैरव थे।
संताल बिदरह कर बिंड़ा सिधु, कान्हु, चांद आर भेइरब कर हांथे रहलेइक।

➪ इस आंदोलन में 'अपना देश और अपना राज' का नारा दिया।
एहे हुले 'आपन देस आर आपन राइज' कर नारा देल रहल।

➪ इस आदोलन को संताल परगना का प्रथम जनक्रांति कहा जाता है।
एहे हुलके संताल परगनाक मिर जनकरांति कहल जाइक।

➪ इस विद्रोह के बाद संताल परगना का निर्माण हुआ।
एहे बिदरहकर परे संताल परगनाकर थापना हेल आहेइक।

➪ विद्रोह के पहले इस क्षेत्र का नाम दामिन-ऐ-कोह था।
बिदरहकर पेहिल संताल परगनाक नाम दामिन-ए-कउल रहलेइक।

## सरदारी आन्दोलन (1858-1895 ई0)

➪ इस आंदोलन का नेतृत्व मुंडा सरदारों ने किया था।
एहे हुलकर अगुआइ मुंडा सरदारे करल रहलेइक।

## सफाहोड़ आंदोलन (1870 ई0)

➪ इस आंदोलन के जन्मदाता लाल हेम्ब्रम था।
एहे हुलकर जनमदाता लाल हेमरम हेकल।

➪ लाल हेम्ब्रम को लाल बाबा भी कहा जाता था।
लाल हेमरमके लाल बाबाउ कहल जाहेलेइक।

➪ इस आंदोलन के लोगों को सफाहोड़ी कहा जाता था।
एहे हुलके हड़े सफाहउड़ि कहल जाहेलेइक।

## खखार आंदोलन (1874 ई0)

➪ इस आंदोलन का नायक भागीरथ माँझी था।
एहे हुलकर नाइअके भागिरथ मांझि हेकल।

➪ भागीरथ माँझी का जन्म गोड्डा जिले में हुआ था।
भागिरथ माझिक जनम गउडडा जिलांइ हेल रहलेइक।

➪ भागीरथ माँझी को आदिवासियों का 'बाबा' कहा जाता था।
भागिरथ मांझिके आदिबासिकर 'बाबा' कहे हेलथिन।

## मुण्डा विद्रोह (1895-1899 ई0)

➪ इस आंदोलन के नेता बिरसा मुंडा थे।
एहे हुलकर अगुआ बिरसा मुंडा हेकल।

➪ इस आंदोलन को उलगुलान (महान हलचल) कहा जाता है।
एहे हुलके उलगुलान कहल जाइक।

➪ इस आंदोलन का क्षेत्र - खूँटी, राँची, तमाड़, बसिया, चक्रधरपुर आदि था। एहे हुल - खुंटि, रांचि, तामाड़, बसिआ आर चकरधरपुर मुलुक तड़िक पसरल रहलेइक।

## टाना भगत आंदोलन (1814 ई0)

➪ इस आंदोलन का नेतृत्व जतरा भगत ने किया था।
एहे हुलकर अगुआइ जातरा भगअते करल रहलेइक।

➪ इस आंदोलन का क्षेत्र छोटानागपुर था।
एहे हुल गउटे छटानागपुर मुलुके रहलेइक।

➪ इस आंदोलन में अहिंसा को 'अमोध अस्त्र' कहा गया।
एहे हुले अहिंसाके 'अमध असतर' कहल रहलेइक।

## शब्द कोष

| | | | |
|---|---|---|---|
| विद्रोह - बिदरह, | यह - इ, | विरूद्ध - बादि, | वर्ष - बछर |
| चला - चलल, | था - रहल, | जो - जेटा | सम्पूर्ण - गउटे |
| खिलाफ - बादिंइ, | आवाज - गुइल | से - ले, | चरण - खेप, |
| खदेड़ा - खेदलाक | भेजना - पाठा, | संदेश - बेउरा | फैलाव - पसरन, |
| असंतोष - साताप, | दबाना - दाबा | दिया - देउआ | प्रथम - मिर |
| प्रमुख - मुंधइन, | कारण - कारन, | भूमि - जमिन | निर्माण - निरमान |
| संबंधी - जड़ाइल, | विवाद - झंझट, | नेतृत्व - हांथे | भयानक - बिरहद |
| लगान - दालालि | व्यवस्था - बेबसथा | नारा - नारा | स्थापना - थापना, |
| हुआ - हेल, | आंदोलन - हुल | जनक्रांति - जनकरांति, | |

# 4. प्रमुख स्वाधीनता सेनानी
## धरती आबा भगमान बिरसा मुंडा

- बिरसा मुंडा का जन्म अड़की प्रखंड के उलीहातु ग्राम में 15 नवंबर 1875 ई. को हुआ था।
  बिरसा मुंडाकर जनम अड़कि परखंडेक उलिहातु गांउए 15 नउम्बर 1875 साले हेल रहलेइक।
- बिरसा के पिता का नाम सुगना मुंडा था।
  बिरसाकर बापेक नाम सुगना मुंडा हेकल।
- बिरसा के माता का नाम करमी था।
  बिरसाकर माइएक नाम करमि हेकल।
- बिरसा के पूर्वज चुटू मुंडा और मागू मुंडा थे।
  बिरसाकर पुरखा चुटु मुंडा आर मागु मुंडा हेकल।
- रंका और लाका मुंडा ने उलीहातु गांव बसाया।
  रंका आर लाका मुंडांइ उलिहातु गांउके बसाइल रहलेइक।
- उलीहातु अड़की प्रखंड में है।
  उलिहातु अड़कि परखंडे आहेइक।
- बिरसा का बचपन जलकंद गांव में बीता।
  बिरसाकर छउआलि जलकंद गांउए काटल।
- जलकंद अड़की प्रखंड में है।
  जलकंद अड़कि परखंडे आहेइक।
- बिरसा का प्राथमिक शिक्षा सलगा मीडिल स्कूल में हुई।
  बिरसाकर पढ़ाइएक मुहाइन सलगा मिडिल इसकुले हेल रहलेइक।
- बिरसा ने 'साहब - साहब एक टोपी है' का नारा दिया।
  बिरसांइ 'साहब - साहब एक टोपी हेकेइक' कर नारा देल रहलेइक।
- बिरसा के गुरू आनंद पाँडे थे।
  बिरसाकर गुरु आनंद पांडे रहल।
- आनंद पाँडे बंदगाँव का निवासी था।
  आनंद पांडे बंदगांउकर बसिंदा हेकल।
- आनंद पाँडे स्वाँसी जाति का एक धार्मिक व्यक्ति था।
  आनंद पाँडे सांउआंसि जाइतेक एक धारमिक हड़ हेकल।
- बिरसा 1895 ई. तक एक पैगम्बर बन गया।

बिरसा 1895 साल तड़िक एक पेगेंबर बनि गेल।

➪ बिरसा ने बिरसाईत धर्म का सूत्रपात किया था।
बिरसांइ बिरसाइत धरमकर गुड़ि राखल।

➪ बिरसा के आंदोलन का पृष्ठभूमि भूमि का था।
बिरसाक हुलकर ठेहड़ जमिनेक हेकल।

➪ बिरसा ने पहला राजनीतिक कार्यक्रम 1895 में पेश किया।
बिरसांइ पेहिल राजनितिक काजअकरम 1895 साले करल।

➪ बिरसा ने 'हेन्दे राम्बड़ा रे केच्चे - केच्चे, पुण्डी राम्बड़ा रे केच्चे का नारा दिया।
बिरसांइ 'हेन्दे राम्बडा रे केच्चे - केच्चे, पुंडी राम्बडा रे केच्चे' कर नारा देल रहल।

➪ इस नारे का अर्थ है - गोरे ईसाईयों का सर काट दो।
इ नाराक माने हेकेइक - चेरका इसाइकर मुंड़ काटि देउआ।

➪ 3 फरवरी 1900 ई. को बिरसा गिरफ्तार हुए।
3 फरउअरि 1900 माहान बिरसा धराइ हेल।

➪ उन्हें राँची जेल में भेज दिया गया।
अके रांचि जेहेल पाठाइ देल गेल।

➪ जेल में हैजा से उनकी मृत्यु हो गई।
जेहेले हेजाले उ टिडुआइ गेल।

➪ 9 जून 1900 ई. के सुबह 9 बजे बिरसा शहीद हो गये।
9 जुन 1900 सालेक बिहाने 9 टांइ बिरसा सहिद हेइ गेल।

➪ बिरसा विद्रोह 'उलगुलान विद्रोह' के नाम से प्रसिद्ध है।
बिरसा बिदरह 'उलगुलान बिदरह' नामले नामकरा आहेइक।

## शब्द कोष

| | | | |
|---|---|---|---|
| जन्म - जनम | ग्राम - गांउ | हुआ - हेल | पिता - बाप, |
| का - कर | नाम - नाम | माता - माइ | पूर्वज - पुरखा |
| और - आर | थे - रहल | बसाया - बसाल | बीता - काटल |
| हुई - हेल | बचपन - छउ | आलि दिया - देल | गुरू - गुरु |
| निवासी - बंसिदा | जाति - जाइत | धार्मिक - धारमिक | प्रसिद्ध - नामकरा |
| व्यक्ति - हड़ | पैगम्बर - पेगंबर | बनना - बनेक | भूमि - जमिन |
| पहला - मिर | पेश - हाजिर | गोरा - चेरका | सर - मुड़ि |
| काटना - काटेक | गिरफ्तार - धरल | हुए - हेल | सुबह - बिहान |
| शहीद - सहिद | गये - गेल | विद्रोह - बिदरह | |

## तिलका माँझी

- तिलका माँझी का जन्म संताल परिवार में हुआ था।
  तिलका मांझिकर जनम संतालेक डिंढ़ाइ हेल रहलेइक।
- उनका जन्म 11 फरवरी 1750 ई. में तिलकपुर गाँव में हुआ था।
  अकर जनम 11 फरबरि 1750 साले तिलकपुर गांउए हेल रहलेइक।
- तिलकपुर सुल्तानगंज में स्थित है।
  तिलकपुर सुलतानगंजे आहेइक।
- तिलका माँझी ने अंग्रेज अधिकारी 'क्लीवलैंड' को मारा था।
  तिलका माझिंइ अंगरेज अधिकारि 'क्लीव लैंड' के मारल रहलेइक।

## तेलंगा खड़िया

- तेलंगा खड़िया का जन्म मुरगू (नागफेनी) में हुआ था।
  तेलंगा खड़िआकर जनम मुरगुंइ (नागफेनि) माहान हेल रहलेइक।
- यह आंदोलन जमीन वापसी और अपना हक के लिए था।
  एहे हुल जमिन घुराएक आर निजेक हककर खातिर हेकल।

## भगीरथ माँझी

- भगीरथ माँझी खरवार जाति के नेता थे।
  भगिरथ मांझि खरबार जाइतकर अगुआ हेकल।
- इनका जन्म गोड्डा जिले में हुआ था।
  एकर जनम गउडडा जिलांइ हेल रहलेइक।
- इन्होंने खरवार आंदोलन (1874 ई॰) का नेतृत्व किया।
  एंइ खरबार हुलकर (1874 ई.) अगुआ करल रहलेइक।

## बुधु भगत

- बुधु भगत का जन्म सिलागाई ग्राम (चान्हों) में हुआ था।
  बुधु भगतकर जनम सिलागाइ गांउए (चान्हो) हेल रहलेइक।
- वे उराँव जनजाति के थे।
  उ उरांउ जनजातिकर हेकल।
- बुधु भगत के सिर के लिए अंग्रेजों ने 1000 रु. इनाम रखे थे।
  बुधु भगतकर मुड़ेक खातिर अंगरेजे 1000 टाका इनाम राखल रहलेइक।

## बिरसा मुण्डा

- बिरसा ने उलगुलान (महान हलचल) विद्रोह का नेतृत्व किया।
  बिरसांइ उलगुलान बिदरहकर अगुआ करल रहल।
- बिरसा मुण्डा को आज भगवान के रूप में पूजे जाते हैं।
  बिरसा मुंडाके आइज सिंगबंगाके पारा पुजल जाइक।

## सिद्धु-कान्हु

- इनका जन्म भगनाडीह (संताल परगना) में हुआ था।
  एकर जनम भगनाडिहें (संताल परगना) हेल रहलेइक।

## शेख भिखारी

- इन्हें अमर शहीद शेख भिखारी कहा जाता है।
  एके अमर सहिद सेख भिखारि कहल जाइक।
- शेख भिखारी उमराँव सिंह के दीवान थे।
  सेख भिखारि उमरांउ सिंगकर दिउआन हेकल।
- इनका जन्म खुदिया ग्राम (ओरमांझी) में हुआ था।
  एकर जनम खुदिआ गांउए (ओरमाँझी) हेल रहलेइक।
- इन्हें 8 जनवरी 1858 ई॰ को फाँसी दे दी गई।
  एके 8 जनुअरि 1858 साले फांसि देल रहलेइक।

## ठाकुर विश्नाथ शहदेव

- इनका जन्म सतरंजी में हुआ था। (12 अगस्त 1817 ई॰)
  एकर जनम सतरंजिंइ हेल रहल। (12 अगस्त 1817 ई॰)
- 16 अप्रैल 1858 ई॰ को इन्हें फाँसी दे दी गई।
  16 अपरेल 1858 साले एके फांसि देल गेल रहल।
- फाँसी का स्थान वर्त्तमान जिला स्कूल राँची के द्वार के सामने कदम का पेड़ था।
  फांसिक ठाइन, एखनेक जिला इसकुल रांचिक दुआइरेक पासेक कदम गाइछ रहल।

## पाण्डेय गणपत राय

- इनका जन्म लोहरदगा जिले के भंडरा प्रखण्ड में हुआ था।
  एकर जनम लहरदगा जिलाक भंडरा परखंडे हेल रहलेइक।
- इनका गाँव का नाम भौंरो था।
  एकर गांउकर नाम भउंरअ हेकल।

➪ इन्हें 21 अप्रैल 1858 ई. को जिला स्कूल (राँची) के द्वार पर कदम वृक्ष में फाँसी दी गई।

एके 21 अपरेल 1858 साले जिला इसकुलेक दुआइरेक कदम गाइछे फांसि देल रहलेइक।

## नीलाम्बर-पीताम्बर

➪ नीलाम्बर-पीताम्बर पलामू के दो महान स्वतंत्रता सेनानी थे।

निलामबर-पितामबर पलामुकर दुइ गअ माहान साधिनता सेनानि हेकला।

➪ ये दोनों गुरिल्ला युद्ध में निपुण थे।

एखरा दुइअ गुरिला लड़ांइए धरंधर रहला।

## टिकैत उमराव सिंह

➪ इनका जन्म खटंगा (ओरमाँझी) ग्राम में हुआ था।

एकर जनम खटंगा (ओरमाँझी) गांउए हेल रहलेइक।

➪ ये बंध गाँव राजपरिवार के थे।

एंइ बंध गांउ राजपरिबारले हेकल।

➪ टिकैत उमराव सिंह तथा शेख भिखारी को चुटुपाली घाटी में फाँसी दी गई थी।

टिकेत उमरांउ सिंह आर सेख भिखारिके चुटुपालि घाटिंइ फांसि देल रहलेइक।

➪ इन दोनों को 8 जनवरी 1858 ई. को दी गई थी।

एखराके 8 जनवरी 1858 साले देल गेल रहलेइक।

## रघुनाथ महतो

➪ रघुनाथ महतो का जन्म 1738 ई0 में घुटियाडीह, थाना - नीमडीह (सराइकेला) में हुआ था।

रघुनाथ माहातक जनम 1738 साले निमडिह थाना भितर घुटिआडिह गांउए (सराइकेला) हेल रहलेइक।

➪ ये चुहाड़ बिद्रोह के माहानायक थे।

एखरा चुआड़ बिदरहकर माहानाइक हेकल।

➪ इन्होंने फाल्गुन पुर्णिमा 1769 को एक विशाल सभा में ब्रिटिश हूकूमत कि खिलाफ क्रांति का बिगुल फुका।

एखरा फागुन पुरनिमा 1769 साले एक सभांइ बिरटिस सासनकर बादिंइ हुलेक बांसि फुकल।

➪ 18 मइ 1774 ई0 को बड़ाभूम के बागमुंड़ी पहाड़ में पुलिस के साथ भारी गोली बारी हुई, परन्तु रघनाथ महतो भागने में सफल हुए।

18 मइ 1774 साले बड़ाभूमकर पासेक बागमुंड़ि पाहाड़ें पुलिसेक संग लड़ाइ हेल, मनतुक रघुनाथ माहातअ उहांले पाराइ गेल।

➪ इन्होंने कई तहसिलदारों को मारते-पिटते, घसिटते हुए गाँव से बाहार खदेड़ा था।
एखरा केतेइ दालालि लेउइआके मारि-पिटिक गांउले बाहिर करल रहल।

➪ 5 अप्रेल 1778 ई0 को ये 'गड़तैंतेइर' (किता, राँची) नामक स्थल पर पुलिस मुठभेड़ में शहीद हो गये।
5 अपरेल 1778 साले इअ गड़तेतेइर (किता, रांचि) नामेक ठाइने पुलिसेक गुलिंइ सहिद हेइ गेल।

## जतरा भगत

➪ जतरा भगत का जन्म 1888 ई॰ में चिंगरी (गुमला) में हुआ था।
जतरा भगतकर जनम 1888 सालें चिंगरिंइ (गुमला) हेल रहल।

➪ ये टाना भगत आंदोलन के प्रणेता थे।
एखरा टाना भगत हुलकर परनेता हेकल।

## बाबु राम नारायण सिंह

➪ इनका जन्म 19 दिसम्बर 1885 ई. को तेतरिया ग्राम (चतरा) में हुआ था।
एकर जनम 19 दिसंबर 1885 साले तेतरिआ गांउए (चतरा) हेल रहल।

➪ महात्मा गाँधी ने इन्हें छोटानागपुर केशरी की उपाधि दी थी।
महात्मा गांधिंइ एके छटानागपुर केसरि कर उपाधि देल रहलेइक।

➪ इनका प्रसिद्ध पुस्तक 'स्वराज लूट गया' है।
एकर नामकरा पथि 'सउराज लुटाइ गेल' हेकेइक।

## नादिर अली

➪ नादिन अली का जन्म झारखंड के चतरा जिला में हुआ था।
नादिर अलिक जनम झारखंडेक चतरा जिला माहान हेल रहलेइक।

➪ नादिर अली 1857 ई. के सिपाही विद्रोह में सहीद हुए थे।
नादिर अलि 1857 साले सिपाहि बादिंइ सहिद हेल रहल।

❖❖❖

# 5. झारखंड के महापुरूष एवं झारखंड आंदोलनकारी

➪ बिनोद बिहारी महतो का जन्म बलियापुर, धनबाद में 1923 को हुआ था।
बिनउद बिहारि माहतक जनम बेलिआपुर धानबादिंइ 1923 साले हेल लेइक।

➪ शिवाजी समाज की स्थापना बिनोद बाबु ने 1967 में किया था।
सिबासि सामाजेक थापना बिनउद बिहारि माहतंइ 1967 साले करल रहलेइक।

➪ इस आंदोलन के तहन उन्होंने तबे कुचले समाज को महाजन के चंगुल से बचाने का मूहिम चलाया
एहे हुलेक दारांइ एखरा गरिब हड़के माहाजनेक हाथले छाड़ाइएक कसनि करल।

➪ इसको झारखंड आंदोलन के मसीहा कहां जाता है।
एके झारखंड हुल कर मसिहा कहल जाइक।

➪ इन्होंने 1972 में झारखंड मुक्ति मोर्चा नामक राजनीतिक पार्टी की स्थापना ही है।
एखरा 1972 साले झारखंड मुकति मरचा नामेक राइजनितिक पाटिकर थापना करल।

➪ बिनोद बाबु ने 'माहतअ माझि भाइ भाइ बांगालिर रकतअ चाइ' का नारा दिया था।

➪ कार्तिक उरांव का जन्म गुमला जिला के खौरा टोली नामक स्थान पर 1924 को हुआ था।
कारति उरांउएक जनम गुमला जिलाक खउरा टउलि नामेक जेइगांइ 1924 साले हेल रहलेइक।

➪ ये पहले उरांव आदिवासी इंजिनियर हुए थे।
एखरा मिर उरांउ आदिबासि इंजिनिअर हेकल।

➪ रामदयाल मुंडा का जन्म रांची जिला के तमाड़ परखंड के दिउड़ी नामक गांव में 1939 में हुआ था।
राम देइआल मुंडाक जनम रांचि जिलाक तामाड़ परखंडेक दिउड़ि गांउए 1939 साले हेल रहलेइक।

➪ इन्हें 2010 को पदम श्री की उपाधि प्रदान किया गया।
2010 साले एके पदम सिरि पुरसकार देल रहलेइक।

➪ ये बहुत बड़े लोक कलाकार थे।
एखरा बेजांइ बड़अ पुरखउति कलाकार हेकल।

➪ इन्होंने झारखंडी कलाओं को विदेश में पहुंचाया।
एखरा झारखंडि कलाके बिदेसे पड़चाल।

➪ जय पाल सिंह मुंडा का जन्म खुंटि जिला के टकरा गांव में 03.01. 1903 ई. को हुआ था।
जइपाल सिंह मुंडाक जनम खुंटि जिलाक टकरा गांउए 03.01.1903 साले हेल रहलेइक।

- इनके भारतीय हॉकी टिम के कप्तानी में पहली बार 1928 में अलेंपिक स्वर्ण पदक जिता था।
  एखराक आगुआंइ पेहिल धांउ भारअते हाकि खेइले अलंपिक खेइल माहान सनाक पदक जितल रहलेइक।
- इन्होंने 'झारखंड पार्टी' की स्थापना की थी।
  एखरा झारखंड पाटि कर थापना करल।
- वे पहले झारखंडी आदिवासी आइ. सी. एस. थे।
  एखरा पेहिल धांउ झारखंडेक आदिबासि आइ. पि. एस हेकल।
- शिबु सोरेन को दिसुम गुरू के नाम जाना जाता है।
  सिबु सरेनके दिसुम गुरुक रुपे जानल जाइक।
- बि. पि. केशरी का जन्म रांची जिला के नगड़ी प्रखंड में 1937 को हुआ था।
  बि. पि. केसरिक जनम रांचि जिलाक नगड़ि परखंडे 1937 साले हेल आहेइक।
- ये झारखंड आंदोलन के एक महान क्रांतिकारी साहित्यकार है।
  एखरा झारखंड हुल कर एक माहान करांतिकारि साहितकार हेकत।
- मुकुंद नायक एक महान कलाकार है।
  मुकुंद नाइअक एक बेजांइ बड़अ कलाकार हेकत।
- इनका जन्म सिमडेगा जिले के कोलिबिरा थानांतरगत बोकबा गांव में 15. 10. 1949 को हुआ था।
- प्यारा केरकेट्टा का जन्म 03.06.1903 को गुमला के कइसरा में हुआ था।
  पिआरा केरकेटटाक जनम 03.06.1903 साले गुमलाक कइसरा गांउए हेल रहलेइक।
- इन्होंने अशिक्षित आदिवासियो के हृदय में शिक्षा के दीप जलाये।
  एखरा मुरुख आदिबासिक हिआंइ सिकखाक परदिप जराइल लेइक।
- इन्होंने सूदूर गांवों में कई स्कूलों की स्थापना किये हैं।
  एखरा बन झाड़ेक केतेइ गअ गांउए केतेइ गअ इसकुलेक थापना करल।
- जमसेद जी टाटा ने 1907 में टाटा स्टील पलांट की नीव रखी।
  जमसेद जि टाटांइ 1907 साले टाटा कारखानाक गुड़ि कड़ल।
- जमसेद जी ने पूर्वी भारत में औद्योगिक क्रांति की शुरूआत की है।
  जमसेद जिंए पुरबि भारतें कल कारखानाक करांतिक बिगुल फुकल।
- मनपुरन नायक का जन्म चुटिया, रांची में हुआ था।
  मनपुरन नाइअकेक जनम चुटिआ रांचिंइ हेल रहलेइक।
- मनपुरन नायक को संगीत का 'मांदर सम्राट' कहा जाता है।
  मनपुरन नाइअकके संगितेक 'मांदर समराट' कहल जाइक।

❖❖❖

# 31. कुड़मालिक कबि चिनहाप

## (कुड़मालि के कवि)

कनअ भि साहितेक बाखरा अकर बिसइ-बसतुक अनुजांइ हेउअइक ना कि कनअ बेरा बिसइएक लेइ। कुड़मालि सइभ साहितेक उपर हड़ेक मगज ढेइर परे गेल आहेइक आर आगुअ जदि रहलेइक तअ उटा गनल-चुनलेइ आहेइक। तेंइ कुड़मालि सइभ साहित पाउआइल गेल बिसइ-बसतुक ठेहड़े दना रकमेक परकिति पाउअल जाइक। पेहिल आदि जुगिन काइब जेटांइ भकतिक बाखान पाउआइक दसर हालुक साहित जेटाइ चलति बेराक चहल-पहलेक बा एखनेक हड़ेक मानसिकताक छाप पाउआइक। एहे डुल कुड़मालि साहित रचइआके दना खंड़े खंड़ल गेल आहेइक :-

(1) आदि जुगिन (1950 ले पेहिल) आर

(2) हालुक (1950 ले एखन तड़िक)।

कुड़मालि पाड़सि साहिते आदि जुगिन कबिक पाइते ढेइरे कबि आर काइब आहेइक। जेसन - बाउलदास, बरजुराम तांति, गरांगिआ, रामकिसट गांगुलि, बिनंद सिह, महिपाल।

## 1. आदिकालिन कवि

### 01. बड्डु चंडिदास

बड्डु चंडिदास अना गअ गितकार, संगितकार, साहितकार आर कुड़मालि साहितेक जनक हेकंत। बड्डु चंडिदासेक जनम बांगाले बांकुड़ा जिलाक छातना नामेक गांउए 13-1400 साल माहान हेल आहेइक।

चंडिदास सुरु लिहिं नाइच-गानेक रसिक हेकल। तेंइ छटक बेरा लिहिं इ गांउ-ले-उ गांउ नाइच-गान करे लाइ जा हेलाइ आर सेइ बेरांइ एहे रसिकेक पेरेम जाले, एक दसर जातिक बेटि छउआ फांसि गेलि। उ बिरभुमेक नुनुर गांउएक 'रामि' नामेक धबिन बेटि छउआक संग पिरित करि अकर संगे बिहा करल। तेंइ दुइअके सामाजिक बाइड़ करि देलथिन।

एखराक रचल बिरहद - बिरहद पथि बांगला, उड़िआ आर आसामि पाड़सि माहान आहेइक। मनतुक, एहे पथिगिलांइ कुड़मालिक बेजांइ टान आहेइक, तेंइ एहे पथि गिला कुड़मालि पाड़सि साहितेक हेउएक चाहि।

एकर भितर कुड़मालि गित, कबिता सिरजन करेक एक आलेदाइ बुइद आर हुनअइर रहलेइक, तेंइ एतेक कुड़मालि गित आर कबिता रचल आहेइक। मनतुक, एकर रचल गित कबितागिला एखनउ मखिकेइ आहेइक। छाड़ेक-आधेक पथि माहान उखड़न हेल आहेइक, तअ एकरले ढेइर बेसि आरअ छितराइए आहेइक।

## 02. बरजुराम तांति

बरजुराम तांति कुड़मालिकर एक आदिजुगिन कबि हेकेइक। एकर जनम 1720 साले पं. बांगालेक बाघमुड़िक सारजामहातु गांउए हेल रहलेइक। एकर कबिता माहान हड़कर जिनगिंइ आउअल आपद-बिपदकर छाप पाउआइक। एकर रचल कबिता 'पथें चलाक लेहा नमसकार', 'कुड़मालि फुल फर आर भांउअर', 'कुड़मालि कबि आर काइब' नामेक पथिंइ निखरल आहेइक। एकर रचल नामकरा कबिता एहे डुल आहेइक।

**नर जनम बिधिंइ काहे देल**

भुसा कुटइते नर, बिसरल हरिहर
अंत काले पथ भुलि गेल,
नर जनम बिधिंइ काहे देल - 1

माता-पिता दुरे गेल, दासि पिआरि भेल
गुरु से कपट चित भेल,
नर जनम बिधिंइ काहे देल - 2

बाघ बाघिनि संगे, सांपिनि डंसल अंगे
बिसे संसारे घेरि लेला,
नर जनम बिधिंइ काहे देल - 3

## 03. बिनंद सिंग

हिंदि पाड़सि साहितेक मइधजुगिन कबि सुरदासकर समरथक कबि बिनंद सिंग हेकल। हिंदि साहितें जन ठाइनटा सुरदासेक आहेइक, अहे ठाइन टा कुड़मालि पाड़सि साहिते बिनंद सिंगकर आहेइक।

एकर जनम 1770 साले सिलिक राजा पिरथिबिनाथ सिंगकर छटअ रानिक कंखे हेल। छटअ रानिक 17 गअ छउआ रहलेइक, अकर भितर बिनंद सिंग 'सेंइझला' छउआ हेकल। बिनंद सिंग छुटुक बेरा लिहिं सिधा-साधा रहे हेल। भेस-भुसे केउ निहिं कहइतेल इ राजाक बेटा हेकाइ। एकर मन एबार राजाक डिंढ़ा आंगनाइ बेस निहिं लागे लागल। एकर खातिर अना दिन राजबाड़ि छाड़ि पास करेइ 'चाताम बाड़ि' गांउ आउअल। उहांक बने 'कुमाढापु' बनाइ रहे लागलाइ। एखरा बाकि जिनगिटा परकितिक धारिंइ रहि कुड़मालि गित रचे लागल। एकरेइ खातिर एके झारखंडेक राजा हरिसचंदरअ कहे गेले काकुहुंके कनअ आपति निहिं हेउआ दरकार।

बिनंद सिंग राधा किसनअकर उपासक हेकल। एकर गित माहान राधाकर सिंगार, बिरह आर किसनअकर सिंगार आर हंठ-खेलिकर बाखान पाउआइक। एकर रचल गित/कबिता 'गउचारन', 'कापास बुनल धंपा - धंपा फर' 'दागा' आरअ एकर रचल गित/कबिता ढेइरे पथिंइ उखड़ल आहेइक। जेसन - पथें चेला लेहा नमसकार, कुड़मालि गइद-पइद जुइति, कुड़मालि फुल फर आर भांउअर, एक डंडरा फुल, कुड़मालि कबि आर काइब आरअ पतरिका माहान एकर गित उखड़ल आहेइक।

## 4. दिनानाथ तांति

दिननाथ तांति अना गअ गितकार, तांत बुनकर आर सामाज सुधारक हेकल। एखरा किसनअकर उपासक हेकल। एकर जनम 1840 साले एखनेक झारखंड मुलुकेक सिंगभुम जिलाक पातकम परगनाक भितर निमडिहेक सिरुम नामेक गांउए एक तांतिक आंगनाइ हेल रहलेइक। मनतुक, परमानंद माहातक अनुजांइ एकर जनम 1800 साल लुहुं पेहिल हेउअएक मानल आहेइक। एकर गितले महित हेइके एके झाइलदाक राजांइ बेजांइ मान भरम करल लेइक आर जिबअनेक सेंस निकास तड़िक इहांक राजपरिबारेक रहल। एकर मरन 1907 साले झाइलदाक राइजपरिबारे हेल आहेइक।

एखरा निजेक माइपाड़सि कुड़मालिक छाड़ा पांचपरगना, मुंडारि पाड़सिअ जाने हेल। तेंइ एखरा खालि कुड़मालि गित करेइ असतादि निहिं हेकल आरअ पांचपरगना, मुंडारि पाड़सिहुं गित गाइते माहिर रहल। एखरा भकति धाराक गित, कबिता बेसि भागे जड़े हेल। एकर रचल गित 'बासर सइजा', 'पुतला बध', 'रास पाला', 'बाल किड़ा', 'जल संबाद', 'दधि संबाद', 'रुप बरनन', 'बांसि पाला' आरअ इटासेटा आहेइक। एहे गित गिलांइ भकति रसें लबलबाइ भराइल आहेइक। तअ करुन रसेक बेजांइ बेस चितरनअ हेल आहेइक।

## 5. कबिराज उदइ

कबिराज उदइके अना गअ गितकार, नाटककार, संगितकार, बाजांदारेक हिंसाबे जानल जाइक। एखराक जनम 1860 साले सिंगभुम जिलाक इंचागढ़ परखंडेक चिमटिआ गांउए एक रसिकेक आंगनाइ हेल रहल। तेंइ एखरा छुटुक बेरा लिहिं खुभेइ रसिक बनिगेल। एकर घेचाक एतेइ बेस सुर रहलेइक जे धांउए कनअ जुआन बेटि छउआंइ अनाउले गिते माति जाइ तेलथिन। तेंइ एके जग महनि कलाक धनि कहल जाइक। एकर बिहा एक सुंदर नेचनिक संगे हेल रहल। मनतुक, अकर छउआ पुता निहिं हेल रहलेइक। एकर गित बांगाल, एखनेक झारखंड, उड़िसा तड़िकेक हड़ेक काने बाजे हेलेइक। उ बेरांइ आसे-पासेक कबिक भितर सउबले गुड़िअ सउआद एकरेइ गिते रहलेइक। एके 'कबिराज' लुहुं जानल जाइक। एकर मरन 70 बछरेक उमअइरे 1932 सालेक आसे-पासे हेल आहेइक।

## 6. नरउतम सिंग

नरउतम सिंग अना गअ कुड़मालि गितकार, झुमअइरा, सामाज सुधारक आर हड़ालि बुधकर धनि हेकल। एखरा आदिम जुगिन कबिक भितर भकति धाराक कबि हेकल। एखराक जनम 1862 साले प. बंगालेक पुरलिआ जिलाक झालदा थानाक भितर ताड़ांग गांउए एक मानकि खानदाने हेल रहल।

एखरा खालि कुड़मालि करेइ कबि निहिं हेकल आरअ बांगला माहानुहुं एकर रचल बेजांइ गित आहेइक। एखराके भादरिआ झुमरिक मासटर कहल गेल आहेइक। एकर रचल गिते एखनउ भादर मासटाके गहगहि भुटाइ देइक। एखरा खालि एतनाइ नाइ आरअ रामाइअनकर 'पालाबंदिंइ' बिहा गित कुहुं जड़ल आहात। आइझअ एकर रचल गितें हामराक बिहा दान, तअ करम नाइच नाचत। एखराक मरन बेजांइ हुबेक जिबन काटि 1938 साले हेल रहल।

## 7. रामकिसटअ गांगुलि

रामकिसटअ गांगुलि अना गअ कबि, गितकार, बाजांदार, सामाज सुधारक आर धरम परचारक आर भकति धारा कबि हेकल। एखराक जनम सिंगभुम जिलाक इंचागढ़ थानाक भितर बिरडिह गांउए 02. 02. 1867 साले एक बामहनेक डिढ़ांइ हेल रहल। एकर बाप दुआरिका नाथ गांगुलि। एकर पढ़ा-सुना हरसुंदरपुर गांउए हेल रहलेइक। इसकुले मासटरेक पिटानिक कारन एकर पढ़ाइ छुटललेइक। एकर बादे फेइर घुरि अंइ आर इसकुल निहिं गेल आर नाइच गाने जाइ टेकाइ गेल।

एकर गितेक बेजांइ बड़अ गुन रहलेइक जे सुनेक खातिर गांउ, कुलहिक डांड़िक जेनि छउआ माताइ उठि आउए हेलथिन। एखरा अना गअ उंचअ धरअनेक आर उंचअ बिचारेक कुड़मालि भकति धाराक कबि हेकल। एकर काइबेक बिसइ-बसतु बेजांइ उंचअ धरअनेक आहेइक। एकर काइबेक भाउ बेजांइ गंभिर आहेइक। जेटांइ हड़ेक मानसिकताक भाउ ठुसाइ - ठुसाइ भराइल आहेइक। एखरा 70 बछरेक उमरिंइ 28. 11. 1937 साले एकर गितेक राउ सउब दिनेक पारा एहे धरा माहान मिलि गेल।

## 8. बाउलदास

बाउलदास कुड़मालि पाड़सि साहितेक अना गअ गितकार, सामाज सुधारक बाउल पंथिक कबि हेकल। एखराक जनम एखनेक उड़िसा राइजेक मइउरभंज जिलाक कुड़ता गांउए मटा-मटि 1874 सालेक आसे-पासे हेल रहल। एखराक बापुक नाम जगबंधु मंडल आर बाप किरपा सिंधु मंडल हेकल। एक छटअंइ एकर माइ मरि जाएक कारन एकर लालन-पालन मामाघारे हेल रहलेइक। एकर भितर बाउअल

पंथिक बिचारधारा जनमलेइ रहलेइक। एखराके बेसनब धरमकर परचारक रुपुहुं जानल जाइक। मनतुक, मइउरभंज जिलांइ कुड़मालि पाड़सिक हड़ रहेक कारन एकर परभाब एकर गिते पाउआइक। हिंदि पाड़सि साहिते जन ठाइनटा तुलसिदासेक आहेइक, अहे ठाइनटा कुड़मालि पाड़सि साहितें बाउलदासेक आहेइक।

## 9. दुरजउधन

दुरजउधन कुड़मालि पाड़सि साहितेक एक बेजांइ उंचअ मगजकर गितकार, सामाज सुधारक हेकल। एखराक जनम प. बांगालेक पुरलिआ जिलाक बाघमुंडि थानाक सामनगर गांउए 1861 साले हेल रहल। एखराक बाप जमिदार बिचदिंत सिंगेक देउआन हेकल। एकर बापेक नाम सतरुधंन दास हेकल।

माने एखरा कुड़मालि कबि रामकिसटअ गांगुलिक आसे-पासेक कबि हेकल। एकर गितेक सुर, ताल आर तुक देखि दुरजअधनके बाघमुंडि आर पातकमेक राजांइ निजेक दरबारे गित, झुमइर गाउए लाइ डाकबेइ करअइ तेलेइक। एखराक मरन 96 बछरेक उमरिंइ 1957 साले हेल आहेइक। एखरा राधा किसनक उपासक हेकल। तेंइ एकर गितें सिंगारेक संगे - संगे सामाजिक गित पाउआइक।

## 10. संत कबि महिपाल

संत कबि महिपाल कबिर धाराक कबि हेकल। हिनदि पाड़सि साहिते, जन ठाइन कबिरदासेक आहेइक। अहे ठाइन कुड़मालि पाड़सि साहिते, संत कबि महिपालेक आहेइक। एकर जनम रांचि जिलाक, सिललि थानाक भितर चाइर धाइरले पाहाड़े घेरअल नागेडिअ गांउए 27.01.1907 साले (बांगलाक मते 13 माघ 1313 साले) हेल आहेइक। एकर बाप सिबु माहातअ आर माइ पारति माहातअ हेकल। चासा-भुसाक काम एखरा करइतेल। 1980 साले एंइ एहे मरत भुंइले खाललास पाउअल। एकर रचल कबिर धाराक गित एहे डुल आहेइक-

गित - करम करि करम राजांइ किना देलउ भाइ,
चिल-सिआरेक कथा सुनि रहले भेदाइ -।
मरम जानि धरम सालांइ सिखें हरि नामटा,
मन रे तर पले पले जाहउ गनल दिनटा -।।

महिपालेक एहे गित माहान हड़के खालि धरमेक माला जपि रहले। निहिं कनअ हतेइक। धरम कहि - कहि काहुं धरम निहिं हेइक। धरमेक नाम जपि - जपि गटा जिनगि फुराल आर मरेक बेरांइ आकासे ताकाल तअ खालि हाइनिसास पाउअल। हड़ेक जिबअने हड़के निजेक बुइद आर लुइरेक दारांइ कनअ करेक चाहि।

## 11. संत कबि सिसटिधर

संत कबि सिसटिधर आदि जुगिनेक भकति धाराक कबि हेकल। एखर जनम, प0 बांगालेक मानभुम जिलाक, झाइलदा थानाक भितर 'हेंठ जारगअ' गांउए 5-पुस दिन बेराबार, एंगरेजिक मते 21.12.1898 साले हेल आहेइक। एकर बाप नंदराम सिंग केटिआर आर माइ रुपन बाला देबि हेकल।

सधेक बेटा, कहिके एके पढ़ाएक बेजांइ कसनि करलथिक। मनतुक एंइ पढ़ाइले सात कउस फाराके रहइतेल। तेंइ एकर बापे 1907 साले एकर बिहा देइ देल। एखरा आधातमिक, दारसअनिक आर देहिक बिसइएक खंच गिलाक जबाब कुड़मालि गितेक सुरे देइ हेल। एहे डुल एंइ 'सिसटिले' संत सिसटिधर बनल।

एकरा 'पंचमुंडि', 'हेंठ बुढ़ाडिह' बनडिह, 'तुंबा आर बाघमुड़ि थानाक भितर जिलिंगे आसरम कर थापना करल। एकर रचल 'सबराइज' आर 'जागरन' जेसन कबिता गिलांइ देस भकतिक छाप आहेइन। सिसटिधरे भरतेक नाना रकमेक पाड़सि जानइतेल। मनतुक कुड़मालिक उपर टान बेसिकरि रहलेइक। एकर मरन 1977 सालेक धरन मासे हेल आहेइक।

एकर रचल कुड़मालि गितेक भितर जागरन, सबराज, चास, गुंजा आर कुरथि, काकरअ कथांइ भुलिस ना, उड़िस आर राधा किसनक बारे बेजांइ गित आहेइक। एकर रचल गितगिला नाना करमेक पथिंइ निखरल आहेइक। जेसन - सिसटिधरेक गित, कु0 गइद पइद जुड़ति, पथे चलाक लेहा नमसकार, कुड़मालि कबि आर काइब।

## 12. बुधु माहतअ

बुधु बाबुक ठाइन अना गअ दरबारि कबिक रुपे आहेइक। बुधु बाबु 'बउनइ' राजाकर दरबारि कबि हेकल। बुधु बाबु अना गअ साहितकार, दरबारि कबि, करदानिआ आर झुमइरा हेकल। एंइ एक गांधिबादि बिचार धाराक हड़ हेकल। बुधु बाबुक जनम एखनेक झारखंडेक प0 सिंगभुमकर चकरअधर थानाक भितर 'दुधकुड़ि' गांउए आसिन मासेक (10.10.1890 साले) हेल रहल। एकर बाप गउरांग माहतअ आर माइ मुकता माहातअ हेकल।

छुटुक बेरा लिहिं एकर 'हिआ' नाइच गान दिगे टानांइ तेल। बुधुक पढ़ाइ-लिखाइ चकरअधर पुरेक, बांगला इसकुले सुरु हेल। मनतुक, एकर खेलेक झुंक आर एके रउजे - रउजे इसकुल जाइते असकइत बुझाइतेल। आर मटे टेना केलास तड़िक पढ़ि छाड़ि देल आर एबार झुमइर खेला देखे जाइ लागल आर झुमइरे माति गेल। एकर भितर तुरुत-तापड़ सिजनेक बुइध रहलेइक। बुधु बाबुंइ 'गलबारि' सुरे आखड़ा बंदना पेहिल गितेक सिजन करल आहेइ। जेसन :-

पेहिल बंदना करि
पुरुब पछिमे रे
आनंद मने,
तबे बंदना उतर-दखिन रे ।

सेइ बेरांइ छापाखानाक अभाबे, बेंकटटेसर परेस, बमबइ (Venketesar press, Bombay) माहान पथि उखड़ल रहल। एकर रचल 'करम-गित' नामेक पथि 1850 साले 'खेमराजसिरि किसनअदास' (खेमराजश्री कृष्णदास, बम्बई), बमबइले निखरन हेल आहेइक। एकर गित आर झुमइरले परभाबित हेइके, एके 'बउनाक' राजांइ निजेक राजघारे दरबारि कबिक ठाइन देललेइक। खुस हेइके राजांइ एके 'टेना बिघा' जमिन दाने देल रहल। एकर कलमेक चिसा 1957 सालेक निरन मासे सउब दिनेक पारा डाढ़ाइ गेल।

## 13. भबअ पितानंद अझा

भबअ पितानंद अझा अना गअ गितकार, झुमइरा आर बेइदनाथ धामकर सरदार हेकल। एकराक जनम 1886 साले अना गअ पांड़ा बाबाक डिंढ़ाइ हेल रहल।

एकर सिकखा अना गअ नामकरा सेलानन अझाक ठिने हेल रहल। टुएक दिनेक परे एकर माइ-बाप टिडुआइ जाइएक कारन गटा घार-कननाक चापटा एकरे कांधे। जेसे - जेसे जिबनेक बेरा उगे लागल तेसे - तेसे एकर मुड़े दुखानिक जाला बाढ़े लागल आर एकर इहां टेका भार हेउए लागलेइक। तखन लारि-पारिके निजेक डिंढ़ा सउब मटे दना लट टाकांइ बेचि देल। आर उहांले देबघारेक रामपुर गांउए जाइ घार बसालाक। एहे दुखेक बेरांइ अकर बहुंइ बेजांइ हिममत बांधि राखल।

इहां रहि भबअ पितांइ बेजांइ झुमइर रचे आर गाउए लागल। एहे झुमइर कुड़मालि पाड़सिहिं गाउए हेल। एकर झुमइर एबार गटा बिहार, बांगाल, उड़िसा, बांगला देस आर नेपाल तड़िक पड़चि गेल। एकर गित आर झुमइर सुनि जांमतड़ाक राजांइ एके बेजांइ मान-भरम करलेइक आर दान-पाति देलेइक। एकर गित आर झुमइरले परभाबित हेइके भबअ पितानंद झाके बिहार सरकारे 'तामबाक पदकले' सममानित करल आहेइक।

इअ अना गअ भकति धाराक कबि हेकल। भबअ पितानंद अझांइ हिंदि, बांगला, कुड़मालि, पाड़सि जाने हेल। मनतुक, कुड़मालि पाड़सि दिगे बेजांइ टान रहलेइक। एंइ राधा किसनअकर उपासक हेकल। एकर रचल गिते भकति रस लबलबाइ आहेइक।

❖❖❖

## 2. हालुक कबि

कुड़मालि पाड़सि साहितें हालुक कबिक पांइत बेजांइ बड़अ आहेइक। देस साधिन हेल परे निजेक देस, निजेक चारि, निजेक पाड़सि, माइपाड़सि, निजेक माटिक उपर कुड़मालि हड़ सउभेक टान बाढ़े लागल। अते बछर धअरि बांधाइ आर आनसाइ रहल मने एबार एक नउतुन पाउएक हुबे हिआले बरके लागअल गित, कबिता, नाटक जेसन नाना रकमेक हालुक साहितेक धंचअरे। एहे जुगे ढेइर कबि एखन तड़िक हेला आर एखनउ हेतेइ आहात एहे टांइ हालुक जुगेक निजेक गुन हेकेइक। हालुक जुगे नउतुन - नउतुन जिनिसेक संगे - संगे नउतुन - नउतुन कुड़मालि कबिअ निधड़ बन झाड़ले बाहराइ काइबेक सिरजन कराटा बेजांइ हुबेक कथा हेकेइक।

### 1. केसब चंदरअ टिडुआर

केसब चंदरअ टिडुआर आदिबासि कुड़मि सामाजेक मुल देउआन आर कुड़मालिक घाघुर, पाड़सिबिद, साहितकार, कबि, सामाज सुधारक हेकल। एखराक जनम प. बांगालेक पुरलिआ जिलाक झाइलदा थानाक जारगक करमाडिह गांउए 05.01.1931 साले हेल रहलेइक। एकराक बाप भुखल माहातअ आर माइ जानकि देबि हेकल। एखरा माइ बापेक सेंइझला बेटा हेकल।

एखराक पढ़ा-सुना हेंसला पराइमरि इसकुले 1936 साले मुहाइन हेल, 1941 साले जारगअ मिडिल इसकुल, 1947 साले झाइलदाक सइतअभामा हाइ इसकुलले मेटरिक, एकर परे पिंडराजरा धानबाइदले पराइमरि मासटरेक टेरनिंग लेल आर लखनपुर पराइमरि इसकुले मासटअरेक काम धरल। सेंसे 1995 साले कामठिनले बेसल। एकर चिनहाप निरंजन माहातअ, सिसटिधर केटिआर आर राम पदअ सिंह बाघबानुआरेक संगे हेइके एखराक डहरानिंइ डहरे लागल। 'मुलकि कुड़मालि भाखि बाइसि' नामेक सामाजिक दंहगिक दारांइ पेहिल मिटिंग निजेक गांउ करमाडिहे 1984 साले करल। कुड़मालि सामाजेक आंइख मुंदल हड़के जागाइएक खातिर प. बांगालेक मालदा, चबिस परगना, नदिआ, बांकुड़ा, मेदिनापुर, पुरलिआ; झारखंडेक मानभुम, रांचि, सिंहभुम, धानबाइद, जमसेदपुर, रामगढ़, संथाल परगनाक संग उड़िसाक कुड़मि मुलुके जाइ - जाइ बेजांइ मिटिंग करल। एखराक मरन 05.11.2003 साले हेल।

### 2. बसंत कुमार मेहता

बसंत कुमार मेहताके अना गअ सामाज सुधारक, पाड़सिबिद, सिकखा पेरमि, साहितकार, कबि आर आदिबासि कुड़मि सामाजेक आग डहरुआक हिंसाबे जानल जाइक। एखराक जनम रांचि जिलाक भितर तामाड़ थानाक बारेडिह डाकघारेक दिंदलि खेदुआडिह गांउए 02.04.1929 साले हेल रहल। एखर बापेक नाम पमबल माहातअ आर माइएक नाम परिबा माहातअ हेकल।

बसंत बाबुक पढ़ा-सुना तामाड़ेक गांउएक इसकुले हेल। एकर परे एखरा बिहार इनभरसिटिले सनातक डिगरि लेल। छटक बेरा लिहिं बसंत बाबुक मगज उंचअ बिचारेक दिगे टाना हेलेइक। एखरा सुबास चंदरअ बउसेक बिचार धारासे बेजांइ परभाबित हेल आर 1954 सालले एखरा बांगाल, बिहार, उड़िसा राइजेक कुड़मि जाइतकर बिकासेक खातिर गांउए - गांउए मिटिंग करे लागल।

1975 साले एखराके दुलामि पंचाइतकर मुखिआ बनाल आर मुखिआ पदे रहिके कुड़मालि सामाजेक खातिर बेजांइ बड़अ काम करल। एखराक भितर माइपाड़सिक उपर पेरेम एक छटअलेइ रहलेइक। एखरा 'अदिबासि कुड़मि सामाज' कर सेंस तड़िक तालेबर बनि रहल। एखराक मरन 22.09.2011 साले निजेक बनाइल डिंढ़ा रांचिक सिंगभुम लउजे हेल।

## 3. लखिकांत मुतरुआर

कुड़मालि पाड़सि साहितें लखिकांत मुतरुआरके अना गअ सामाजिक, साहितकार, पाड़सिबिद, कबि, मासटर, जग-सांभरुआ, दारसअनिकेक रुपे जानल जाइक। जेकर हुंचकानिंइ आर उसासे कुड़मालि, आइज 'लक पाड़सिले' साहितिक पाड़सिक ठाइने ठाइन मेड़िआइल आहेइक।

लखि बाबुक जनम झारखंडेक बउकारअ जिलाक चास थानाक भितरे कुराक पासेक एक छुटु पारा गांउ भेंडरअ माहान 7 निरन 1939 (एंगरेजिक मते 22.04.1939 साले) हेल आहेइक। एकर बाप राखाल मुतरुआर आर माइ बुचि मुतरुआर हेकल। एखरा टेना भाइ आर आर दना बेहिन रहला, एकर भितर एखरा बड़का हेकल।

एकर पढ़ाइ कुरा मिडिल इसकुले 1946 साले मुहाइन हेल आर इहांले 1950 साले माचा केलास पास करल। एकर परे मामा घारे रहिके 1956 साले बारमेसिआ हाइ इसकुलले मेटरिक, 1957-59 साले पिंडराजरा मासटरि टेरनिंग इसकुलले मासटरि टेरनिंग पास करल आर लागालागिंइ मासटरेक काम धरल। मासटरि करइतके 'सनातक' पास करल आर 1973 साले लखिकांत बाबु हेडमासटर बनल आर 30.04.1999 साले कामले बेसल।

एकर तइखत बुइधेक कारन एके 1983 साले 'मुलकि कुड़मालि भाखि बाइसि' कर 'तालेबर' बनाल। एहे गठेक आगुआनिंइ 01. 01. 1984 साले उड़िसा गेल आर उहां गांउए - गांउए घुरि - घुरि मिटिंग करि कुड़मालि कर परचार - परसार करे लागल। एकर कसनिंइ आर करदानिंइ 1977 साले रांचि बिसबिदालइंए 'जनजाति आर छेतरिअ पाड़सि बिभाग' बनल, जेटांइ लखिकांत मुतरुआरके 'मातबरेक' ठाइन देल रहल। 2012 सालेक करम परबेक उपासेक रातिंइ 26 सितंबरे निजेक करदानि आर भरल-पुरल परिबार छाड़ि सउब दिनेक पारा चलि गेल।

## 4. अनंत केसरिआर

हालुक कुड़मालि पाड़सि साहितकर अना गअ आधड़ कबि अनंत केसरिआर हेकत। एखराक जनम 18.03.1950 साले प0 बंगालेक पुरलिआ जिलाक झाइलदा थानाक भितर 'बांगला टांइड़' गांउ तुलिने हेल आहेइक। एखरा माइ-बापेक मेंइझला बेटा हेकत। अनंत बाबुक पढ़ाइ-लिखाइ गांउएक इसकुले 1956 साले सुरु हेल। मामा घारे रहि 1967 साले सइतअभामा बिददापिठ, झाइलदाले एच.एस, 'मारउआड़ि कालेज' रांचिले 1970 साले बि. कांम पास करल। अनंत छुटुक बेरा लिहिं बेजांइ तेज आर गात घामाउआ छउआ हेकल। एकर खुइने लाठि खेला गिला दुइअं पुरखा दिगेले आउअल रहल।

एकर कलमेक चिसनाइ एके पेंहिल पुरसकार 1969 साले 'गांधिक जनम सताबदि' माहान पाउअल। एकर जनम बांगालं हेल आर कुड़मालिंइ लेखा लेखि करइतेल। एकर खातिर बांगला पाड़सिक हड़े एके जेटा-सेटा कहइतेल। मनतुक एंइ आर हिमत निहिं हारल आर 1983 साले निजेक 'जाहलि दंहगि' नाटक दल बनाल। 1983 साले 'कुड़मालि भाखि बाइसि' दल बनाल। जाकर जग-संजुएता अनंत केसरिआर आर 1984 सालेक पेहिल जनुअरिंइ एहे दलेक संग उड़िसा गेल। उहां अनंत बाबुंइ बेजांइ गांउए - गांउए कुड़मालि पाड़सि चारिक परचार करल।

The Rising Sun नामेक बाइबिल पथिकर कुड़मालि पाड़सिंइ पेहिल धांउ अनुबाद करल आहेइक। एकर एहे कामेक खातिर बेजांइ दहगि दिगेले मान सममान देल आहेइक -

| बछर | दंहगिक नाम |
|---|---|
| 1986 | झाड़गराम आदिबासि संस्कृतिक संघ, झाड़गराम, बंगाल। |
| -------- | पुरलिआ दलित साहित संस्कृति, पुरलिआ, प0 बंगाल। |
| 03.11.2002 | आदिबासि लोक संस्कृतिक मंच, चंदनकिआरी, बोकारो, झारखंड। |
| 12.02. 2006 | झारखंडी लोक साहित्य संस्कृति, अखड़ा रांची, झारखंड। |
| 24.03.2007 | आदिबासि लोक संस्कृति बिकास परिषद, रामकृष्णपुर, पाड़ा, पुरलिआ प0 बंगाल |

एकर रचल कुछु कबिताकर अनुबाद स्वेडनकर स्वीडिस पाड़सिंइ डा0 गिरजाइ करल आहेइक। अनंत बाबु एखन झारखंडि पाड़सि साहित्य अखड़ाकर छेतरिअ कमेटि कटसिला कर संजुएता आहात। एकर निखरन पथि - सपन-आपन (कबिता), सांतुल

(केहनि), सिंदुर-काजर (झुमअइर), पिआसि (झुमअइर), परेक लगने बिहा 'नाटक', जाहलि (नाटक) आर बानार, तुरु-धुतु, जाहलि (पतरिका) संजुएता हेकत। एकर दना गंडाले बेसि पथि छापेलाइ बाकि आहेइन।

## 05. सिरिपदअ बसरिआर

एखरा अना गअ सामाजिक, साहितिक आर बेबाहारिक हड़ हेकत। एखराक जनम 29.10.1942 साले आदालत माहतक आंगनाइ हेल आहेइक। सुसिला माहतअ एकर माइ हेकि। जनम भुंइ प0 बांगालेक पुरलिआ जिलाक झाइलदा थानाक भितरे खामहार डाकघारेक 'रानिडिह' गांउए हेकेइक।

छुटुक बेरा लिहिं सिरिपदअ बेजांइ चखअ बुइधेक रहल। एकर खातिर एके 1951 साले 'बड़अ कुहरा' गांउएक इसकुले भरति करि देलथिन। इहां मटे चाइर केलास तड़िक पढ़ल। एकर परे 5-6 तड़िक 'सेकरेट मिडिल इसकुले, जारगअ झाइलदाले पढ़लाइ। 1961 साले सइतअ भामा बिददापिठ, झाइलदाले, सेकेंडरि फाइनल पास करलाक। सेइ बेरांइ धाइर-पासे कालेज निहिं रहल। एकर खातिर आगु दिगे पढ़ेक खातिर 'बरदमान' चलि गेल। उहां 1962 साले 'बरदअमान बिसबिदालइ, बरदअमानकर राइज कालेजले, 'इनभरसिटि इनटेरेंस कउरस' (Univ. Entrance Course) पास करल। एकर परे 1968 साले बिहा हेल। एकर रचल कबिता केहनिगिला 'मानभुम एकसपरेस (Manbhum Expresse), करम दिप, सरहुल, मानभुम दरपन, आनार-बानार, हुब, हालुक कबिता इटासेटा ढेइर पतरिका माहान निखरल आहेइक। एखरा निजेक गित, कबिता, केहनि, झुमइरेक दारांइ हड़के जागाउए लागल। एकर रचल ढेइर बे-निखरन कथा साहितेक पथि आहेइक। जेसन :- करम कथा, बांदना, टुसु, अनंतेक अनंत इटासेटा।

## 6. गिरिस चंदरअ महंता

कुड़मालि पाड़सि साहितें गिरिस चंदरअ महंता अना गअ कबि, झुमअइरा, गितकार, बाजांदार, सामाज सुधारक, सिकखाबिद, साहितकार आर हड़ालि बुइधकर धनि हेकल। पेसाले एखरा राइरंगपुर कउटेक अकिल हेकल। एखराक जनम उड़िसा राइजेक मइउरभंज जिलाक भितर जाहिर कुरता गांउए 10. 03. 1927 हेल रहल। एखराक बापेक नाम मारकंड महंता आर माइ सुमिआ आर गइआमनि हेकल।

एखराके झुमअइर रचनाक माहारथि कहल जाइक। तेंइ चाड़-चपट झुमइर रचि लेइ तेल। एखरा झुमरिक लेइ 'झुमइर आर झुमइर देस' नामेक बिसाल पथि रचल आहात। नाइच गितेक मांइझे एखरा बेजांइ नामकरा हेकल। नेचनि नाइचके हालुक जुगे पड़चाइएक खातिर एखराक बेजांइ बड़अ जगदान आहेइक। एखराक मरन 02. 10. 1998 साले हेल आहेइक।

## 7. सकति पदअ बसरिआर

नाटककार, सकति पदअ बसरिआर हालुक साहितकार हेकत। एकर जनम प0 बांगालेक पुरलिआ जिलाक आड़सा थानाक भितर हेंट जड़िक 'चितिडिह' गांउए मधु मासेक 24.04.1972 साले हेल आहेइक। एकर बाप सुखदेब माहतअ आर माइ बिनापानि हेकेइक। 1979 साले एकर पढ़ा-सुना मामा घारले सुरु हेलेइक। उहांक 'सालइडहर' इसकुले चारा केलास, 1984 साले 'झुमका हाइ इसकुले' माचा केलास, 1989 साले माधमिक केलास आर 1991 साले बेगुनकुदर हाइ सेकेनडेरि इसकुल, बेगुनकुदरले एच.एस.पास करल। एकर परे 1995 साले जे. के. कालेज, पुरलिआले बि. ए. (राइजनिति बिगान) पास करल।

एहे बेरांइ एकर देखा अना गअ माहान कुड़मालि 'कबि अनंत केसरिआरेक' संग हेल। एखरा एबार बेजांइ कुड़मालि नाटक रचे लागल आर गांउए - गांउए खेला करे लागल। एखरा नाटक, आलकापे आरे पाट करत। एखरा कुड़मालि कथा साहितके (गइद साहित) अना गअ दिसा आर समरिधि देल आहत। एकराक रचल नाटक माहान सामाजिक नेगि चारिक छाप पाउअल जाइक। नाटक - 1. माइक हांथे बेटिक जिबन 2. आद महर सना 3. कने आपन कने पर 4. एक देखाइ बाप बेटा 5. संसार हेलि ससान। आलकाप - 1. बेटार बिहार हड़बडि 2. ढिलअ-ढालअ घार-कनना। बांगला नाटक - 1. राधा नहे कलंकिनि 2. मिरअतअ मां फिरे फेकअ जेसन कथा साहित रचल आहेइक।

## 8. जति लाल माहतअ

जतिबाबु अना गअ आग डहरुआ हालुक कबिक संगे - संगे सामाज सुधारक हड़ हेकत। एखराक जनम प. बांगालेक पुरलिआ जिलाक पाड़ा थानाक भितरे तेतइरहिटि गांउए 03.09.1943 साले हेल आहेइक। एकर बाप जगननाथ माहतअ आर माइ सुरअधनि माहातअ। जगननाथ माहतअ अना गअ चासा-भुसा हड़ हेकल। सेइ खातिर कनअ डुलकरि एके पढ़ाएक बतर करल आर गांउएक एल. पि. इसकुले 1952 साले मुहड़ाल आर कनअ डुल करि 1962 साले एस. एन. हाइ इसकुल, पाड़ाले माइधमिक पास करल। एकर परे पढ़ाइ छाड़े हेलेइक आर 1968 साले सरकारिक घारे सरकारि काम धरल। पराइभेटले 1971 साले इंटर, 1979 साले रांचि बिसबिदालइ, रांचिले बि. ए, 1989 साले इगंलिसले एम. ए. पास करल। 2003 साले परधान लिपिक बनि सरकारि कामठिनले रिटाइर हेल। जति बाबु खालि कुड़मालि पाड़सि करेइ कबि निहिं हेकत बांगला, एंगरेजि, हिंदि पाड़सिहुं साहित रचल आहात। आहनाइ आहेइक 'बिधिक बिड़ल आर कअने काटे पारइक'। 1995 साले अना गअ

गाड़िक संग ठेसाइगेल आर देइना हाथ काटाइ गेल। मनतुक, हिमत निहिं हारल आर नेंगा हाथिहिं चिसा-चिसिक काम करे लागल। 72 बछरेक उमइरुहुं कुड़मि सामाजेक आर कुड़मालि पाड़सि चारिक खातिर झारखंड, बांगाल, उड़िसा जाहां जखन दरकार हेइक। उहां चटकरि हाज़िर हेत आर सामाज सेबांइ लागि पड़त।

एखराक रचल पलास फुल (कबिता), पलास फुल (गित आर भाखि), बरनअ बइसमअ (बंगला), मानुसेर सिसटि इससर, इससरेर सिसटि मानुस नइ (बांगला), झारखंड का पुनरगठन (हिंदि), झारखंड में बिसथापितउ का दुखः (हिनदि), Displace People of Jharkhand and Their Suffering गर बिचार नाटक जेसन नाना धरअनेक पथि निखरल आहेइक।

## 9. ससि भुसन माहतअ

ससि भुसन माहतअ एक हालुक आग डहरुआ कुड़मालि कबि हेकत। एकर जनम 02.10.1947 साले एखनेक झारखंडेक सिंहभुम जिलाक भितर चकरअधर पुरेक सेताहाका गांउए हेल आहेइक। एकर माइ मंदअदरि माहातअ आर बाप सुदरसन माहतअ हेकल। एकर पढ़ा-सुना 1964 साले माडुआड़ि हाइ इसकुले मेटरिक, 1968 साले कापरेटिभ कालेज, जमसेदपुरले बि. ए, 1970 साले रांचि बिसबिदालइले एम. ए. पास करल। एकर परे गसनर माहाबिदालइऐ पढ़ाएक काम धरल आर इहांले अकटुबर 2009 साले कामले बसल। मनतुक, इटा खालि कहेक कथा हेकेइक।

एकर छुटुक बेरा लिहिं छाड़ेक-आधेक चिसा-चिसि करइतेल। जखन कुड़मालि पाड़सि साहितके कालेजे पढ़ाएक मानइता देल। तखनले आरअ रागे कबिता, केहनि रचे बसि गेल आर पाड़सि बिकासेक खातिर लागि पड़ल। कुड़मालि भासा-समसइआ आर सामाधान, कुड़मालि गइद-पइद जुड़ति, कुड़मालि भांउअर नामेक पथि निखरल आहेइक। एखरा सामाजिक दंहगि 'मुलकि कुड़मालि भाखि बाइसि' आर 'झारखंड आदिबासि कुड़मि सामाजकर' बड़अदा (माहासचिब) हेकत।

## 10. उपेनदरअ माहतअ

कुड़मालि पाड़सि साहित आर चारिले जड़ाइल उपेनदरअ माहतअ अना गअ गितकार, साहितकार, सामाज पेरमि, छभअइआ, बाजानदार हेकत। एखराक जनम बांगालेक पुरलिआ जिलाक भितर जालिका, खेइरि बेइहार गांउए 15.08.1947 साले हेल आहेइक। एखराक बाप बाबुलाल माहातअ आर माइ दासिबाला माहतअ एक चासा हेकल।

एखराक पढ़ा-सुना गांउएक इसकुलले मुहाइन हेइके मालथइड़ हाइ इसकुलले सिरालेइक। एखराक भाइगे मटे 8 केलास तड़िक पढ़ाइ रहलेइक। आध धुरेइ इसकुल

छाड़ेक परे कुछुक दिन छउ नाइचेक गुरुक हिंसाबे काम करल। एकर परे 12-बछर 'बाउल' दलेक संगे जिला आर जिलाक बाहिरे गित गाइ - गाइ गांउएक बुढ़ा, पुरखा, जेनि, छउआ बांदर आरके रिझा हेल। एहे बेरांइ एकर बिहा एकर 22 बछरेक उमरिंइ पुदकि माहातक संगे हेल आर घार परिबार बनाल।

एखरा 7-8 बछर धरि 'माइ बिसहरि खेइल झांपान' दंहगि माहान काम करल। एकर 'छितिआइ बिछतिआइ', 'कुड़चि फुल', 'झारखंडि झुमअइर' आर 'पन केउ लिहा ना' (नाटक) पथि निखराल।

## 11. पतित पबन केसरिआर

पतित पबन केसरिआर अना गअ साहितकार, सामाज पेरमि आर हड़ालि बुधकर धनि हेकत। एखराक जनम प. बांगालेक मानभुम जिलाक भितर रांगामाटि गांउए 06. 08. 1952 साले हेल आहेइक। एखरा दिबाकर माहतअ आर बिसअ रानिक छटअ बेटा हेकत। एखरा टेना भाइ आर अना गअ बेहिन मटेइ हेकत।

एखराक पढ़ा-सुना पाड़ा सिब नाराइअन इसकुलले 1966 साले मुहाइन हेइके 1967-70 हाइ इसकुलले मेटरिक, 1973 साले रघुनाथपुर कालेजले बिगाने सनातक, 1978-78 साले बेलुरमठ रामकिसन मिसन हावड़ाले बि. एड, 1987 साले रांचि बिसबिदालइले कुड़मालिंइ एम. ए. करल।

1992 साले एकर बिहा बांगालेक तुलिनेक माडु गांउएक करुनामइक संगे हेल। 1980 साले बिनउद बिहारि माहातक बातके काटे निहिं पारेक जालांइ मालथइड़ हाइ इसकुल, पुरलिआक मासटरि छाड़िकुहुंन 1982 साले मांदाकिनि हाइ इसकुल, बड़ा जमुआ, धानबाइदे बिगानेक मासटअरि करे लागल आर इहां ले 2013 माहान कामले बेसल।

## 12. करुनामइ केसरिआर

करुनामइ केसरिआर अना गअ साहितकार, सामाज पेरमि आर हड़ालि बुधकर धनि हेकि। एकर जनम प. बंगालेक मानभुम जिलाक झाइलदा थानाक भितर तुलिनेक माडु गांउए 17.07.1955 साले हेल आहेइक। एकर माइ साबितिरि माहतअ आर बाप सिरिकांत माहतअ हेकल। माइ बापेक एखरा साधेक बेटि आर एकर टेना गअ भाइ आहात।

एखराक पढ़ाइ गांउएक इसकुल माडुले माचा केलास, 1971 साले तुलिन जइ सिआराम हाइ इसकुलले 11 केलास, 1973 साले निसटा रिनि कालेज, पुरलिआले बि. ए, 1987 साले रांचि बिसबिदालइले कुड़मालि पाड़सि साहिते एम. ए. करल। फेइर 1996 हेमिअपेथि कालेज, पुरलिआले सेंटरल बाइअकेमिकल इन हेमिअपेथिक डिगरि लेल।

पढ़ा-सुना हेइत - हेइत एखरा 1992 साले बिहाक गांइठे बांधाइ गेल आर घार कन-नाक धके बाझि पड़ल। मनतुक, एखरा खालि चुलहा चउकिए तड़िक बांधाइ निहिं रहे पारल। एखराक रचल कबिता मानभुम एकसपेरेस', 'सरहुल', 'आखड़ा', 'बनफुल', 'आखांइन', हालुक कुड़मालि कबिता, कुड़मालि कबि आर काइब माहान उखड़ल आहेइक। टेंसफुल एखराक निजेक रचल पथि हेकेइक।

## 13. मुनिलाल जालबानुआर

मुनिलाल जालबानुआर अना गअ तइखन बुइध कर धनि सामाज सुधारक आर कबि हेकल। एखराक जनम 01.01.1956 साले धानबाइद जिलाक बलिआपुर परखंडेक पहड़िगड़ा गांउए हेल रहलेइक। एखराक माइ काजलि माहताइन आर बाप माहादेब माहतअ हेकल। एखरा मांचा भाइएक भितर मेंइझला हेकल। एखराक पढ़ा-सुना 1966 साले बेसिक इसकुल परासबेनिआ ले मुहाइन हेइके 1976 साले हाइ इसकुल लदनाले मेटरिक करल।

मेटरिक पास करेक चटांइ कइला खादाने काम धरल। अखराक खातिर इटा बेजांइ जखाक कथा हेकेइक जे जे दिन अखराक काम धरेक चिठि आउअल लेइक, सेइ बेरांइ अखरा बड़अ खेते मेइर दे हेल। अखरा काम धरल परउ हिआंइ आगु दिगे पढ़े लाइ बेजांइ साध रहलेइक। तेंइ कामेक घड़ि खादाने कपि किताब लेले जाइ तेल। हेनअ संजउगे अना दिन खादान भितर मेनेजरे अके पढ़इते देखिलेल। मुनिलालेक पढ़ेक हुनइर देखिके मेनेजेरे अके पढ़े लाइ सरकारि छुटि देइ देल। तखन 1978 साले रांचि कालेजले आइ.ए, 1981 साले प. साइंसे बि. ए. पास करल। मनेक खांखुसे 1984 साले घुरिले सउसउलउजि माहान बि. ए. करल। फेइर 1987 साले रांचि कलेज लिहिं एम. ए. करल। 1990 साले धानबाइद ला कलेज ले ला करल। एकर परे काम ठिन घुरि आउअल।

काम धाम चलतेइ रहलेइक आर सामाज सेबा माहान नाभि गेल। 1999 सालले कुड़मि सामाजेक नाना रकमेक गति-बिधिंइ उठा-बेइसा करे लागल। एखराक हुनइरे 1999 साले 'बिनउद डहर' नामेक कुड़मालि पतरिका कर निखरनि सुरु हेल। जेटांइ कालि पदअ नाग, अनिल पुनरिआर, राजेंदर हिंदुआर, राजिब केटिआर, हिरालाल सांखुआर रहल। एकर परे एखरा नाना रकमेक कुड़मालि कबिता गढ़े लागल। एखराक रचल कबिता नाना रकमेक पतरिका माहान निखरल आहेइक। जेसन बिनउद डहर, बनफुल आरअ इटासेटा। एखरा कुड़मालि पाड़सि साहितेक लेइ जाहां - जाहां जहड़अनि हेउएइ तेलेइक उहां बाढ़ि-चेढ़िके भाग लेइ तेल। हेनअ संजगउ 28.07.2008 साले एखरा मरन हाट एटेके हेइ गेल।

एखरा छटक बेरा लिहिं पढ़इते बेजांइ चखअ रहल। हाइ इसकुल पेइदलेइ पति दिन चास-बाटेक काम-पाइट साइत करि जाइ तेल। एक बारेक घेटना हेकेइक, मेटरिकेक फरम भरेक बेरांइ अंइ आरअ अना गअ दसर छउआअ फरम भरेक पेइसा लेइके इसकुल जा हेल। डहरे उ छउआटाक टाका काहुं गिरि गेल। तखन अंइ सड़प माहान कुलि खाटल आर सेइ हाजरिक टाकांइ दसर छउआटाक फरम भरि देल। पढ़ेक बेरांइ अकर काका गिरिधारि माहातंइ बेजांइ उसास करइ तेल काहे ना अकर काका कइला खादाने काम करइ तेल।

## 14. किरिटि पुनरिआर

किरिटि पुनरिआर एक माहान कुड़मालि हालुक कबि हेकत। एकर जनम प. बांगालेक पुरलिआ जिलाक, झाइलदा थानाक भितर खेइरिक, राजाडेरा गांउए 18 अपरेल 1960 साले हेल आहेइक। एकर माइ कमला माहतअ आर बाप सुरजअकांत माहतअ हेकल। एकर जनम चासाक आंगनाइ हेल आहेइक। सेइ खातिर पढ़ाइ-लिखाइ करेक आर बतर कखन पाउअल? ताउ हेलअ गांउएक इसकुले कनअ डुलकरि चार बेचिके मटे चाइर केलास तड़िक पढ़े पारल।

छटक बेरांइ लिहिं किरिटिक मगज बेजांइ चखअ रहलेइक। नउतुन - नउतुन कुड़मालि गित, झुमइर रचे लाइ आगुए रहइतेल। एकर रचल पेहिल गितेक पथि 1990 साले आउअल। एकर रचल कबिताक भितर - ढाइड़-खुखड़ि, रेंगिआ-बरद, बुनिआदि सिकखा जिसन ढेइर कबिता आहेइक। एकर रचना जाहलि, आखांइन पतरिका माहान निखरल आहेइक। 1995 साले 'कुड़मालि झुमइर खाखड़' नामेक पथि निखरल। 2002 सालले एखरा रामाइअनके कुड़मालिंइ निजेक छंदे अनुबाद करइस। जेटा एहे पाड़सि साहितेक बिकास माहान बेजांइ बड़अ जउदानेक काम हेकेइक।

❖❖❖

# 32. कुड़मालि भाषा में प्रचलित शब्द कोष

## क्रिया के शब्द

### अ

- अकबकाना - अकबका
- अनुपस्थित होना - नागा हेउआ
- अवहेलना करना - हेंजला करा
- अचानक सुनना - आंचकाइ सुना
- अटकाना - लटका
- अंदाज - आनदाइज
- अंदाजे में ढूढ़ना - टमड़ा
- अदा करना - घुराइ देउआ
- अनाज पिसना (ढेंकि से) - कुटा
- अनाज पिसना (वस्तु से) - दड़ड़ा
- अलगाना - अलगाइ देउआ
- अपने लिए सीखना - निजेक खातिर सिखा
- अपनी ओर से बोलना - निजेक दिगेले फदरा
- अवकाश के समय काम करना - निधड़क
- अचानक डर जाना - सिहरि उठा
- अधिक ख्याल करना - बेसि खेइआल करा
- अन्य व्यक्ति से पूछकर जाना - खजि खजिके जाउआ
- अर्जी करना - नेहर करा
- अनाज को उलट-पुलट करना - लाड़चाड़ करा
- अनुकरण करना - अकरेइ पारा करा
- अलग करना - बाछा
- अलग होना - भिनाइ जाउआ
- अत्यधिक भोजन करना - घेंचा भरिके खाउआ
- अटकना - लटका
- अधिक काम करना - बेजांइ काम करा
- अचानक पानी में घुसना - आचकाइ डुबा
- अच्छी तरह से बैठना - बेसले गडा
- अंकुर होना - आंकुर हेउआ

- अंतिम साँस तक रोना - सेंस निकास तडिक आंड़रा

आ

- आँख बंद करना - आंइख मुंदा
- आना - आउआ
- आशा भरी दृष्टि से देखना - आंइख गड़ाइके ताका
- आधुरा कराना - आधपुरा करा
- आज्ञा का पालन करना - हुकुम माना
- आधी बात सुनना - आध कथा सुना
- आदमी पर पानी छींटना - हड़ेक दिगे पानि छिड़का
- आशा करना - आस करा
- आग बुझाना - आइग निंभा
- आग में कूदना - आइगे ढुका
- आना और लौटना - जाइक तड़िक घुरा
- आग के पास बैठना - आइग तरे गडा
- आवश्यकता की पूर्ति करना - दरकारके पुरा करा
- आग का अपने आप बुझ जाना - आइगेक आपने निभाइ जाउआ
- आओ चलें सभी लोग - आउआ चाला सउब झन
- आँख खोलना - आंइख उघरा
- आँख का फूटना - आंइख फुटा

इ

- इच्छा करना - बानछा करा
- इधर-उधर का सुनना - हिंदे-हुंदेक सुना
- इकट्ठा होना - जड़अ हेउआ
- इधर-उधर सूँघना - हिंदे-हुंदे सुंघा

उ

- उछलना - उमका
- उठाना - अलगा
- उल्टी करना - बमि करा
- उधार देना - पेंइचा देउआ
- उषा काल तक सोना - बिहान तड़ित घुमा
- उचित रूप से प्रश्न पूछना - बेस करि खंच करा
- उछलकर चढ़ना - डेगिके चेढ़ा
- उधारी खाना - पेंइचा झिंका
- उगना - उगा

- उतारना - नाभा
- उब जाना - अनसाइ जाउआ

ए

- एक दूसरे की राह रोकना - एक दसराक डहर टेका
- एकटक देखना - टकटकि लागाइ ताका
- एक साथ बाँधना - गुलमुठा

क

- कंघी करना - चिरा
- कूटना (अनाज को) - कुटा
- कुदाल से खोदना - कदाइरले कड़ा
- कीचड़ में लटपटाना - कादांइ लटपटा
- किसी के द्वारा उपहार भेजना - काकरअ दारांइ बेउरा पाठा
- कब्जा में लेना - दखल करा
- कार्यभार सौंपना - कामेक भार थपा
- काम के बदले काम करना - बदलि काम करा
- काम छोड़ना - काम छाड़ा
- काम से जी चुराना - फांकि मारा
- किचकिचाना - कचकच करा
- क्रोध उतर जाना - खिस नाभा
- कांटी से लकड़ी को छेदना - कांटिले काठ छेंदा करा
- किसी के संरक्षण में पूछना - पांइत धरि सुधिआ
- कूचलना - कुचा
- क्रोधित होना - रागि जाउआ
- कदम मिलाकर चलना - डेगे-डेग देइके चला
- कीड़ा द्वारा पौधें को खाना - गड़र लागा
- कर सकोगे - करे पारबे
- कमाना और खाना - अरजा आर झिंका
- कपड़ा पटक कर साफ करना - लुगा पटकिके काचा
- कुँए को पाटना - कुंआके पाटा
- कपड़ा फाड़ना - लुगा चिरा
- कानों कानों में बात करना - फुसफुसा

**ख**

- खोना - हेरा
- खरोंच लगाना - नचाइ जाउआ
- खरोचना (नाखून से) - खुजुआ
- खरोचना (वस्तु से) - खंखरा
- खण्डन करना - बात काटा
- खरीदकर भेजना - किनिके पाठा
- खदेड़ना - लेतड़ा
- खोंसना - खंसा
- खाँसना - खंखा
- खींचना - टाना
- खा-पीकर समाप्त करना - झिंकि-नुड़िके सेंस करा
- खाने में अनाज बर्बाद करना - हेजड़ा करा/हेजड़ाइ उठा
- खटखटाना - ठकठका
- खुलना (दरवाजा) - खुजा
- खखोरना - खखरा
- खंघालना - आखला
- खाटना - खाटा
- खिलना (फूल) - फुटा
- खुसामद करना - खसामद करा

**ग**

- गलती सुनना - गलति सुना
- गुस्सा में देखना - रागिके ताका
- गलाना - गेला
- ठंडा करना - जुड़ा
- गुदगुदी लगाना - चुलगुदि करा
- गुदगुदाना - चुलगुदा
- गूंथना - साना
- गुणा करना - गुना करा
- गाँठ बाँधना - गांइठ बांधा
- गुप्त प्रश्न पूछना - लुकाल खंच पुछा
- गाली के समय पुरानी बातों को दोहराना- उटकिके गाइर देउआ
- गिराकर फेंकना - गिराइके फेंका
- गंदा रहना - घिसट रहा

- गाछी लगाना - आफर रपा
- गोदि लेना - करा लेउआ
- गिराना - गिराएक

घ

- घृणा करना - थु-थु करा
- घुमाना - घुरा
- घर रंगना - लिपा-पता
- घटाना - घटाएक
- घिसकना - घसका
- घूमना - घुरा
- घर-घर मांगना - दुआइर पेछु मांगा

च

- चुराकर फसल काटना - चराइके आबाद काटा
- चिढ़ाना - रागाइ देउआ
- चिंता नहीं करना - फिकिर नि करा
- चिल्लाना - गुइल करा
- चराना - चरा
- चलाना (सब्जी) - लाड़ा
- चलाना (गाड़ी) - चला/गाडुआनि
- चलाना (साथ ले जाना) - चेला
- चारों ओर से घेरना - घाघर घेरा
- चकमा देना - बका बनाउआ
- चौंकना - चउकि जाउआ
- चमकाना - चमकाउआ
- चुआना - चुउआ
- चूसना - चुसा
- चले जाना - चलि जाउआ
- चमकना - चमका
- चक्कर आना - मुड़ घुरा
- चबाना - चेबा
- चढ़ना - चेढ़ा
- चलों चले - चाला जाब
- चंदा उठाना - चादा उठा

छ

- छींकना - छिंका
- छाया में विश्राम करना - सुसता/जिरा
- छिपाना, छिपना - लुका
- छाता खोलना - छाता फुटा
- छाता मोड़ना - बुटु करा
- छेड़ना - छिनार करा
- छेंकना - छेका
- छूना - छुआ
- छूट जाना (पकड़ा हुआ) - फुचकि जाउआ
- छूट जाना (बिना पकड़ा हुआ) - छुटि जाउआ
- छोड़ देना (किसी को) - छाड़ि देउआ
- छोड़ देना (वस्तु को) - छिनगाइ देउआ
- छलकना - छलका
- छटपटाना - छटपाटा
- छानना - छांका
- छिलना - छअला
- छींटना - छिड़का
- छूना - छुआ
- छौंकना (दाल) - छनका
- छड़ी से पीटना - सिटकाले मारा
- छुड़ाना - गुचाउआ
- छिपकर सुनना - लुकाइके सुना
- छोड़ देना - छाड़ि देउआ
- छलकना - उछला
- छलांग लगाना - डेगा

ज

- जलाना - पड़ा
- जल जाना - पड़ि जाउआ
- जोड़ना (धतु को) - जड़ा
- जल्दी सीखना - चाड़ेकरि सिखा
- जानवर को खदेड़ना - खेदा
- जमा करना - जड़अ करा
- जल्दी देना - चांड़े देउआ

- जानवरों को स्नान कराना - धउआ
- ज्यादा प्रश्न करना - गचार लेउआ
- जम जाना - जमि जाउआ
- जमा हुआ - जमल
- जबरदस्ती अटाना - जबरन आंटा
- जल्दी-जल्दी कुछ खोजना - चाड़चपटे कनअ खजा
- जीभ से चाटना - जिभले चाटा
- जो सो पूछना - जे से पुछा
- जल्दी बाजी में पकड़ना - हड़बड़िंइ धअरा
- जमीन को समतल करना - भुइंके सइर करा
- जाति में मिलाना - जाइते मेंझा
- जाना - जाउआ
- जल्दी देना - चांड़े देउआ
- जीतना - जिता
- जी उठना (पुर्नजीवन) - घुरिके बांचा
- जाओ - जउ
- जल्दी-जल्दी भोजन करना - चांड़-चपट झिंका
- जोड़ना - जड़ा
- जन्म से लंगड़ाकर चलना - जनमले लेइड़चाइके चेला
- जबर्दस्ती देना - जबरन देउआ
- जल्दी आओ - चांड़े आउ
- जहर देकर मारना - जहर देइके मारा
- जाने के लिए सोंचना - सपरिके रह

**झ**

- झांकना - हुलका
- झाड़ू देना - बाढ़ा
- झाड़ना - झाड़ा
- झगड़ा करना - झगड़ा करा

**ट**

- टेढ़ा बोलना - एंइनठाइके कहा
- टाँगी से मारना - फारसाले चटा
- टोकना - टका
- टूटना - भांगा
- टूट जाना - भांगि जाउआ

- टहलना - घुरा

**ठ**

- ठहरिए (चलते हुए) - डाढ़हा
- ठहरना - रहा
- ठीक से सूनना - बेस करि अना
- ठोककर सटाना - ठकिके साटा
- ठिठुरना - ठिठुआ
- ठेस लगना - ठेसाएक
- ठण्ड से काँपना - जाड़ले ठिटुआ
- ठोंकना - ठका

**ड**

- डालना - भरा
- डुबकी लगाना - डुब देउआ
- डुबकर मरना - डुबिके टिड्डुआ
- डालना (कढ़ाई में) - देउआ
- डर से भाग जाना - डरे पाराइ जाउआ
- डर से भगदड़ मचना - डरे हिंदे-हुंदे हेउआ
- डंक मारना - फुटानि करा
- डकारना - ढंका
- ढंसना (सर्प का) - डसा

**त**

- तिल का ताड़ बनाना - सुइके फार बनाउआ
- तंग करना - खंच-खंच करा
- तलवा चुमना - तलुके चुमा लेउआ
- तैरना - अबका
- ताकना - घुरिके देखा
- तमासा दिखाना - रंग करा
- तैयार होना - साजा
- तैयार होकर रहना - साजि धाजिके रहा
- तौड़ना (वस्तु) - भांगि देउआ
- तौड़ना (फूल, फल) - तड़ा

**थ**

- थूकना - थूका
- थकना - फेदान

- थोड़ा-थोड़ा पीटना - टुएक मारा
- थप्पड़ मारना - चड़ मारा
- थरथराना - कांपा
- थक के चकना चूर होना - लेसड़ा भुत हेउआ

द

- देखा हुआ - देखल
- देखिए - देखा
- दे दिया - देइ देउआ
- दखल करना - दखल करेक
- दबी हुई बात निकालना - भितरेक कथा उटका
- दौड़ाना - इंड़का
- दतवन करना - दतइन करा
- दोष लगाना - दउस देउआ
- दुहराना - घुरिके
- देने से इंकार करना - देइते माना करा
- देना - देउआ
- देखना (नजदीक) - ताका
- देखना (दूर) - थाना
- दो भाग करना - दुइ खंड़ करा
- दबना (वस्तु से) - चिपाइ जाउआ
- दबाना (वस्तु को) - जांता
- दुबारा पाना - फेरले पाउआ
- देखते रहना - ताकते रहा
- दोनों हाथों से ढकना - दुइअ हांथले लुका
- दुसना - दुसा

ध

- धान रोपना - धान रअपा
- ध्यानपूर्वक (मानसिक क्रिया) - मन लगाइके
- ध्यान पूर्वक (अन्य) - एक धेइआने
- धमकाना - धमका
- धनुष की डोरी चढ़ाना - धनुसे चाड़ देउआ
- धोना (कपड़ा) - काचा
- धोना (वर्तन) - मांजा

- धोना (शरीर) - धउआ
- धुंवा करना - धुंगा करा
- धकेलना - ठेला

**न**

- नदी में बाढ़ आना - नदिंइ बअ आउआ
- नीचे गिरना - हेंठे गिरा
- नाचने के समय एक साथ होना- नाचेक बेरांइ एक संगे हेउआ
- नीचे देखना - हेठें ताका
- निगलना - ढअका
- नापना - नापा
- नई फसल खाना - नउतुन आबाद खाउआ
- नखड़ा करना - ढंग करा
- निकलना (स्वयं) - बाहरा
- निकालना (किसी को) - बाहराउआ
- नहलाना - सिनान करा
- निशाना चूकना - जउस काटा

**प**

- पानी में बह जाना - पानिंइ बहि जाउआ
- तेज करना - पाजा
- पिलाना - सेढ़ाउएक
- पीना - सेंढ़ा
- पानी छींटना - बु पाटा
- पेड़-पौधे पर पानी छींटना - गाछ-पाते बु पाटा
- पानी फेंकना - बु छिटा
- पालना - पसा
- पालन-पोषण करना - लालन-पालन
- पाल पोष कर बड़ा करना - पालि-पसिके बड़अ करा
- परोसना - बांटा
- पहरेदारी करना - अगरा
- पड़ जाना - गिरि जाउआ
- पैर धोना - गड़ धउआ
- पैर के सहारे खड़ां होना - गड़ेक भरे डाढ़ा
- पैर फैलाना - गड़ पासरा

- पीठ पर बच्चों को लेना - कान गुदड़ि करा
- प्रतिज्ञा करना - परन लेउआ
- पैर से ठोकर लगाना - गड़े फटिआइ देउआ
- पीठ पर ढोना - पिठे बहा
- पूछना - सुधिआ
- प्रश्न करना - खंच धरा
- प्रश्न उठाना - खंच उठा
- पता लगाना - टउआ करा
- पीटकर रेशा निकालना - मारिके साइट उठाउआ
- पूछकर परेशान करना - पुछिके दिकदिक करा
- पकड़ कर ढोना - धरिके बहा
- पानी में डुबाना - पानिंइ डुबा
- पैर से खूँदना - गड़ले कअड़ा
- प्यास के कारण कण्ठ सूखना - टिड्डुआसे घेंचा सुखा
- पीछा लगना - पिछा करा
- पीछा लगना (साथ लगना) - पांइत धरा
- पंखा धुकना - बिअनि डला
- पानी में डूबना - पानिंइ डुबा
- पेशाब करना - मुता
- पानी के उपर तैरना - अफला
- पहुँचना - पहंचा
- पटकना - पटका/काचड़ा
- पटकना (अनाज को) - ढेढ़ा
- प्रार्थना करना - नेहर
- पाना - पाउएक
- परखना - परखा
- पजाना - चखअ करा
- पचाना - पचाएक
- पटाना - भुला

**फ**

- फसल काटना - आबाद काटा
- फसल काटने का आरम्भ - आबाद काटे सुरु करा
- फूंकना - फुंका
- फाड़ना - फाड़ा/चिरना

- फिसलना - पिछरा
- फल फलना - फरा
- फैलना - पसरा
- फैलाना - पासरा
- फेंकना - लेबदा
- फटना - फाटि/फुटि जाउआ
- फटना (कपड़ा) - छिड़ि जाउआ
- फेककर मारना - फाभड़ाइके मारा
- फटकारना - डांटा

ब

- बेचैनी - अकबकि
- बेचना - बेचेक
- बेकार का इंतजार करना - बे-फालतुक आसरा देखा
- बिना मजदूरी के काम करना - बिन बेरहनेक काम करा
- बहना - बहा
- बहकर मरना - बहिके मरेक
- बहता पानी - बहन
- बात समझना - कथा बुझा
- बलवान होना - बलगर हेउआ
- बहिष्कृत करना - बाइड़ करा
- बतलाना - बाताउआ
- बिगड़ना - बगड़ा
- बांसुरी बजाना - पेपटि बाजा
- बात हारना - कथा हारा
- बर्बाद करना - बरबाद करा
- बाँटना - भाग/बाखरा करा
- बाल संवारना - चुइल चिरा/झाड़ा
- बीमारी में लेटना - रउगे अलढा
- बच्चों को थप्पड़ मारना - छउआके चड़ा
- बड़ा पत्थर से मारना - बड़का पाथरे मारा
- बूंद गिरना - टिपका
- बोझ से दबना - जांताइ जाउआ
- बच्चों को खेलाना - छउआके भुला
- बार-बार बोलना - घने-घने फदरा

- बार बार पूछना - घने-घने सुधिआ
- बंद करना - बंदअ करा
- बोझा बांधना - गांइठ बांधा
- बाल-बाल बचना - सटिके बांचा
- बिगड़ जाना - गड़बड़ाइ जाउआ
- बचाना - बाचा
- बैठना - गडा
- बार-बार देखना - घुरि-घुरिके ताकाउआ
- व्याकूल - छटपटि
- बदलना - वदलि देउआ
- बिछाना - बिछा

भ

- भगाना (युवक-युवती को) - उठाइ लेइ जाउआ
- भागना - पारा
- भय से अचानक चिल्लाना - डरे आचकाइ चेंचा
- भीख मांगना - भिख मांगा
- भुख से इधर-उधर घूमना - भुखे हिंदे-हुंदे घुरा
- भूसा हटाना - कुढ़ा हाटा
- भूख से तड़पना - भुखे बिखला
- भय से अचानक दिल कांप जाना - सिहरि उठा
- भींगा कपड़ा से पोंछना - भिंजल लुगांइ पछा
- भेंट करना - देखा करा
- भूनना (अनाज को) - भुंजा
- भूख से पेट पिचक जाना - पेट सटि जाउआ
- भारी वस्तु को हाथ से उठाना - अलगा
- भोजन लेना (उपर से) - परसन देउआ
- भोजन कराना (अलग से) - पसर खाउआ/चेरा

म

- मांगना - मांगा
- मालिश करना - सटा
- मिट्टी कोड़ना - माटि केड़ा
- मना करना - माना करा
- मारने के लिए अस्त्र दिखाना - हंथिआर चमका
- मांजना - मांजेक

- मैल छुड़ाना - मेइल गुचाएक
- मजदूरी करना - बेरहन खाटा
- मुक्का मारना - किल ठका
- मिट्टी का गोली बनाना - माटिक गुलि बना
- मारना - मारा
- मारकर फोड़ना - मारिके भांगि देउआ
- मांस काटना - मास चटा
- मरना - टिड्डुआएक
- मार डालना - मराइ देउआ
- मुरझा जाना - लुरुआ
- मुँह खोलना - डंअका फाड़ा
- मंडराना - घुरनि मुरगि डुल घुरा
- मंडराना - घुरनि घुरा
- मुँह से झाग निकलना - मुंहे फेन बाहरा
- मुँह के बल गिरना - मुंहेक भरे गिरा
- मार से मर जाना - माइरे टिड्डुआइ जाउआ
- मुक्का मारना - घुंसा मारेक
- मुँह फुलाकर बैठे रहना - थथना फुलाएके गडि रहा
- मेरे पास आओ - हामर ठिने आउएं
- मुट्ठी बन्द करना - मुठा बंद करा

य

- यहाँ-वहाँ भटकना - हिंआ हुआं घुरा
- याद करना - इआद करा

र

- रोशनी की सहायता से ढूंढना - आलंइ खजा
- रूक-रूक कर हँसना - मुचकि हांसा
- रास्ता रोकना - डहर छेका
- रखना (तावे पर) - राखा
- रेंगना - घेसड़ा
- रस्सी जोड़ना - जड़ा
- रस्सी बांधकर अंदर ले जाना - भितर लेगा
- रस्सी बांधकर उपर खींचना - उपर टाना
- रातभर गाना - जागरन करा
- रस्सी बांटना - दड़ा पाका

- रस्सी से गांठ बांधना - दड़ांइ गांइठ बांधा
- रोटी खाना - रउटि चेबा
- रोकना (वस्तु को) - टेका
- रोना - कांदा
- रूकना (जाते हुए) - डांढ़ा
- रूकना (खाने के लिए) - थामभा
- रूठना - रागि जाउआ

**ल**

- लाना - आना
- लेना - लिआ
- लापरवाही से काम करना - हेंजलाले काम करा
- ले जाना - लेगा
- ले भगाना - लेइ पाराउआ
- लिखना - चिसा
- लिखने देना - चिसेलाइ देउआ
- लकड़ी को आग में झोंकना - आंइच देउआ
- लकड़ी फाड़ना - काठ फाड़ा
- लुभावना - लभा
- ललकारना - लेलका
- लड़ना - लढ़ा
- लुढ़कना - गड़का
- लिपना - लिपा
- लोहा जोड़ना - लहा जड़ा
- लपेटना - मड़ा
- लपेटना - ढाका
- ले लेना - लेइ लेउआ
- लात मारना (आदमी) - लाइत मारेक
- लात मारना (पशु) - चाइट मारा/चेटिआ
- लाठी से पीटना - ठेंगाउआ
- लचकना - मचका

**व**

- वस्तुओं को बहा देना - बहाइ देउआ
- वजन करना - अजन करा/नापा
- विश्राम करना - जिरा

- विशेष जानकारी के लिए पूछना - बिसेस जानेक खातिर पुछा
- वह लो - उटा ले
- बर्तन को चमकाना - भाजनके चमकाउआ
- व्यर्थ में नष्ट हो जाना - बेकारें खतम हेउआ

श

- शुद्ध बोलना - सइतअ फदरा
- शाम तक सोना - सांइझ तड़िक घुमा
- शीघ्रता पूर्वक भागना - झटकरि पारा
- शैतानी कम होना - बदमासि कम हेउआ
- शुरू करना - मुहाइन करा
- शांत हेउआ - थिरा
- शांत रहना - चुप रहा
- शैर करना - घुरा

स

- सुनना - सुना/अना
- सुनकर आना - अनाइके आउआ
- सुनकर पता लगाना - अनाइके टउआ लगाउआ
- सब्जी पकाना - तिअन रांधा
- सिखाना-पढ़ाना - सिखाउआ-पढ़ाउआ
- संदेश (खबर) - बेउरा
- संदेश (उपहार) - कुटुमेक मिठाइ
- साड़ी पहनना - लुगा पिंधा
- संदेश छोड़ना - बेउरा पाठा
- साफ-साफ बोलना - साफा-साफि कहा
- स्पष्ट बोलना - मुंह फुटिके कहा
- सरकना - घसका
- सबसे पहले काम करना - सउबले पेहिले काम करा
- सीधा बोलना - सिधा कहा
- सिकुड़ना (वस्तु) - चिमड़ाइ जाउआ
- सिकुड़ना (शरीर) - झुरुआइ जाउआ
- स्मरण करना - इआद करेक
- सोंचते-सोंचते याद करना - सचि-सचिके इआद करा
- स्वार्थ के लिए बटोरना - निजेक खालि बटरा
- सिलाई करके जोड़ना - टिपिके जड़ा

- सुई में धागा समाना - सुइ सुता पिंधा
- सोना - घुमा/निगडा
- स्थान के अभाव में जबर जस्ती बैठना- ठेलिके गठा
- सिसक-सिसक कर रोना - फेसका
- सूप से पटकना - पछरा
- सब्जी काटना - तिअन काटा
- सहायता के लिए जाना - उसासेक खातिर जाउआ
- सूंघना - सुधा
- सूंघ कर पता लगाना - सुंघिके टउआ लगाउआ
- सफाई से झाड़ु देना - बेस करि बाढ़ा
- साँप का विष झाड़ना - सांपेक बिस झाड़ा
- सूखे कपड़ा से पोंछना - सुखल लुगांइ पछा
- सब को बांटकर खाना - बाटि सरिके झिंका
- सुखाना - सुखा
- सिलाई करना - टिपा
- सिर पर बोझ उठाना - बझा उठा
- सोकर समय बिताना - घुमाइके दिन काटा
- सहायता करना - उसास करा
- सूद में देना - सुधे देउआ
- समाप्त करना - सेंस करा
- सकना - पारा
- सुनकर पहचानना - सुनिके चिनहा
- सुनकर आना - अनाइके आउआ
- स्नान करना - सिनान करा
- स्त्रियों द्वारा बोझ ढोना - जनिक दारांइ बझा बहा

ह

- पैर-हाथ धोना - गड़-हाथ धउआ
- हंसना - हिंसड़ा
- हिलना - डला
- हटाना - हाटा
- हाथ से दबाना - हांथले जाता
- हिस्सा देना - भाग देउआ
- हाथ से सफाई करना - हांथले साफा करा
- हाथ से बटोरना - हांथले बटरा

- हाथ पर उठाना - हाथें उठा
- हड्डी गाड़ना - हाड़ गाड़ा
- हृदय कठोर करना - हिआ सकत करा
- हल्का धक्का देना - टुएक ठेकला

ढ

- ढोना (भार से) - बहा
- ढोकर जमा करना - जड़अ-सड़अ करा
- ढुनमुनाना - ढनमना
- ढकना - ढाका

क्ष

- क्षमा करना - खमा करा

## क्रिया विशेषण/विशेषण/संज्ञा/समास

- अधकपारी - आध-कपालि
- अंदाज - आनदाज
- अवहेलना - हेंजलामारा
- अपरिचित - आनजान
- अनेक प्रकार के - ढेइर रकमेक
- असली - आसल
- अचानक - आचकाइ
- अन्य - दसर
- अलावे - एकर छाड़ि
- अतिरिक्त - उपरि
- अत्यधिक - दमतक
- अपरिचित व्यक्ति - आनजान हड़
- अत्यधिकं काला - काल-कुदरा
- अधिक - ढेइर
- अधिक पका हुआ चावल - गिला भात
- अधिक फल से झुकी हुई डाली - झबरिके फरा
- अंत - आखिर/सेंस
- अधपका - आदपाकल
- अधपका चावल - आध सिझा भात
- अंधा - काना
- अंधी - कानि

- अगल-बगल - हिंदे-हुंदे
- अति सुन्दर - बेजांइ बेस
- आवश्यकतानुसार - दरकारेक पारा
- आगे - आगु
- आलसी - कड़हि
- आलस - आलसि
- आत्मा - आतमा
- आठ बार - आठ धांउ
- आगामी - आउति
- आधा झुका सिर - मुंड़-गाड़ा
- आरी की दाँत - आरिक दांत
- आग की गर्मी - गड़ पड़ा रउद
- आधा - आधा
- आदमी, पुरूष - मरद
- आंचल - आंचरा/खुंट
- आंचरा - खंइछा
- आँख का रोग - आंइखेक रउग
- इस प्रकार - एहे डुल
- इस प्रकार से - एहे रकमे
- इतिहास - इतिहास
- इर्ष्या - इरखा/जला
- इन्द्रधनुष - सात रंगिआ धनुस
- इसलिए - तेंइ
- इसमें से कौन - एकर भितर कन
- इमान - इमान
- ईश्वर - सिंगबंउगा
- ईंट - इंटा
- उस समय - उ बेरा
- उतना ही - अतनेइ
- उसके जैसा - अकर पारा
- उधार - धार
- उधर - हुंदे
- उसपार - उपार
- उस तरफ - उदगे

- उपवास - उपास
- उचित स्थान - ठिक ठांइन
- उचित - ठिक
- उतना अधिक - अतना बेसि
- उतना बड़ा - अतेक बड़अ
- उसके समान (सादृष्य) - अकरेइ पारा
- उबड़-खाबड़ - गाढ़ा-ढड़ा
- ऊन - उन
- ऊँचा-नीचा - हेंट-उपर
- श्रृंगार किया हुआ - साजल
- एकता - गुटिआ
- एड़ी - एड़ि
- एड़ी के ऊपर का भाग - सुपति गड़
- एक तरफ - एक दिगे
- एक पंक्ति में - एक पांइते
- ऐसा-वैसा - असन-तेसन
- ओझा - अझा
- और (मात्रा) - आरअ
- और पौधा लगाना - आरअ गाइछ लागा
- अंगूठा - बुढ़ि आंगुर/ठेपा
- अगूठा की निशानी - ठेपाक चिनहा
- कठिन परिश्रम - घाम गारा खाटा
- कच्चा भोज्य पदार्थ - कांचा खाइएक जिनिस
- कपड़ा गंदा करने की आदत - लुगा घिसट करेक आदत
- कसूर/दोष - गुनाहा
- क्या - कि
- कहीं पर - कनअ ठिन
- कथा - काथा
- कहानी - केहनि
- कई बार - कइएक धांउ
- कन्या - केनिआइ
- कम नमक - आनला
- कसाई - कांसा
- क्यारी - किआरि

- कर्मठ - दढ़अ माढ़अ
- कुबेर - कुबेर
- कहाँ पर - कन ठिन
- कहाँ - काहां
- कम घना जंगल - फांका बन
- कन्या दान - घार भअरा
- कचर-कचर - कचर-कचर
- कच्चा फल - कांचा फर
- काम में आलस - कड़िहा
- कारण - कारन
- कारोबार - धांधा/बेपार
- कारा (जेल) - जेहल
- काल - बेरा
- काला पानी - केरिआ पानि
- काम करने वाला - काम करुआ
- कारीगर - कारिगर
- कांटी - जलअइ
- काँख - कांखबगला
- किस दिन - कन दिन
- किनारा - धाइर
- किचकिचाहट - किचकिच
- किस्म/प्रकार - रकम/बरन
- क्रिसमस - किरिसमस
- कड़ाही - कड़ाहि
- करछुल - चाटु
- कचहरी - कउट
- कांटा (लंबा काँटा) - लंबा कांटा
- कमाई - कामाइ
- कम्बल - कमल
- कठुआया हुआ - कठुआल
- कमी - कमि
- कांसा - कांसा
- कॉव-कॉव - कांउ-कांउ
- काँच - कांइच

- काई - सेंउआल
- काम - काम
- काड़ा का कंधा - काड़ाक कांध
- कागज - कागइज
- कुमनी (मछली फँसाने वाला) - सिंआड़ा/घअघि
- कुम्हार - कुमहार
- कुड़ा-कर्कट मिला हुआ - मसअला
- कुर्सी - कुड़सि
- कुहासा - कुहरा
- कुआं - कुंआ
- कूड़ा कर्कट - सांकार
- क्रय - किना
- केवल - खालि
- क्रोधित - खिसा
- कोस - कउस
- कोठा - कअठा
- कोना (स्थान बोधक) - कअना
- कोंचरा (महुए का फल) - कचड़ा
- कौड़ी - कअड़ि
- कौन, कोई - के/केउ
- कंगाल - नांगटा
- कंठस्थ - रेटल
- कंजूस - चिपास
- कंघी किया हुआ बाल - टेरि बागाल
- कंपकपी थकावट - थुरु-थुपु
- खल्ली (सरसों का) - खेइर
- खरगोश का शिकार - खेरहा मारा
- खड़ाऊँ - खड़म
- खर्चा - खरचा
- खसरा/खुजली - खुजलि
- खट्टा - चेका
- खदखद - खदबद
- खलिहान - खेरअइ
- खलिहान का देवता - खेरइएक बंउगा

- खखार - खाखार
- खजाना - भाड़ार
- ख्याल - दिसा
- खलिहान की झोपड़ी - कुंबाढापु
- खर्राटा - घड़्ड़पिटा
- खपरेल (गोल) - पंअगि खापड़ा
- खपरेल (चौड़ा) - टालि खापड़ा
- खतरनाक - तइकखत
- खाद्य वस्तु - खाइक जिनिस
- खांसी - खंखि
- खान-पान - झिंका-नुड़ा
- खिड़की - जालना
- खुब सुखा हुआ - रुनाल
- खुरपी - खुरपि
- खुला हुआ मूँह - डअका फाड़ा
- खुल्ला (पैसा) - खुचरा
- खुल्ला (बंधा हुआ) - खुजल
- खेत - खेत
- खेती - चास
- खेत की छोटी-छोटी क्यारी - किआरि
- खेल का मैदान - ढांगा
- खंडहर - ढअढइर
- खोया हुआ - हेराइल
- खोखला - फफरा/फरा
- गलगल - लुबुर-लुबुर
- गड्ढा (जल रहित) - गाढ़ा
- गड्ढा (जल सहित) - खाल
- ग्लानि - पछता
- गन्दा - घिसट
- गर्जन - हड़्हड़ि
- गड़बड़ - गड़बड़
- गठिया की बीमारी - सुटका
- गवाह - गहा
- गलती/भूल - भुल

- गले खीच खीचाना - लुड़लुड़ि बाढ़ा
- गाल - गाल
- बछड़ा - दामड़ा
- गाँजा - गांजा
- गाड़ी/बस - सगड़/गाड़ि
- ग्राहक - गराहकि
- गाछी - आफर
- गाँठ - गांइठ
- गिरजा घर - गिरजा घार
- गिल्टी - गिलटि
- गीत - गित
- गुच्छा - धअप
- गूंगा - कंअका
- गैर, दूसरा - दसर/पर
- गोरा - गरअ/चेरका
- गोल-गोल - गउल-गउल
- गोशाला - गहाइल
- गोली का खेल - गुलि खेइल
- गोत्र - गुसटि
- गोदी - करा
- घमंडी - घमंडि
- घर के भीतर की कोठरी - भितर घार
- घना जंगल - बिरहद बन
- घना (वस्तु) - पाथाइर
- घड़ा - घेइला
- घर - डिंढ़ा
- घमण्ड - घमंड/घमन
- घर के चारो ओर - पागार
- घनघोर घटा - केरिआ बादइर
- घाव - घाउ
- घाटा - घाटा
- घिरनी (लालटेन का) - उसकाएकटि
- घी - घिउ
- घुंघराला बाल - घुइनचा चुइल

- घुला हुआ - गरल
- घुंघरू - छुमुइर
- घुन लगा हुआ - घुइन लागल
- घूंट - ढक
- घूंघट - घुघा
- घोरना (लकड़ी का दिवार) - घरना
- घोंसला - खंधा
- चपरासी - चपरासि
- चर्बी - तेल
- चमड़ा - चाम
- चमचम - चकमक
- चप्पल - चपल/चटि
- चरवाहा - गरखिआ
- चखना - चाखना
- चपटी वस्तु - चेपटा जिनिस
- चतुर - चरपट
- चन्द्रमा - चांद
- चमक - चमक
- चहर दीवारी - पागार
- चपटा - चेपटा
- चटपट - चटपट
- चढ़ाव वाला पथ - चेढ़ाइल
- चारो कोना - चाइर कना
- चारो ओर - चाइरअ धाइर
- चाभी - चाभि काठि
- चाण्डाल - चंडाल
- चाल-चलन - चाइल-चलन
- चालाक - चतुर
- चिपटी नाक - नाक चेपटा
- चिकना बाल - चिकन चुइल
- चिकना - चिकन
- चिन्ह, पहचान - चिनहाप
- चित-पट - चितपट
- चितकबरा - चितकाबरा

- चिड़िया बझाने की जाल - चरइ फांसाएक जाल
- चिनगारी - फुरुंग
- चिन्ता - भाभना/फिकिर
- चीरी हुई लकड़ी - फाड़ल काठ
- चीज (वस्तु) - जिनिस
- चुपचाप - चुपचाप
- चुड़ैल - चुड़िन
- चूहा - मुसा
- चेचक - निमनिमिआ
- चेला - चेला
- चोर - चरा
- चौड़ाई - असार
- चालक - गाड़ुआना
- चौड़ा और कम गहरा बर्त्तन - छेलका भाजन
- छट्ठी - नारता
- छपछप - छपछप
- छायादार स्थान - छांहा ठाइन
- छाती - छाति
- छाया - छांहा
- छिन्न-भिन्न - पसराल
- छितराया हुआ - छितराल
- छिपा हुआ - लुकाइल
- छूरी - छुरि/चाकु
- छोटा टुकड़ा - छुटु टुना
- छोटा - छुटु
- छोटा नदी - छुटु नेदि
- छोटा-छोटा टुकड़ा - छुटु-छुटु टुना
- जल कर भष्म हो जाना - पड़िके आंगरा हेइ जाउआ
- जनसंख्या - अबादि
- जल से भरा गड्ढा - पानिले भरल गड़हा
- जल्दी-जल्दी - झट-पट
- जगह जमीन - जेइगाह पाति
- जमा किया हुआ - जड़अ करल
- जल्दबाज - हड़बड़ि

- जन्म - जनम
- जनेऊ - पेइता
- थोक - ठउका
- जल्दी से - झट/चांड़े करि
- जमीन - जमिन
- जमघट - जमघाट
- जल्दीबादी करने वाला व्यक्ति - हड़बड़िआ
- जाल (मछली फसाने का) - जाल
- जायदाद - समपति
- जू - ढिला
- जाड़ा - जाड़
- जादूगर - जादुगर
- जीव-जन्तु - जिब-जंतु
- जीन - जिन
- जीवित - जिअंत
- जीवन - जिबन/जिनगि
- जूठा - जुठा
- जूठा लगा हुआ - सेखड़ि
- जोड़ा (सजीवों का) - जअड़ा/जामा
- जोड़ - जउड़
- जो-सो - जे ते
- जोश - जउस
- ज्यादा (कटी हुइ छोटी वस्तु) - कुधि
- झगड़ालू - झगड़इआ
- झर-झर - झर-झर
- झिलमिल - झिलमिल
- झील - झिल
- झुलसा हुआ - झुलससाल/मुरझाल
- झुण्ड - दल
- झुण्ड के झुण्ड - दल-के-दल
- झाड़ी - झाड़
- झूलता हुआ - लड़कल
- टेढ़ा - टेड़ा
- टेढ़ा-टेढ़ी - बांका-बांकि

- टोकरी - खांचि
- टुकड़ा चावल - खुदि
- टमाटर - बिलाति
- टोला - कुलहि
- ठीक - ठिक/बेस
- ठीक से नहीं बैठना (वस्तु) - खेप निहिं काटा
- ठीक से नहीं बैठना (आदमी) - सरकरि निहिं गडा
- ठेपा - ठेपा
- डबडबाई आँखें - भरल आंइख
- डायन - डाइन
- ढलान - ढाल
- ढीला - ढिल
- ढेकार - ढेकाइर
- ढोयी हुई मिट्टी - बहल माटि
- तब तो - तबे तअ
- तलवा - तालु
- तलवे का घाव - तालुक घाउ
- तगड़ा - दहरिबांधा
- तक - तड़िक
- तंगी - कमि
- तरीके से कपड़ा न पहनना - अजबझाइल
- ताजा - रअका
- तिरछा - तिरछा
- तीव्र गंध - नाकफाट बास
- तीसरा - तेइज
- तीन बार - टेना धांउ
- तीखा - झाल
- तीर की नोंक - तिरेक अग
- तीखा स्वाद - दमेइ झाल
- तुरंत - झट/चांड़
- तेज धूप - चड़चड़ुआ/पटपटुआ रउद
- तोंद वाला - लेधड़ हड़
- थका हुआ - थकल/फेदल
- थेथर - थेथड़

- थोड़ा सा - टुएक/एलपअ
- थोड़ी देर पहले - टुएक देरि पेहिले
- थोड़ा-थोड़ा - टुएक-टुएक
- थोड़ी देर बाद - टुएक पअरे
- दतवन - दतइन
- दमे की बीमारी - कुकुर खंखि
- दरवाजा का पल्ला - दुआइरेक पाटा
- दस्त, पतला पैखाना - उलटि, पतला झाड़ा
- दर्द - दरद
- दस - दस/सिहम
- दलदल - जभि
- दक्षिण - दखिन
- दरबार - दुआइर
- दरवाजा - दुआइर
- दाढ़ी - दाढ़ि
- दाल - दाइल
- दाग - दाग
- दान - दान
- दिनभर - दिनसगर
- दुबलापन - ढेइनपेइटला
- दुर्बल - कमजउर
- दुर्गन्ध - बास
- दुकान - दकान
- दुलार, प्यार - दुलार/आदर
- दुःख - दुख
- दुबला-पतला आदमी - ढेइन-पेइटला हड़
- देवता - बंउगा/भुत
- दोगला - दगला
- दो मील की दूरी - दुइ माइल फाराक
- दोष - दउस
- दोस्त - संगि
- दौड़ - दउड़
- दौड़ में आगे - दउड़ें आगु
- धनुष की डोरी - धनुसेक सुतरि

- धर्म - धरम
- धन - धन
- धनी/अमीर - धनि/अमिर
- धरती आकाश - धरति/आकास
- धीरे-धीरे - रसे-रसे
- धीमी चाल वाली औरत - लेलहि
- धीमी चाल वाला पुरूष - लेलाहा
- धीरे बोलने की आदत - गुदुर-गुदुर कहइआ
- धुवाँ ढेकार - धुंआ ढेकार
- धूधला प्रकाश - टुएक इंजर
- धूल भरा सिर - धुरा भरल मुड़
- धूप-छॉह - राउद-छांहा
- धोखा - धखा
- नमी, आद्रता - आदसुखा
- नरसो (चौथे दिन) - नरसु
- नटखट - लेधड़/थेथड़
- नया पौधा - पअहा
- नशे में धूत - सेंढ़िके टर
- नगद - नगद
- नगाड़ा - नागड़ा/धेंइसा
- नम्बर - नमबर/गनान
- नमक - नुन
- नरक - नरक
- नर्म - लुरपुर
- नराज - थथना फुला
- नया - नउतुन
- नया चालक - नउतुन गाड़ुआन
- नगड़ा मिट्टी - नागड़ाक माटि
- न सुखा हुआ न भींगा हुआ - ठनकल
- नारा - नारा
- नाक - नाक
- नाटा - ठेंठा
- नाली - नालि
- नाना - मामा बापु

- नाविक - नउकाक गाडुआन
- नाचने वाली औरत - नेचनि
- नाड़ी - नाड़ि
- निडर - निडर
- निक्कमा - खाइभुसका
- निकट - पास
- निकटवर्ती रास्ता - पासेक डहर
- निशान - दाग
- निशान - जउस
- निमंत्रण - नेउता
- निन्दा - थु-थु करा
- नींद - ढुल
- नींद में बड़बड़ाने की आदत - बउआ
- नुकीला - चखअ
- नेत्र - आंइख
- नेठो - नेठअ
- नौकरानी - कामिन
- नौका - डंउगि/डंउगा
- नंगा - नांगटा
- नंगा शरीर - हाड़-मुड़रा
- पकी हुई सब्जी - रांधल तिअन
- परदेश - परदेस
- पर्व - परब
- परीक्षा - परिकछा/परिकखा
- पहरा - अगरा
- पकड़ने में असुविधा - धरेलाइ दिकत
- पत्तल - पातइर
- पतंग - गुडडि
- पति-पत्नी - जनि-मरद
- पशुओं का समूह - जानुआरेक दल
- पशुओं का विश्राम स्थल - गहाइल/गुरुगठ
- प्रतिदिन - रउज-रउज/पतिदिन
- पका हुआ - सिझल
- पण्डित - ठाकुर

- पछतावा - पछता
- प्रसन्नचित्र - हुब
- पाचन शक्ति - पचाएक ताकत
- पागल - खेपा
- पाव - पउआ
- पारिश्रामिक - बेरहन
- पाकर - पाइके
- पानी में बहता हुआ - बहल
- पानी का स्रोत - बुएक जरक
- पानी का बुलबुला - फकना
- पीछे चलना - पेछु हाटा
- पिरोना - गांथा
- पीठ - गतर
- पीछा करना - पेछु धरा
- प्रीतिभोज - घुरलि बेरिआइत
- पुश्तैनी इतिहास - पुरखाक इतिहास
- पुच्छल तारा - पुछल तारा
- पूँछ - पुइछ
- पेड़ की नीचे का पवित्र स्थान - बंउगाक ठाइन
- प्रेत - भुत
- पैर - गड़
- पैर की झिनझिनी - गड़कर झुनझुनि
- पैसा - पेइसा/कउड़ि
- पोस्टकार्ड - पसटअकाड
- पौधा - गाइछ
- पंख - पांखा
- पंक्ति - पांइत
- पहचान - चिनाहा
- पहचाना - चिनहे
- परिचय - चिनहाप
- फरसा - फारसा
- फन्दा - फांदा
- फटा कपड़ा - छिड़ल लुगा
- फुला हुआ बाँस - फुलल बांस

- फैलने वाली बात - पड़चइआ कथा
- बन्द जबड़ा - बंद डका
- बलवान - बलगर
- बहुत बार - केइएक धांउ
- बकवास - थेथड़
- बहुत - ढेइर
- बड़ा हल - बड़का हार
- बड़ा जूँ - बड़का ढिला
- बदसूरत/कुरूप - बेढंगा
- बहुत छोटा - ढेइर छटअ
- वर्षा के कारण भूमि का कड़ा होना - पाथर हेउआ
- बनिया की दुकान - बनिआक दकान
- बहुत बड़ा - ढेइर बड़अ
- बरसाती घाव - बेइरसाक घाउ
- बड़ी-बड़ी आंखे - डिम पारा आंइख
- बहुत गन्दा पानी - ढेइर घिसट पानि
- बाल - चुइल
- बात करने में आनंद - थेथड़बाजि
- बार-बार - घने-घने
- बारि - बारि/पारि
- बावजूद - ताकर भितरअ
- बात-चीत - कथा-बात
- बीमार - रउग
- बीमारी - रउगि
- बूंद - ठपा
- बीच - मांइझे
- बुद्धि - बुइधगर
- बे हिसाब - फिजुल
- बेकार - फालतु
- बेला, समय - बेरा/पहर
- बैठक - बेइठकि
- बोलबाला - नाम चरचा
- बोझ से दबा हुआ - करजांइ दाबल
- भड़काने वाला - भिड़काइआ

- भार ढोने वाला - अजन बहइआ
- भाग्य - भाइग
- भिखारी - भिखमांगा
- भिन्न-भिन्न प्रकार के - किसिम-किसिम कर
- भीड़ - भिड़
- भींगा हुआ - भिंजल
- भीतरी चोट - भितेक घाउ
- भूखा - भुखल
- भूमि - जमिन/भुंइ
- भूकम्प - भुंइ कमपअ
- भूरा - गुड़ा
- भैंसा का बच्चा - पाड़ा
- भोज - भज
- भोजन - भात खाउआ
- भोज्य पदार्थ - खाएक जिनिस
- मण्डप - माड़ुआ
- मल मूत्र - हागल-मुतल
- मट्ठा - घर
- मजदूर - मुनिस
- मुहल्ला - कुलहि
- मतलब - गरज
- मित्रता - संगिआ
- मिलता-जुलता - अकर पारा
- मीठा - गुड़िअ
- मुर्गे की बांग - सांढ़ाक बांग
- मुर्गी - खुखड़ि
- मुर्गा या बकरी रखने का घर - छागइर गधड़ि
- मुट्ठी - मुठा
- मूँछ, दाढ़ी - मछ/दाड़हि
- मुखौटा - मुकुट
- मूर्ख - मुरुख
- मेढ़ - आइड़
- मोटा कपड़ा - पुरअ लुगा
- मोड़ना (पत्ता आदि को) - मअड़ा

- मोड़ - घुमान
- यहाँ-वहाँ भटकते हुए - हिंआ-हुंआ ढनढना
- युवक - छड़ा
- युवती - छड़ि
- यौवन - जुआनि
- रविवार - बेराबार
- रस्सी टूटना - दड़ा छिड़ल
- रातभर के लिए - राइतभरेक खातिर
- रात भर जागने की प्रक्रिया - गाजन
- रिवाज - चलन
- रूकावट - बाधा/रउकटउक
- रूमाल चोरी वाला खेल - उरमाल चरि करेक खेइल
- रूखड़ापन - खड़-खस
- रोशनी - आलअ
- रंगीन - रंगिआ
- लड़ाकू (भैंसा) - माताल काड़ा
- लगभग - मटामटि
- लड़ाई-झगड़ा - लाठा-चांगा
- लम्बा आदमी - ढांगा हड़
- लम्बी औरत - ढांगि हड़
- लज्जास्पद बात - लाजाएक कथा
- लज्जा - लाइज
- लबालब - टुलटुल
- लसलस - लेस-लेसा
- लगातार वर्षा - झेइड़
- लम्बा - बड़अ
- लम्बा-चौड़ा आदमी - दहरि बांधल लक
- लाभ - लाभ/नाफा
- लाल - लाल
- लाह - लाह
- लाठा (कुँआ का) - लाठ
- लालची - लालचि
- लिखित दस्तावेज - लिखत कागज
- लेन-देन - लेउआ देउआ

- लेकिन - मानतुक
- व्यर्थ - बेकार
- वहाँ - उहां
- व्यापार - बेपार
- वकील - अकिल
- वजन - भारि
- वर्षा - बेइरसा
- वर-वधु - बर-केनिआइ
- वहाँ पर - उ ठिन
- विशुद्ध - सुध
- विरान - माठ
- विश्वास - विसास
- विदेश - परेदस
- विरोधी - बादि
- वृक्षों का समूह - गाछेक झुंड़
- वेश-भूषा - भेस-भुसा
- वैसा नहीं - असन नाइ
- वैसा - असन
- वैसा ही - असनेइ
- शांत - थिर
- शांति - थिराइ
- शुरू - मुहाइन
- शुसभ्य - सुधड़
- शैर - बाघ
- शैतान - हारामजादा
- शैशव - आल
- शिशु - आल छउआ
- शीर्फ - खालि
- शीखर - मथनि
- शीर्ष - मथनि
- शंका - सक-सक
- शरीर - धड़
- शपत - सपत
- शरण - देख-रेख

- शुभकामना - सगुन बानछा
- शुभ - सगुन
- शुभरात्रि - सगुन निदा
- शासन - सासन
- शासक - राइज करइआ
- सुशील - सुसइभ
- संध्या - सांइझ/बेरा डुबा
- स्वर्ग - सरग
- समूचा - गटा
- स्वास में गतिरोध - निकास लेइते कसटअ
- स्वप्न - सपन
- स्नान - सिनान
- स्वशासन - निजेक सासन
- सगे संबंधी - नाता-गता
- सुप्रभात - बिहान
- स्वीकृति - रजामंदि
- सड़ा हुआ अनाज - पचल जिनिस
- सतर्क - हुंसिआर
- स्थिर - थिर
- समूह - दल
- सटा-सटा - सटल-सटल
- सब्जियों की क्यारी - किआरि
- सहायता - मदत
- स्वास की धकधकी - निकासेक धुकधुकि
- सात बार - गइ धांउ
- साथ-साथ चलना - संगे-संगे चला
- साफ पानी - साफा बु
- सुनी हुई बात - सुनल कथा
- सुखि जीवन में पला हुआ - सुखे पालल-पसल
- सुन्दर - सुंदर
- सुनने योग्य - सुनेक पारा
- सूचना - खबर
- सोने का समय - घुमाएक पहर
- सोने की साम्रगी - घुमाएक जिनिस

- संदेश - गिदर भुला
- संकीर्ण - सुपारा
- संकीर्ण स्थान - सरु ठाइन
- शव - मड़ा
- शत्रुता - दुसमनि
- शराबियों का समूह - पिअककड़ेक दल
- शर्म - सरम
- शायद् - हइ सेकइ
- शिक्षित - सिकखित
- भोज्य पदार्थ - झिंकेक नुड़ेक समान
- हम उम्र - जड़ि पाड़ि
- हट्टी/मूर्ख - जिदहा/मुरुख
- हल्की बुखार - गस-गसा
- हल्की वस्तु - हुलुक जिनिस
- हॉकी - फदा/हकि
- हाथ पैर का दर्द - गड़-हांथ दुखा
- क्षति - नकसान
- क्षणभर के लिए - घड़िटेक

## वस्तु/खाद्य सामग्री

### अ

- अरवा चावल - अरुआ चार
- अगारा - आगड़ा
- अण्डा - डिम/फेड़का
- अन्न - अन
- अलकतरा - आलकतरा
- अलकुसी - आलकुसि
- अस्तुरा - छुरा
- अंधेरा - आंधार
- अण्डा (सड़ा हुआ) - घरल डिम
- अमरूद - आंजिर

### आ

- आंचल - खंछा
- ओला - पाथर पानि

- आटा - आटा
- आंवला - आंउला

इ

- ईख का जड़ - सिंकड़
- ईमली - तेतइर

ए

- एड़ी - एंड़ि
- ऐनक - आरसि

क

- कुमनी (चिड़ियाँ फंसाने का) - फंसड़ि
- कच्चा धागा - आरुआ सुता
- केतली - केटलि
- कील - कांटि/जलइ
- कटोरा (बड़ा) - डुभा
- कटोरा (छोटा) - डुभि
- कंकड़ - कांकड़
- कण्ठ - तालु
- कुप्पी (तेल रखने का) - किप
- कांटा - कांटा
- कुरथी - कुरथि
- कमीज - कामिज
- कंघी - कांकुआ
- कोयला - कउइला
- कपड़ा - लुगा
- कुदाल - कदाइर
- कत्था - कांथा
- कंकड़, गुरगुट - कांकड़/गुटि
- कुन्नी - भुसा
- कुर्सी - मांचि
- कुल्हाड़ी (छोटा) - टेंइगला
- कुल्हाड़ी (बड़ा) - टांगा

ख

- खेल का मैदान - टांइड़
- खैरका - खेइड़का

- खंचिया - खांचि
- खुट्टा - खुंटा
- खुद्दी (चावल का कण) - खुदि चार
- खेसारी - खेसारि
- खिड़की - जालना
- गुड़ - गुड़
- गोली - गुलि
- गोबर - साहार
- गुर्दा - किडनि
- गेंदा (गेंदा) - गेंदा
- गेहूँ - गेहुंम
- गेहूँ का आटा - गेहुंमेक आटा
- गगरी - गरइआ
- गैंता - गांइत
- गमछा - गामछा
- गंजी - गेंजि
- गद्दी - गददि
- गन्धक - धुना
- ग्लास - गिलास
- गिरगिट्टी - केकलास
- गुलैल (हथियार) - गुलइर
- गुंदली - गुंदलि

**घ**

- घन्टी - घंटि
- घड़ा - घाड़ा

**च**

- चावल का शराब - हंडिआ
- चुड़ा - चिउड़ा
- चावल - चार
- चक्का - चाक
- चक्की (गुड़ का) - जांता
- चप्पल - चपल
- चरपाई - खाइट
- चरखा - चरखा

- चुहा दानी - मुसाक खडहर
- चलनी - चालनि
- चाय - चा
- चादर - चादइर
- चाँदी - रुपा
- चिमटा - चिमटा
- चिलम - चिलुम
- चूना - चुन
- चटाई - पेटिआ
- चुल्हा - चुलहा
- चींटी का अण्डा - पिपड़िक डिम
- चाभी - चाभि
- चमड़ा - चामड़ा
- चारा - चारा
- चिनगारी - फुरुंग
- चुक्का (मिट्टी का) - चुका
- चौकी - चउकि
- चौक - चउक

**छ**

- छोटी टांगी - टेंइगला
- छिटकिनी - सिकलि
- छप्पर - छाइन
- छतरी - छाता
- छिपकल्ली - टिकटिकि

**ज**

- जला हुआ तेल - पड़ल तेल
- जोआठ (हल का) - जुआइन
- जाल - जाल
- जंघिया - जंघिआ
- जहाज - जाहाज
- जाकेट - जेकेट
- जूता - जुता
- जूता-मोजा - जुता-मजा
- ज्वेलर - गहना

**झ**

- झाड़ु - बाढ़िन
- झाड़ु का मुट्ठा - बढ़िनेक मुठा
- झंझरा - झेंझरा
- झण्डा - झंडा
- झिंगी - झिंगा

**ट**

- टोपी - टपि
- टमाटर - बिलाति
- टमटम - घड़ागाड़ि
- टाय - टाइ

**ड**

- डोरा (पतला) - सुतरि
- डोरा (कम मोटा) - दड़ा
- डोरा (ज्यादा मोटा) - बरअहि
- डोरा (बिचाली का पतला) - सिकल दड़ि
- डोरा (बिचाली का मोटा) - बड़
- डलिया - डालि
- डोली - पालकि
- डंडा (पतला) - पेइना
- डंडा (थोड़ा मोटा एवं छोटा) - ठेंगा
- डंडा (थोड़ा मोटा एवं लम्बा) - डांग
- डंडा (एक तरफ नूकिला) - टांड़ा
- डंडा (सबसे मोटा एवं नाटा) - मुंगर
- डंडा (मोटा एवं सबसे लंबा) - आड़ास

**ढ**

- ढोलक - ढउल
- ढक्कन - ढकन

**त**

- तम्बाकु - खेइनि
- तारा - तारा
- ताबीज - मांदुलि
- ताला - कुलुप
- तिल फल - तिल

- तलहत्थी - लुलुहा
- तार की जाली - तारेक जालि
- तकिया - मुंड़ सिथान

**थ**

- थाली - थारि
- थैला - झला

**द**

- दोना - दना
- दीपक - परदिम
- दौरी (धन रखने का) - कुपि
- दाल चिनी - दाइल-चिनि
- दूध - दुध
- दाल - दाइल
- दही - देहि
- दतवन - दतइन
- दवा का तेल - दाउआइकर तेल
- दिवाल - पाचिर
- दियास्लायी - माचिस
- दिमक - उइ/डुकु

**ध**

- धूल - धुरा
- धूमन - धुंआ
- धनिया - धनिआ
- धान बांधने का रस्सी - सिकल दड़ा
- धागे की गोलीं - गुलि सुता

**न**

- नापने वाल सिक्कल - सिकल/चेइन
- नारियल - नारिअल
- नौका - डअंगा
- नरहन (नायक का) - नरहइन

**प**

- पिंजरा - खांचा
- पित्त - पित
- पैसा - पेइसा/कुड़ि

- पानी - बु
- पानी फल - पेइन फल
- पत्थर - पाथर/पाखना
- पटुआ - पटुआ
- पईला (धान नापने का) - पेइला
- पंखा - बिअनि/पानखा
- पंजरा - पेंजड़ा
- पत्तल - पातइर
- पतलून - पेइजामा
- पत्ते का ठोंगा - दना
- पीढ़ा - पिढ़ा
- पपिता - पिपा

**र**

- रूई - रुआ
- राख - बानि/पांस

**ल**

- लौढ़ा - लढ़ा
- लाठा - लाठा/गअंद
- लौंग - लंग

**व**

- वस्तु - जिनिस
- वायु - बातास
- वाष्प - भाप

**श**

- शराब (महुआ का) - मद
- शराव का पहला पानी - फुल मद
- शक्कर - चिनि
- शहद - मधु गुड़
- शरबत - सरबत

**स**

- सुखा लम्बा बांस - सुखल लमबा बांस
- सब्जी (पकी हुई) - तिअन
- सुअर की दांत - सुअइर कर दांत
- सौंठ - सुंइट

- साग - साग
- सरसों - सेइरसा
- साल - चादइर
- संदुक - बाकसा
- साड़ी - लुगा
- सुपारी - सुफाड़ि

ह

- हुड़का - हुड़का
- हाथ - हांथ
- हड्डी - हाड़
- हथौड़ी - मातुलि
- हल्दी - हेरइद
- हल का मुट्ठा - हारेक बुंटा
- हंसुआ - हंसुआ
- हाथी दांत - हाथिक दांत
- हल - हार

## वनस्पती एवं फल फूल

अ

- अनार - आनार
- अमड़ा - आमड़ा
- अदरख - आदा
- आलु - आलु
- आम - आम
- अमरूद - आंजिर
- ईख - आंख
- उड़हुल फूल - अड़हुल फुल
- केला - केइरा
- कोहड़ा - कउढ़ा
- कछुआ - काछिम
- कटहल - कठर
- कदम वृक्ष - कंदम गाइछ
- केला का कान्धी - कांधि
- कपास - कापास

- करैला - केरइला
- कांसी (घास) - कांसि घास
- कुदरूम - कुदरुम
- कुन्दरी - कुंदरि
- कुरथी - कुरथि
- कुसुम वृक्ष - कुसुम गाइछ
- केन्द - केंद
- कमल फूल - कमल फुल
- करंज पेड़ - करंज गाइछ
- काली मिर्च - गउलकि
- कांटेदार वृक्ष - कटाक गाइछ
- ककड़ी - केकड़ि
- खजूर - खिजुर
- गोबी - कफि
- गन्धरी साग - गांधारि साग
- गोबर छता - गबर छाति
- गुलाब फूल - गुलाब फुल
- गोड़ा धान - गअड़ा धान
- गुलायची फूल - गुलाइच फुल
- गंगा तुलसी - गंगा तुलसि
- गुठली - आंठि
- घास - घास
- चम्पा फुल - चामपा फुल
- चकोड़ साग - चेथरा साग
- छोटा कटहल - छुटु कठर
- जंगली कन्दा - बन केंद
- जामुन - जाम
- झिंगा - झिंगा
- टमाटर - बिलाति
- डाली (पेड़ का) - डाइर
- ताड़ की डाली - ताड़बगड़ा
- तरबूज - तरबुज
- तुलसी - तुलसि
- धतुरा - धतरा

- दूब घास - दुब घास
- दुधिया लत - दुधि लत
- नेनुवा - परल झिंगा
- नासपती - नासपाति
- नीम का पेड़ - निम गाइछ
- पुई साग - पुइ साग
- पपीता - पिपा
- पियार का पेड़ - भेलुआ
- पका हुआ - पाकल
- फूल - फुल
- फूल का गुच्छा - फुलेक धअप
- फल (फलने के साथ) - जिलि
- फल (थोड़ा बीजा होने पर) - खिंचा
- फल (पूर्ण बीजा होने पर) - जआइल
- फल (बीजा कठोर होने पर) - बुढ़ा
- फल (पकने के पहले) - कांचा
- बोदी - घांघरा
- बीज - गटा/फटा
- बेर - कउइर
- बेर वृक्ष - कउइर गाछ
- बट वृक्ष की जटा - बड़ेक सिंकड़
- बीड़ा (धन का) - बिड़ा
- ब्राह्मी साग - बेंग साग
- बहेड़ा का वृक्ष - बेहड़ा गाइछ
- बीड़ा (रोपने का) - आँटि
- भिंडी - राम झिंगा
- मेथी का साग - मेथि साग
- मकई - जनहाइर
- मकई का बाल - मच
- महुआ का फल - कचड़ा
- लतर - लत
- लौकी - लउआ
- वृक्ष (पता रहित) - सुखाल गाइछ
- वृक्ष - गाइछ

- शरीफा - मांदाल
- साग-सब्जी - साग-तिअन
- सेमल वृक्ष - सिमइर गाइछ
- सकरकन्द - सेकरकांदा
- सुनसुनिया साग - सुसनि साग
- हुरहुरिया साग - हुरहुरिआ साग

## पशु/पक्षी/मछली/कीड़ा/साँप

- उदविलार - कटास
- ऊँट - उंट
- उड़ने वाली पक्षी - उड़ेइआ चरइ
- केकड़ा - खाखड़ा
- भैंस - मेहिस
- कतला मछली - कातला माइछ
- करैत साँप - राइज सांप
- कौआ - कउआ
- केरकेटा (एक पक्षी) - केहेरकेटा
- कोयल - कइलि
- कछुआ - काछिम/कुड़ुम
- कबुतर - पेरुआ
- खस्सी - खांसि
- खरगोश - खेरहा
- गाय - गाइ
- गरूड़ पक्षी - गरुड़ पाइख
- गदहा - गाधा
- गिद्ध - गिद
- गौरैया पक्षी - गेरआ
- गिरगिट - केकलास
- घोंघा - घंघा
- घड़ियाल - कुमहिर
- चिंगड़ी मछली - जाल माइछ
- चिट्टी - पिपड़ि
- चिमटी - जिंआ
- चुहा - मुसा

- चिड़िया - चरइ/पांइख
- चेंगना - खुखड़ि छउआ
- चोंच - ठंठ
- छोटा मधुमक्खी - छुटु मधु मांछि
- छुछुन्दर - छुछुआ
- छोटा चुहा - चुटिआ/चुटरि
- जंगली सुग्गा - बनेक सुगा
- झिंगुर - घुरघुरा पअका
- टिड्डा - फड़िंग
- डोरहा साँप - ढअंड़ सांप
- तेन्दुआ - चिता बाघ
- तितली - पखनि पका
- तौता - सुगा
- दीमक - दिंआ
- धमना साँप - ढामना सांप
- नरभक्षी बाघ - बाघ
- नाग साँप - खेरिस सांप
- नैवला - नेइल
- पोठी मछली - पअठि माइछ
- परजीवी - परखउका पका
- बकरी (छोटा बच्चा) - पांठि
- बकरी (बिन वियायी) - हलुआनि
- बकरी (जिसका बच्चा है) - ढाइड़/छागइर
- बकरा - पांठा
- बगुला - बंअक
- बकरा - पांठा
- बोआरी मछली - बुआइर माइछ
- बाघ - बाघ
- बत्तख - गेड़ें
- बाज पक्षी - चिल
- बन्दर - बानदर
- बछड़ा - दामड़ा
- बिरनी - बरहइल पअका
- भगजुगनी - बुगजुनि

- मैंना - बउनि
- मुर्गी - खुखड़ि
- मुर्गी (जो अंडा नहीं दिया हो) - कटइर
- मुर्गी (जो बच्चा दिया हो) - ढाइड़
- राक्षस - राछस
- लोमड़ी - खेक सिआर
- वन भालू - बन भालुक
- वन विलार - बन बिलाइर
- सियार - सिआर
- हुरहुरिया साँप - हलहेलिआ सांप

## कर्त्ता के शब्द

- अपना - निजेक
- मैं - मइ
- मेरा - मर
- हमलोग - हामरानि
- मुझको - मके
- हमलोगों को - हामराके
- हमलोगों के जैसा - हामराक पारा
- हम लोगों का - हामराकर
- हम दोनों - हामरा दुइअ
- हमलोग तो - हामरा तअ
- तुम - तंइ
- तुम्हारा - तर
- आप - तहरा
- आपलोग - तहरानि
- तुम लोग - तहरानि
- तुम दोनों - तहरा दुइअ
- तुम दोनों के साथ - तहरा दुइअक संगे
- तुम तो - तहुं तअ
- तुम लोगों का - तहराकर
- आपलोगों का - तहराकर
- वह - अंइ
- वे लोग - अखरा

- वे लोग तो - अखरा तअ
- उनलोगों का - अखरा कर
- उसकी - अकर
- उसमें - उटांइ
- उनदोनों का - उ दुइअ कर
- उनलोगों का - अखराकर
- उनलोगों के साथ - अखराक संग
- इसमें - इटांइ
- उसमें - उटांइ

## आज्ञा सूचक/सम्बोधन/आश्चर्य बोधक/प्रश्न वाचक

- अरे - एरे/ए
- अरी (छोटी लड़की को) - एगे/एरे
- अभी - एखन
- अभी भी - एखनअ
- इसी से - एकरले
- इसी में से - एकरेले
- इसमें - इटांइ
- इस स्थान पर - एहे ठिने
- इस तरफ - एहे दिगे
- ऐसा - एसन
- क्या - किना
- क्या जाने - कि-जाने
- क्यों - काहे
- कब - कबे
- किस प्रकार का - कन डुल
- कब - कखन
- कहाँ - काहां
- कितना - केतना
- कैसे - केसे
- क्या कारण है - किना कारन
- क्योंकि - काहेकि

- कोई भी - केउ हेले
- कहीं पर - कनअ ठिन
- के लिए - तेंहे/खातिर
- कौन वस्तु - कन जिनिस
- किस प्रकार का - कन रकम
- क्यों - काहे
- जो-सो - जे-ते
- ठहरो - रह/डढ़हउ
- नहीं - निहिं/नि/नाइ
- नमस्ते - जहार!
- तब भी - ताउ
- फिर भी - ताउ तअ
- यहाँ है - इहां आहेइक
- यहाँ - इहां
- यह - इ
- वह - उ
- शायद, भाग्यवश - मुझाइक/पाइछे

## समय बोधक/माह/पर्व

- अचानक - आचकाइ/आचका
- अवकाश - छुटि
- अपराह्न - दुपर बेरा
- आजकल - आइज-काइल
- अभी - एखन
- अभी नहीं - एखन नाइ
- अभी ही - एखने
- इस दिन - एहे दिन
- उम्र - बइस/उमइर
- उषा काल - बिहान
- कार्तिक - कातिक
- दिन - दिन
- दोपहर - कलुआ बेरा
- नाता, रिस्ता - नाता-गउता
- पहले - पहिले

- प्रत्येक महीना - पति-मास
- प्रतिदिन - पति-दिन
- प्राचीन काल - पुरना बेरा/आदि बेरा
- फगुआ - फगुआ
- फाल्गुन मास - फागुन मास
- बेचने का सुअवसर - बेचेक जअखा/बतर
- मध्यरात्रि - आधा-राइत
- रात - राइत
- विशेष अवसर - खास मका/सुजउग
- शीघ्र - झटे/चांड़े
- शीतकाल - जाड़ मास
- समय - बेरा

## संबंध/नाता

- अगुआ - आगुआ
- कन्या - केनिआइ
- घर जमाई - घार जामाइ
- चाची - काकि
- चाचा - काका
- छोटी बहन - बेहिन
- जुड़वाँ - जड़ा/जामा
- जेठ साला - बड़अ साला
- जिजा - बहनइ
- दमाद - जामाइ
- दादा - आजा
- दादी - आजि
- देवर - देउअर
- दुल्हा - बर
- धर्म पिता - धरम बाप
- नाना - मामा बापु
- नानी - मामा माइ
- नाती-नतनी - नाति-नातिन
- निःसन्तान औरत - बांझ जेनि/बांझिन
- परदादा - आजाक बाप

- परदादी - आजिक सास
- पिता - बाप
- पोता, पोती, नाती, नतिनी - नाति-नातिन
- बड़ा भाई - दादा
- बड़ी ननंद जेठ - सांघात
- बड़ी बहन - दिदि
- बाँझ - आंठकुरा
- भाभी की बहन - सालि/साधात
- भतीजा-भतीजी - भतिजा-भीतजि
- भैया - दादा
- ममेरा - मामाक
- माँ - माइ
- लड़का - पुता
- लड़की - धिआ
- मामू/मामा - मामा
- मामी - मामि
- मेहमान - पहना/आपुस/कुटुम
- वर वधु की जोड़ी - बर-केनिआएक जउड़ि
- वर-कन्या - बर-केनिआइ
- विजातीय संबंध - दसर जाइतले नाता
- विधवा - रांड़
- साली - सालि
- साला - साला
- सासु - सास
- ससुर - ससुर
- संबंध - नाता
- संबंधि - नातादारि
- लाड़लि - एक पुति
- लाड़ला - एक पुता

## व्यवसाय

- कृषक - चासा
- कुमहार - कुमहार
- चमार - मुचि

- टोकरी बनाने वाला - महलि
- तेलि - तेलि
- दर्जी - दारजि
- धोबी - धउबि
- नाई - ठाकुर/नउआ
- पादरी - पादरि
- फर्नीचर बनाने वाला - बाढ़इ
- बनिया - दकानदार
- मछली मारने वाला - केंउअट
- मुर्तिकार - चुथार
- लोहार - कामार
- साड़ी बनाने वाला - जलहा

## माह/दिन/मौसम/पव/माह

- माघ - माघ
- फाल्गुन - फागुन
- चैत - चेइत
- वैशाख - निरन/बेसाख
- जेठ - धरन/जेठ
- आषाढ़ - आंसाड़
- श्रावण - बेइरसा मास
- भादो - भादर
- आश्विन - आसिन
- कार्तिक महीना - सहराइ/कारतिक मास
- अगहन - अगहन
- पौष - पुस

## दिन

- सोमवार - इंदअबार
- मंगल बार - खरअबार
- बुधवार - हबार
- वृहस्पति वार - डिनि बार
- शुक्रवार - भुरका बार
- शनिवार - भांगा बार
- रविवार - बेराबार

## मौसम/समय

- वसंत ऋतु - मधु मास
- ग्रीष्म ऋतु - निरन मास
- वर्षा ऋतु - रपा मास
- आमावस - अमाबेइसा
- आगामी वर्ष - आउति बछर
- पिछला वर्ष - गेला बछर
- आने वाला कल - आउति काइल
- कलयुग - कलिजुग
- गर्मी - गरमि
- गर्मी और बरसात - गरमि आर बेइरसा
- गर्मी का दिन - निरन दिन
- आज - आइज
- कल - काइल
- परसो - परसु
- चौंथे दिन - नरसु
- दशहरा - दुरगा पुजा
- वर्षा ऋतु - बेइरसा मास
- सुर्य की किरण - सुरजेक आहला
- सुबह - बिहान बेरा
- दोपहर - कालुआ बेरा
- दोपहर के बाद का समय - सेंधइआ बेरा
- शाम पहर - सांइझ बेरा
- शाम के बाद - मुहआंधरा बेरा
- रात्रि पहर - राइत बेरा
- मध्य रात्रि का पहर - एक घेड़ि बेरा
- भौर - भिनसेरिआ बेरा

## लेखन/साहित्यिक/पाठ्य शब्द

- अक्षर - आखड़
- अध्याय - पाठ
- अलंकार - गहना
- आत्म कथा - हिआक कथा
- उदेश्य - धेइ

- उपन्यास - फेदड़न
- उपन्यासकार - फेदड़इआ
- एकांकी - एक केड़िआ
- कहानी - केहनि
- काव्य - साहित
- कविता - कबिता
- कवि - कबि
- कथा वस्तु - कथा बसतु
- कलम - कलम/चिसनि
- किताब - पथि
- कॉपी - कउपि
- कलाकार - छभइआ
- गीत - गित
- गुरू - मासटर
- चौक - पेनसिल
- चित्र - फउटअ
- दावात - दाउआत
- दो शब्द - दुइ टुम
- नाटक - नाटक
- नृत्य - नाइच
- निबंध - निबंध
- पुस्तक - पथि
- पारदर्शक - झिलमिलिआ
- पात्र - पाठकरा
- पृष्ठ - पिठ/पाता
- पृष्ठ संख्या - पिठ लेखा
- प्रकाशन - निखरन
- प्रकाशक - निखरइआ
- प्रकाशित - निखरअनि
- लेखक - टुड़ेइआ
- साहित्य - साहित
- संपादक - संजुएता
- संपादकीय - संजुएआनि

- सह संपादक - जग-संजुएता
- संपादकीय मंडली - संजुआनि दंहगि
- सारांश - सार
- भूमिका - छेउनि
- भावार्थ - माने
- भाषा शैली - पाड़सि सेइलि
- भाग - खंड़
- मूल्य - बेहरि/बेरहन/दाम
- मंचन - छेइभ
- रस - रस
- रचना - रचना

## राजव्यवस्था

- अधिकार - हक
- आवेदन पत्र - आबेदन चिठि
- एकरारनामा - एकरारनामा
- कानून - कानुन
- कानूनी अधिकार - कानुनि अधिकार
- गवाह - गअहा
- घूस - घुस
- चपरासी - चपरासि
- चालान - चालान
- चौकीदार - पाहरादार/चउकिदार
- छुट्टी - छुटि
- जाति - जाइत
- जमादार - जमादार
- जिला - जिला
- जिरह, बहस - जिरह/बहस
- जेल खाना - जेहल
- दरबार - दरबार
- दारोगा - दरउगा
- दास - दास/मुनिस
- दूत - बेउरा आनइआ

- देश - देस
- नकली - नकलि
- नकल - नकल
- नक्शा - नाकसा
- नवाब - नबाब
- नमूना - चिनहा
- नेपाली - नेपालि
- परदेशी - परदेसिआ
- पेशकर - फाइल बाढ़ुआ
- पंचायत - सलअआना
- फौजदारी - माइरमिट
- वसियत नामा - पुरखाक धन
- स्वराज्य - निजेक राइज

## सामान्य बोल-चाल

- प्रणाम करना - गड़ लागा।
- तुम कहाँ से आ रहे हो - तंइ काहांले आउअहस?
- आप कहां से आ रहे हो - तहरा काहांले आउआहा?
- तुम किधर से आ रहे हो - तंइ कदेले आउअहस?
- मैं जाउँगा - मइ जाब।
- तुम पढ़ोगे - तंइ पढ़बे।
- तुम खाओगे - तंइ खाबे।
- आप लोग खायेंगे - तहरानि खाबे।
- वह गायगा - अंइ आउताक।
- वे बजायेंगे - अंइ बाजातेक।
- आप लोग कैसे हैं - तहरानि केसन आहिआ?
- मेरे पिता घर में नहीं है - मर बाप डिढ़ांइ निहिं आहेइ।
- मेरे पास घर नहीं है - मर पासे डिंढ़ा नि आहेइ।
- उनके आने का समय हो गया - अकर आइक बेरा हेल आहेइक।
- आप कौन है? - तंइ कन हेकिस?
- मैं आप को नहीं पहचान पा रहा हूँ - मइ तके चिनहे निहिं पारइहे।

❖❖❖

# 33. कुड़मालिंइ गइदेक अनुबाद

## (गद्यांश अनुबाद)

**1. निम्नांकित गद्यांश का अपने भाषा में अनुवाद करें।**

साहित्य समाज के जीवन का दर्पण होता है। यह लोगों की इच्छाओं, आशाओं एवं संदेहों को शब्दों में गढ़ता है। ये शब्द मिलकर पुस्तक रूपी साहित्य का निर्माण करते हैं। यह समाज में होने वाले परिवर्तनों का एक अमुल्य रिकार्ड है। सामान्यतः साहित्य की रचना आम लोगों की भाषा में होती है। भाषा सरल होती है। विषय-वस्तु को हृदय स्पर्शी बनाने के लिए मुहावरे, कहावते, रस, छंद, अलंकार सहित उपमाओं का प्रयोग भी साहित्य में किया जाता है। साहित्य को पढ़कर लोग आत्मचिंतन की ओर अग्रसर होते हैं। समाज में व्याप्त कुरीतियाँ साहित्य से उजागर होती है, जिसे लोग अपने स्तर से मिटाने का प्रयास करते हैं। साहित्य हमारी संस्कृति की रक्षक है। यही कारण है कि हजारों वर्ष पुरानी भारतीय संस्कृति आज भी हमारे बीच विद्यमान है।

वर्तमान भारतीय साहित्य अंग्रेजी शिक्षा से प्रभावित हुई है। आधुनिकता की नई संस्कृति ने साहित्य एवं साहित्यकारों की उपेक्षा की है। समाज में नैतिकता का पतन इसका परिचायक है।

## कुड़मालि भाषा में अनुवाद

साहित समाजकर जीवनेक आरसि हेकेइक। इटा हड़ेक बानछा, आसरा आर संदेहके साड़ा माहान गढ़इक। एहे साड़ा मिलिके पथिक धंचरअरे एक साहित बनाइक। इटा सामाज माहान हेल परिबरतनेक एक बेसकिमति अड़चा-पड़चा (रिकड) हेकेइक। मटामटि साहितेक रचना एसन हड़ेक पाड़सि माहान हेउअइक जेटाके चट करि केउ हेले सझे बुझे पारत। एकर पाड़सि सिधा-साधा हेउअइक। बिसइ-बसतुके हिआंइ छुएक पारा बनाइएक खातिर आहना, डाकपुरुसेक कथा, जान केहनि, रस, साड़ाक गहनाक संगे आरअ परकितिक जिनिस संग तुलना करि दांजल जाइक। साहित पढ़िके हड़ हिआक चिंता दिगे बाढ़त। सामाज माहान पसरल कुकाम साहितेक दारांइ बरकइक। जेटाके हड़े निजेक दिगेले मेटाइएक कसनि करत। साहित हामराक चारिक रछक हेकेइक। एकरेइ खातिर हामराक लट - लट बछरेक आधड़ भारतेक चारि आइझअ हामराक बिचे झबरल आहेइक।

चलति बेरांइ भारतेक साहित अंगरेजि सिकखाले सानाइल आहेइक। हालुक बेरांइ एहे नउआ चारिंइ, साहित आर साहितकारेक हेलना करल आहेइक। सामाजें आइज नितिक गिआनेक कमि हेउआ एकर चिनहाप हेकेइक।

**२. दिये गये अपठित गद्यांश का अपनी भाषा में अनुवाद करें।**

धीरे - धीरे सब कुछ बदल रहा है। एक नयी जीवन शैली अपना वर्चस्व स्थापित कर रही है। लोग अपनी जीवन को सुखी बनाने के लिए नित्य नई प्रवृत्तियों को जन्म दे रहे हैं। इनमें सबसे प्रमुख सुख देने वाली सामग्रियों का उपभोग है। विलासिता की वस्तुओं से बाजार भरा पड़ा है। प्रतिदिन विज्ञापन हमें अपनी वस्तुओं की ओर लुभा रहे हैं। हम नई उत्पादों की ओर समर्पित होते जा रहे हैं। जाने-अनजाने इन उत्पादों से हमारा चरित्र भी बदलते जा रहा है। एक नई संस्कृति समाज में अपनी जड़े पसार रही है। सुख-साधनों की इस संस्कृति के फैलाव का क्या परिणाम होगा? यह गंभीर चिंता का विषय है। समाज में अमीरों और गरीबों के बीच की दूरी बढ़ रही है। सम्पन्न वर्ग के लोगों में सामाजिक कल्याण की गति-विधियों में कमी आ रही है। जीवन स्तर का यह बढ़ता अंतर आक्रोश और अशांति को जन्म दे रही है।

गाँधी जी ने कहा था कि हम स्वस्थ सांस्कृतिक प्रभावों के लिए अपनी दरवाजे-खिड़कियाँ खुला रखें पर अपनी बुनियाद पर कायम रहें। उपभोक्तावाद की संस्कृति हमारी सामाजिक नींव को हिला रही है। यह एक बड़ा खतरा है। भविष्य के लिए एक बड़ी चुनौति है।

## कुड़मालि भाषा में अनुवाद

रसे - रसे सउभेइ किछु बदलअतेइ रहअहइ। एक नउआ जिबन सेइलिंइ निजेक सउब कुछुक लेइ ठाइन मेड़िआहेइक। हड़े जिनेक जिनगानिके सुखि बनाउएक खातिर रउजे नउआ जिनिस बेबहार करेक गुनकर जनम दे हेइक। एकर भितर सउबले बेसि सुख दिएक जिनिसेक भउग कराटा आहेइक। आराम करेक जिनिसे बाजार भरल-पुरल आहेइक। पतिदिन बिगापने हामराके एहे जिनिसेक दिगे लभाहेइक। हामरानि नउआ बनल जिनिसेक उपर थपतेइ जाइहे। जाना-अजानाइ एहे जिनिसले हामराक गति-बिधि बदलइते जा हेइक। एक नउआ चारि हामराक सामाजें निजेक सिंकड़क पसराइते आहेइक। सुख-सुबिधाक एहे चारिक पसरने किना दुरगति हेतेइक? इटा गंभिर चिंताकर बिसइ हेकेइक। सामाज महान अमिर आर गरिबेक बिचेक फांसला बाढ़तेइ जा हेइक। धने-धाने दढ़अ-माढ़अ हड़ेक भितर सामाजेक कलइआनेक भाउए कमि आउअहेइक। जिनगिकर एहे बाढ़ल तफात राग, गुरगुरि आर दुखके जनम दे हेइक।

गांधिंइ कहल रहलेइक जे हामराके बेस चारिक परभाउएक खातिर निजेक दुआइर जालना खुला राखा मनतुक, निजेक गुड़िके बनाइ राखा। बाजारेक चारिंइ हामराक सामाजेक गुड़िके डलाहेइक। इटा एक बिरहद खतरा हेकेइक। आउति बेराक खातिर एक बिरहद चुनउति हेकेइक।

**3. दिये गये हिन्दी अवतरण का अपनी भाषा में अनुवाद करें।**

झारखण्ड में हिन्दी साहित्य लेखन के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि यहाँ साहित्य के सभी रूपों में कार्य किए गये हैं। कहानी, नाटक, उपन्यास, कविता एवं निबंध के क्षेत्र में यहाँ के साहित्यकरों की कृतियाँ सम्पूर्ण भारत में प्रसिद्ध है। झारखण्ड में साहित्य लेखन का कार्य राँची से हुआ। 1913 ई॰ के आस-पास साहित्यकार बैद्यनाथ पोद्दार ने पुरानी शैली की कई कविताएँ एवं कहानियाँ लिखी। यहाँ की पहली कहानी 'सिन्हा साहब' 1929 ई. में प्रकाशित हुई। इस कहानी के लेखक 'राधाकृष्ण' थे। हिन्दी साहित्य के आधर स्तम्भ प्रेमचंद ने राधाकृष्ण के कहानियों से प्रभावित होकर कहा था - "मैंने छोटानागपुर के कोयला खान से एक हीरा ढूँढ़ निकाला है।" अतः यहाँ यह कहना उचित प्रतीत होता है कि हिन्दी साहित्य का वास्तविक लेखन राधाकृष्ण से आरंभ हुआ। कालांतर में 12 जुलाई 1960 ई. को राँची विश्वविद्यालय की स्थापना हुई। विद्या का यह मंदिर साहित्यिक रचनाओं का केन्द्र बिन्दु बन गया। यहाँ से साहित्य रचना की धारा बह निकली। आज हिन्दी, बांगला सहित क्षेत्रीय एवं जनजातीय भाषाओं में साहित्य की सभी विधाओं (रूपों) में कार्य हुए हैं और हो रहे हैं।

## कुड़मालि भाषा में अनुवाद

झारखंड माहान हिंदि, साहित चिसेक उपर मगज खाटाले इटा टउआ चलेहेइक जे इहां साहितेक सउब बिधा माहान काम हेल आहेइक। केहनि, नाटक, फेदड़न, कबिता आर निबंधेक दिगे इहांक साहितकारेक किरति गटा देसे नामकरा आहेइक। झारखंडे साहित चिसेक काम रांचिले हेल आहेइक। 1913 सालेक आसे-पासे साहितकार बेइदनाथ पददारें पुरना सेइलि माहान केइएक गअ कबिता आर केहनि चिसल आहेइक। इहां मिर केहनि 'सिन्हा साहब' 1929 साले निखरल आहेइक। एहे केहनिक टुड़ेइआ 'राधाकृष्ण' हेकल। हिंदि साहितेक खुंटा पेरेम चांदें राधाकिसनक केहनिले महित हेइके कहल आहेइक - "मइ छटानागपुरेक कइला खानले अना गअ हिरा खजि बाहराइल आहिए।" तेंइ इहा इटा कहा उचित बुझाहेइक जे हिंदि साहितेक गड़ा चिसेक काम राधाकिसनअले मुहाइन हेल आहेइक। बेरा बदलेक संग 12 जुलाइ 1960 साले रांचि बिसबिदालइ कर थापना हेलेइक। बिददा कर इटा मड़प, साहित रचनाक गड़ा गड़ बनि गेल। इहां ले साहित रचनाक बहन बाहरालेइक। आइज हिंदि, बंगला साहित छेतरिअ आर जनजातिअ पाड़सि माहान साहित कर सउभे बिधा माहान काम हेल आहेइक आर हेउए हेइक।

**4. निम्नांकित गद्यांश का अपने भाषा में अनुवाद करें।**

बिरसा मुण्डा को झारखण्ड के इतिहास में 'भगवान बिरसा' की संज्ञा दी गई है। झारखण्ड की धरती पर उनका जीवन 24 वर्ष छह महीने और 24 दिनों का था। इतिहास से यह ज्ञात होता है कि बिरसा के जीवन में कई चमत्कारीक घटनाएँ हुई। 1890 ई. में बिरसा पढ़ाई छोड़कर खूँटी जिले के मुरहू प्रखण्ड स्थित चलकद गाँव पहुँचा। यहाँ उसे एक वैष्णव संत से मुलाकात हुई। बिरसा उनसे इतना प्रभावित हुआ कि वह चंदन, जनेऊ और धोती धरण कर पूजा-पाठ करने लगा। यह कहा जाता है कि एक दिन पाटपुर में उसे भगवान विष्णु का दर्शन हुआ। इस घटना से बिरसा के जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन आया। उसने गांव के लोगों को उपदेश देना शुरू किया। उसने एक अलग धर्म 'बिरसाईत धर्म' धर्म की स्थापना की। इसी बीच उसकी शादी हुई किन्तु उन्होंने अकेला जीवन जीने का संकल्प लिया। उसी समय झारखण्ड में सरदार आन्दोलन भी चल रहा था। बिरसा आरंभ से ही जमींदारों और अंग्रेजो से घृणा करते थे। उचित समय देखकर बिरसा धर्म की बातों के साथ राजनीति और अधिकार की बाते करने लगा। दिनों-दिन उसके अनुयायिओं की संख्या बढ़ने लगी। 1995 ई. तक उसके विचारों को मानने वालों की संख्या छह हजार हो गयी थी। बिरसा ने कई बीमार लोगों को चंगा भी किया था। अतः लोगों उसे भगवान कहने लगे थे तथा बिरसा स्वयं को कहने लगा 'धरती आबा' अर्थात् पृथ्वी का पिता। इस प्रकार बिरसा झारखण्ड के इतिहास में 'बिरसा भगवान' एवं धरती आबा' के रूप में अमर हो गए।

## कुड़मालि भाषा में अनुवाद

बिरसा मुंडाके झारखंड कर इतिहांस माहान 'भगबान बिरसा' कर नामले दांजल गेल आहेइक। झारखंडेक भुंइ माहान अकर जिबन 24 बछर 6 मास आर 24 दिन तड़िकेइ रहलेइक। इतिहांसले इटा टउआ चलेहेइक जे बिरसाक जिनगि माहान कइएक गअ चमकुआ घेटना घेटल आहेइक। 1890 साल माहान बिरसांइ पढ़ाइ छाड़िके खुंटि जिलाक मुरहु परखंडेक चलकद गांउ चलि आइल। इहां एकर देखा एक बेसनब संतेक संगे हेल। बिरसा एकरले एसन परभाबित हेल जे अंइ चंदन, पेइता आर धउति पिंधे लागल आर पुजा-पाठ करे लागल। इटा कहल जाइक जे अना दिन पाटपुर माहान अंइ बिसनुके देखे पाइल रहलाइ। एहे घेटनाले बिरसाक जिनगिंइ एक बिरहद बड़अ करांतिकारि बदलाउ आउअल। अंइ गांउएक हड़के उपदेस दिए सुरु करल। अंइ एक भिनु धरम 'बिरसाइत धरम' कर थापना करल। एहे बिचे एकर बिहा हेलेइक। मनतुक, अंइ एकाइ जिनगानि काटेलाइ तइ करल। सेइ बेरांइ झारखंड माहान सरदार हुल टाउअ चले हेलेइक। बिरसा सुरु लेइ जमिंदार आर अंगरेजके थु थु करे हेलेइक। जखा देखिके बिरसांइ धरमेक संगे राइजनितिक आर अधिकारेक

बातअ करे लागल। दिन-के-दिन अकर चेला-चामटाक गनति बाढ़तेइ लागलेइक। 1985 साल तड़िक अकर बिचारके मानइआ छह लट हेइ गेल। बिरसांइ केतेइ रउगिके बेस करल रहलेइक। तेंइ हड़े अके सिंगबंउगा कहे लागल आर बिरसांइ निजके 'धरति आबा' माने धराक पुरखा। एहे डुल बिरसा झारखंडेक इतिहांस माहान 'बिरसा भगबान' आर 'धरति आबा' हेइके अमर हेइ गेल।

**5. दिये गये अपठित गद्यांश का अपनी भाषा में अनुवाद करें।**

विद्या मनुष्य के लिए ईश्वर का सबसे बड़ा वरदान है। मनुष्य को एक विवेकशील प्राणी विद्या के कारण ही मानी जाती है। विद्या हमें अवगुणों से बचाकर एक सभ्य नागरिक बनाती है। प्राचीन काल में विद्या प्राप्त करने के लिए शिष्य गुरू की कुटिया में जाते थे। गुरू-शिष्य के बीच पिता-पुत्र जैसा संबंध होता था। गुरू निःस्वार्थ भाव से शिष्यों को मौखिक शिक्षा देते थे। शिष्य शिक्षा प्राप्त कर जब गुरू के आश्रम से समाज में जाते थे तो वे जन-कल्याण की भावना से ओत-प्रोत होते थे। परंतु, वर्तमान शिक्षा पद्धति पाश्चात्य शिक्षा से प्रभावित हो गई है। निर्धन व्यक्ति चाहकर भी उच्च शिक्षा से वंचित हो जाते हैं। प्राचीन भारतीय शिक्षा से चरित्र निर्माण होता था। शिक्षा का उद्देश्य मानव कल्याण होता था। आज की शिक्षा का सीधा संबंध धनोपार्जन से हो गया है। उस शिक्षा को श्रेष्ठ माना जाता है, जिससे अधिक आय प्राप्त होती है। अच्छे चरित्र और कल्याण की भावना विलुप्त हो गई है। मैकाले की शिक्षा पद्धति ने शिक्षा के व्यवसायीकरण को बढ़ावा दिया है। इसने हमारी राष्ट्रभाषा 'हिन्दी' को दबाने का काम किया है। वर्तमान भारत की शिक्षा में बदलाव की आवश्यकता है। शिक्षा ऐसी हो जो सभी को मिल सके। चरित्र निर्माण, मानव कल्याण और प्रकृति से मित्रता शिक्षा का केन्द्र बिन्दु होनी चाहिए। विकास इस केंन्द्र से निकलने वाली प्राकाशपुंज होनी चाहिए। यह सम्पूर्ण मानव अस्तित्व के लिए आवश्यक है।

## कुड़मालि भाषा में अनुवाद

बिददा हड़ेक खातिर सिंगबंउगाक सउबले बड़अ बरदान हेकेइक। हड़के अना गअ बुधिमानि जिउ बिददाक करनेइ मानल जाइक। बिददांइ हामराके खाराबले बाचाइके एक सइभ हड़ालि हड़ बनाइक। आदिम जुगे बिददा पाउएक खातिर चेला गुरुक आंगना जाइ तेल। गुरु-चेलाक बिचे बाप-बेटाक पारा नाता रहलेइक। गुरुंइ बिन भेदभाउए चेला सउबके मखिक सिकखा दे हेलेइक। चेला सिकखा पाइके गुरुक आंगनाले सामाजें जाइ तेलेइक तअ उ हड़ेक कलइआनेक भाउले भरल पुरल रहइ तेलेइक। मनतुक, चलति बेराक सिकखा निअम पेछिमा देसेक सिकखाले भजनाइ गेल आहेइक। गरिब दुखि सउभे चाहि कुहुं उपर केलास तड़िक पढ़ाइ निहिं करे पारअहत। आदिम भारतेक सिकखाले चरितरअ बने हेलेइक। सिकखाक धेइ हड़ेक कलइआन रहलेइक। आझुक सिकखाक नाता धन अरजनले हेइ गेल आहेइक। अहे

सिकखाके सउबले बेस मानल जाइक जेटाले ढेइर धन अरजे पारत। बेस चरितरअ आर कलइआनेक भाउअ लुकाइ गेल आहेइक। मेइकालेक सिकखा निअमे बेपारके बाइड़ देल आहेइक। इटांइ हामराक देसेक पाड़सि आर इहां माइ पाड़सिके दाबाइएक काम करल आहेइक। चलति बेरांइ भारतेक सिकखांइ बदलांउ कर खुभेइ दरकार आहेइक। सिकखा एसन हेउएक चाहि जे सउभिंइ पाउए पारत। चरितरअ बनाइएक, हड़ेक कलइआन आर परकितिक संग संगि हेउआ सिकखाकर गड़ा गुड़ि हेउएक चाहि। बिकास एहे गुड़िले निखरल आलअले हेउएक चाहि। इटा सउब हड़ेक बांचेक खातिर दरकार आहेइक।

**6. दिये गये हिन्दी अवतरण का अपनी भाषा में अनुवाद करें।**

विचारों की अभिव्यक्ति का मूल आधार भाषा है। व्यक्ति अपने सुख-दुःख, हर्ष-विवाद, उत्थान पतन आदि से संबंधित अनुभूति को भाषा के माध्यम से व्यक्त करता है। भाषा के अभाव में मनुष्य गुंगा हो जाता है। गुंगा व्यक्ति भी अपनी क्रिया-क्लापों को कर लेता है लेकिन उसे दूसरों के साथ विचारों का आदान-प्रदान करने हेतु एक माध्यम की आवश्यकता पड़ती है। अतः समाज एवं राष्ट्र के लिए वह व्यक्ति अधिक उपयोगी होता है जो भाषा के माध्यम से दूसरों के साथ अपना संबंध जोड़ लेता है।

विश्व में लगभग 2800 भाषाएँ प्रचलित है। विभिन्न देशों में स्थान विशेष पर अलग - अलग भाषाएँ बोली जाती है। भाषा समूह में मातृभाषा सबसे अधिक प्रिय होती है। यह सबसे अधिक आसान होती है क्योंकि यह माँ की गोद से ही सीखी जाती है। चाहे - अन्चाहे, जाने-अनजाने इस भाषा में गति आ जाती है। यही कारण है कि बच्चे छोटी उम्र में ही अपने इर्द-गिर्द से प्राप्त प्रतिक्रिया की अभिव्यक्ति मातृभाषा में करने लगते हैं। व्यक्ति अपनी भाषा में अधिक सीखता है तथा अपनी भाषा के माध्यम से अन्य भाषाओं को भी सीख लेता है। अपनी भाषा के साहित्य को पढ़कर हम अन्य भाषा के साहित्य के विचारों को सहजता से जान लेते हैं। अतः अपनी भाषा की उन्नति सभी प्रकार की प्रगति का माध्यम बन जाती है।

## कुड़मालि भाषा में अनुवाद

बिचारेक बरकअनेक गड़ा ठेहड़ पाड़सि हेकेइक। हड़े निजेक हुब- गुमान, हांसि-ठेठि, आपद-बिपद, उतथान-पतन आरअ इटासेटाले जड़ाइल भाउके पाड़सिक दारांइ बरकाइक। पाड़सिक अभाबे हड़ कंका बनि जाइक। कंकाहुं निजेक सउब काम-पाइट करि लेइक मनतुक, उटा कुहुं दसराक पासे बिचारेक आदान-परदान करेक खातिर एक माइधम कर दरकार पड़इक। तेंइ सामाज आर देसेक खातिर उ हड़ बेसि दरकारिआ हेउअइक जेंइ पाड़सिक दारांइ एक दसराक संग निजेक नाता जड़ि लेइक।

धरा माहान मटामटि 2800 गअ पाड़सि लाड़-चाड़े आहेइक। नाना देसेक ठाइन बिसेसे भिनु - भिनु पाड़सि फदरल जाइक। पाड़सिक दंहगि माहान माइपाड़सि सउबले बेसि लाड़-चाड़े रहइक। इ सउबले बेसि आसान हेउअइक काहे कि माइएक करा लिहिं सिखल जाइक। चाहले ना-चाहले, जानाइ बे-जानाइ एहे पाड़सि माहान एक बहन आइ जाइक। एकरेइ कारन छउआंइ एक छटअले निजेक आसे-पासेक धरल गुन गिलाक बरकन माइपाड़सिंइ करे लागत। हड़े निजेक पाड़सिंइ सउबले बेसि सिखत आर निजेक पाड़सिहिं आरअ दसर पाड़सि कुहुं सिखि लेत। निजेक पाड़सिक साहितके पढ़िके हामरानि आरअ दसर पाड़सिक साहितेक बिचार आर भाउके बेड़ि चांड़े जानि-बुझि लिए। तेंइ निजेक पाड़सिक बिकास सउब रकमेक बिकासकर माइधम (ठेहड़) बनि जाइक।

**7. दिये गये अपठित गद्यांश का अपनी भाषा में अनुवाद करें।**

मनुष्य एक विवेकशील प्राणी है। उसकी प्रारंभिक पाठशाला अपना परिवार होता है। यहाँ से वह ज्ञान प्राप्त कर समाज से परिचित होता है। वह अपने चारों ओर की वस्तुओं से अनेकों ज्ञान प्राप्त करता है। विद्यालय में जाकर वह भाषा और साहित्य से परिचित होता है। वह विद्या की सीढ़ी में ज्यों - ज्यों उपर चढ़ता है वैसे - वैसे वह व्यवहारिक समस्याओं को समझता है तथा उसका निदान खोजता है।

अधिकांश मनुष्य स्वार्थी होते हैं। उनके कर्म स्वहित में अधिक और परोपकार में कम होते हैं। प्राचीन काल में अपनी सुख-सुविधाओं से अधिक लोक कल्याण को महत्व दिया जाता था। परंतु, वर्तमान समय में अपनी सुविधाओं में वृद्धि को प्रमुखता दी जाती है। महात्मा बुद्ध एवं महावीर की शिक्षाएँ केवल पुस्तकों तक सीमित रह गई है। इनकी शिक्षाओं का महत्व केवल परीक्षाओं में दिखाई पड़ता है। व्यवहारिक जीवन में शायद ही इसे कोई अपनाते हैं। ग्रामीण जीवन भी बदल रहे हैं। भविष्य को ध्यान में न रखकर लोग वर्तमान की ओर देख रहे है। यही कारण है कि प्रकृति से हम दूर चले जा रहे हैं। कृत्रिम वस्तुएँ हमें कुछ समय तक सुख देती है लेकिन इसके परिणाम विनाशकारी होते हैं। आज जीवन का उद्देश्य यह होना चाहिए कि हम कोई भी काम करने से पहले यह सोंचे की हमारे कर्मों का फल समाज एवं प्रकृति पर क्या होगा? यदि परिणाम नकारात्मक हो तो हमे वैसे कामों से बचना चाहिए।

## कुड़मालि भाषा में अनुवाद

हड़ अना गअ सचइआ जिब हेकेइक। अकर मुहाइनेक इसकुल निजेक परिबार हेकेइक। इहांले अंइ गिआन पाइके सामाजले चिनहाप हेउअइ। अंइ निजेक धाइर-पासेक जिनिसले ढेइरे गिआन बटरइ। इसकुलें जाइके अंइ पाड़सि आर साहितले चिनहाप पाउआइ। अंइ बिददाक सिढ़िंइ जेसे - जेसे उपर चेढ़इ तेसे - तेसे अंइ लाड़-चाड़ेक जालाके बुझइ आर अकर मिमसा खजइ।

बेसि भागेक हड़ निजकरेइ खालि संचत। अकर काम निजेक खातिर बेसि आर परेक खातिर नामेक हेउअइक। आदिम जुगे निजेक हुबेक सुबिधाले बेसि करिके दसर हड़ेक कलइआनके महत दे हेलथिन। मनतुक, चलति बेरांइ निजेक सुबिधाके बाढ़ाउएक महत बेसि देथिन। माहातमा, बुध आर माहाबिरेक सिकखा खालि पथि तड़िकेइ बांधाइ रहि गेल आहेइक। एकर सिकखाक महत खालि परिकखा तड़िके देखाइ पड़इक। लाड़-चाड़ेक जिबअनेक साइअदेइ केउ एके धरइक। गांउएक हड़ेक जिबनअ बदलअहेइक। आउति बेराके ना धेआन करिके खालि चलति बेरा किहिं धरिके चलअहत। एहे कारन परकितिले हामरानि फाराक हेतेइ जाइहे। मसिनेक बनाइल जिनिसे हामराके कुछु खनेक तड़िक हुब देइक मनतुक, एकर परभाउ बिनासेइ हेउअइक। आइज जिनगानिक धेइ इटा हेउएक चाहिं जेकि हामराके कनअइ काम करेक पेहिल इटा संचे हेतेइक जे हामर कामेक फर सामाजें आर परकितिंइ किना हेतेइक? जदि कनअ नसटअ हेउअहेइ तअ एसन कामले बाचेक चाहि।

**8. निम्नांकित गद्यांश का अपने भाषा में अनुवाद करे।**

समाचार पत्र हमारे जीवन के हर दिन की पहली आवश्यकता है। मनुष्य एक बुद्धिमान सामाजिक प्राणी है। वह संसार में होने वाले घटनाओं से अलग नहीं रह सकता है। गाँवों, शहरों एवं देश-विदेश के विभिन्न हिस्सों से सम्पर्क बनाए रखने के लिए मानव ने कई तरीके खोज निकाले हैं। उनमें समाचारपत्र सबसे सस्ता और सबसे सशक्त माध्यम है। नींद खुलते ही सबसे पहली इच्छा अखबार पढ़ने की होती है। यदि किसी दिन अखबार देर से मिलती है या नहीं मिलती है तो वह दिन बड़ा खाली - खाली सा लगता है। समाचारपत्र हमें देश-विदेश के छोटे-बड़े, अच्छे-बुरे सभी प्रकार के समाचारों से अवगत कराते हैं। इन समाचारों का गहरा प्रभाव जीवन के सभी क्रिया-क्लापों में पड़ता है। यह एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करती है। वर्तमान समय में समाज का कोई भी वर्ग इससे अछुता नहीं रहा है।

समाचारपत्रों के कई रूप है। जैसे - दैनिक, साप्ताहिक, मासिक, छमाही, वार्षिक और इसके साथ संध्याकालीन आदि। यह व्यापार का एक बहुत बड़ा साधन है। इसमें छपे विज्ञापनों को लाखों लोग पढ़ते हैं, जिससे आर्थिक गतिविधियाँ बढ़ जाती है। समाचारपत्र राष्ट्र निर्माण में भी सहायक होते हैं। यह हमारी ज्ञान वृद्धि के साथ - साथ मनोरंजन भी करती है। अतः हमें नियमित रूप से समाचारपत्र पढ़ना चाहिए।

## कुड़मालि भाषा में अनुवाद

बेउरा कागइज हामराक जिबनेक पतिदिनेक मिर दरकारिआ जिनिस हेकेइक। हड़ अना गअ बुधिमान सामाजिक जिब हेकत। अंइ धराक घेटनाले एक-धेरिआइके रहे निहिं पारइ। गांउ, सहर आर देस-बिदेसेक नाना भागले निजेक नाता बनाइ राखेक

खातिर हड़े केइएक गअ तरिका खजि बाहराइल आहात। एकर भितर बेउरा कागज सउबले ससता आर सउबले दढ़अ माइधम हेकेइक। आंइख खुजइ तिहिं सउबले पेहिल इचछा बेउराकागज पढ़ेक रहइक। जदि कनअ दिन बेउराकागज देरिले पाउआइक बा निहिं पाउआइक तअ उ दिन बेजांइ मनझांन हेंइ जाइकक। बेउरा कागजें हामराके देस-बिदेसेक छटअ-बड़अ, भालअ-मंदअ सउब रकमेक बेउराके जानाइक। एहे बेउराक दमगर परभाब हामराक जिबनेक सउब रकमेक काम-पाइटे पड़इक। इ एक रकमेक आग-डहरुआ पारा काम करइक। चलति बेरांइ सामाजेक कनअ गठ इटाले फाराक निहिं रहल आहेइक।

बेउराकागजेक कइएक धंचर आहेइक। जेसन - पतिदिनिआ, सापताहिक, मासिआ, छमासिआ, बछरिआ आर सांइझ बेराक इटासेटा। इटा बेपारेक एक बेजांइ बड़अ साधन हेकेइक। इटांइ उखड़ल बिगापनके लाख लाख हड़े पढ़त जेटाले आरथिक गतिबिधि बाढ़इक। बेउरा कागज रासटअके दढ़अ बनाइएक उसास करइक। एंइ हामराक गिआन बाढ़ाइएक संगे - संगे हुबअ कराइक। तेंइ हामाराके पतिदिन बेउरा कागज पढ़ेक चाहि।

**9. दिये गये हिन्दी अवतरण का अपनी भाषा में अनुवाद करें।**

प्रत्येक देश के निवासी अपने देश को अच्छा मानता है। परंतु भारत एक ऐसा देश है, जिसे देशवासी और विदेशी भी अच्छा मानते हैं। जिस समय विश्व में मानव सभ्यता का शुरूआत नहीं हुआ था उस समय भारत के ऋषि-मुनि वेदों की रचना कर रहे थे। इसका सबसे बड़ा उदाहरण ऋगवेद है। यह विश्व की सबसे प्राचीन वेद है। भौतिक संपदा; धन-दौलत आदि की दृष्टि से भी भारत संसार का अग्रणी देश रहा है। संस्कृत साहित्य से यह ज्ञात होता है कि विज्ञान, गणित, नक्षत्र विज्ञान, चिकित्सा, अर्थशास्त्र आदि के क्षेत्र में भारत के प्राचीन विद्वानों ने विश्व को इन विषयों की शिक्षा प्रदान की थी।

हमारा देश भारत की भूमि पवित्र एवं पुण्य है। यहाँ गंगा बहती है, जिसमें स्नान करने से शरीर ही नहीं अपितु मनुष्य का मन और अंतरात्मा भी पवित्र हो जाता है। यहाँ की धरती ऐसी है, जहाँ भगवान भी अवतार लेते हैं। पृथ्वी का स्वर्ग, कश्मीर भारत में स्थित है। यहाँ का ताजमहल विश्व का आठवाँ आश्चर्यजनक कलाकृति है। अजंता और ऐलोरा की गुफाएँ विश्व प्रसिद्ध चित्रकला के उदाहरण है। भारत 'जगद्गुरू' की उपाधि से सम्मानित है। प्राचीन कांल में इसे सोने की चिड़िया कहा जाता था। विश्वभर के विद्यार्थी यहाँ विद्या ग्रहण करने आते थे। यह देश बिरसा, गाँधी, नेहरू, सुभाष, रघुनाथ महतो जैसे अनेकों सपूतों की जन्मदाता रही है। आज भारत विश्व का सबसे बड़ा प्रजातंत्रात्मक गणराज्य है। सचमुच हमारा देश 'भारत' महान है।

## कुड़मालि भाषा में अनुवाद

पति देसेक बसइआ सउभे निजेक देसके बेस मानथिक। मनतुक, भारत एक एसन देस हेकेइक, जाके देसेक छाड़ा बिदेसेक हड्डुहुं बेस मानथिक। जन बेरांइ गटा धरा माहान हड़ेक सभइअता कर मुहाइन निहिं हेल रहलेइक, सेइ बेरांइ भारतेक रिसि-मुनि सउभे बेद कर रचना करे हेलथिन। एकर सउबले बड़अ निमुंद रिगबेद हेकेइक। इटा धराकर सउबले आदिम बेद हेकेइक। देखित संपदाक दिगे लुहुं भारत धराकर सउबले आगुक देस रहल आहेइक। संसकिरित साहितले टउआ पाउआइक जे सर (बिगान), गनित, नछतरअ सर, चिकितसा, बेपार आरअ दिगेले भारत आदिम बिदुआने धराके एहे बिसइएक लेइ सिकखा देल आहेइक।

हामराक भारतेक भुंइ पबितरअ आर पुइनअ आहेइक। इहां गंगा बहइक, जेटांइ सिनाले ना खालि धड़े बरंग मन आर हिआउ पबितरअ हेइ जाइक। इहांक धरा एसन आहेइक, जाहां सिंगबंउगाउ घुरि आउअत। धराकर सरगअ, कासमिर भारतें आहेइक। इहां ताजमहल धराकर आठुआं चमतकार कला हेकेइक। अजंता आर एलउरा कर गुफा धराक नामकरा चितरअकलाक निमुंद हेकेइक। भारत 'जगतगुरुक' उपाधिले सममानित आहेइक। आदिम जुगे एके सनाक पांइख कहल जा हेलेइक। धराकर पढ़ुआ छउआ इहां पढ़े लाइ आउएहेलथिन। एहे देस बिरसा, गांधि, नेहरु, सुबास, खुदिराम बउस, रघुनाथ माहातअ जेसन ढेइर सपुतेक जनमदाता रहल आहेइक। आइज भारत धराकर सउबले बड़ परजातांतरिक गनराइज हेकेइक। सइतइ हामराक देस 'भारत माहान' हेकेइक।

**10. दिये गये अपठित गद्यांश का अपनी भाषा में अनुवाद करें।**

समय एक अनमोल वस्तु है। एक बार जो समय बीत जाता है, वह दोबारा लौटकर नहीं आता है। जो व्यक्ति समय के महत्व को समझता और उसका उपयोग करता है, वह बड़ी - बड़ी उपलब्धियाँ प्राप्त करता है। समय का सदुपयोग ही सफलता का आधार है। समय महाशक्तिशाली होता है। भली-भाँति समय का पहचान कर लेने पर अयोग्य व्यक्ति भी योग्य तथा गरीब धनवान और सुखी हो जाता है। बहुत से लोग समय के मूल्य को नहीं समझते। आज का युवा वर्ग देर रात में सोते हैं तथा सुबह देर से उठते हैं। उनकी दिनचर्या अनियमित होती है। जिससे अनेक हानिकारक तत्व उनके जीवन में समा जाते हैं।

मानव जीवन की आधारशिला विद्यार्थी जीवन होता है, जो संस्कार इस काल में पड़ जाते हैं, वे जीवनपर्यंत बने रहते हैं। विद्यार्थियों के जीवन और समय का गहरा संबंध है। अनेकों विद्यार्थी समय के महत्व को लेशमात्र भी नहीं पहचानते हैं। पूरा वर्ष अपना समय व्यर्थ की बातों में व्यतित कर देते हैं और जब परीक्षा का समय आता है तो सारी - सारी रात किताबों के पन्ने उलटते-पुलटते रहते हैं। यह समय के घोर

दुरूपयोग का सूचक है। पूरे वर्ष का कार्य कुछ दिनों में न ही पूर्ण हो पाता है और न याद ही रहता है। हमें चाहिए कि हम अपने विभिन्न कार्यों के लिए समय की सीमा निश्चित कर लें। उदाहरण स्वरूप छात्रों के लिए पढ़ाई और खेल दोनों आवश्यक है। परंतु, खेल की समय-सीमा अधिक होने पर या निश्चित समय पर न खेलने पर वह समय का दुरूपयोग है।

समय हमारे जीवन का सबसे बड़ा खजाना है। यह सुखी, सफल और शांत जीवन के लिए आवश्यक है। यदि हम एक डायरी में समय और कार्यक्रमों का ब्यौरा रखते हैं तथा उसका अनुपालन करते हैं तो निश्चित रूप से हम सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ते चले जायेंगे।

## कुड़मालि भाषा में अनुवाद

पहर अना गअ बिन दामेक सउबले दामि जिनिस हेकेइक। धांउए जे पहर काटि जाइक उटा आर घुरिके निहिं आउअइक। जन हड़े पहरेक महतके बुझइक आर एके बेबहार करइक, अंइ बड़अ-ले-बड़अ काम करि जाइक। पहरके जखांइ बेबहार कराटाइ कनअ पाउअएक ठेहड़ हेकेइक। पहर बेजांइ दढ़माढ़अ हेउअइक। एके बेसले चिनहे पारले कड़िहा हड़अ कामकरा आर गरिबअ धनि आर सुखि हेइ जाइक। ढेइर हड़े पहरेक दामके बुझे निहिं पारथिन। आझुक जुआन सउब ढेइर राइत तड़िक निगडत आर बिहाने देरिंइ जागत। एखरा पतिदिनेक काम-पाइट गड़बड़ाइ गेल आहेइक। जेटांइ ढेइर हानिकारक जिनिस धड़े ढुकि गेल आहेइक।

हड़ेक जिनगानिक ठेहड़ अकर पढ़ुआ जिबन हेउअइक। जन चलन एहे बेरांइ पड़ि जाइक उटा जिबन तड़िक बनि रहइक। पढ़ुआक जिनगानि आर पहरेक बेजांइ दढ़अ नाता आहेइक। ढेइर छउआंइ पहरेक महतके नामेक पारा बुझथिन। गटा बछर निजेक पहर आनठेकाने काटि देत आर जखन परिकखाक पहर आउअइक तखन गटा राइत राइत भर जागिके पथिक पाननाके उलट-पालट करत। इटा पहरेक हेलना करेक निमुंद हेकेइक। गटा बछरेक कामके कुछु दिनेक भितर ना तअ पुरा हेउए पारइक आर ना तअ इआदे रहइक। हामाराके चाहि हामरानि निजेक नाना रकमेक कामेक खातिर एकर पहर तइ करि लिअ। निमुंदेक पारा छउआके पढ़ेक आर खेलेक दुइअइ दरकार हेकेइक। मनतुक, खेइलेक पहरेक सिमा ढेइर हेले बा तइ पहरे ना खेलले अंइ पहरके हेलनाइ करइक।

पहर हामराक जिनगानिक सउबले बड़अ कुपि हेकेइक। इटा हुब, सफल आर सांति जिबनेक खातिर दरकार हेकेइक। जदि हामरानि एक डाइरिंइ पहर आर काम पाइटेक बेउराके तइ करि राखिए आर एकर पालन सटिकले करिए तअ तइ भाभे हामरानि आगुदिगेक सिढ़ि माहान चढ़तेइ चलि जाब।

❖❖❖

# 34. गिनती एवं महीने के नाम

## 1 से 100 तक का गिनती (कुड़मालि में)

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1 - अना | 26 - कुड़ि छइ | 51 - माचेन अना | 76 - गइएन छइ |
| 2 - दना | 27 - कुड़ि गइ | 52 - माचेन दना | 77 - गइएन गइ |
| 3 - टेना | 28 - कुड़ि आठइ | 53 - माचेन टेना | 78 - गइएनआठइ |
| 4 - चारा | 29 - कुड़ि नमि | 54 - माचेन चारा | 79 - गइएन नमि |
| 5 - माचा | 30 - टेनेन | 55 - माचेन माचा | 80 - आठेन |
| 6 - छइ | 31 - टेनेन अना | 56 - माचेन छइ | 81 - आठेन अना |
| 7 - गइ | 32 - टेनेन दना | 57 - माचेन गइ | 82 - आठेन दना |
| 8 - आठइ | 33 - टेनेन टेना | 58 - माचेन आठइ | 83 - आठेन टेना |
| 9 - नमि | 34 - टेनेन चारा | 59 - माचेन नमि | 84 - आठेन चारा |
| 10 - सिहम | 35 - टेनेन माचा | 60 - छइएन | 85 - आठेनमाचा |
| 11 - अनारअ | 36 - टेनेन छइ | 61 - छइएन अना | 86 - आठेन छइ |
| 12 - दनारअ | 37 - टेनेन गइ | 62 - छइएन दना | 87 - आठेन गइ |
| 13 - टेनारअ | 38 - टेनेन आठइ | 63 - छइएन टेना | 88 - आठेनआठइ |
| 14 - चारारअ | 39 - टेनेन नमि | 64 - छइएन चारा | 89 - आठेन नमि |
| 15 - माचारअ | 40 - चारेन | 65 - छइएन माचा | 90 - नमेन |
| 16 - छइरअ | 41 - चारेन अना | 66 - छइएन छइ | 91 - नमेन अना |
| 17 - गइरअ | 42 - चारेन दना | 67 - छइएन गइ | 92 - नमेन दना |
| 18 - आठारअ | 43 - चारेन टेना | 68 - छइएन आठइ | 93 - नमेन टेना |
| 19 - नउबारअ | 44 - चारेन चारा | 69 - छइएन नमि | 94 - नमेन चारा |
| 20 - कुड़ि | 45 - चारेन माचा | 70 - गइएन | 95 - नमेन माचा |
| 21 - कुड़ि अना | 46 - चारेन छइ | 71 - गइएन अना | 96 - नमेन छइ |
| 22 - कुड़ि दन | 47 - चारेन गइ | 72 - गइएन दना | 97 - नमेन गइ |
| 23 - कुड़ि टेना | 48 - चारेन आठइ | 73 - गइएन टेना | 98 - नमेन आठ |
| 24 - कुड़ि चारा | 49 - चारेन नमि | 74 - गइएन चारा | 99 - नमेन नमि |
| 25 - कुड़ि माचा | 50 - माचेन | 75 - गइएन माचा | 100 - सअ |

**1000 = लट, 100000 = लाख (लिड), 10,000000 = कटि**

**1 = मना 2 = दना 3 = टेना 4 = चारा 5 = मांचा 6 = छइ 7 =गइ = 1 खान**

# वर्ष के 12 महीने का नाम

## (कुड़मालि में)

| क्र. स. अंग्रेजी के महीने | हिन्दी के महीने | कुड़मालि में |
|---|---|---|
| 1. (Jan-Fubruary) | माघ | मधु मास |
| 2. (Fub- March) | फाल्गुन | फागुन मास |
| 3. (March- April) | चैत | चेइत मास |
| 4. ( Apr- May) | वैशाख | निरन मास |
| 5. (May- June) | जेठ | धरन मास |
| 6. (June- July) | अषाढ़ | आसाड़ मास |
| 7. (Jul- August) | सावन | रपा मास |
| 8. (Aug- September) | भादो | भादर मास |
| 9. (Sep- October) | आश्विन | आसिन मास |
| 10. (Oct- November) | कारतिक | सेंहरइ मास |
| 11. (Nov- December) | अगहन | अघनमास |
| 12. (Dec- January) | पौस | पुस मास |

कुड़मालि संस्कृति के अनुसार वर्ष में 6 महीना होता है।

1. मधु
2. निरन
3. बेइरसा
4. भादर
5. काटेन
6. पुस मास।

लोक व्यवहार में प्रचलित है - **'कुड़मिराक छउ मासे छउ परब'**।

| वस्तु की नाप | | वस्तु की गिनती | |
|---|---|---|---|
| 2 गुड़कि | - 1 छटाक | 4 आंटि | - 1 गंडा |
| 4 छटाक | - 1 पउआ | 20 गंडा | - 1 पन |
| 4 पउआ | - 1 पाइ | | |
| 2 पाइ | - 1 सेर | | |
| 40 सेर | - 1 मन | | |
| 10 मन | - 1 बाइन | | |

❖❖❖

# 35. कुड़मालिंइ निखरल पथि

## (कुड़माली में प्रकाशित पुस्तकें)

| संख्या | पुस्तक का नाम | लेखक का नाम | स्थान | वर्ष |
|---|---|---|---|---|
| 1. | 'बेसहाल मार्क के बनावल' | जी. एफ. हेमिल्टन | कलकत्ता | 1903 |
| 2. | नेठापाल | निरंजन महतो | बालेसर | 1921 |
| 3. | कपिला मंगल | राजेंद्र प्रसाद महतो | रांची | 1953 |
| 4. | केते अकुहा भाषा, केते उतला आसा | देवकी नंदन प्रसाद | पटना | 1956 |
| 5. | आदि झुमर संगीत | उपेंद्र नाथ सिंह | रांची | 1956 |
| 6. | छोटानागपुर ताल मंजरी | उपेंद्र नाथ सिंह | रांची | 1956 |
| 7. | करम संगीत | बुधु महतो | बंबई | 1970 |
| 8. | कुर्माली भाषा तत्व | खुदिराम महतो | पुरलिया | 1973 |
| 9. | कुरमाली बोली के मुहावरे और लोकोक्तियां | डॉ. एच. एन सिंह | रांची | 1978 |
| 10. | पथे चलाक लेहा नमसकार | डॉ. एन. के सिंह | रांची | 1979 |
| 11. | कुरमाली व्याकरण | श्याम सुंदर महतो | रांची | 1981 |
| 12. | 'फुरुंग' | के. चं. टिडुआर | पुरलिया | 1982 |
| 13. | कुर्माली भाखिक इतिहास, रुप चिस | खुदिराम महतो | पुरलिया | 1982 |
| 14. | एक इंडरा फुल | लखिकांत मुतरुआर | बोकारो | 1982 |
| 15. | कुड़माली केहनि जुड़ति | डॉ. चंद्रमोहन महतो | रांची | 1982 |
| 16. | केरिआ बहु (नाटक) | कालीपद महतो | रांची | 1983 |
| 17. | कुड़मालि गइद पइद जुड़ति | डॉ. एस.बी. महतो | रांची | 1983 |
| 18. | कुड़मालि शब्दकोश | खुदिराम महतो | पुरलिया | 1983 |
| 19. | 'सपन आपन' | अनंत केसरिआर | पुरलिया | 1983 |
| 20. | कुड़मालि भांउअर | अनंत केसरिआर | बंगाल | 1986 |
| 21. | दा राइजिंग सन | अनंत केसरिआर | कलकत्ता | 1986 |
| 22. | पिआसि | अनंत केसरिआर | पुरलिया | 1986 |
| 23. | सातुल | अनंत केसरिआर एवं सुनिल महतो | पुरलिया | 1986 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 24. झुमर कथा | एच.आर.डी, | बंगाल | 1986 |
| 25. ना धरे आंखि जल आंखि पाते | देबकि नंदन प्रसाद | पटना | 1987 |
| 26. Kudmali a Pre-Historic language of india | K.R. Mahato | | 1987 |
| 27. सिंदुर काजर | अनंत केसरिआर | पुरलिया | 1989 |
| 28. एक डंड़रा फुल | एल. के. मुतरुआर | बोकारो | 1982 |
| 29. कुड़मालि आहनाइ केहनि | डॉ. मनोरमा कुमारी | रांची | 1991 |
| 30. कुड़मालि करम कथा | सुनिल महतो | पुरलिया | 1993 |
| 31. कुरमाली भाषा समस्या एवं समाधान | डॉ. एस. बी. महतो | रांची | 1995 |
| 32. गाँधिक जइ (उपन्यास) | सुरेंद्र नाथ महतो | रांची | 1996 |
| 33. कुड़मि लोककथा | डॉ. आदिकांत महंता | म्यूरभंज | 1999 |
| 34. कुरमाली लोककथाओं की कथानक रूढ़ियां | डॉ. एच.एन. सिंह | वराणसी | 2001 |
| 35. जनजाति परिचिति | लखिकांत मुतरुआर | बोकारो | 2001 |
| 36. बिहान | पी. पी. केसरिआर | धनबाद | 2001 |
| 37. कुड़मालि शब्द कुधि | पी. पी. केसरिआर | धनबाद | 2001 |
| 38. दिबाकर | पी. पी. केसरिआर | धनबाद | 2002 |
| 39. करम कथा | डॉ. आदिकांत महंता | म्यूरभंज | 2002 |
| 40. कुड़मि जाति एक बिहांगालोकन | डॉ. आदिकांत महंता | म्यूरभंज | 2002 |
| 41. टेंस फुल | करुनामइ केसरीआर | धनबाद | 2003 |
| 42. कुड़मालि चारि | पी. पी. केसरिआर | धनबाद | 2003 |
| 43. कुड़मि जन्म संस्कार | डॉ. आदिकांत महंता | म्यूरभंज | 2005 |
| 44. कुड़मालि लोककथा ओ लोकगीत : सामान्य कथन | डॉ. आदिकांत महंता | म्यूरभंज | 2006 |
| 45. झुमर समीक्षा | डॉ. आदिकांत महंता | म्यूरभंज | 2006 |
| 46. छेंग गर गर खापर पिठा | डॉ. आदिकांत महंता | म्यूरभंज | 2006 |
| 47. कुड़मालि भांवर | पी. पी. केसरिआर | धनबाद | 2006 |
| 48. कुड़मालि भाषा ज्ञान | भुवनेश्वर कुमार | जमसेदपुर | 2007 |
| 49. म्यूरभंज ए लोक वाद्य | डॉ. आदिकांत महंता | म्यूरभंज | 2007 |
| 50. कुड़मि बिपल्बी नेता | डॉ. आदिकांत महंता | म्यूरभंज | 2007 |
| 51. छउ नृत्य सामान्य कथन | डॉ. आदिकांत महंता | म्यूरभंज | 2007 |
| 52. कुड़मालि भाङअर | डॉ. एस.बी. महतो | रांची | 2007 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 53. एहे डहरे (निबंध) | डॉ. एच. एन. सिंह | रांची | 2008 |
| 54. सृष्टिधरेक गीत | डॉ. एच. एन सिंह | रांची | 2008 |
| 55. कुड़मी संस्कृति एक झलक | डॉ. चतुर्भुज महतो | क्योंझर | 2008 |
| 56. कुरमाली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन | डॉ. नंद किशोर सिंह | रांची | 2008 |
| 57. 'झुमर कथा' झुमर गिति संगरअ | बांगला नाटक. कम | कलकत्ता | 2008 |
| 58. कुड़मालि चिसेक चिनहा मुदा | सपन चंद्र महतो | मैसूर | 2008 |
| 59. डहर (कविता) | निताई चद्र महतो | रांची | 2009 |
| 60. चासिक हाल (नाटक) | ललित मोहन महतो | रांची | 2009 |
| 61. कुरमाली लोकगीत | डॉ. वृंदावन महतो | रांची | 2009 |
| 62. पलास फुल (कबिता) | ज्योतिलाल महतो | धनबाद | 2009 |
| 63. जाहलि (नाटक) | अतंत केसरिआर | बंगाल | 2010 |
| 64. कुरमाली साहित : विविध संदर्भ | डॉ. एच. एन सिंह | रांची | 2010 |
| 65. कुरमाली शब्द कोष | देवेन्द्र नाथ महतो | रांची | 2010 |
| 66. कुरमाली आहना | देवेन्द्र नाथ महतो | रांची | 2010 |
| 67. कुरमाली निबंध | डॉ. एच. एन सिंह एवं विजय राज महतो | रांची | 2010 |
| 68. लोकभाषा और लोकायत जीवन का अनंत विस्तार | पश्चिम बंगाल | | 2010 |
| 69. चासिक हाल (एकांकी) | ललित मोहन महतो | रांची | 2010 |
| 70. कुड़मालि गइद पइद हाला | डॉ. एस. बी. महतो | रांची | 2011 |
| 71. कुड़मालि भाषा शिक्षण एवं साहित्य | निताई चद्र महतो | पटना | 2011 |
| 72. कुड़मालि टेंस चार्ट | निताई चद्र महतो | रांची | 2011 |
| 73. कुरमाली लोकगीत | संतोष कुमारी जैन | रांची | 2011 |
| 74. कुड़मियों की कहानी जनगनना की जुबानी | डॉ. एस. बी. महतो | रांची | 2011 |
| 75. गर बिचार (नाटक) | ज्योति लाल महतो | धनबाद | 2011 |
| 76. कुड़मालि भांउअर | अनंत केसरिआर | बंगाल | 2011 |
| 77. सति सुलोचना | गंदर्भ महतो | रांची | 2011 |
| 78. इतिहास पुरुसः शहीद रघुनाथ महतो | रतन महतो एवं डॉ. शशि भूषण महतो | रांची | 2012 |
| 79. कुड़मालि छितराल साहित | डॉ. वृंदावन महतो | रांची | 2012 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 80. कुड़मालि लक कथा | डॉ. वृंदावन महतो | रांची | 2012 |
| 81. हालुक कुड़मालि भांउअर आर रचना | निताई चंद्र महतो | रांची | 2012 |
| 82. आंधरिआ राइत (उपन्यास) | निताई चंद्र महतो | रांची | 2012 |
| 83. कुरमाली लोक साहित्य (संपादक) | डॉ. एच. एन. सिंह | रांची | 2012 |
| 84. महिपालेक गित | श्रीपद महतो | रांची | 2012 |
| 85. कुड़मालि कबि आर काइब | निताई चंद्र महतो | रांची | 2013 |
| 86. कुड़मालि रचना | निताई चंद्र महतो | रांची | 2013 |
| 87. झारखंडि माटिक गुन (जड़ी-बुटि) | डॉ. परमेश्वर महतो | रांची | 2013 |
| 88. हालुक कबिता | डॉ. वृंदावन महतो एवं रत्न महतो | रांची | 2013 |
| 89. एक टुप फुल | मुक्ति पद महतो | रांची | 2013 |
| 90. कुरमाली कृष्ण-काव्य | डॉ. विजय कु. मुखर्जी | रांची | 2013 |
| 91. कुरमाली लोक कथा | डॉ. एच. एन. सिंह | रांची | 2014 |
| 92. कुरमाली लोकगीत | डॉ. गीता सिंह | रांची | 2014 |
| 93. कुड़मालि बांदना गीतः एक सांस्कृतिक अध्ययन | डॉ. पी. पी. महतो | रांची | 2014 |
| 94. पुरखउति साहितेक उसास | निताई चंद्र महतो | रांची | 2015 |
| 95. जालनाक उपार (केहनि) | निताई चंद्र महतो | रांची | 2015 |
| 96. कुड़मालि पाड़सि सिखान आर साहित | एन. सी. केड़ुआर | पटना | 2015 |
| 97. साधेक पतना (कबिता) | एन. सी. केड़ुआर | रांची | 2015 |

❖❖❖

# 36. वस्तुनिष्ट प्रश्नोत्तर

## 1. कुड़मालि संस्कृति से संबंधित प्रश्न

1. आखांइन जातरा कबे मानात?
   (क) पुसेक सेंस दिने (ख) माघेक सांकराइत दिने
   (ग) माघेक पेहिल दिने (घ) अघनेक सांकाराइत दिने
2. हार पुइनना कखन हेउअइक?
   (क) अघन सांकराइते (ख) बांदना परबे
   (ग) रहइन दिने (घ) आखाइन दिने
3. बांउड़िंइ पानि गिरले किना हेउअइक?
   (क) आम ढेइर फरइक (ख) तेतइर ढेइर फरइक
   (ग) धान ढेइर हेउअइक (घ) महुआ ढेइर फरइक
4. पुस पिठा कन परब ले जड़ाइल आहेइक।
   (क) सिझाना परब (ख) मकर परब
   (ग) करम परब (घ) गहाइल पुजांइ
5. कुड़मालि चारि माहान तिल कखन खात?
   (क) पुस परबे (ख) बांदना परबे
   (ग) छउआ हेले (घ) गाइ धेनुआले
6. डिनि/ठाकराइन उठाइएक नेग आहेइक।
   (क) धान काटा सिराइल परे (ख) धान रपेक बेरांइ
   (ग) धान कुटेक वेरांइ (घ) धान मेड़ेक बेरांइ
7. आंटखलइंए किना - किना रहइक?
   (क) नाना रकमेक फुल फर (ख) कचड़ा आठि
   (ग) नाना रकमेक विहन विचि भुंज (घ) नाना रकमेक भउग
8. आंटखलइ किना हेकेइक?
   (क) टुसुक भउग (ख) मनसा माइएक भउग
   (ग) जाउआ परबेक भउग (घ) टुसु भांसाइएक भउग
9. कुड़मालि चारि माहान आंटखलइ कन परबले जड़ाइल आहेइक?
   (क) भगता परबले (ख) टुसु परबले
   (ग) बंदना परबले (घ) करम परबले

10. ठाकराइन उठाइ आनि काहां पेहिल राखत?
(क) टुसु थापना करेक कठरिंइ (ख) तुलसि ठिपाक धारिंइ
(ग) खांभहारे (घ) कुलहिक आखड़ांइ

11. ठाकराइन उठाइक घुरि दिन किना बारन रहइक?
(क) काहुं जाउआ-आसा (ख) काकरअ आंगनाइ बेइसा-उठा।
(ग) साग तिअन रांधा (घ) कनअ समान पाति देउआ।

12. बिसेक करि खापड़ा पिठा कखन हेउअइक?
(क) बांदना परबे (ख) पुस परबे
(ग) ठाकराइन उठा दिन (घ) मनसा पुजांइ

13. टुसु थापना कने करइक?
(क) गांउएक माहतंइ (ख) गांउएक बेटि छउआंइ
(ग) गांउएक बेटा छउआंइ (घ) गांउएक नेआंइ

14. हेंठे देल कन टा सटिक आहेइक?
(क) टुसु मेला पुस मासे लागइक
(ख भगता परबके चेइत परबअ कहथिक।
(ग) टुसु मेला माघ मासे लागइक
(घ) आखाइन जातरा पुसेक पेहिल दिन हेउअइक।

15. 'जेनिक धान कुटइ मरदे' कन परबले जड़ाइल आहेइक?
(क) रहइन परब (ख) मकर परब
(ग) मनसा पुजा (घ) बांदना परब

16. डाइर पुजां कखन हेउअइक?
(क) करमेक एकादसिक दिन (ख) भादरेक एकादसिक दिन
(ग) आसिनेक एकादसिक दिन (घ) बुध पुरनिमाइ

17. डाइर पुजांइ बेटा केथिक बनइक?
(क) करम फरेक (ख) करमेक डाइर
(ग) धानेक गाइछ (घ) खिरा

18. करम परबेक लेइ कन टा गलत आहेइक?
(क) खिराके जाउआ बेटा बनाउथिन।
(ख) भादरेक एकादसिक दिन डाइर पुजा हेउअइक।
(ग) डाइर पुजा नेइआ/माहतंइ करइक।
(घ) करम बेटाके करम राजांइ आनइक।

19. करम खाड़हि किना टाके कहथिक?
(क) करम पुजा टाके (ख) करम भांसान टाके
(ग) आमेक डाइरके (घ) इगला ले कनअ टाइ नाइ।

20. डंगुआ बेटि छआंइ बेसि भागे कन परब करत?
(क) करम (ख) जितिआ
(ग) दसांइ (घ) बांदना

21. करम पुजांइ डाइर कने गाड़इक?
(क) गांउएक माहतंइ (ख) गांउएक नेइआंइ
(ग) गड़ाइत बुढ़ांइ (घ) सउभिंइ

22. जाउआ माइ काके कंहथिक?
(क) करमति सउबके (ख) जाउअ उठाइआके
(ग) क आर ख सही आहेइक (घ) क आर ख गलत आहेइक

23. करम परबेक डाइर पुजा काहां हेउअइक?
(क) गांउएक आखड़ांइ (ख) गांउएक जाहिर थाने
(ग) गांउएक मड़पे (घ) एकर भितर काहुं नाइ

24. करम परब काकर लेइ करइक?
(क) माइएक लेइ (ख) भाइएक लेइ
(ग) भाइ आर बेटाक लेइ (घ) बेटाक लेइ

25. करम परबेक केथिक डाइर पुजइक?
(क) धान पातेक (ख) आंखेक
(ग) खिराक (घ) करम गाइछेक

26. करम भासान परे किना हेउअइक?
(क) झिंका-नुड़ा (ख) चालहअ पुजा
(ग) बासि भात (घ) सउब

27. छाता परब कन परबले जड़ाइल आहेइक?
(क) करम परबले (ख) जितिआ परबले
(ग) भगता परबले (घ) उपरेक केउ नाइ

28. छाता परब कन मास ले जड़ाइल आहेइक?
(क) रहइन मासले (ख) भादर मासले
(ग) आसिन मासले (घ) अघन मासले

29. कुड़मालि चारिंइ जाउआ डालि आनेक नेग हेउअइक?
(क) बिहाक पेहिल बछर बरेक ससुरघार दिगेले।
(ख) बिहाक पेहिल बछर बर घार दिगेले।
(ग) दुइअ दिगेक अदला बदलिले
(घ) उपरेक कनअ टाइ नाइ।

30. किना हेले डाइर पुजा चलि जाइक?
(क) परबेक बिचे केउ मरा-हारा हेले (ख) कनअ छुआइत हेले।
(ग) उपरेक दुइअ सहि आहेइक (घ) क आर ख गलत आहेइक

31. जितिआ परब करल जाइक?
(क) बेस भातार पाउएक खातिर। (ख) बेस छउआ पाउएक खातिर।
(ग) बेस संगि पाउएक खातिर। (घ) एकर भितर कनअ टाइ नाइ।

32. खर जितिआ कन टाके कहथिक?
(क) आगनांइ गाड़ल जितिआ टाके (ख) जितिआ पुजाके
(ग) माइए भुख सहि उपास करइक (घ) कनअ टाइ नाइ

33. जितिआ परबेक लेइ कनटा टा सटिक आहेइक?
(क) ठाइड़ उपास करल जाइक (ख) बुटेक आंकुर करत
(ग) क आर ख दुइअ सहि आहेइक (घ) क आर ख दुइअ गलत आहेइक।

34. जितिआ परबे परबेक साइज काहां ले आउअइक?
(क) मामा घारले (ख) फुफु घारले
(ग) मसि घारले (घ) बाप घारले

35. जाउआ उठाएक नेग आहेइक।
(क) 3 आर 5 दिनेक (ख) 5, 6 आर 7 दिने
(ग) 9 आर 10 दिनेक (घ) 5, 7 आर 9 दिनेक

36. जितिआ परबे खिरा बेटा कने लउकइक?
(क) अकर बेटांइ (ख) अकर भातारे
(ग) अकर सासे (घ) अकर देउअरे

37. डाइर पुजांइ खिराके मानल जाइक।
(क) बेटिक परतिक (ख) बेटाक परतिक
(ग) ससुरेक परतिक (घ) भातारेक परतिक

38. कुड़मालि चारिंइ पथि पुजा कखन हेउअइक?
(क) माघेक सांकराइत दिन (ख) आखाइन दिन
(ग) सरसति पुजाक दिन (घ) चेइत परबेक दिन

40. पथि पुजा करल जाइक।
(क) बेस ले बिददा पाउएक खातिर (ख) सिकखित हेउएक खातिर
(ग) बेसेले गिआन पाउएक खातिर (घ) उपरेक सउब

41. भगता परबे पुजल जाइक।
(क) माहादेबके (ख) आदि हड़के
(ग) बुढ़ा बाबाके (घ) उपरेक सउबके

42. दया के प्रतीक के रूप में किस पर्व को मनाया जाता है?
(क) करम पर्व (ख) बांदना पर्व
(ग) मनसा पर्व (घ) भगता पव

43. भगता पर्व करते हैं।
(क) केवल विवाहित पुरूष (ख) केवल विवाहित स्त्री
(ग) दोनों सही है (घ) दोनों में काई नहीं

44. भगता पर्व से संबंध है।
(क) नटुवा नृत्य का (ख) छउ नृत्य का
(ग) एढ़ेइआ नृत्य का (घ) उपर्युक्त सभी

45. कुड़मालि चारिंइ रहइन परब कखन हेउअइक?
(क) आखाइन जातराक दिन (ख) 13 जेठेक दिन
(ग) 13 आसाड़ेक दिन (घ) 13 सरावन

46. रहइन परबेक नाता आहेइक।
(क) धान रपाले (ख) बिहन बाहराले
(ग) धान मेइड़ा ले (घ) उपरेक सउब टाइ

47. रहइन उठा नेग कने करइक?
(क) घारेक बेटा छउआंइ (ख) घारेक बहुंइ
(ग) घारेक सासे (घ) घारेक बेटिंइ

48. रहइन माटिक लेइ कन टा सटिक आहेइक?
(क) रइहन माटि कुंअर छउआंइ आनत (ख) एके घारेक तिन कनाइ देत
(ग) सिनाइल परे हेरइद तेल माखत (घ) उपरेक सउब

49. रहइन दिन किना तिअन हेउअइक?
(क) बेगइन आर घंघि (ख) आसाड़िक निम
(ग) माइछ तिअन (घ) कउढ़ा तिअन

50. रहइन दिने केथिक पुजा हेउअइक?
(क) धानेक बिटाक (ख) नापेक-जखेक समानेक
(ग) खेतेक (घ) उपरेक सउभिक

## उत्तर

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | (ग) | 11. | (घ) | 21. | (घ) | 31. | (ख) | 41. | (घ) |
| 2. | (घ) | 12. | (ग) | 22. | (ग) | 32. | (ग) | 42. | (घ) |
| 3. | (ग) | 13. | (ख) | 23. | (क) | 33. | (ग) | 43. | (ख) |
| 4. | (ख) | 14. | (ग) | 24. | (ख) | 34. | (घ) | 44. | (ख) |
| 5. | (क) | 15. | (ख) | 25. | (घ) | 35. | (घ) | 45. | (ख) |
| 6. | (क) | 16. | (ख) | 26. | (ख) | 36. | (क) | 46. | (ख) |
| 7. | (ग) | 17. | (घ) | 27. | (क) | 37. | (ख) | 47. | (क) |
| 8. | (क) | 18. | (घ) | 28. | (ख) | 38. | (क) | 48. | (घ) |
| 9. | (ख) | 19. | (घ) | 29. | (ख) | 39. | (क) | 49. | (ख) |
| 10. | (ग) | 20. | (क) | 30. | (ग) | 40. | (घ) | 50. | (घ) |

51. कुड़मालि चारिंइ धान रपेक सुरु हेउअइक।
(क) आसाड़ि हेल परे (ख) गेराम पुजा हेल परे
(ग) पाचाड़ि हेल परे (घ) उपरेक सउब हेल परे

52. पाचाड़ि माहान कन थानेक पुजा हेउअइक?
(क) कुदरा थान (ख) गेराम थान
(ग) रांगा हाड़ि (घ) कनअ टाइ नाइ

53. पाचाड़ि पुजा माहान काके चुमाइल जाइक?
(क) गाइके (ख) गाइ बाछुरके
(ग) बरदके (घ) फेटाइनके

54. पाचाड़िले सुरु हेउअइक।
(क) धान रपे लाइ (ख) हार जते लाइ
(ग) मेइर दिए लाइ (घ) बिहन छिटे लाइ

55. टुसुक थापना कन सांकराइते करथिक?
(क) आसिन सांकराइते (ख) अघन सांकराइते
(ग) कारतिक सांकराइते (घ) पुस सांकराइते

56. जाहलि गित कन परबे गाउथिक?
(क) बांदना (ख) टुसु
(ग) जितिआ (घ) करम

57. भगता घुराक दसर नाम किना हेकेइक?
(क) सिझाना परब (ख) चेइत परब (ग) रहइन परब (घ) इंद परब

58. अमलअ खाउआंइ सेंसे कने खाइक?
(क) बरेक-केनिआइएक माइए (ख) काकिंइ
(ग) मामिंइ (घ) आजिंइ

59. कुड़मालि बिहाक केतेइ गअ नेग आहेइक?
(क) बारअ गअ (ख) आठरअ गअ
(ग) तेरअ गअ (घ) सउलअ गअ

60. हांड़ि बिहा कखन हेउअइक?
(क) लगन धरेक परे (ख) आम बिहाक परे
(ग) महुआ बिहाक परे (घ) माडुआ पुजाक परे

61. कुड़मालि चारिंइ समधिन देखा कखन करेक नेग आहेइक?
(क) बिहाक परे (ख) नउतुन छउआ हेअइक तखन
(ग) काहुं दुइअ समधिन देखा हेले (घ) छउआक नारताक दिन

62. संगि छाड़ा पेइसा कखन लेथिन?
(क) बिहाक परे (ख) महुआ बिहा हेउअइक तखन
(ग) बर बिदाइ हेअइक तखन (घ) केनिआइ बिदाइ हेउएक बेरांइ

63. धरम पुजा काकर हेउअइक?
(क) बड़अ बेटाक (ख) मेंइझला बेटाक
(ग) उपरेक दुइअ कर (घ) दुइअक भितर काकरउ नाइ

64. रहइन परबे किना निहिं हेउअइक?
(क) धान बिहन खेते छिटथिन (ख) गेहुं बिहन छिटथिन
(ग) निम खाइ लाइ सेंस करथिन (घ) आसाड़िक तिअन खाथिन

65. नटुआ मिलन कखन हेउअइक?
(क) धरम पुजाक बेरांइ (ख) बिहाक बेरांइ
(ग) बर जखन दुआइर लागअइक (घ) आम बिहाक पेहिल

66. नटुआ थापना कखन करथिक?
(क) पुस सांकराइते (ख) अघन सांकराइते
(ग) माघ सांकराइते (घ) चेइत सांकराइते

67. नउ दिनेक जाउआ माने किना हेउअइक?
(क) 9 रकमेक बिचि गाड़थिन (ख) 9 रकमेक साड़ि पिंधा
(ग) 9 पाकेक नाइच करा (घ) 9 गांउ जाउआ जागाउआ

68. एकर भितर कनटा सटिक आहेइक?
(क) आम बिहा केनिआइ घारे हेउअइक।
(ख) धरम पुजा जेठ मासे हेउअइक।
(ग) चांचर छंदेक झुमइर भादर मासे गाउथिन।
(घ) गेराम थाने पाहाने पुजा करअइक।

69. करम पुजा कखन हेउअइक?
(क) आसिनेक एकादसिक दिन (ख) भदरेक एकादसिक दिन
(ग) भादरेक सांकराइत दिन (घ) जिलहुड़ दिने

70. एकर भितर कनटा गलत आहेइक?
(क) भादरिआ झुमअइर (ख) आसिनिआ झुमइर
(ग) मलहरिआ झुमइर (घ) आसाड़िआ झुमइर

71. कुड़मालि चारिंइ सउबले बेसि सगुन दिन मानथिक।
(कं) गहाइल पुजाक दिनके (ख) करम पुजाक दिनके
(ग) आखाइन जातराक दिनके (घ) फगुआक दिनके

72. बिहाक बात-चित कन मासे बारन रहइक।
(क) भादर मासे (ख) फागुन मासे
(ग) कारतिकं मासे (घ) पुस मासे

73. डमकच नाइच कने नाचथिन?
(क) बेटा छउआक दले (ख) बुढ़ा पुरखा लके
(ग) जेनि लके (घ) खालि डंगुआ जेनिंइ

74. डमकच नाइच काकर बारन रहइक?
(क) डंगुआ जेनिके (ख) थुभड़ि बेटि छउआके
(ग) रांड़ जेनिके (घ) गाभिन जेनिके

75. डमकच नाइचे बेसि भागे किना बाजाउथिन?
(क) ढाक (ख) मांदइर
(ग) डाबा, टिन, थारि (घ) झाइल

76. एकर भितर कनटा सटिक आहेइक?
(क) करम भासान भदरेक सेंसे हेउअइक।
(ख) बिहांइ सारा धति सालिंइ लुटअइक।
(ग) नटुआ मिलअनेक परे बिहा हेउआ।
(घ) पुसेक सांकराइते टुसु थापना करा।

77. डमकच नाइच कर नाता काकर संग आहेइक?
(क) बिहा घारेक संग (ख) करम नाइचेक संग
(ग) धान रपा गितेक संग (घ) टुसु गितेक संग

78. कुड़मालि चारिंइ परब केइ दिने सिराइक?
(क) एक दिने (ख) दुइ दिने
(ग) तिन दिने (घ) चाइर दिने

79. घड़ा नाइचे किना हेउअइक?
(क) घड़ाक पिठे बेसि नाइच देखात (ख) घड़ाक दउड़ हेउअइक
(ग) काठेक घड़ा बनाइ लक नाइचथिन (घ) घड़ाके नाचाथिन

80. पुजाक उपास दिने किना निहिं हेउअइक?
(क) मारा हारा निहिं हेउअइक (ख) सिनान
(ग) रांधा रांधि निहिं हेउअइक (घ) काम धाम निहिं करथिन

81. साजना डालिक संग नाता काकर आहेइक?
(क) जाउआ करइआ संग (ख) जितिआ करइआक संग
(ग) बांदना करइआक संग (घ) बिहा करइआक संग

82. झारा-बारा कखन करथिन?
(क) धरम पुजाक रातिंइ (ख) भजेक रातिंइ
(ग) दुइअइक भितर कनअटांइ नाइ (घ) दुइअ टांइ

83. लगन बांधा कबे हेउअइक?
(क) बिहाक तिन दिन पेहिल (ख) बिहाक पांइच दिन पेहिल
(ग) दुआइर खुंधा (जाता) दिने (घ) बिहाक दिन

84. कुड़मालि चारिंइ कन मासे धरम पुजा निहिं करथिन?
(क) कारतिक मासे (ख) अघन मासे
(ग) माघ मासे (घ) बेसाक मासे

85. कांचा दिआ कन आमाबेसांइ देखात?
(क) आसिन (ख) अघहन
(ग) कारतिक (घ) फागुन

86. बांउड़ि, मकर कन मासले नाता आहेइक?
(क) पुस मासले (ख) अघहन मासले
(ग) फागुन मासले (घ) चेइत मासले

87. डंगुआ बेंटि छउआक किना बारन रहइक?
(क) गहाइल बाढ़ेक (ख) बाइद खेतेक धान काटेक
(ग) सांइझ दिइएक (घ) कांचा कुआंले पानि आना

88. हांड़ि बिहा कन जातिंइ करथिन?
(क) कुड़मि जातिंइ (ख) डम जातिंइ
(ग) कुमहार जातिंइ (घ) मुंचि जातिंइ

89. आमाबति कन दिने मानात?
(क) जेठेक सात दिने (ख) जेठेक पांइच दिने
(ग) आसाड़ेक सात दिने (घ) जेठेक सांकराइत दिने

90. छउ नाचेक आखड़ांइ पेहिल कने नाइच लागाइक?
(क) गनेस (ख) कारतिक
(ग) सिब (घ) परसुराम

91. सारा धति काहां लुटल जाइक?
(क) आम तरे (ख) महुआ तरे
(ग) माडुआ तरे (घ) कुलहिक दुआइरे

92. ननंद काके कहथिन?
(क) पुरुस कर दिदिके (ख) पुरुस कर भउजिके
(ग) पुरुसकर सालिके (घ) पुरुसकर बेहिनके

93. कन नातांइ छुआ-छुइत निहिं हेउअइक?
(क) देउअइ-भउजिंइए (ख) भेसुर-बउआसिने
(ग) मामि-भेंगनाइ (घ) समधि समधिने

94. एकर भितर कनटा गलत आहेइक?
(क) बिहाक छामड़ांइ डमकच नाइच हेउअइक।
(ख) गाइ जागरन बांदना परबे हेउअइक।
(ग) भगता परबे आदि हड़ेक (सिबेक) पुजा हेउअइक।
(घ) रहइन परब पुस मासे हेउअइक।

95. 'फलहार' साड़ाक नाता कन परबेक संग आहेइक?
(क) चेइत परबेक संग (ख) रहइन परबेक संग
(ग) बांदना परबेक संग (घ) करम परबेक संग।

96. सांघातिन काके कहथिन?
(क) भउजिक बेहिनके (ख) काकिक बेहिनके
(ग) मामिक बेहिनके (घ) मसिक बेहिनके

97. मकरेक पेहिल दिनके किना कहथिन?
(क) पुस सांकराइत (ख) बांउड़ि
(ग) क आर ख दुइअ (घ) आखांइन जातरा

98. हेंठे देउअल कनटा सटिक आहेइक?
(क) डंगा घुरा बिहाक घुरि दिन हेउअइक।
(ख) पांचाड़ि रुपां मासे हेउअइक।
(ग) जिलहुड़ अघन मासे हेउअइक।
(घ) हार पुड़नना चेइत मासे हेउअइक।

99. गुड़ि हांथ काकर संग नाता आहेइक?
(क) बिहाक संगे (ख) परबेक संगे
(ग) पुजाक संगे (घ) मरखि घारेक संगे

100. डमकच नृत्य कहां होता है?
(क) अखड़ा में (ख) खेत में
(ग) मैदान में (घ) मंडप में

## उत्तर

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 51. | (ग) | 61. | (ग) | 71. | (ग) | 81. | (घ) | 91. | (घ) |
| 52. | (ख) | 62. | (घ) | 72. | (घ) | 82. | (क) | 92. | (घ) |
| 53. | (ग) | 63. | (क) | 73. | (ग) | 83. | (क) | 93. | (ख) |
| 54. | (क) | 64. | (ख) | 74. | (ख) | 84. | (क) | 94. | (घ) |
| 55. | (ख) | 65. | (ग) | 75. | (ग) | 85. | (ग) | 95. | (क) |
| 56. | (क) | 66. | (ख) | 76. | (ग) | 86. | (क) | 96. | (क) |
| 57. | (ख) | 67. | (क) | 77. | (क) | 87. | (क) | 97. | (ग) |
| 58. | (क) | 68. | (घ) | 78. | (ग) | 88. | (क) | 98. | (ख) |
| 59. | (ख) | 69. | (ख) | 79. | (ग) | 89. | (ग) | 99. | (घ) |
| 60. | (ग) | 70. | (ख) | 80. | (क) | 90. | (क) | 100. | (घ) |

101. नेइआक काम किना हेकेइक?
(क) गांउएक देख-भाल करेक (ख) पुजा-पासा करेक
(ग) झगड़ाक मेट-माट कराइक। (घ) बिहा-दान कराइएक

102. गहाइल पुजाक नाता कन परबेक संगे आहेइक?
(क) आखांइन जातराक संगे (ख) रहइनेक संगे
(ग) बांदनाक संगे (घ) करमाक संगे

103. गाइ चुमान कखन हेउअइक?
(क) बांदना परबे (ख) पांचाडिंइ
(ग) हार पुइननाइ (घ) रहइने

104. फलाहारेक संग नाता काकर आहेइक?
(क) पुर परबेक संग (ख) बांउड़िक संग
(ग) चेइत परबेक संग (घ) करम परबेक संग

105. पांचाड़ि किना हेकेइक?
(क) पांच डिहेक बेइठकि। (ख) पांच डिहेक पुजा।
(ग) उपरेक दुइअटा (घ) धान रपेक एक नेग।

106. नउतुन छउआके कखन दिन बनाइके आनथिक?
(क) आखांइन जातराक दिन (ख) बिजइ दसमिक दिन
(ग) उपरेक दुइअ दिने (घ) कनअ टाइ नाइ

107. माइछ खाइल परे कनटा बारन रहइक?
(क) देहि खाउअटा (ख) दुध खाउआटा
(ग) डिम खाउआ टा (घ) घिउ खाउआटा

108. बेटि छउआक किना बारन रहइक?
(क) कदाइर कराटा (ख) हार जताटा
(ग) दुइअटाइ (घ) कनअ टाइ नाइ।

109. करमा परबे कन फरेक पुजा हेउअइक?
(क) झिंगा (ख) फुइट
(ग) खिरा (घ) कनअटाइ नाइ

110. हेंठे देउअल कनटा सउबले सटिक आहेइक?
(क) मनसा पुजांइ पांठाक पुजा हेउअइक।
(ख) मनसा पुजांइ झिंगाक पुजा हेउअइक।
(ग) क आर ख सटिक आहेइक
(घ) दुइअ गलत आहेइक

111. हेंठे देउअल कनटा सटिक आहेइक?
(क) अघन सांकराइते टुसुक थापना हेउअइक
(ख) पुसेक सांकराइते टुसुक थापना हेउअइक।
(ग) जेठ सांकराइते रहइन परब हेउअइक।
(घ) आसिन सांकराइते जितिआ परब हेउअइक।

112. माहतअ हांड़ि किना हेकेइक?
(क) माहतक बनाइल हांड़िके (ख) गांउएक माहतअके
(ग) बिहाक बेरांइ माहतक मिठाइके (घ) कनअटाइ नांइ

113. बिहांइ बेरिआइतेक मिठाइ केतेइ देइक?
(क) 80 गअ (ख) 60 गअ
(ग) 120 गअ (घ) 140 गअ

114. उधउआ नाइच काहां हेउअइक?
(क) गांउएक आखड़ांइ (ख) कुलहिक मुड़ांइ
(ग) टांइड़ टिकरांइ (घ) माड़ुआ तरे

115. पुस पिठा कखन निहिं हेउअइक?
(क) सेइ बछर मरा-मारा हेले (ख) छउआ हेले
(ग) बिहा हेले (घ) गाइ धेनुआले

116. सना-पितर किना हेकेइक?
(क) बिहाक एक नेग (ख) सना आर पितर
(ग) बांदना परबेक एक नेग (घ) उपरेक सउब

117. घटि-लुका काहां हेउअइक?
(क) केनिआइ घारे (ख) बर घारे
(ग) बांध घाटे (घ) दुआइर लागेक बेरांइ

118. घार-भरा नेग काहां हेउअइक?
(क) केनिआइ घारे (ख) बर घारे
(ग) भितर घारे (घ) उपरेक सउब

119. बिहांइ आइ माइएक केइटि मिठाइ साजइक?
(क) 21 टि (ख) 60 टि
(ग) 80 टि (घ) 160 टि

120. कुड़मि बिहांइ आलता पिंधाइएक नेग काकर आहेइक?
(क) बरेक भउजिक (ख) केनिआइएक भउजिक
(ग) नेइआक (घ) नउआक

121. बिहांइ गांइठ खलाक पेइसा कने देइक?
(क) केनिआंइए (ख) बरे
(ग) बरेक घड़ांइ (घ) बरेक घड़िंइ

122. संग छाड़ा नेगेक पेइसाक हक काकर रहइक?
(क) सांघात सउभेक (ख) भउजि सउभेक
(ग) सउब संगिक (घ) उपरेक काकरअ नाइ

123. बिहांइ खांखड़ा कने धरइक?
(क) बरेक भाइए (ख) बरेक बेहिने
(ग) केनिआइएक भाइए (घ) केनिआइएक बेहिने

124. बिहांइ चेंग माइछ कने धरइक?
(क) गांउएक माहतंइ (ख) बरेक बेहिने
(ग) केनिआइएक भाइए (घ) केउ हेले

125. दुआइर छेका नेगे पेइसा कने देइक?
(क) केनिआंइए (ख) बरे
(ग) दुइअंइ (घ) केउ नाइ

126. दुइआइर छेका नेगेक पेइसाक हक काकर रहइक?
(क) बरेक भाइएक (ख) केनिआइएक बेहिनेक
(ग) बरेक बेहिनेक (घ) केनिआइएक भाइएक

127. घार भरा नेगे किना हेउअइक?
(क) नउआ घार बनाइक (ख) पेइलांइ धान भरइक
(ग) दनाइ धान भरइक (घ) लटे धान भरइक

128. गड़ धउआ नेगे काकर गड़ धउआ हेउअइक?
(क) बरेक (ख) सास ससुरेक
(ग) भेसुरेक (घ) उपरेक सउब

129. दुआइर खुंधा नेगे किना हेउअइक?
(क) दुआइरके डेगइक (ख) दुआइरके कड़इक
(ग) दुआइरके बेसाइक (घ) केनिआइके चुमाइक

130. महुआ बिहांइ किना निहिं हेउअइक?
(क) काखना बांधा (ख) नटुआ सुता लेपटा
(ग) अमलअ खाउआ (घ) गांइठ बांधा

131. दुआइर छेका नेगे किना हेउअइक?
(क) बेहिन सउभे छेकत (ख) भाइ सउभे छेकत
(ग) लेगदिनके छेकत (घ) फुफु सउभे छेकत

132. छाता खड़म कखन हेउअइक?
(क) बिहाक परे (ख) जनम परे
(ग) बांदनाक परे (घ) करम परबेक परे

133. हांड़ि बिहा किना हेकेइक?
(क) नउतुन हाड़िक बिहा करा (ख) बिहाक एक नेग
(ग) दुइ हांड़िक बिहा करा (घ) दुइ जातिक बिहा

134. नउतुन कुंआक पानि बेवहार करेक पेहिल किना हेउअइक?
(क) कुंआके बांधाल जाइक (ख) कुंआके चुमाइल जाइक
(ग) कुंआ बिहा करल जाइक (घ) पानिके पाटाइल जाइक

135. बांध बिहा किना हेकेइक?
(क) बिहाक एक नेग (ख) जनमेक एक नेग
(ग) पुजाक एक नेग (घ) बांधेक बिहा करा

136. कुड़मालि बिहांइ चक पुरेक नेग काकर आहेइक?
(क) बरेक फुफुक (ख) केनिआइएक फुफुक
(ग) बरेक मामिक (घ) केनिआइएक मामिक

137. बांदापन किना हेकेइक?
(क) दुआइर बंदअ करिके चुमान (ख) बंदिके चुमान देउआ
(ग) आंइख बंदअ करिके चुमान (घ) बांधिके चुमान देउआ

138. कुड़मालि चारिंइ सिंदरादान नेग काहां हेउअइक?
(क) कुलहिक मुड़ांइ (ख) कुलहिक दुआइरे
(ग) आम तरे (घ) माडुआ तरे

139. लहाक मेठिआ किना हेकेइक?
(क) बिहाक एक नेग (ख) मरा हारा घारेक एक नेग
(ग) बिहाइल जेनिक चुड़ि (घ) रांड़ जेनिक साइज

140. लगन चुमाइएक परे बरेक किना निअम आहेइक?
(क) एकाइ काहुं जाउआ बारन (ख) जांता संगे राखा
(ग) पति सांइझे चुमान करा (घ) उपरेक सउब टाइ

141. काजरअठि कखन संगे राखत?
(क) बिहाक घुरि दिन (ख) चुमान उठेक परे
(ग) लगन चुमाइएक परे (घ) दुआइर लागेक परे

142. लहाक मेठिआ काहां पिंधाइल जाइक?
(क) माडुआ तरे (ख) महुआ तरे
(ग) चुमानेक बेरांइ (घ) दुआइर लागेक बेरांइ

143. मरजाइत काके कहाइक?
(क) जखन केउअ मरि जात (ख) सिकार करिके घुरत
(ग) जाउआ जखन मरि जाइक (घ) 3 दिनेक बेरिआइतके

144. एकुइसा काके कहाइक?
(क) मरेक 21 दिनके (ख) जनमेक 21 दिनके
(ग) बिहाक 21 दिनके (घ) उपमेक सउब

145. कुड़मालि चारिंइ छउआ हेले किना हेउअइक?
(क) नारता हेउअइक (ख) एकुइसा हेउअइक
(ग) कामान-सिनान हेउअइक (घ) उपरेक सउब टाइ

146. कुड़मालि चारिंइ तेलखइर कबे हेउअइक?
(क) मरेक 3 दिने (ख) 7 दिने
(ग) 9 दिने (घ) 1 दिने

147. कान-काटा भात कखन हेउअइक?
(क) घाट उठेक परे (ख) घाट उठेक पेहिल
(ग) भजेक दिन (घ) बिहाक दिन

148. कान-काटा भातेक माने।
(क) कानेक खिचड़ि (ख) कानाक रांधल भात
(ग) कान काटिके रांधा (घ) मरन धारेक एक नेग

149. घुरलि बेरिआइत माने।
(क) जन बेरिआइत घुरिके आउअत (ख) दुइ बार जेंइ आउअत
(ग) जेंइ बेरिआइत गेल रहला (घ) जेंइ घुरि घुरि आउअइ

150. कुड़मालि संस्कृति में खाने के लिए निमंत्रण को क्या कहा जाता है?
(क) नेउता (ख) खभर
(ग) खाइएक खभर (घ) बिजइआ

## उत्तर

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 101. | (ख) | 111. | (क) | 121. | (ख) | 131. | (क) | 141. | (ग) |
| 102. | (ग) | 112. | (ग) | 122. | (ग) | 132. | (क) | 142. | (घ) |
| 103. | (क) | 113. | (क) | 123. | (घ) | 133. | (ख) | 143. | (घ) |
| 104. | (ग) | 114. | (ग) | 124. | (घ) | 134. | (ग) | 144. | (ख) |
| 105. | (घ) | 115. | (क) | 125. | (ख) | 135. | (घ) | 145. | (घ) |
| 106. | (ग) | 116. | (क) | 126. | (ग) | 136. | (ख) | 146. | (क) |
| 107. | (ख) | 117. | (ग) | 127. | (घ) | 137. | (ख) | 147. | (क) |
| 108. | (ख) | 118. | (घ) | 128. | (घ) | 138. | (घ) | 148. | (घ) |
| 109. | (ग) | 119. | (घ) | 129. | (ग) | 139. | (ग) | 149. | (ग) |
| 110. | (ग) | 120. | (ग) | 130. | (घ) | 140. | (घ) | 150. | (घ) |

151. जिलहुड़े किना रहइक?
(क) भेलुआ पातेक डहरा (ख) चिरचिटि
(ग) ठुठका बाड़हिन आर परदिम (घ) उपरेक सउब

152. कुड़मालि चारिंइ कहड़ा पुजा कखन करथिक?
(क) गहाइल पुजाक दिन (ख) दुरगा पुजाक नउअमि दिन
(ग) जितिआक पारना दिन (घ) करमा पारना दिन

153. निंगछा छइरेक सारुआ टा केसन करिके लेगत?
(क) दुइअ हांथे करिके (ख) देहिना हांथे खालि
(ग) बांउआ हांथे खालि (घ) आला पालि करिके

154. कुसराइन लुगा कखन देल जाइक?
(क) बिहांइ (ख) छउआक जनम परे
(ग) धरम पुजांइ (घ) नारतांइ

155. छटक बेरांइ छउआके गिरा-हारालें कने बाचाइक?
(क) आजि माइए (ख) माइए
(ग) मामा माइए (घ) ससटि माइए

156. घटि लुका किना हेकेइक?
(क) घटि हेराइ जाउआ (ख) घटिके झुंड़े लुकाइ देउआ
(ग) घटिंइ पानि भरा (घ) बिहाक एक नेग

157. डमकच नाइच हेकेइक?
(क) डमेक संग नाइचा (ख) डमेक बाजनाइ नाचा
(ग) बिहाक एक नाइच (घ) दमदमाइके नाचा

158. एकर भितर कनटा गलत आहेइक?
(क) डुभाभाजन बिहाक नेग हेकेइक
(ख) जेनिके हारेक बुटा धरे लाइ बारन रहइक
(ग) पुस सांकराइते टुसु थापना हेउअइक।
(घ) चेइतेक सांकराते भगता परब हेउअइक।

159. जिरा गमन किना हेकेइक?
(क) जिराइके दउड़ा (ख) जिराइके चला
(ग) जिराइके काम करा (घ) बिहाक एक नेग

160. थुभड़ा भात किना हेकेइक?
(क) जुआन झनेक रांधल भात (ख) थुभड़ाक रांधल भात
(ग) थुभड़ाक खातिर रांधल भात (घ) बिहाक एक नेग

161. थुभड़ा भात खाइल जाइक।
(क) जखन जुआन हेत (ख) जखन रउगि हेत
(ग) जखन बिहा करत (घ) जखन काहुं जात

162. कुड़मालि चारिंइ गुड़पानि कखन खाइल जाइक?
(क) बर दुआइर लागेक बेरांइ (ख) केनिआइ दुआइर लागेक बेरांइ
(ग) केनिआइ बिदाइ हेल परे छउआके (घ) उपरेक सउब

163. एकर भितर कन टा सटिक आहेइक?
(क) समधि पातइर (ख) समधि देखा
(ग) सारा धति (घ) उपरेक सउब

164. समधि पातइर किना हेकेइक?
(क) समधिक टिपल पातइर (ख) समधिनेक टिपल पातइर
(ग) कुड़मिक एक नेग (घ) समधिक आनल पातइर

165. गांउएक मुखिआके किना कहथिक?
(क) माहातअ (ख) गड़ाइत बुढ़ा
(ग) सिकंदर (घ) परगनाइत

166. बाइसिक परधानके किना कहथिक?
(क) तालेबर (ख) माहातअ
(ग) नेइआ (घ) गड़ाइत बुढ़ा

167. माहातक काम हेकेइक।
(क) बिहा-दान कराएक (ख) झगड़ा-झाटिक मेट-माट कराएक
(ग) सामाजिक कामे हाथ बाटाउआ (घ) उपरेक सउभ काम कराएक

168. कुड़मालि चारिंइ सउबले उंचअ पदके कहल जाइक।
(क) बड़दा (ख) सिकंदर
(ग) तालेबर (घ) माहातअ

169. कुड़मिक केतेइ गअ गतरअ आहेइक?
(क) 21 गअ (ख) 81 गअ
(ग) 61 गअ (घ) 101 गअ

170. 'ढड़ कुड़मि एकासि, सनखापटा तिरासि। आहना टांइ किना फेरिछ करअलाइ?
(क) कुड़मिक छेतरअ (ख) कुड़मिक देउआ भुताके
(ग) कुड़मिक गतरअ (घ) गेनतिके

171. आन जातिक संग बिहा करले किना करथिक?
(क) अके भउज दिए हेउअइक (ख) अके जाइतले बाइड़ करि देथिक
(ग) अके कुलहिक मुड़इ बेसाइ चुमाउथिक (घ) उपरेक सउभे हेइक

172. उततर दिगे मुड़ करि काके घुमाउथिक?
(क) बड़अ बेटाके (ख) परबिआके
(ग) मरल मड़ाके (घ) मेड़के

173. कुड़मालि चारि कन जाइत बिसेस भाभे जड़ाइल आहेइक?
(क) कुडुख जाइतले (ख) कुड़मि जाइतले
(ग) कामार जाइतले (घ) उपरेक सउब जाइतले

174. इनमें से कौन सा सही है?
(क) ये संस्कृति प्रकृति आधारित है। (ख) ये संस्कृति कृषि आधारित है।
(ग) ये संस्कृति धन आधारित है। (घ) क एवं ख दोनों

175. कुड़मि के गोत्र किस प्रकार का है?
(क) गैर टोटेमिक (ख) टोटेमिक
(ग) सदानी (घ) जातिगत

176. टोटेमिक गोत्र किसकी परिचायक है?
(क) सदान (ख) ब्राह्मण
(ग) आर्य (घ) आदिवासी

177. कुड़मि समाज में पारंपारिक न्याय व्यवस्था प्रचलित है।
(क) पंचायत व्यवस्था (ख) मानकी व्यवस्था
(ग) पढ़ा व्यवस्था (घ) परगना व्यवस्था

178. 'पाट' का संबंध किस पर्व से है?
(क) भगता (ख) रहइन (ग) टुसु (घ) मनसा

179. 'आंकुर' का संबंध किस पर्व से है?
(क) रहइन (ख) मनसा (ग) भगता (घ) जितिआ

180. इनमें कौन सा सही मिलान है।

| | |
|---|---|
| (अ) भगता | (1) बिज |
| (ब) रहइन | (2) जाउआ |
| (स) करम | (3) चउड़ल |
| (म) टुसु | (4) पाट |

| | (अ) | (ब) | (स) | (म) |
|---|---|---|---|---|
| (क) | (2) | (1) | (4) | (3) |
| (ख) | (2) | (3) | (4) | (1) |
| (ग) | (4) | (2) | (1) | (3) |
| (घ) | (4) | (1) | (2) | (3) |

181. 'बरद खुंटा' का तात्पर्य होता है।
(क) बैल का खुटा (ख) बैल का रस्सी
(ग) बैल का खैलाना (घ) इनमें से कोई नहीं

182. 'रहइन' का संबंध किस महीना से है?
(क) आसाढ़ (ख) जैठ (ग) वैशांख (घ) चैत

183. सही मिलान किजिए।

| | |
|---|---|
| (अ) सारा धति | (1) मरन |
| (ब) पाग | (2) जनम |
| (स) तेल खइर | (3) बिहा |
| (म) छाइन ढेढ़ा | (4) बर |

| | (अ) | (ब) | (स) | (म) |
|---|---|---|---|---|
| (क) | (2) | (1) | (4) | (3) |
| (ख) | (3) | (4) | (1) | (2) |
| (ग) | (4) | (2) | (1) | (3) |
| (घ) | (4) | (1) | (2) | (3) |

184. कुड़मालि संस्कृति में 'अखइन' का संबंध किससे है?
(क) 1 माघ से (ख) माड़ा से
(ग) बिवाह से (घ) इनमें से कोई नहीं

185. कुड़मि समाज में सार्वजनिक बैठकी को कहा जाता है।
(क) पंचायत की बैठक (ख) महतो की बैठक
(ग) सलअआना की बैठक (घ) इनमें से कोई नहीं

186. कुड़मि समाज में पूजा-पाठ करने वाले को कहा जाता है।
(क) पंडित (ख) दिउरि
(ग) नेइआ (घ) पाहान

187. इनमें से किसमें 'निंगछा छइर' नहीं होता है।
(क) टुसु पर्व में (ख) पाचाडि में
(ग) बांदना पर्व में (घ) इनमें से कोई नहीं

188. निंगछा छइर का सारुआ कैसे ले जाया जाता है।
(क) दायां हाथ में (ख) बायां हाथ में
(ग) दोनों से (घ) इनमें से कोई नहीं

189. इनमें से कौन सा कथन सबसे सही है।
(क) करम पर्व केवल स्त्री करते हैं।
(ख) जितिआ पर्व को केवल विवाहित स्त्री करते हैं।
(ग) गाय चुमान कोई कर सकता है।
(घ) इनमें से कोई नहीं

190. कुड़मालि संस्कृति में वर्ष का पहला दिन मानते हैं।
(क) 1 वैशाख को (ख) 1 जनुवरी को
(ग) बुद्ध पुर्णिमा को (घ) 1 माघ को

191. कुड़मि के पंचायत में शामिल होते हैं।
(क) गांव के सभी पुरूष (ख) गांव के सभी स्त्री
(ग) स्त्री एवं पुरूष दोनों (घ) केवल पुरूष वर्ग

192. पुसालु का संबंध किस महीना से है।
(क) पुस (ख) माघ
(ग) अगहन (घ) इनमें से कोई नहीं

193. कब 'पुसालु' नहीं करते हैं।
(क) धरम पूजा होने पर (ख) कोई मर जाने पर
(ग) क एवं ख दोनों (घ) इनमें से कोई नहीं

194. इनमें से कौन सा सही है।
(क) पुसालु के लिए तय महीना होता है।(ख) पुसालु के लिए तय जगह होता है।
(ग) पुसालु में स्त्री पुरूष दोनों जाते हैं। (घ) उपर्युक्त सभी सही है।

195. कुड़मि समाज में सुबह को क्या दी जाती है।
(क) हल जोतने का कार्य (ख) मड़अलि देने के कार्य
(ग) गाय चुमाने का कार्य (घ) संध्या देने का कार्य

196. कुड़मि संस्कृति में लड़की को माना जाता है।
(क) धन का प्रतिक (ख) दान का प्रतीक
(ग) गरीबी का प्रतीक (घ) इनमें से कोई नहीं

197. कुड़मालि संस्कृति में कब पकवान बनाने का मनाही रहता है।
(क) आसाड़ि के बाद (ख) आसाड़ में
(ग) आसाड़ में आसाड़ि के पूर्व (घ) श्रावण में

198. 'हथिआ' क्या है?
(क) जंगली हाथी (ख) पालतु हाथी
(ग) एक प्रकार का पानी (घ) हाथ की कंगन

199. 'रहइन' के बाद क्या होता है?
(क) सरबइना (ख) रहइना (ग) आमावश्या (घ) पुर्णिमा

200. जाउआ पर्व के तुरंत बाद होता है।
(क) जांताड़ पर्व (ख) छाता पर्व (ग) जिलहुड़ (घ) जितिआ

## उत्तर

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 151. (घ) | 161. (ग) | 171. (ख) | 181. (ग) | 191. (घ) |
| 152. (ख) | 162. (घ) | 172. (ग) | 182. (ख) | 192. (क) |
| 153. (ग) | 163. (घ) | 173. (ख) | 183. (ख) | 193. (ग) |
| 154. (क) | 164. (ग) | 174. (घ) | 184. (क) | 194. (घ) |
| 155. (घ) | 165. (क) | 175. (ख) | 185. (ग) | 195. (क) |
| 156. (घ) | 166. (क) | 176. (घ) | 186. (ग) | 196. (क) |
| 157. (ग) | 167. (घ) | 177. (घ) | 187. (क) | 197. (ग) |
| 158. (ग) | 168. (क) | 178. (क) | 188. (ख) | 198. (ग) |
| 159. (घ) | 169. (ख) | 179. (घ) | 189. (ख) | 199. (क) |
| 160. (घ) | 170. (ग) | 180. (घ) | 190. (घ) | 200. (ख) |

# 2. कुड़मालि शिष्ट साहित्य

1. 'केरिआ बहु' काकर रचना हेकेइक?
   (क) कालिपद महतो (ख) तुलसि दास
   (ग) अनंत केसरिआर (घ) बिनंद सिंह
2. एकर भितर कुड़मालिक कबि हेकेइक?
   (क) बुधु बाबु (ख) बसंति कुजुर
   (ग) श्याम सुन्दर महतो (घ) परमानन्द महतो
3. 'जाहलि' नाटक काकर रचना हेकेइक?
   (क) बसंत कुमार मेहता (ख) अनंत केसरिआर
   (ग) चन्द्र मोहन महतो (घ) प्यारा केरकेट्टा
4. अनंत केसरिआरके कन रुपे जानल जाइक?
   (क) नाटककार (ख) कबि
   (ग) गितकार (घ) सउब रकम
5. 'नर जनम बिधिंइ काहे देल' काकर रचल कबिता हेकेइक?
   (क) बरजुराम तांति (ख) भबअ पिता
   (ग) बिनंद सिंह (घ) सरदुआ
6. 'तंइ कि जाबे निहिं अहे डहरे' काकर रचना हेकेइक?
   (क) भबअ पिता (ख) सिसटिधर
   (ग) बुधु बाबु (घ) लखिकांत मुतरुआर
7. सुरेन्द्र नाथ माहतक साहित हेकेइक।
   (क) आंधरिआ राइत (ख) गांधिक जइ
   (ग) फुरुंग (घ) एकर भितर केउए नाइ
8. कुड़मालि भाषा साहित्य में बसंत कुमार मेहता को किस रूप में जाना जाता है?
   (क) नाटककार के रूप में (ख) उपन्यासकार के रूप में
   (ग) साहित्य कार के रूप में (घ) समाज सेवी के रूप में
9. उपन्यासकार के रूप में जाना जाता है।
   (क) लखिकांत मुतरुआर (ख) सुरेन्द्र नाथ महतो
   (ग) राधा गोबिद महतो (घ) कालि पद महतो
10. कुड़मालि भासा साहितके केते जुगे बाटल गेल आहेइक?
    (क) टेना जुगे (ख) दना जुगे
    (ग) चारा जुगे (घ) एकर भितर केउ नाइ
11. एकर भितर कन आदि जुगिन कबि हेकेइक?
    (क) बिनंद सिंह (ख) बडु चंडिदास
    (ग) 1 आर 2 दुइअ (घ) एकर भितर केउ नाइ

12. कुड़मालि भाखा साहितके जुगेक अनुजांइ खड़ल गेल आहेइक।
    (क) आदि काल, मइध काल आर आधुनिक काल
    (ख) रिति काल, मइध काल आर आधुनिक काल
    (ग) आदि काल, रिति काल, भकति काल आर आधुनिक काल
    (घ) आदि काल आर आधुनिक काल
13. एकर भितर कनटा सहि आहेइक?
    (क) जाहलि नाटक हेकेइक
    (ख) फारकति उपनइआस हेकेइक
    (ग) सपन आपन निबंध हेकेइक
    (घ) एकर भितर केउ नाइ
14. 'करम कथा' पथि टा काकर रचल हेकेइक?
    (क) बसंत कुमार मेहता (ख) राधा गोबिंद महतो
    (ग) क आर ख दुइअ (घ) एकर भितर काकरअ नाइ
15. एकर भितर कनटा सहि आहेइक?
    (क) 'फुरुंग' कबिताक पथि हेकेइक
    (ख) 'गांधिक जइ' नाटक हेकेइक
    (ग) 'आंधरिआ राइत' नाटक हेकेइक
    (घ) 2 आर 3 दुइअ सहि आहेइक
16. सुनिल कुमार महतअकर रचल पथिक नाम किना हेकेइक।
    (क) गांधिक जइ (ख) करम कथा
    (ग) पलास फुल (घ) डहर
17. कुड़मालि भाखाक पेहिल भांउअरेक रचइआ कन हेकत?
    (क) चन्द्र मोहन महतो (ख) नंद किशोर सिंह
    (ग) शशि भुषण महतो (घ) श्याम सुन्दर महतो (सामदा)
18. निबंध कांरेक डुल चिनहाप आहेइक।
    (क) शशि भूषण महतो (ख) लखि कांत मुतरुआर
    (ग) निताइ चन्द्र महतो (घ) एच. एन. सिंह
19. 'पलास फुल' काकर रचना हेकेइक?
    (क) निताइ चन्द्र महतो (ख) ज्योति लाल महतो
    (ग) सपन कुमार महतो (घ) सिरि पदअ बसरिआर
20. बुधु बाबुक रचल पथि हेकेइक।
    (क) गांधि बाबुक संबाद (ख) एक डडरा फुल
    (ग) फारकति (घ) जाहलि
21. 'नेठापाल' काकर रचना हेकेइक?
    (क) निरंजन माहतक (ख) बुधु माहतक
    (ग) निताइ चंदरअ माहतक (घ) अनंत केसरिआर

22. 'नेठापालेक' रचना कखन हेल रहलेइक?
(क) 1921 (ख) 1931
(ग) 1951 (घ) 1971

23. 'द राजिंग सन' काकर रचना हेकेइक?
(क) ग्रीर्यसन (ख) अनंत केसरिआर
(ग) डाल्टन (घ) हेमिल्टन

24. 'आंधरिआ राइत' कर लेखक हेकेइक?
(क) जति लाल माहतअ (ख) बिनोद माहतअ
(ग) निताइ चंदरअ माहतअ (घ) सिसटिधर

25. 'भात भगबान' कर रचइआ हेकेइक?
(क) सिसटिधर (ख) बुधु बाबुक
(ग) महिपाल (घ) भबअ पिता

26. 'उड़िस' कबिता कर रचइआ हेकेइक?
(क) बुधु बाबु (ख) केसब बाबु
(ग) महिपाल (घ) सिसटिधर

27. 'कपिला मंगल' कर रचना काल हेकेइक।
(क) 1953 (ख) 1956
(ग) 1936 (घ) 1963

28. 'कपिला मंगल' किना हेकेइक?
(क) पुरखउति गाथा (ख) कबिता
(ग) पुरखउति गित (घ) गिति काइब

29. 'कपिला मंगल' के रचना कार है।
(क) गोरांगिया (ख) राजेंद्र प्रसाद
(ग) बिनंदिया (घ) विभुति भूषण

30. 'चातम बाड़ि' किस कबि के जीवन से संबंध रखता है?
(क) संत कबि महिपाल (ख) संत कबि सिसटिधर
(ग) गोरांगिआ (घ) बिनंद सिंह

31. 'गरबिचार' किना हेकेइक?
(क) नाटक (ख) फेदड़न
(ग) केहनि (घ) कबिता

32. 'चासिक हालेक' रचइआ हेकत?
(क) ललित महन माहत (ख) बिंदावन माहतअ
(ग) राधा गउबिंद माहतअ (घ) केसब बाबु

33. 'बेसहाल मार्क के बनावल' कर रचना हेल आहेइक।
(क) 1903 (ख) 1913
(ग) 1953 (घ) 1983

34. 'बेसहाल मार्क के बनावल' कर रचइआ हेकेइक।
(क) जि. आर. ग्रियर्सन (ख) जी. एफ. हेमिल्टन
(ग) रिजले (घ) डाल्टन

35. 'करम संगित' कर रचइआ हेकेइक।
(क) ससि बाबु (ख) जति बाबु
(ग) केसब बाबु (घ) बुधु बाबु

36. 'करम संगित' कर रचना काल हेकेइक।
(क) 1980 (ख) 1990
(ग) 1970 (घ) 1950

37. 'छोटानागपुर ताल मंजरी' द्वारा रचि गयी है।
(क) बाउलदास (ख) भवपिता
(ग) उपेंद्र नाथ देव सिंह (घ) गोरांगिया

38. 'छोटानागपुर ताल मंजरी' की रचना काल क्या है?
(क) 1956 (ख) 1976
(ग) 1966 (घ) 1996

39. 'द राजिंग सन' का प्रकाशन वर्ष है।
(क) 1906 (ख) 1976
(ग) 1916 (घ) 1986

40. 'एक डंडरा फुल' कर रचइआ हेकत।
(क) लखि बाबु (ख) बुधु बाबु
(ग) जति बाबु (घ) केसब बाबु

41. 'एक डंडरा फुल' कर निखरन बछर हेकेइक।
(क) 1980 (ख) 1981
(ग) 1982 (घ) 1983

42. 'द राइजिंग सन' किस प्रकार की पुस्तक है?
(क) लोक साहित्य (ख) धार्मिक
(ग) शिष्ट साहित्य (घ) इनमें से कोई नहीं

43. 'नेठापाल' की रचना कहां से प्रकाशित हुई थी?
(क) नेपाल से (ख) उड़िसा से
(ग) झारखंड से (घ) बंगाल से

44. 'आदि झुमर संगीत' के रचना कार है।
(क) नारायण सिंह (ख) उपेंद्र नाथ सिंह
(ग) नरोत्तम सिंह (घ) देवेंद्र नाथ महतो

45. 'अदि झुमर संगीत' के रचनाकार का संबंध है।
(क) राजा घर से (ख) परजा घर से
(ग) दरबारि कबि से (घ) नाई घर से

46. 'आदि झुमर संगीत' की रचना वर्ष थी।
(क) 1987 (ख) 1957
(ग) 1986 (घ) 1956

47. 'कुर्माली भाषा तत्व' के रचना कार है।
(क) निताई चंद्र महतो (ख) लखिकांत मुतरुआर
(ग) खुदिराम महतो (घ) अनंत केसरिआर

48. 'कुर्माली भाषा तत्व' के प्रकाशन वर्ष है।
(क) 1970 (ख) 1972
(ग) 1973 (घ) 1983

49. 'केते आकुआ भाषा केते आकुआ आसा' के प्रकाशन वर्ष है।
(क) 1957 (ख) 1956
(ग) 1953 (घ) 1986

50. 'केते आकुआ भाषा केते आकुआ आसा' के रचनाकार है।
(क) सुधाकर झा (ख) देवकी नंदन प्रसाद
(ग) गिरिस चंद्र महंता (घ) नंद किशोर सिंह

## उत्तर

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | (क) | 11. | (ख) | 21. | (क) | 31. | (क) | 41. | (ग) |
| 2. | (क) | 12. | (घ) | 22. | (क) | 32. | (क) | 42. | (ख) |
| 3. | (ख) | 13. | (क) | 23. | (ख) | 33. | (क) | 43. | (ख) |
| 4. | (घ) | 14. | (घ) | 24. | (ग) | 34. | (ख) | 44. | (ख) |
| 5. | (क) | 15. | (क) | 25. | (क) | 35. | (घ) | 45. | (क) |
| 6. | (घ) | 16. | (ख) | 26. | (घ) | 36. | (ग) | 46. | (घ) |
| 7. | (ख) | 17. | (घ) | 27. | (क) | 37. | (ग) | 47. | (ग) |
| 8. | (घ) | 18. | (घ) | 28. | (घ) | 38. | (क) | 48. | (ग) |
| 9. | (ख) | 19. | (ख) | 29. | (ख) | 39. | (घ) | 49. | (ख) |
| 10. | (ख) | 20. | (क) | 30. | (घ) | 40. | (क) | 50. | (ख) |

51. 'गांधिक जइ' का प्रकाशन वर्ष था।
(क) 1986 (ख) 1996
(ग) 1946 (घ) 1994

52. 'सांतुल' के रचनाकार है।
(क) अनंत केसरिआर (ख) सुनिल महतो
(ग) क और ख दोनों (घ) दोनों में से कोई नहीं

53. 'गांधिक जइ' के रचनाकार हैं।
(क) गजाधर महतो (ख) काली पद महतो
(ग) क और ख दोनों (घ) इनमें से कोई नहीं

54. 'पिआसि' किस विधा की पुस्तक है?
(क) गइद (ख) पइद
(ग) दोनों (घ) इनमें से कोई नहीं

55. 'पिआसि' के रचनाकार है।
(क) बिनंद सिंह (ख) भगबान दास
(ग) अनंत केसरिआ (घ) सुनिल महतो

56. 'सिंदुर काजर' क्या है?
(क) एक नाटक (ख) एक संस्कार
(ग) एक उपन्यास (घ) सिंदुर और काजल

57. इनमें से अनंत केसरिआर की रचना है।
(क) जाहलि (ख) सपन-आपन
(ग) सिंदुर काजर (घ) उपर्युक्त सभी

58. 'छेंग गर गर खापरा पिठा' किना हेकेइक?
(क) पुरखउति कथा (ख) एकर रकमेक पिठा
(ग) एक पथिक नाम (घ) उपरेक कनअ टाइ नाइ

59. 'छेंग गर गर खापरा पिठाक' रचइआ हेकेइक।
(क) भगबान दास माहतअ (ख) गिरिस चंदरअ महंता
(ग) चतुरभुज माहतअ (घ) आदिकांत महंता

60. 'बिहान' पथिक रचइआ हेकेइक।
(क) निताइ चंदरअ माहतअ (ख) आदिकांत माहतअ
(ग) पि. पि. केसरिआर (घ) करुनामइ केसरिआर

61. 'दिबाकर' किना हेकेइक?
(क) एके नाटक (ख) एक केहनिक पथि
(ग) एक गित (घ) एक कबिताक पथि

62. 'फुरुंग' कर रचना कखन हेल रहलेइक?
(क) 1980 (ख) 1981
(ग) 1982 (घ) 1983

63. 'कुड़मालि आहनाइ केहनि' काकर रचना हेकेइक?
(क) डा. आदिकांत (ख) डा. मनउरमा
(ग) डा. बिंदाबन (घ) डा. एच. एन. सिंह

64. कुड़मालि के प्रथम उपन्यासकार है।
(क) आदिकांत महंता (ख) निताइ चंद्र महतो
(ग) सुरेंद्र नाथ महतो (घ) अनंत केसरिआर

65. 'झुमर आर झुमर देस' किसकी रचना है?
(क) आदिकांत महंता (ख) गिरिस चंद्र महंता
(ग) बिजइ कु. माहापातरा (घ) भबअ पिता

66. इनमें से कौन सी पत्रिका कुड़मालि के नहीं है।
(क) टेंसफुल (ख) आखांइन
(ग) बिहान (घ) गेलि बेहिनि

67. 'टेंस फुल' क्या है?
(क) पत्रिका (ख) कबिता के पुस्तक
(ग) क और ख दोनों (घ) इनमें से कोई नहीं

68. 'झुमर सुमिचछा' काकर रचल पथि हेकेइक?
(क) आदिकांत महंता (ख) गिरिस चंदरअ महंता
(ग) भुलानाथ माहतअ (घ) मालाबति

69. 'पथे चलाक लेहा नमसकार' कर रचना बन साले हेल आहेइक?
(क) 1978 (ख) 1979
(ग) 1980 (घ) 1981

70. 'आंधरिआ राइत' कर निखरन कन साल हेल आहेइक?
(क) 2011 (ख) 2012
(ग) 2013 (घ) 2014

71. 'सिसटिधरेक गित' काकर जहड़ाइल पथि हेकेइक?
(क) सिरिपद माहतअ (ख) अनंत केसरिआर
(ग) डा. एच. एन. सिंग (घ) संत कबि सिसटिधर

72. इनमें से 'डहर' क्या है?
(क) एक कविता के पुस्तक (ख) एक कविता
(ग) एक कहानी (घ) यात्रा वृतांत

73. 'डहर' कविता के पुस्तक का प्रकाशन कब हुआ है?
(क) 2009 (ख) 1981
(ग) 2012 (घ) 1982

74. इनमें से 'डहर' पुस्तक की रचयिता है।
(क) केसब बाबु (ख) डा. आदिकांत महंता
(ग) निताइ चंद्र महतो (घ) डा. एच. एन. सिंग

75. 'कुड़मालि कबि आर काइब' की रचनाकार है।
(क) डा. एच. एन. सिंह (ख) डा. मानसिंग महतो
(ग) अनंत केसरिआर (घ) निताइ चंद्र महतो

76. इनमें से नाटक की पुस्तक है।
(क) आंधरिआ राइत (ख) गांधिक जइ
(ग) करम गाथा (घ) गर बिचार

77. इनमें से कौन सा गलत है।
(क) जाहलि का प्रकाशन 2010 में हुई है।
(ख) फारकति उपन्यास है
(ग) सुरेंद्र नाथ महतो एक उपन्यासकार है।
(घ) इनमें से कोई नहीं

78. इनमें से कौन सही है।
(क) बिनोद डहर पत्रिका है। (ख) कपिला मंगला गिति काव्य है।
(ग) सपन आपन कबिता है। (घ) सभी सही है

79. 'तंइ कि जावे निहिं अहे डहरे' किना हेकेइक?
(क) एक गित हेकेइक (ख) एक केहनि हेकेइक
(ग) एक कबिता हेकेइक (घ) उपरेक कनअ टाइ नाइ

80. एकर भितर कनटा सटिक आहेइक?
(क) हुब बांकुड़ा ले निखरइक (ख) जाहलि नेपालले निखरइक
(ग) बानार झारखंडले (घ) गेलि बेहनि उड़िसाले निखरइक

81. एकर भिरत कन टा सटिक आहेइक?
(क) फुरुंग कबिता हेकेइक
(ख) दा राइजिंग सन बाइबिलेक पथि हेकेइक
(ग) कपिला मंगल गितिकाइब हेकेइक
(घ) सउब

82. 'हालुक कबिता' का प्रकाशन वर्ष है।
(क) 2009 (ख) 2011
(ग) 2013 (घ) इनमें से कोई नहीं

83. 'सति सुलोचना' के लेखक है।
(क) नगेन पुनरिआर (ख) अंगद महतो
(ग) महिपाल (घ) गंधर्व महतो

84. इनमें से कौन सही है?
(क) फारकति उपन्यास है। (ख) सति सुलोचना गइद है।
(ग) कपिला मंगला गितिकाव्य है। (घ) हुब पत्रिका नहीं है।

85. 'कपिला मंगला' में क्या वर्णन है?
(क) गिति काव्य का महत्व (ख) कवि का महत्व
(ग) पशु का महत्व (घ) गाय के महत्व

86. मानभूम एक्सप्रेस के संपादक है।
(क) सुनिल महतो (ख) खगेन महतो
(ग) भगवान दास महतो (घ) हिरालाल सांखुआर

87. इनमें से कौन सही है?
(क) दिबाकर कबिता संग्रह है। (ख) हुब पत्रिका है।
(ग) पिआसि झुमर संग्रह है। (घ) सभी सही है।

88. कुड़मालि साहित्य में कालिपद महतो को जाना जाता है।
(क) कलाकार के रूप में (ख) कबि के रूप में
(ग) उपन्यासकार के रूप में (घ) नाटककार के रूप में

89. 'सति सुलोचना' का प्रकाशन वर्ष है।
(क) 2001 (ख) 2011
(ग) 1981 (घ) 2013

90. 'सति सुलोचना' के वर्ण विषय है।
(क) अयोध्या कांड पर (ख) रामायण के लंका कांड पर
(ग) धर्म कांड पर (घ) सति प्रथा पर

91. 'सति सुलोचना' किस छंद में है?
(क) आसाड़िया झुमर (ख) उधउआ झुमर
(ग) दोहा छंद (घ) भादरिआ झुमर

92. 'गर बिचार' के वर्ण विषय है।
(क) लोगों का विचार (ख) लेखक का विचार
(ग) ऋषि मुनियों का विचार (घ) सृष्टिकर्ता का विचार

93. 'एक टुपा फुल' के रचयिता है।
(क) मुक्ति पद महतो (ख) श्रीपद महतो
(ग) शक्ति पद महतो (घ) उमा पद महतो

94. 'जालनाक उपार' किना हेकेइक?
(क) उपन्यास (ख) कबिता
(ग) नाटक (घ) कहानी

95. 'जालनाक उपार' के प्रकाशन वर्ष है।
(क) 2011 (ख) 2012
(ग) 2015 (घ) 2014

96. 'एहे डहरे' क्या है?
(क) कहानी संकलन (ख) निबंध
(ग) कबिता संकलन (घ) इस रास्ते में

97. 'हालुक कविता' किस तरह की पुस्तक है?
(क) कविता संग्रह (ख) निबंध संग्रह
(ग) लेख संग्रह (घ) कहानी संग्रह

98. 'पलास फुल' क्या है?
(क) सांकेतिक निबंध (ख) सांकेतिक कहानी
(ग) सांकेतिक गीत (घ) सांकेतिक कविता

99. 'चासिक हाल' का वर्ण विषय है।
(क) कृषि पद्धति का (ख) कृषक जीवन का
(ग) कृषि के हाल का (घ) वर्षा आधारित कृषि का

100. 'फारकति' किस प्रकार का साहित्य है।
(क) कहानी (ख) नाटक
(ग) उपन्यास (घ) गीतों का संग्रह

## उत्तर

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 51. | (क) | 61. | (घ) | 71. | (ग) | 81. | (घ) | 91. | (घ) |
| 52. | (ग) | 62. | (ग) | 72. | (क) | 82. | (ग) | 92. | (क) |
| 53. | (घ) | 63. | (ख) | 73. | (क) | 83. | (घ) | 93. | (क) |
| 54. | (ख) | 64. | (ग) | 74. | (ग) | 84. | (ग) | 94. | (घ) |
| 55. | (ग) | 65. | (ख) | 75. | (घ) | 85. | (घ) | 95. | (ग) |
| 56. | (क) | 66. | (ग) | 76. | (घ) | 86. | (ग) | 96. | (ख) |
| 57. | (घ) | 67. | (ग) | 77. | (ख) | 87. | (घ) | 97. | (क) |
| 58. | (ग) | 68. | (क) | 78. | (घ) | 88. | (क) | 98. | (घ) |
| 59. | (घ) | 69. | (ख) | 79. | (ग) | 89. | (ख) | 99. | (ख) |
| 60. | (ग) | 70. | (ख) | 80. | (ख) | 90. | (ख) | 100. | (ख) |

# 3. कबि एवं साहितकार परिचय

1. कुड़मालि साहित माहान 'बुधु बाबु' के जानल जाइक।
   (क) साहितकारेक डुल (ख) भकति धाराक कबिक डुल
   (ग) दरबारि कबिक डुल (घ) हुल कार डुल
2. एकर भितर कन भकति धाराक कबि हेकत?
   (क) महिपाल (ख) केसव चन्द्र टिंडुआर
   (ग) भबअ पिता (घ) बुधु बाबु
3. बिनंद सिंगके कहल जाइक।
   (क) उपन्यास कार (ख) गितकार
   (ग) नाटक कार (घ) निबंध कार
4. इनमें से कौन कबीर धारा के कबि है?
   (क) बिनंद सिंग (ख) ज्योति लाल महतो
   (ग) दुर्योधन (घ) महिपाल
5. रामाइअनेक अनुबाद कुड़मालि माहान कने करल आहेइक?
   (क) किरिटि पुनरिआर (ख) अनंत केसरिआर
   (ग) संत कबि महिपाल (घ) नगेन पुनरिआर
6. कुड़मालि भाषा साहित्य में किसे 'संत' कवि कहा जाता है?
   (क) महिपाल (ख) सिसटिधर
   (ग) क एवं ख दोनों (घ) गौरांगिआ
7. बिनंद सिंगेक जनम हेल रहलेइक।
   (क) कुड़मालि कबिक डिढ़ांइ (ख) राजाक डिड़ांइ
   (ग) चासाक डिढ़ांइ (घ) नेताक डिढ़ांइ
8. एकर भितर कन आदिम बेराक कबि हेकेइक?
   (क) ज्योति लाल महतो (ख) अनंत केसरिआर
   (ग) सुरेन्द्र नाथ महतो (घ) एकर भितर केउ नाइ
9. कुड़मालि भाषा के पहला उपन्यास का नाम है।
   (क) जाहलि (ख) आंधरिआ राइज
   (ग) गांधिक जंइ (घ) एकर भितर केउ नाइ
10. एकर भितर कनटा सहि आहेइक।
    (क) बरजुराम आदिम बेराक कबि हेकेइक
    (ख) जतिलाल माहातअ हालुक बेराक कबि हेकेइक
    (ग) 1 आर 2 दुइअ सहि आहेइक
    (घ) दुइअ गलत आहेइक

11. कन कबिक जनम पांड़ा बाबाक डिढ़ांइ हेल रहलेइक?
(क) केसब चन्द्र टिडुआर (ख) दुरजअधन
(ग) बरजुराम तांति (घ) भबअ पिता

12. एकर भितर कन राधा किसनक उपासक हेकेइक?
(क) महिपम्ल (ख) बरजुराम तांति
(ग) भबअ पिता (घ) नन्द किशोर सिंह

13 एकर भितर कनटा गलत ओहेइक?
(क) निरंजन माहातअ उड़िसाक हेकल
(ख) 'फुरुंग' केसब चन्द्र टिडुआरकर रचना हेकेइक
(ग) बुधु बाबु दरबारि कबि हेकल
(घ) बिनंद सिंह साहितकारेक बेटा हेकल

14. हेठे देल कन पतरिकाटा उड़िसाले बाहराइक?
(क) आखांइन (ख) गेलि बेहनि
(ग) जाहलि (घ) बनफुल

15. 'बनफुल' पतरिकाक संजुएता हेकत?
(क) राकेस कुमार महतो (ख) निताई चन्द्र महतो
(ग) अनंत केसरिआर (घ) हिरालाल सांखुआर

16. एकर भितर कनटा पतरिका हेकेइक?
(क) एक डंडरा फुल (ख) आखांइन
(ग) पलास फुल (घ) फारकति

17. एकर भितर कन पतरिकाटा बांगालले बाहराइक?
(क) बनफुल (ख) कुड़मालि
(ग) जाहलि (घ) आखांइन

18. कुड़मालि भाखाक पढ़ाइ काहां - काहां हेउअ हेइ?
(क बिहार राइजेक इसकुल कलेजे (ख) उड़िसा राइजेक इसकुल कलेजे
(ग) बंगाल राइजेक इसकुल कलेजे (घ) झारखंड राइजेक इसकुल कलेजे

19. इनमें से कौन कवि राजघराना से संबंध रखता है?
(क) बरजु राम (ख) बिनंद सिंह
(ग) भबअ पिता (घ) इनमें से कोई नहीं

20. इनमें से कौन सा कवि उड़िसा में जन्म हुआ था?
(क) बाउल दास (ख) चंडिदास
(ग) दुरजउधन दास (घ) दिनानाथ

21. इनमें से केसे झारखंड का हरिसचंद्र कहा जाता है?
(क) बिनंद सिंह को (ख) भगबान दास को
(ग) बुधु बाबु को (घ) महिपाल को

22. इनमें से किसका जन्म स्थल उड़िसा है?
(क) आदिकांत महंता (ख) भगबान दास महतो
(ग) बाउल दास (घ) सभी

23. किनमें से कौन कवि राज परिवार से संबंध रखता है?
(क) बिनंद सिंह (ख) नाराइअन सिंह
(ग) क एवं ख दोनों (घ) केवल क

24. इनमें से किस कवि को बिहार सरकार ने पुरस्कृत किया था।
(क) भबअ पिता (ख) अनंत केसरिआर
(ग) एन. के. सिंग (घ) बुधु बाबु

25. इनमें से कौन बाउल पंथि कुड़मालि कवि है?
(क) महिपाल (ख) बाउलदास
(ग) भबअ पिता (घ) गोरांगिआ

26. इनमें से कौन दरबारी कवि है?
(क) नाराइअन सिंह (ख) केसब बाबु
(ग) गउरांगिआ (घ) बुधु बाबु

27. इनमें से सबसे प्राचीन कबि है।
(क) बाउलदास (ख) चंडिदास
(ग) भगवान दास (घ) बरजुराम

28. इनमें से कौन पातकम अंचल के कवि है।
(क) बरजुराम (ख) बिनंद सिंह
(ग) बाउलदास (घ) चंडिदास

29. पातकम अंचल में कितने कबि विख्यात है?
(क) 3 (ख) 5
(ग) 4 (घ) 2

30. इनमें से कौन कुड़मालि के कवि है?
(क) बुधु बाबु (ख) परमाचंद महतो
(ग) श्याम सुंदर महतो (घ) दिनबंध महतो

31. इनमें से किसे आध्यात्मिक कवि माना जाता है?
(क) भवअ पिता (ख) बिनंद सिंह
(ग) महिपाल (घ) गोरांगिआ

32. गिरिस चंद्र महंता को किस रूप में जाना जाता है।
(क) झुमर कर्ता (ख) नाटककार
(ग) गीतकार (घ) संगीतकार

33. श्रींगार रस के प्रधान कवि किसे माना जाता है?
(क) गोरांगिआ (ख) बिनंद सिंग
(ग) सिसटिधर (घ) बाउलदास

34. इनमें से कौन भक्ति धारा के निर्गुण के कवि है।
(क) महिपाल (ख) बरजुराम
(ग) दिनानाथ (घ) बुधु बाबु

35. इनमें से कौन आदि जुगिन कवि है।
(क) सिसटिधर (ख) आदि कांत महंता
(ग) गोवर्धन महतो (घ) इनमें से कोई नहीं

36. 'चातम बाड़ि' किस कवि से जुड़ा हुआ है।
(क) तिरलउकनाथ (ख) दुरजउधन
(ग) महिपाल (घ) बिनंद सिंग

37. 'बउना' के राजदरबार से किस कवि का संबंध है।
(क) बुधु बाबु (ख) नाराइअन सिंग
(ग) बाउलदास (घ) दिनानाथ

38. 'जारगउ' किस कवि के जन्म स्थल है?
(क) केसब बाबु (ख) बाउलदास
(ग) चंडिदास (घ) इनमें से कोई नहीं

39. इनमें से किस कवि का जन्म स्थल बांगला टांइड़ में हुआ है?
(क) किरिटि पुनरिआर (ख) पी.पी. केसरिआर
(ग) भगबान दास (घ) अनंत केसरिआर

40. इनमें से कौन सा गलत है।
(क) महिपाल नाटककार थे (ख) सिसटिधर संत थे
(ग) बुधु बाबु दरबारी कवि थे (घ) इनमें से कोई नहीं

41. बारेंदा कन कबिक जनम भुंइ हेकेइक?
(क) नाराइन सिंग (ख) नरउतम सिंग
(ग) दुरजउधन (घ) कबि उदर

42. बाघ मुंडि ले कन कबिक जनमेक नाता आहेइक?
(क) दिनानाथ तांति (ख) दुरजउधन
(ग) बरजुराम तांति (घ) आदिकांत महंता

43. एकर भितर कन कबिक जनम भुंइ 'छातना' गांउ हेकेइक?
(क) बड्डु चंडिदास (ख) दुरजउधन दास
(ग) नगेन पुनरिआर (घ) रामकिसटअ

44. भेंड़रअ कन कबिक जनम भुंइ हेकेइक?
(क) ससि बाबु (ख) लखि बाबु
(ग) केसब बाबु (घ) बुधु बाबु

45. 'माइ भाखि माइएक दुधेक समान हेकेइक' काकर कहल हेकेइक?
(क) केसब बाबु (ख) सिसटिधर
(ग) लखि बाबु (घ) बि. पि. केसरि

46. 'नागेडिह' जानल जाइक।
(क) नाग सांपेक खाति (ख) बरजुरामेक जनम भुंइएक रुपे
(ग) लुगाक खातिर (घ) महिपालेक जनम भुंइएक रुपे

47. एकर भितर कन कबिक जनम भुंइ उड़िसा हेकेइक?
(क) चंडिदास (ख) बाउल दास
(ग) रामकिसटअ गांगुलि (घ) बुधु बाबु

48. बरजुराम तांति का जन्म वर्ष है।
(क) 1720 (ख) 1740
(ग) 1760 (घ) 1780

49. संत कवि सिसटिधर का जन्म हुआ था।
(क) 1898 (ख) 1798
(ग) 1888 (घ) 1908

50. देवघर किस कुड़मालि कवि का जन्म स्थल है?
(क) दिनानाथ (ख) भबअ पिता
(ग) गउरांगिआ (घ) खुदिराम महतो

## उत्तर

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | (ग) | 11. | (घ) | 21. | (क) | 31. | (घ) | 41. | (क) |
| 2. | (ग) | 12. | (ग) | 22. | (घ) | 32. | (क) | 42. | (ग) |
| 3. | (ख) | 13. | (घ) | 23. | (ग) | 33. | (ख) | 43. | (क) |
| 4. | (घ) | 14. | (ख) | 24. | (क) | 34. | (क) | 44. | (ख) |
| 5. | (क) | 15. | (क) | 25. | (ख) | 35. | (घ) | 45. | (क) |
| 6. | (ग) | 16. | (ख) | 26. | (घ) | 36. | (घ) | 46. | (घ) |
| 7. | (ख) | 17. | (ग) | 27. | (ख) | 37. | (क) | 47. | (ख) |
| 8. | (घ) | 18. | (घ) | 28. | (क) | 38. | (घ) | 48. | (क) |
| 9. | (ग) | 19. | (ख) | 29. | (ख) | 39. | (घ) | 49. | (क) |
| 10. | (ग) | 20. | (क) | 30. | (क) | 40. | (क) | 50. | (ख) |

## 4. भषा व्याकरण

1. 'क' बरगेक उचरन काहांले हेउअइक?
   (क) तालु (ख) कंठ
   (ग) माड़ि (घ) ठंठ
2. एकर भितर कन आखड़ कुड़मालिंइ बेबहार निहिं हेउअइक।
   (क) य (ख) छ
   (ग) क्ष (घ) क आर ग दुइअ
3. 'मांचा' कुड़मालि भांउअर माहान कन साड़ा हेकेइक?
   (क) विशेषण (ख) अव्यय
   (ग) सर्वनाम (घ) संज्ञा
4. 'ह' आखड़ेक उचरन ठाइन हेकेइक।
   (क) लुड़लुड़ि (ख) माड़ि
   (ग)तालु (घ) ठंठ
5. साड़ाक सउबले खांटअ खंड़के कहाइल जाइक।
   (क) धमस खंड़ (ख) आखड़
   (ग) बरनअ (घ) एकर भितर कनअ नाइ
6. चिसेक चिनहाके किना कहल जाइक?
   (क) पाड़सि (ख) लिपि
   (ग) साड़ा (घ) चिनहा
7. 'गरु पाल' शब्द उदाहरण है।
   (क) भाव वाचक संज्ञा का (ख) व्यक्ति वाचक संज्ञा का
   (ग) समूह वावक संज्ञा का (घ) प्रश्न वाचक विशेषण का
8. एकर भितर धेइ बाचिक दांजाक निमुंद हेकेइक।
   (क) चेकाइल (ख) चेका
   (ग) आम (घ) डहर
9. साड़ाक खंड़के कहल जाइक।
   (क) साड़ा (ख) टुम
   (ग) धमस (घ) आखड़
10. कुड़मालि भाषा में किन ध्वनि की प्रधानता पायी जाती है।
    (क) 'ड़' ध्वनि की (ख) 'न' ध्वनि की
    (ग) 'त' ध्वनि की (घ) 'ट' ध्वनि की

11. 'त' बरगेक उचरन ठाइन हेकेइक।
(क) दांत (ख) ठंठ
(ग) तालु (घ) माड़ि

12. एकर भितर कनटा गलत आहेइक।
(क) कुड़मालि अना गअ बिभकति परधान पाड़सि हेकेइक
(ख) पाइन परधान पाड़सि हेकेइक
(ग) आकार परधान पाड़सि हेकेइक
(घ) एकर भितर कनअ नाइ

13. जाइते दन दन आइते थिर, काहां राखले माहाबिर। एकर माने किना हेकेइक?
(क) हाथिक लाद (ख) सुइ
(ग) झाड़ा फिरा (घ) तेतइर

14. एकर भितर कन टुमटा गलत आहेइक?
(क) तंइ काहां जाइहे। (ख) अखरा आउअहत।
(ग) हामरानि जाइहे। (घ) महे जाइएक रहल।

15. ..... इसकुललेे आउले। कन अइजि भरातेक?
(क) तंइ (ख) अंइ
(ग) अखरा (घ) तर

16. सहि टुम बाछा।
(क) तंइ काहां जाहिस। (ख) तर किना नाम हेकेइक?
(ग) अकर बाप काम ठिन जाबइ। (घ) अखरा इसकुल जाइ तेलिए

17. तर डिंढ़ा काहां हेकउअ? इठिन 'काहां' साड़ा हेकेइक।
(क) खंच बाचिक अइजि (ख) खंच बाचिक गुनिन
(ग) नाता बाचिक अइजि (घ) गुनिन सरान

18. एकर भितर नासिक धमस हेकेइक।
(क) न (ख) म
(ग) अं (घ) सउब

19. 'फ' कर उचरन ठाइन हेकेइक।
(क) दांत (ख) अंठ
(ग) दांत-अंठ (घ) माड़ि

20. 'ट' बरगेक उचरन ठाइन हेकेइक।
(क) तालु (ख) मुरधा
(ग) माड़ि (घ) अंठ

21. 'च' बरगेक उचरन ठाइन हेकेइक।
(क) दांत (ख) माड़ि
(ग) कंठ (घ) तालु

22. 'भाषा' शब्द को कुड़मालि में क्या कहा जाता है?
(क) भाखा (ख) भाखि
(ग) पाड़सि (घ) उपर्युक्त तीनों

23. 'फुरुंग' शब्द का कुड़मालि अर्थ क्या है।
(क) आइग (ख) कनखि
(ग) आंगरा (घ) साफ

24. इनमें से कौन सा गलत है?
(क) इसमें संयुक्त अक्षर का प्रयोग नहीं होता है।
(ख) इसमें श, ष, व का प्रयोग नहीं होता है।
(ग) इसमें संधि विच्छेद नहीं होता है।
(घ) प्रत्यय प्रधान भाषा नहीं है।

25. काड़ागिला। इठिन 'गिला' कन डुल साड़ा हेकेइक।
(क) चिनहान बाचिक (ख) झन बाचिक
(ग) संगि लेखा बाचिक (घ) एकर भितर कनअ नाइ

26. मेदि चिनहानेक निमुंद हेकेइक।
(क) डाकटरनि (ख) डाकटर
(ग) कुकुर (घ) गाइछ

27. गुनिन सरानेक निमुंद हेकेइक।
(क) चांड़े चाड़े (ख) चांड़
(ग) गहाइर (घ) केरिआ

28. 'बांउड़िंइ पानि तअ टिकरे धान' एकर माने कहा।
(क) बांउड़िंइ पानि गिरले धान निहिं हेउअइक।
(ख) बांउड़िंइ पानि निहिं गिरले दउमेइ धान हेउअइक।
(ग) बांउड़िंइ पानि गिरले दउमेइ धान हेउअइक।
(घ) एकर भितर एकअ नाइ।

29. 'आंइख मिचका' मुहाबराक माने कहा।
(क) कनअ इसारा करा (ख) राग करा
(ग) गरब करा (घ) आंइखेक रउग हेउआ

30. मेहनत करिके पेट पसाक माने कन मुहाबराले बाहराइक?
(क) घाम गारा (ख) घाड़ मचड़ा
(ग) आंइख उठा (घ) कपाल फुटा

31. 'परिचय' शब्द का कुड़मालि अर्थ है।
(क) चिनहाप (ख) चिनहान
(ग) चिनाहा (घ) चिन

32. सर्वनाम को कुड़मालि में कहा जाता है।
(क) सरबअनाम (ख) अइजि
(ग) आरजि (घ) आइजि

33. कुड़मालि में वचन कितने प्रकार के होते हैं?
(क) दो (ख) तीन
(ग) चार (घ) इनमें से कोई नहीं

34. 'फुहड़' में कौन सा मूल शब्द है?
(क) फुह (ख) हड़
(ग) फुहड़ (घ) ड़

35. 'ल' किस काल का चिन्ह है?
(क) वर्तमान काल (ख) भविष्यत काल
(ग) भूत कल (घ) इनमें से कोई नहीं

36. 'काल' को कुड़मालि में कहा जाता है।
(क) पहर (ख) जुग
(ग) बेरा (घ) काल

37. अंइ जाइ साहाइ। किस काल का वाक्य है?
(क) भूतकाल (ख) वर्तमान काल
(ग) भविष्यत काल (घ) इनमें से कोई नहीं

38. 'खुखड़िक गड़े तेल' मुहावरा का अर्थ है।
(क) मुर्गी के पैर में तेल (ख) खुसामद करना
(ग) चापलुसी करना (घ) इनमें से कोई नहीं

39. अंइ तअ असनेइ हेकाइ। इसमें 'तअ' किस प्रकार शब्द है।
(क) सर्वनाम (ख) विशेषण
(ग) क्रिया विशेषण (घ) लुठु साड़ा

40. जिस शब्द को कोई अर्थ नहीं होता है, उसको कहा जाता है।
(क) लुठु साड़ा (ख) विशेषण
(ग) अव्यय (घ) धातु

41. इनमें से किसे वाक्य के अंश कहा जाता है?
(क) प्रत्यय (ख) उपसर्ग
(ग) मुहावरा (घ) लोकोक्ति

42. अंइ डहराइके गेलि। इसमें मूल क्रिया शब्द क्या है?
(क) डहरा (ख) डहराइके
(ग) डहर (घ) डहराइ

43. इनमें से कुड़मालि किस प्रकार की भाषा क्या है?
(क) एक जातिवाचक (ख) कबिलावाची
(ग) स्थान वाचक (घ) क्षेत्र वाचक

44. इनमें से किसका प्रयोग केवल शब्दों में होता है?
(क) प्रत्यय (ख) अव्यय
(ग) लुठु साड़ा (घ) सर्वनाम

45. कुड़मालि में कुल स्वर वर्णों की संख्या है।
(क) 5 (ख) 6
(ग) 7 (घ) 8

46. 'अं' किस प्रकार के वर्ण है?
(क) नासिक स्वर (ख) केवल स्वर
(ग) नासिक व्यंजन (घ) केवल व्यंजन

47. इनमें से कौन सही है।
(क) 'अ' हस्व स्वर है। (ख) 'ग' अल्प प्राण है।
(ग) 'आ' दीर्घ स्वर है। (घ) इनमें से सभी

48. कुड़मालि में व्यंजन वर्णों की कुल सख्या है।
(क) 27 (ख) 28
(ग) 29 (घ) 30

49. कुड़मालि के एक मात्र दीर्घ स्वर कौन सी है।
(क) इ (ख) ई
(ग) आ (घ) ए

50. कुड़मालि भाषा पर पहला शोध कार्य हुआ है।
(क) कलकत्ता में (ख) रांची में
(ग) मयूरभंज में (घ) हजारीबाग में

## उत्तर

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | (ख) | 11. | (घ) | 21. | (घ) | 31. | (क) | 41. | (ग) |
| 2. | (घ) | 12. | (क) | 22. | (घ) | 32. | (ख) | 42. | (क) |
| 3. | (क) | 13. | (ग) | 23. | (ग) | 33. | (क) | 43. | (ख) |
| 4. | (क) | 14. | (क) | 24. | (घ) | 34. | (ख) | 44. | (क) |
| 5. | (क) | 15. | (क) | 25. | (ग) | 35. | (ग) | 45. | (ग) |
| 6. | (ख) | 16. | (क) | 26. | (क) | 36. | (ग) | 46. | (क) |
| 7. | (ग) | 17. | (घ) | 27. | (क) | 37. | (ख) | 47. | (घ) |
| 8. | (ख) | 18. | (घ) | 28. | (ग) | 38. | (ख) | 48. | (ग) |
| 9. | (घ) | 19. | (ख) | 29. | (क) | 39. | (घ) | 49. | (ग) |
| 10. | (क) | 20. | (ख) | 30. | (क) | 40. | (क) | 50. | (क) |

51. कुड़मालि भाषा का पहला नामकरण है।
(क) देहाति बोली (ख) कुरमाली
(ग) खोरठा (घ) कुड़मालि ठार

52. कुड़मालि भाषा की उत्पत्ति किस कबिला से हुई है?
(क) उरांव (ख) कुड़मि
(ग) कुर्मी (घ) कुरमाली

53. इनमें से कौन प्रत्यय प्रधान भाषा है?
(क) चीनी (ख) कुड़मालि
(ग) तमिल (घ) इनमें से सभी

54. कुड़मालि भाषा की विशेषताएं मिलती जुलती है।
(क) आर्य भाषा से (ख) द्रविड़ भाषा से
(ग) अग्नेय भाषा से (घ) चीनी भाषा से

55. कुड़मालि में 'अक्षर' को उच्चारित करते हैं।
(क) आखड़ (ख) अक्षर
(ग) आइकखर (घ) आचछर

56. कुड़मालि में 'ध्वनि' को कहा जाता है।
(क) धम धम (ख) धमस
(ग) ठक (घ) साड़ा

57. कनअ जिनिस, ठाइन, भाउएक नामके कहल जाइक।
(क) नामकरण (ख) सर्वनाम
(ग) नामित (घ) संज्ञा

58. कुड़मालि में 'शब्द' के स्थान पर किसका प्रयोग करते हैं।
(क) सबदअ (ख) साड़ा
(ग) टुम (घ) टुमेक टुना

59. 'वाक्य' के स्थान में कुड़मालि शब्द का प्रयोग करते हैं।
(क) साड़ा (ख) बाइक
(ग) टुम (घ) इनमें से कोई नहीं

60. 'चिकन' का पर्यायवाची शब्द है।
(क) साफा (ख) इजर
(ग) क और ख दोनों (घ) घिसट

61. इनमें से कौन सा कथन पूर्ण वाक्य होता है।
(क) वाक्य (ख) पहेली
(ग) लोकोक्ति (घ) मुहावरा

62. 'कुड़मालि' शब्द में कौन सा प्रत्यय है।
(क) मालि (ख) आलि
(ग) अलि (घ) लि

63. 'कुड़मालि' का मूल शब्द है।
(क) कुड़ुम (ख) कुड़म
(ग) कुड़मि (घ) कुड़

64. 'घार आहेइ तअ दुआइर नाइ' पहेली का अर्थ है।
(क) अंडा (ख) कुंआ
(ग) घड़ा (घ) नदी

65. 'तातल' शब्द का विपरार्थक शब्द है।
(क) गरम (ख) जुड़ा
(ग) ठंढा (घ) कालहा

66. कुड़मालि में ध्वनि की प्रधानता पायी जाती है।
(क) च (ख) ङ
(ग) ड़ (घ) ञ

67. इनमें से कौन सा महाप्राण ध्वनि है?
(क) ट (ख) ड़
(ग) त (घ) ड

68. कुड़मालि में स्वर वर्ण को कहा जाता है
(क) उचार (ख) उसास
(ग) उसरउनि (घ) उचरउनि

69. कुड़मालि भाषा से संबंधित कौन सा तथ्य सही है?
(क) संयुक्त वर्ण का प्रयोग कभी होता है।
(ख) संयुक्त वर्ण का प्रयोग कभी नहीं होता है।
(ग) संयुक्त वर्ण का प्रयोग वाक्य के पहले शब्द में होता है।
(घ) इनमें से कोई नहीं।

70. कुड़मालि में 'क्रिया' शब्द के स्थान पर प्रयोग होता है।
(क) सर (ख) सरान
(ग) ससान (घ) काम

71. कुड़मालि में व्यंजन वर्ण को कहा जाता है।
(क) भाजानु (ख) भजानु
(ग) बेंइजन (घ) भजाइल

72. कुड़मालि शब्द 'भांउअर' का अर्थ है।
(क) नापना (ख) भरना
(ग) व्याकरण (घ) भौंवरा

73. 'पुस्खा' शब्द का विशेषण है।
(क) पुरखउति (ख) बापअति
(ग) पुरखा (घ) पुसतउनि

74. 'पथि' शब्द का पर्यायवाची शब्द है।
(क) किताब (ख) पथि
(ग) पुस्तक (घ) ग्रंथ

75. कुड़मालि में 'चांद' किस लिंग का होता है।
(क) स्त्री लिंग (ख) पुरलिंग
(ग) उभय लिंग (घ) इनमें से कोई नहीं

76. 'आखांइन' का अर्थ होता है।
(क) अंत करना (ख) शुभारंभ करना
(ग) आंख लड़ाना (घ) आंख भरना

77. 'गउटे बन पड़ि गेल बुढ़ाक ढेंगा रहि गेल' पहेली का अर्थ होता है।
(क) डंडा (ख) पानी की रस्सी
(ग) पत्थर (घ) रास्ता

78. 'हड़' का अर्थ होता है।
(क) गिरना (ख) गिराना
(ग) आदमी (घ) पुरूष

79. 'गादर' का विपरार्थक शब्द होता है।
(क) पक्का (ख) अध पक्का
(ग) कच्चा (घ) एक दम पका हुआ

80. तंइ केतेइ ..... निगडि उठले। रिक्त स्थान का शब्द है।
(क) टा (ख) टांइ
(ग) टाइ (घ) टि

81. 'ठउका' का अर्थ होता है।
(क) समूह (ख) इक्ट्ठा
(ग) थोक भाउ (घ) इनमें से कोई नहीं

82. 'पिठा' का भाव वाचक संज्ञा होता है।
(क) चेका पिठा (ख) लुरु पिठा
(ग) पिठा (घ) गुड़ पिठा

83. 'रंग' शब्द का संज्ञा शब्द होगा।
(क) रंगा (ख) रंगाइल
(ग) रंगिआ (घ) रंगि

84. 'चारि' शब्द का हिंदी अर्थ होता है।
(क) चावल (ख) चाली
(ग) संस्कृति (घ) संस्कार

85. इनमें से कौन सा शब्द 'संपादक' के लिए प्रयोग होता है?
(क) संपादक (ख) संजुएता
(ग) संजुआनि (घ) संजुआ

86. 'एक चुका धुंध लुका' पहेली का अर्थ होता है।
(क) छिपना (ख) छिपाना
(ग) बेगन (घ) टमाटर

87. 'बिन लातिंइ काम नाइ' पहेली का अर्थ होता है।
(क) साईकिल (ख) ढेकि
(ग) मेइर (घ) ट्रेक्टर

88. 'राकसा' का पर्यायवाची शब्द होता है।
(क) मेइर (ख) रकसा
(ग) रसा (घ) इनमें से कोई नहीं

89. 'बन गेल आबाद खालि, चेपटा छउआ हेराइ आउलि' पहेली का अर्थ है।
(क) बच्चा (ख) पुरूष
(ग) कुल्हाड़ी (घ) पैर का भांज

90. 'अगहन मास हेउआ' मुहावरा का अर्थ है।
(क) धन समाप्त होना (ख) धन होना
(ग) दोनों (घ) इनमें से कोई नहीं

91. 'आंगुर फुटा' मुहावरा का अर्थ होता है।
(क) अंगुली को तोड़ना (ख) अंगुली मोड़ना
(ग) पसताना (घ) परोसना

92. 'आसा पाति होना' मुहावरा का अर्थ होता है।
(क) आसा के अनुरूप पति (ख) अच्छा पति
(ग) गर्भवती होना (घ) आसा में रहना

93. कुड़मालि व्याकरण में संज्ञा कितने प्रकार के होते हैं?
(क) पांच (ख) छः
(ग) तीन (घ) इनमें से कोई नहीं

94. इनमें से कौन सा कुड़मालि भाषा में नहीं होता है?
(क) प्रत्यय (ख) उपसर्ग
(ग) अव्यय (घ) संधि विच्छेद

95. इनमें से कौन सा शब्द अव्यय है?
(क) मनतुक (ख) दांजा
(ग) मन (घ) कन

96. इनमें से कौन सा गलत है?
(क) इसमें आकार का प्रयोग होता है।
(ख) इसमें हर्स्व 'इ' का प्रयोग होता है।
(ग) इसमें दीर्घ 'ई' का प्रयोग होता है।
(घ) इनमें से कोई नहीं

97. इनमें से कौन सा शब्द कुड़मालि भाषा में प्रयोग हो सकता है?
(क) अच्छर (ख) आखड़
(ग) शिक्षक (घ) विज्ञान

98. इनमें से कौन सा शब्द सही है?
(क) मास्टर (ख) मासटर
(ग) डाक्टर (घ) इस्पेक्टर

99. इनमें से कौन सा गलत है?
(क) आकार की प्रधानता (ख) स्वारागम की प्रधानता
(ग) प्रत्यय की प्रधानता (घ) हाकार की प्रधानता

100. कुड़मालि भाषा का संबंध है।
(क) लोक भाषा से (ख) साहित्यिक भाषा से
(ग) व्यापारिक भाषा से (घ) राजकाज की भाषा से

## उत्तर

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 51. | (घ) | 61. | (ग) | 71. | (ख) | 81. | (ग) | 91. | (ग) |
| 52. | (ख) | 62. | (ख) | 72. | (ग) | 82. | (ख) | 92. | (ग) |
| 53. | (ख) | 63. | (ख) | 73. | (क) | 83. | (ग) | 93. | (क) |
| 54. | (ख) | 64. | (क) | 74. | (क) | 84. | (ग) | 94. | (घ) |
| 55. | (ग) | 65. | (ख) | 75. | (क) | 85. | (ख) | 95. | (क) |
| 56. | (ख) | 66. | (ग) | 76. | (ख) | 86. | (ग) | 96. | (ग) |
| 57. | (घ) | 67. | (ख) | 77. | (घ) | 87. | (ख) | 97. | (ख) |
| 58. | (ख) | 68. | (ग) | 78. | (ग) | 88. | (क) | 98. | (ख) |
| 59. | (ग) | 69. | (ख) | 79. | (घ) | 89. | (घ) | 99. | (घ) |
| 60. | (ग) | 70. | (ख) | 80. | (ख) | 90. | (ख) | 100. | (ख) |

# 5. लोक साहित्य

1. नटुआ मिलन कन बेरांइ हेउअइक?
   (क) बिहाक बेरांइ (ख) परबेक बेरांइ
   (ग) सांइझ बेरांइ (घ) बिहान बेरांइ
2. 'डमकच' कखन गाउथिक?
   (क) सहराएक रातिंइ (ख) करमाक रातिंइ
   (ग) आखांइनेक रातिंइ (घ) बिहाक रातिंइ
3. नटुआ मिलन कखन हेउअइक?
   (क) बिहाक पेहिल बर घारे (ख) बिहाक परे केनिआइ घारे
   (ग) बिहाक पेहिल केनिआइ घारे (घ) बिहाक परे बर घारे
4. कुड़मालि चारि माहान 'आखांइन जातरा' कखन मानात?
   (क) एक पुस (ख) एक माघ
   (ग) अघन साकराइत (घ) टुसु भासान दिन
5. एकर भितर कनटा सहि आहेइक?
   (क) टुसु परबे डमकच नाइच नाचत
   (ख) आखांइन जातरा बछरेक सेंस दिन हेउअइक
   (ग) चाचर बांदना परबे गाउअत
   (घ) एकर भितर कनअ सहि निहिं आहेइक।
6. कुड़मालि नेगि चारिंइ 'करम पुजा' हेउइक।
   (क) भादर मासे (ख) भादरेक एकादसिक दिन
   (ग) भादरेक पुरनिमा दिन (घ) आमाबइसाक दिन
7. एकर भितर कनटा गलत आहेइक?
   (क) टुसु परब पुस माघ मासे हेउअइक
   (ख) रहइन परब कारतिक मासे हेउअइक
   (ग) सहराइ बरब कारतिक मासे हेउअइक
   (घ) पाचाडिक परे धान रपथिक
8. भदरिआ झुमइर कखन गाउथिक?
   (क) बिहाक बेरांइ (ख) करमा परबेक बेरांइ
   (ग) बांदना परबेक बेरांइ (घ) धान रपाक बेरांइ
9. बांदना बरबेक रातिंइ कन छंदेक गित गाउथिक?
   (क) भादरिआ (ख) खेमटा
   (ग) चाचर (घ) डमकच

10. एकर भितर कन गित ला टांइड़-टिकरांइ गाउथिक?
(क) बिहा गित (ख) धान रपा गित
(ग) टुसु गित (घ) उधउआ गित

11. कुड़मालि नेगि चारिक अनुजांइ अमलअ खाथिक।
(क) पेहिल बर/केनिआएक माइए (ख) पेहिल आजिंइ
(ग) सेंसे माइए (घ) पेहिल महतअ बुढ़िंइ

12. कुड़मालि नेगि चारिक अनुजांइ छुआइत कखन सिराइक?
(क) घाटेक दिन (ख) भजेक दिन
(ग) तेइल खइर दिन (घ) पिंड़ काटाउअल परे

13. एकर भितर कन गिते सउबले बेसि टान देइके गाउथिक?
(क) चाचर गित (ख) जाउआ गित
(ग) धान रपा गित (घ) टुसु गित

14. 'माहतअ हाड़िक' केते गअ मिठाइ देल जाइक?
(क) एक कुड़ि एक गअ (ख) चाइर कुड़ि एक गअ
(ग) तिन कुड़ि एक गअ (घ) एकाउअन गअ

15. कुड़मिक बिहा माहान 'महुआ खुटिक' खातिर केतेटि मिठाइ दिउअल जाइक?
(क) मांचा गअ (ख) गइ गअ
(ग) सिहम गअ (घ) एक कुड़ि एक गअ

16. बर घारे बेरिआइतके कअबे खाउअथिक?
(क) बरदेखा दिन (ख) माड़ुआ दिन
(ग) आट मंगला दिन (घ) बिहाक घुरि दिन

17. छउ नाइच कखन सुरु हेउइक?
(क) आखांइन जातराले (ख) भगता परबले
(ग) रहइन परबले (घ) फगुआ परबले

18. कुड़मालि चारिंइ छउआ जनमल परे घारे किना हेउअइक?
(क) घार छुइत हेइ जाइक (ख) गउटे गुसटि छुआइत हेइ जाइक
(ग) एक आर दुइ सहि आहेइक
(घ) छउआक माइ बाबके केउ छुउथि नाइ

19. कुड़मालि चारिंइ कखन 'हबिसेक भात' हेइक?
(क) मरन घारे नउ दिनेक रातिंइ (ख) सुरुज पुजाक नेम दिनेक रातिंइ
(ग) भगता परबेक फलहार दिनेक रातिंइ (घ) एक आर दुइ सहि आहेइक

20. कुड़मालि चारिंइ पास बुढ़ि कखन बाहराउअल जाइक?
(क) नारताक घुरि दिन (ख) छउआ जनमेक टेना दिन
(ग) नारता दिन (घ) छउआ जनमेक दिन

21. कुड़मि घारे नारता केइ दिने हेउअइक?
(क) टेना दिने (ख) मांचा दिने
(ग) गइ दिने (घ) नमि दिने

22. उधउआ गित काहां गाउथिक?
(क) धान खेते (ख) बागाल टाड़िंइ
(ग) आखड़ांइ (घ) सउब जेइगांइ

23. बेसि करि कुड़मालि परब केइ दिने सिराइक?
(क) दना दिने (ख) मांचा दिने
(ग) टेना दिने (घ) अना दिने

24. 'पारना' कन दिनके कहल जाइक?
(क) परबेक पेहिल दिनके (ख) परबेक दसर दिनके
(ग) परबेक सेंस दिनके (घ) उपासेक दिनके

25. 'फलहार' कन परबे हेउअइक?
(क) करमा परबे (ख) मनसा पुजांइ
(ग) जितिआ परबे (घ) भगता परबे

26. कुड़मालि चारिंइ परब कखन छुटि जाइक?
(क) परबेक पारना, उपास आर सनजत दिने काकरअ जनम हेले
(ख) एहे दिंने काकरअ मरन हेले।
(ग) 1 आर 2 दुइअ सहि आहेइक।
(घ) 1 आर 2 दुइअ गलत आहेइक।

27. 'आट मंगला' कन बेरांइ हेउअइक?
(क) छउआ जनमेक नारता दिने (ख) बिहाक आठुआ दिने
(ग) सुरुज पुजाक नेम दिनेक पेहिल (घ) मरेक आठुआ दिने

28. हेंठे देल भितर कन एक बिहाक रकम निहिं हेकेइक?
(क) हाड़ि बिहा (ख) सांघा बिहा
(ग) गलट बिहा (घ) आम बिहा

29. कन नेग खालि बर किमबा केनिआइ घारे हेउअइक?
(क) चुमान (ख) दुआइर लागा
(ग) माड़ुआ पुजा (घ) सना पितर

30. 'पाचाडि' पुजा कने करअइक?
(क) गांउएक नेइआ/पाहाने (ख) गड़ाइत बुढ़ांइ
(ग) घारेक बेटि छउआंइ (घ) एकर भितर केउ नाइ

31. कुड़मालि संस्कृति में लोकगीत गाया जाता है।
(क) पर्व के अवसर पर (ख) बिवाह के अवसर पर
(ग) जन्म के अवसर पर (घ) उपर्युक्त सभी

32. इनमें से 'रदन' किसमें पायी जाती है?
(क) लोकनाट्य (ख) लोकगीत
(ग) लोककथा (घ) झुमर

33. इनमें से कौन सा नृत्य-गीत है?
(क) झूमर (ख) छउ नाइच
(ग) क एवं ख (घ) इनमें से कोई नहीं

34. नटुआ नृत्य को कहा जाता है।
(क) लोक नृत्य (ख) मार्शल आर्ट
(ग) वीर नृत्य (घ) सभी

35. इनमें से कौन सा झुमर का प्रकार नहीं है?
(क) 3 ताल का नृत्य (ख) 12 ताल का नृत्य
(ग) 5 ताल का नृत्य (घ) इनमें से कोई नहीं

36. नटुआ नृत्य का प्रशिक्षण कहां होता है?
(क) स्कूल में (ख) गांव के आखड़ा में
(ग) पांइख गाढ़ि में (घ) मैदान में

37. इनमें से कौन सा लोक नृत्य का प्रकार नहीं है?
(क) उधउआ (ख) डमकच
(ग) एढ़ेइआ (घ) चाचर

38. लोक कथा सुनाया जाता है।
(क) शाम के समय (ख) दोपहर के समय
(ग) सुबह के समय (घ) सभी समय पर

39. बच्चों को सुलाने के लिए गाया जाता है।
(क) छउआ भुला गित (ख) बिहा गित
(ग) दोनों (घ) इनमें से कोई नहीं

40. बच्चों के बुद्धि परीक्षण के लिए पूछा जाता है।
(क) लोकोक्ति (ख) मुहावरा
(ग) लोकगीत (घ) पहेली

41. 'थिर पानिंइ पाथर काटइ' का भावार्थ है।
(क) परिश्रमी (ख) धैर्यवान
(ग) मेहनती (घ) ध्यानवान

42. इनमें से कौन सा श्रम गीत है।
(क) डमकच गीत (ख) उधउआ गीत
(ग) चाचर गीत (घ) महुआ बिछने का गीत

43. इनमें से कौन सा लोक साहित्य की विधा नहीं है।
(क) लोकगीत (ख) कहानी
(ग) लोककथा (घ) इनमें से कोई नहीं

44. गीत, संगीत एवं नृत्य के संगम को कहा जाता है।
(क) लोकगीत (ख) लोक साहित्य
(ग) लोकनृत्य (घ) नृत्य

45. मौसम के अनुसार गाये जाने वाले गीत को कहा जाता है।
(क) मौसमी गीत (ख) उधउआ गीत
(ग) श्रम गीत (घ) संस्कार गीत

46. विवाह के अवसर पर किस प्रकार का गीत गाया जाता है।
(क) सत्कार गीत (ख) संस्कार गीत
(ग) मौसमी गीत (घ) बिवाह गीत

47. इनमें से कौन सा प्रकीर्ण साहित्य है।
(क) पहेली (ख) मुहावरा
(ग) लोकोक्ति (घ) सभी

48. इनमें से किसे केवल रात्रि में बोला जाता है।
(क) पहेली (ख) लोककथा
(ग) क एवं ख दोनों (घ) लोकनृत्य

49. इनमें से कौन सा लोक साहित्य की विधा नहीं है।
(क) लोकगाथा (ख) लोकगीत
(ग) नाटक (घ) सभी

50. बुजूर्गों द्वारा सुनाने वाले कहानी को कहा जाता है।
(क) शिष्ट कहानी (ख) कहानी
(ग) पौराणिक (घ) लोककथा

## उत्तर

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | (क) | 11. | (ग) | 21. | (ख) | 31. | (घ) | 41. | (ख) |
| 2. | (घ) | 12. | (घ) | 22. | (ख) | 32. | (ग) | 42. | (घ) |
| 3. | (ग) | 13. | (क) | 23. | (ग) | 33. | (ग) | 43. | (ख) |
| 4. | (ख) | 14. | (क) | 24. | (ग) | 34. | (घ) | 44. | (ग) |
| 5. | (ग) | 15. | (क) | 25. | (घ) | 35. | (ग) | 45. | (क) |
| 6. | (ख) | 16. | (घ) | 26. | (ग) | 36. | (ग) | 46. | (ख) |
| 7. | (ख) | 17. | (ख) | 27. | (ख) | 37. | (घ) | 47. | (घ) |
| 8. | (ख) | 18. | (ग) | 28. | (घ) | 38. | (क) | 48. | (ग) |
| 9. | (ग) | 19. | (घ) | 29. | (घ) | 39. | (क) | 49. | (ग) |
| 10. | (घ) | 20. | (ख) | 30. | (क) | 40. | (घ) | 50. | (घ) |

## वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'केरिआ बहु' काकर रचना हेकेइक?
   (a) कालिपद महतो (b) तुलसि दास
   (c) अनंत केसरिआर (d) बिनंद सिंह
2. एकर भितर कुड़मालिक कबि हेकत?
   (a) बुधु बाबु (b) वसंती कुजुर
   (c) याम सुन्दर महतो (d) परमानन्द महतो
3. 'जाहलि' नाटक काकर रचल हेकेइक?
   (a) बसंत कुमार मेहता (b) अनंत केसरिआर
   (c) चन्द्र मोहन महतो (d) प्यारा केरकेट्टा
4. अनंत केसरिआरके कन रुपे जानल जाइक।
   (a) नाटक कार (b) साहितकार
   (c) गितकार (d) उपनइआस कार
5. 'नर जनम बिधिंइ काहे देल' काकर रचल कबिता हेकेइक?
   (a) बरजुराम तांति (b) भबअ पिता
   (c) बिनंद सिंह (d) सरदुआ
6. 'तंइ कि जावे निहिं अहे डहरे' काकर रचना हेकेइक?
   (a) भबअ पिता (b) सिसटिधर
   (c) बुधु बाबु (d) लखि कांत मुतरुआर
7. सुरेन्द्र नाथ महतक साहित हेकेइक।
   (a) सपन आपन (b) गांधिक जय
   (c) फुरुंग (d) एकर भितर केउए नांइ
8. कुड़मालि भाखा साहित माहान बसंत कुमार मेहताके कन रुपे जानल जाइक?
   (a) नाटक कारेक रुपे (b) उपनइआस कारेक रुपे
   (c) साहित कारेक रुपे (d) समाज सेबिक रुपे
9. उपनइआस कारेक रुपे जानल जाइक।
   (a) लखिकांत मुतरुआर (b) सुरेन्द्र नाथ महतो
   (c) राधा गोबिद महतो (d) कालि पद महतो
10. कुड़मालि भाखा साहितके केते जुगे बाटल गेल आहेइक?
    (a) टेना जुगे (b) दना जुगे
    (c) चारा जुगे (d) एकर भितर केउ नांइ
11. एकर भितर कन आदि जुगिन कबि हेकत?
    (a) बिनंद सिंह (b) महिपाल
    (c) 1 आर 2 दुइअ (d) एकर भितर केउ नांइ

12. कुड़मालि भाखा साहितके जुगेक अनुजांइ खड़ल गेल आहेइक।
(a) आदि काल, मइध काल आर आधुनिक काल
(b) आदि काल आर आधुनिक काल
(c) आदि काल, रिति काल, भकति काल आर आधुनिक काल
(d) रिति काल, मइध काल आर आधुनिक काल

13. एकर भितर कनटा सहि आहेइक?
(a) जाहलि नाटक हेकेइक (b) फारकति उपनइआस हेकेइक
(c) सपन आपन निबंध हेकेइक (d) एकर भितर केउ नांइ

14. 'करम कथा' पथिटा काकर रचल हेकेइक?
(a) बसंत कुमार मेहता (b) राधा गोबिंद महतो
(c) दुइअक भितर केउ एक (d) एकर भितर काकरअ नांइ

15. एकर भितर कनटा सहि आहेइक?
(a) 'फुरुंग' केहनि पथि हेकेइक (b) 'गांधिक जइ' नाटक हेकेइक
(c) 'आंधरिआ राइत' नाटक हेकेइक (d) 2 आर 3 गलत आहेइक

16. सुनिल कुमार महतअकर रचल पथिक नाम किना हेकेइक।
(a) गांधिक जइ (b) करम कथा
(c) पलास फुल (d) डहर

17. कुड़मालि भाखाक पेहिल भांउअरेक रचइआ कन हेकत?
(a) चन्द्र मोहन महतो (b) नंद किशोर सिंह
(c) शशि भुषण महतो (d) श्याम सुन्दर महतो(सामदा)

18. निबंध कारेक डुल चिनहाप आहेइक।
(a) शशि भुषण महतो (b) लखि कांत मुतरुआर
(c) निताइ चन्द्र महतो (d) एच. एन. सिंह

19. 'पलास फुल' काकर रचना हेकेइक?
(a) निताइ चन्द्र महतो (b) ज्योति लाल महतो
(c) सपन कुमार महतो (d) सिरि पदअ बसरिआर

20. बुधु बाबुक रचल पथि हेकेइक।
(a) गांधि बाबुक संबाद (b) एक डडरा फुल
(c) फारकति (d) जाहलि

21 'क' बरगेक उचंरनि काहांले हेइक?
(a) तालु (b) कंठ
(c) माड़ि (d) ठठ

22. एकर भितर कन आखड़ एहे भाखा माहान बेबहार निहिं हेइक।
(a) य (a) छ
(c) क्ष (d) 1 आर 3 दुइअ

23. 'मांचा' कुड़मालि भांउअर माहान कन साड़ा हेकेइक?
(a) गुनिन (b) तामान
(c) अईंजि (d) आंगा

24. 'ह' आखड़ेक उचरन ठाइन हेकेइक।
(a) लुड़लुड़ि (b) माड़ि
(c) तालु (d) ठठ

25. साड़ाक सउब ले खांटअ खंड़के कहाइल जाइक।
(a) धमस खंड़ (b) आखड़
(c) वरनअ (d) एकर भितर केउ नांइ

26. चिसेक चिनहाके किना कहल जाइक?
(a) भाखा (b) लिपि
(c) साड़ा (d) चिनहा

27. 'गरु पाल' साड़ा उदाहरन हेकेइक?
(a) धेइ बाचिक आंगा (b) झेंनगि बाचिक आंगा
(c) डिंग बाचिक आंगा (d) खंच बाचिक गुनिन

28. अना गअ धेइ बाचिक आंगाक उदाहरन हेकेइक।
(a) चेकाइल (b) चेका
(c) आम (d) डहर

29. साड़ाक खंड़के कहल जाइक।
(a) साड़ा (b) टुम
(c) धमस (d) आखड़

30. कुड़मालि भाखा माहान पाल जाइक।
(a) 'ड़' धमस कर परधानता (b) 'न' धमस कर परधानता
(c) 'त' धमस कर परधानता (d) 'ट' धमस कर परधानता

31. एकर भितर कनटा गलत आहेइक।
(a) इ अना गअ बिभकति परधान भाखा हेकेइक
(b) पाइन परधान भाखा हेकेइक
(c) आकार परधान भाखा हेकेइक
(d) समास परधान भाखा निहिं हेकेइक

32. जाइते दन दन आइते थिर, काहां राखले माहाबिर। एकर माने किना हेकेइक?
(a) हाथिक लाद (b) सुइ
(c) झाड़ा फिरा (c) तेंतइर

33. एकर भितर कन टुमटा गलत आहेइक?
(a) तंइ काहां जाइहे (b) अखरा आउअहत
(c) हामरानि जाइहे (d) महे जाइएक रहल

34. इसकुलले आउले। कन अइजि भरातेक?
(a) तंइ (b) अंइ
(c) अखरा (d) तर

35. सहि टुम बाछा।
(a) तंइ काहां जाहिस। (b) तर किना नाम हेकेइक?
(c) अकर बाप काम ठिन जाबइ। (d) अखरा इसकुल जाइ तेलिए

36. तर ढिड़ा काहां हेकउअ? इठिन 'काहां' साड़ा हेकेइक।
(a) खंच बाचिक अइजि (b) खंच बाचिक गुनिन
(c) नाता बाचिक अइजि (d) गुनिन सरान

37. कन अना गअ गुन एहे भाखाक निहिं हेकेइक।
(a) एहे भाखा माहान जड़ान आखड़कर बेबहार निहिं हेइक
(b) एहे भाखा माहान ।, ।, व कर बेबहार निहिं हेइक
(c) एहे भाखा माहान संधि बिछेद हेइक
(d) पाइन परधान भाखा हेकेइक

38. काड़ा गिला। इठिन 'गिला' कन डुल साड़ा हेकेइक।
(a) लिंग बाचिक (b) झन बाचिक
(c) संगि लेखा बाचिक (d) एकर भितर केउ नांइ

39. मेदि लिंगेक उदाहरन हेकेइक।
(a) डाकटरनि (b) डाकटर
(c) कुकुर (d) गाइछ

40. गुनिन सरानेक उदाहरन हेकेइक।
(a) चांड़े चाड़े (b) चांड़
(c) गहाइर (d) केरिआ

41. बांउड़िंइ पानि तअ टिकरे धान एकर माने कहा।
(a) बांउड़िंइ पानि गिरले धान निहिं हेइक
(b) बांउड़िंइ पानि निहिं गिरले दउमे धान हेइक
(c) बांउड़िंइ पानि गिरले दउमे धान हेइक
(d) एकर भितर एकअ नांइ

42. 'आंइख मिचका' मुहाबराक माने कहा।
(a) कनअ इसारा करा (b) राग करा
(c) गरब करा (d) आंइखेक रउग हेउआ

43. मेहनत करिके पेट पसाक माने कन मुहाबराले बाहराइक?
(a) घाम गारा (b) घाड़ मचड़ा
(c) आंइख उठा (d) कपाल फुटा

44. नटुआ नाइच कन बेरांइ नाचेक नेग आहेइक?
(a) बिहाक बेरांइ (b) परबेक बेरांइ
(c) सांझ बेरांइ (d) बिहान बेरांइ

45. 'डमकच' कखन गाउथिक?
(a) बिहाक रातिंइ (b) करमाक रातिंइ
(c) आखांइनेक रातिंइ (d) सहराएक रातिंइ

46. नटुआ मिलन कखन हेइक?
(a) बिहाक पेहिल बर घारे (b) बिहाक परे केनिआइ घारे
(c) बिहाक पेहिल केनिआइ घारे (d) बिहाक परे बर घारे

47. कुड़मालि चारि माहान 'आखांइन जातरा' कखन मानात?
(a) एक पुस (b) एक माघ
(c) अघन साकराइत (d) टुसु भासान दिन

48. एकर भितर कनटा सहि आहेइक?
(a) टुसु परबे डमकच नाइच नाचत
(b) आखांइन जातरा बछरेक सेंस दिन हेइक
(c) चाचर बांदना परबे गाउअत
(d) एकर भितर कनअ सहि निहिं आहेइक।

49. कुड़मालि नेगि चारिंइ 'करम पुजा' हेइक।
(a) भादर मासे (b) भादरेक एकादसिक दिन
(c) भादरेक पुरनिमा दिन (d) आमाबइसाक दिन

50. एकर भितर कनटा गलत आहेइक?
(a) टुसु परब पुस मासे हेइक (b) रहइन परब कारतिक मासे हेइक
(c) सहराइ बरब कारतिक मासे हेइक (d) पाचाडिक परे धान रपथिक

51. भदरिआ झुमइर कखन गाउथिक?
(a) बिहाक बेरांइ (b) करमा परबेक बेरांइ
(c) सहराइ परबेक बेरांइ (d) धान रपाक बेरांइ

52. बांदना बरबेक रातिंइ कन छंदेक गित गाउथिक?
(a) भादरिआ (b) खेमटा
(c) चांचर (d) डमकच

53. एकर भितर कन गित ला बाहिरे टांइड़ टिकरांइ गाउथिक?
(a) बिहाक गित (b) धान रपा गित
(c) टुसु गित (d) उधउआ गित

54. कुड़मालि नेगि चारिक अनुजांइ अमलअ खाथिक।
(a) पेहिल बर/केनिआएक मांइए (b) पेहिल आजिंइ
(c) सेंसे मांइए (d) पेहिल महतअ बुढ़िंइ

55. कुड़मालि नेगि चारिक अनुजांइ छुआइत कखन सिराइक?
(a) घाटेक दिन (b) भजेक दिन
(c) तेइल खइर दिन (d) पिंड़ काटाउअल परे

56. एकर भितर कन गिते सउब ले बेसि टान देइके गाउथिक?
(a) चाचर गित (b) जाउआ गित
(c) धान रपा गित (d) टुसु गित

57. 'माहतअ हाड़िक' केते गअ मिठाइ देल जाइक?
(a) एक कुड़ि एक गअ (b) चाइर कुड़ि एक गअ
(c) तिन कुड़ि एक गअ (d) एकाउअन गअ

58. कुड़मिक बिहा माहान 'महुआ खुटिक' खातिर केतेटि मिठाइ दिउअल जाइक?
(a) मांचा गअ (b) गइ गअ
(c) सिहम गअ (d) एक कुड़ि एक गअ

59. बर घारे बेरिआइतके कअवे खाउअथिक?
(a) बिहाक घुरि दिन (b) माडुआ दिन
(c) आट मंगला दिन (d) बरदेखा दिन

60. छउ नाइच कखन सुरु हेइक?
(a) आखांइन जातराले (b) भगता परबले
(c) रहइन परबले (d) फगुआ परबले

## उत्तर

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 01. | (a) | 02. | (a) | 03. | (b) | 04. | (a) | 05. | (a) |
| 06. | (d) | 07. | (b) | 08. | (c) | 09. | (b) | 10. | (a) |
| 11. | (a) | 12. | (a) | 13. | (a) | 14. | (d) | 15. | (d) |
| 16. | (b) | 17. | (d) | 18. | (d) | 19. | (b) | 20. | (a) |
| 21. | (b) | 22. | (d) | 23. | (a) | 24. | (a) | 25. | (b) |
| 26. | (b) | 27. | (c) | 28. | (a) | 29. | (d) | 30. | (a) |
| 31. | (a) | 32. | (c) | 33. | (a) | 34. | (a) | 35. | (a) |
| 36. | (b) | 37. | (c) | 38. | (c) | 39. | (a) | 40. | (a) |
| 41. | (c) | 42. | (a) | 43. | (a) | 44. | (a) | 45. | (a) |
| 46. | (c) | 47. | (b) | 48. | (c) | 49. | (b) | 50. | (b) |
| 51. | (b) | 52. | (c) | 53. | (d) | 54. | (c) | 55. | (d) |
| 56. | (a) | 57. | (a) | 58. | (a) | 59. | (a) | 60. | (b) |

❖❖❖

## About auther

Nitai Chandra Keduar is born on 05.08.1978 in the Village Chhatakulhi, Pradhan Khanta, Dhanbad distric of Jharkhand in India. He is Passed Matriculation in First Class in 1994 and Master of arts in Kudmali from Ranchi Uneversity in 2008. He is belong to iliterate family Kudmali is his mother tongue. He write in different disipline in own language.

## जनजातिय / क्षेत्रीय भाषा की पुस्तकें

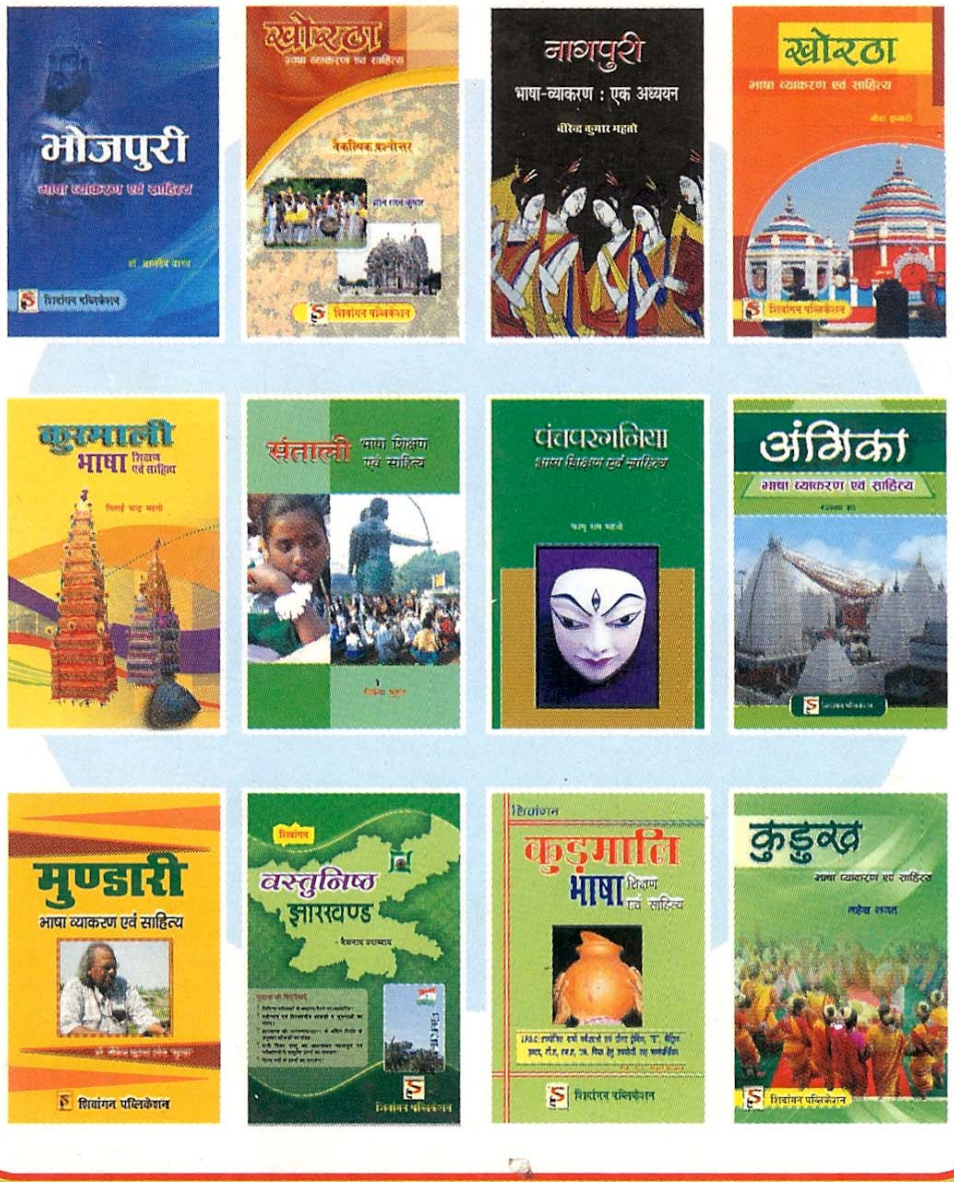



SHIVANGAN PUBLICATION

शिवांगन पब्लिकेशन

ISBN-8 : 978-81-932215-8-7

9 788193 221587